

A. gr. b.

2739

A. gr. b.
2739

Schanz
(Plato)



<36635204490017



<36635204490017

Bayer. Staatsbibliothek

NOVAE
COMMENTATIONES PLATONICAE.

~~~~~  
**SCRIPSIT**

**MARTINUS SCHANZ.**

~~~~~  
WIRCEBURGI.
TYPIS ET SUMPTIBUS STAHELII.
MDCCCLXXI.



Praefatio.

Anno 1868 cum philologi Teutonici Wirceburgum venirent, ad adventum eorum celebrandum societas philologorum Wirceburgensium librum edidit cui ego inserui *Commentationes Platonicas*, quarum una loci complures tentantur, altera disquiritur vocativi usus Platonicus. His commentationibus partem alteram aestate peracta adiecturus eram, ac folium primum iam erat typis exhibitum, cum bellum laborem meum interceptum. Ne autem interim in studiis meis Platonice cessarem, mense Augusto ineunte Oxonium profectus sum ibique codicem nobilissimum Clarkianum totum cum cura et diligentia excussi. Quod ut possem, effecit viri qui rebus scholasticis Bavariae praeest clarissimi *Joannis de Lutz* insignis benevolentia eique hoc loco gratias agere quantas maximas meum esse duco. Grato animo etiam esse debeo erga duos officiosos gubernatores Bodleianae, Coxe et Nutt, quorum liberalitatem non semel expertus sum. Negotio

autem Oxonii confecto conveniens esse videbatur, statim eorum quae inveni nonnulla in medium proferre, eorum vero, quae ante iter conscripsi, pleraque in aliam occasionem differre. Etiam hoc necessarium esse putavi primam quaestionem, ne manca esset, duce Clarkiano iterum pertractare et locos discrepantes in appendice adnotare. Alia e Clarkiano in Euthydemo meo qui mox prodibit exscribam.

Index Capitulorum.

- § 1. De formis ταύτέ, ταύτόν, τοιοῦτό, τοιοῦτόν, τοσοῦτο, τοσοῦτον apud Platonem.
- § 2. De formis οὕτως, οὕτω apud Platonem.
- § 3. De periodi *anaphora* et *palíndromia* apud Platonem.
- § 4. De figura ἐκ παραλλήλου apud Platonem.
- § 5. Locutionum φλυαρεῖς ἔχων et τοῦτο ἐκείνο apud Platonem et Aristophanem
usus.
- § 6. Formularum iuris iurandi usus Platonicus.
- § 7. De modo quodam Platonis imperativum augendi.
- § 8. Vitium assimilationis locis compluribus Platoniciis demonstratur.
- § 9. De figura διπλασιασμοῦ apud Platonem.
- § 10. Verborum λαμβάνειν, δεῖν, simillium cum praep. ἐν iunctorum exempla
Platonica.
- § 11. De copulae apud Platonem omissione.
- § 12. Historiae loci Euthyd. 289 B.
- § 13. Lectiones codicis Clarkiani ad Symposion pertinentes.
- § 14. De permutatione vocalium αὐ et δῆ.
- § 15. Loci emendantur.
- § 16. Loci emendantur.
- § 17. Interpolationes remonentur.
- § 18. Interpolationes remonentur.
- § 19. Interpolationes in Euthydemo deteguntur.
- § 20. Euthydemus percurritur et explicatur vel emendatur.
- § 21. Loci emendantur.
- § 22. Crasis usus Platonicus.
- (§ 23. Errore intercidit.)
- § 24. Loci emendantur.
- § 25. Primum codicis Clarkiani fata narrantur, deinde liber ipse describitur.
- § 26. Loci emendantur.

VI

- § 27. Scholia Clarkiana indicantur et manibus aetatibusque distinguuntur.
 § 28. E Phaedone loci emendantur.
 § 29. Recensiones duae Phaedonis ope Clarkiani et Tubingensis diiudicantur.
 § 30. In Phaedone formae α σ vel ξ incipientes, ν ἐφελαυστικόν, ι subscriptum secundum Clarkianum (et Tubingensem) tractantur.
 § 31. Cod. Tubingensis accuratius describitur.
 § 32. Recensionis secundae exempla ex aliis dialogis proferuntur.
 § 33. Loci emendantur.

Index locorum.

| Alcibiades I. | | | | | |
|----------------|---------|-----------|------|-------------|------|
| | pag. | | pag. | | pag. |
| 104 E. | 57 | 164 A. | 91 | Euthydemus. | |
| 119 C. | 89 | 167 B. | 91 | 295 A. | 53 |
| 123 D. | 99 nota | 170 A. | 57 | 271 B. | 68 |
| 128 B. | 89 | Cratylus. | | 271 CD. | 55 |
| Alcibiades II. | | 383 A. | 119 | 272 A. | 65 |
| 150 E. | 99 | 384 A. | 165 | 273 B. | 64 |
| 151 C. | 102 | 384 B. | 165 | 273 B. | 65 |
| Apologia. | | 387 A. | 119 | 273 C. | 69 |
| 19 D. | 103 | 387 C. | 120 | 273 C. | 70 |
| 23 D. | 163 | 387 D. | 119 | 273 E. | 70 |
| 24 B. | 160 | 399 D. | 119 | 274 B. | 63 |
| 25 D. | 161 | 403 B. | 98 | 274 E. | 70 |
| 26 A. | 163 | 404 B. | 165 | 275 B. | 71 |
| 27 B. | 103 | 405 A. | 119 | 275 C. | 71 |
| 28 B. | 164 | 413 B. | 58 | 275 D. | 26 |
| 28 C. | 161 | 421 A. | 163 | 276 C. | 71 |
| 29 A. | 161 | 434 C. | 165 | 276 C. | 71 |
| 30 A. | 164 | Crito. | | 276 D. | 60 |
| 30 D. | 103 | 44 B. | 162 | 277 A. | 72 |
| 31 C. | 164 | 44 D. | 103 | 277 C. | 65 |
| 40 B. | 161 | 47 A. | 162 | 277 E. | 28 |
| 40 B. | 164 | 48 B. | 164 | 278 B. | 59 |
| 41 B. | 164 | 48 D. | 103 | 279 D. | 72 |
| 41 C. | 161 | 49 E. | 162 | 280 C. | 73 |
| 42 A. | 161 | 52 B. | 162 | 280 D. | 73 |
| 52 C. | 164 | 53 A. | 103 | 281 C. | 74 |
| Charmides. | | 53 D. | 162 | 282 C. | 75 |
| 153 C. | 91 | 54 A. | 161 | 282 E. | 75 |
| 160 C. | 53 | 54 D. | 161 | 283 A. | 76 |
| | | 54 B. | 103 | 283 C. | 76 |

| | pag. | | pag. | | pag. |
|-----------------|------|-----------------|------|---------------------|------|
| 284 C. | 76 | 302 E. | 50 | 503 D. | 164 |
| 284 E. | 64 | 303 B. | 84 | 521 C. | 165 |
| 285 A. | 67 | 303 C. | 12 | 526 C. | 164 |
| 286 C. | 66 | 303 E. | 84 | Laches. | |
| 287 B. | 77 | 303 E. | 85 | 178 AB. | 60 |
| 288 C. | 77 | 304 B. | 134 | 184 E. | 57 |
| 288 C. | 27 | 304 C. | 85 | 185 A. | 57 |
| 288 C. | 78 | 304 D. | 63 | Leges. | |
| 288 CD. | 78 | 304 E. | 86 | XII. 965 E. | 24 |
| 288 E. | 78 | 305 A. | 86 | Lysis. | |
| 289 B. | 34 | 305 B. | 24 | 204 A. | 120 |
| 289 B. | 35 | 305 C. | 65 | 204 B. | 165 |
| 289 E. | 78 | 305 C. | 66 | 204 E. | 165 |
| 289 E. | 79 | 306 A. | 86 | 207 B. | 91 |
| 290 B. | 79 | 306 D. | 87 | 208 E. | 102 |
| 291 A. | 79 | 307 B. | 87 | 209 C. | 57 |
| 291 A. | 80 | Euthyphro. | | Meno. | |
| 291 B. | 80 | 4 AB. | 133 | 76 A. | 91 |
| 291 D. | 80 | 4 B. | 104 | 78 D. | 50 |
| 293 B. | 80 | 6 D. | 104 | Parmenides. | |
| 293 E. | 81 | 9 E. | 119 | 134 B. | 62 |
| 294 B. | 81 | 10 C. | 104 | 138 B. | 62 |
| 294 C. | 52 | 10 D. | 104 | 141 C. | 62 |
| 294 C. | 67 | 12 A. | 104 | 148 E. | 62 |
| 294 D. | 81 | 14 A. | 103 | Phaedo. | |
| 294 E. | 82 | 15 B. | 104 | 57 A. | 155 |
| 295 D. | 66 | Gorgias. | | 57 A. | 155 |
| 295 D. | 82 | 451 A. | 90 | 58 A. | 138 |
| 295 E. | 9 | 453 C. | 90 | 58 B. | 129 |
| 296 D. | 70 | 459 E. | 165 | 58 C. | 142 |
| 296 D. | 11 | 461 B. | 102 | 58 D. | 130 |
| 297 C. | 82 | 461 C. | 59 | 58 D. | 142 |
| 297 D. | 82 | 463 E. | 90 | 58 E. | 98 |
| 297 E. | 83 | 466 A. | 162 | 58 E. | 132 |
| 298 AB. | 51 | 467 C. | 90 | 58 E. | 151 |
| 299 A. | 65 | 470 B. | 90 | 59 B. | 138 |
| 299 C. | 11 | 472 AB. | 58 | 59 E. | 27 |
| 299 C. | 66 | 473 A. | 120 | 59 E. | 154 |
| 299 D. | 83 | 475 A. | 58 | 60 A. | 136 |
| 300 C. | 61 | 479 C. | 90 | 60 B. | 137 |
| 301 A. | 54 | 490 C. | 165 | 60 B. | 148 |
| 301 E. | 50 | 491 D. | 162 | 60 C. | 138 |
| 302 A. | 84 | 492 E. | 51 | 60 D. | 133 |
| 302 C. | 84 | 494 E. | 91 | 60 D. | 136 |
| 302 E. | 84 | 500 C. | 165 | 60 E. | 146 |

VIII

| | pag. |
|---------------|------|
| 60 E. | 148 |
| 60 E. | 155 |
| 61 A. | 138 |
| 61 B. | 146 |
| 61 C. | 140 |
| 61 C. | 145 |
| 62 A. | 132 |
| 62 B. | 138 |
| 62 C. | 129 |
| 62 C. | 135 |
| 63 A. | 148 |
| 63 C. | 138 |
| 63 C. | 142 |
| 63 D. | 135 |
| 63 D. | 148 |
| 63 D. | 139 |
| 64 B. | 140 |
| 64 C. | 141 |
| 64 D. | 140 |
| 64 D. | 146 |
| 64 E. | 129 |
| 65 C. | 129 |
| 65 E. | 148 |
| 66 B. | 135 |
| 66 C. | 133 |
| 66 C. | 142 |
| 67 A. | 134 |
| 67 C. | 146 |
| 67 D. | 129 |
| 67 D. | 151 |
| 68 A. | 142 |
| 68 B. | 151 |
| 68 C. | 58 |
| 68 D. | 132 |
| 68 E. | 132 |
| 68 D. | 142 |
| 69 B. | 141 |
| 69 B. | 148 |
| 69 C. | 129 |
| 69 C. | 129 |
| 69 C. | 134 |
| 69 E. | 148 |
| 70 A. | 136 |
| 70 C. | 134 |
| 71 A. | 129 |

| | pag. |
|---------------|------|
| 71 A. | 142 |
| 71 B. | 64 |
| 71 B. | 140 |
| 71 B. | 146 |
| 71 E. | 146 |
| 72 B. | 142 |
| 72 E. | 155 |
| 72 B. | 148 |
| 73 D. | 140 |
| 74 A. | 134 |
| 74 A. | 148 |
| 74 B. | 151 |
| 74 D. | 142 |
| 74 D. | 152 |
| 74 E. | 136 |
| 75 B. | 143 |
| 75 D. | 133 |
| 75 E. | 143 |
| 75 E. | 148 |
| 76 A. | 146 |
| 76 C. | 130 |
| 76 D. | 143 |
| 76 E. | 129 |
| 77 A. | 130 |
| 77 A. | 146 |
| 77 B. | 146 |
| 77 D. | 130 |
| 78 C. | 132 |
| 78 D. | 143 |
| 78 D. | 148 |
| 78 E. | 133 |
| 79 A. | 143 |
| 79 A. | 152 |
| 79 C. | 143 |
| 79 C. | 148 |
| 79 D. | 143 |
| 79 D. | 143 |
| 79 E. | 140 |
| 80 A. | 148 |
| 80 B. | 129 |
| 80 B. | 152 |
| 80 C. | 138 |
| 80 C. | 152 |
| 80 E. | 152 |
| 81 D. | 143 |

| | pag. |
|----------------|------|
| 81 E. | 148 |
| 82 A. | 141 |
| 82 A. | 148 |
| 82 A. | 148 |
| 82 C. | 137 |
| 82 CD. | 143 |
| 82 D. | 148 |
| 83 B. | 140 |
| 83 B. | 150 |
| 83 C. | 135 |
| 83 C. | 148 |
| 83 E. | 141 |
| 84 A. | 143 |
| 84 A. | 151 |
| 84 B. | 146 |
| 84 C. | 136 |
| 84 C. | 143 |
| 84 D. | 146 |
| 85 D. | 143 |
| 86 B. | 141 |
| 86 D. | 147 |
| 87 A. | 136 |
| 87 A. | 137 |
| 87 A. | 140 |
| 87 B. | 136 |
| 87 D. | 134 |
| 88 C. | 134 |
| 88 C. | 149 |
| 88 E. | 149 |
| 89 B. | 134 |
| 89 B. | 143 |
| 89 B. | 147 |
| 89 B. | 149 |
| 89 C. | 129 |
| 89 C. | 136 |
| 89 E. | 143 |
| 90 A. | 147 |
| 90 B. | 149 |
| 90 C. | 143 |
| 90 C. | 149 |
| 90 D. | 138 |
| 90 D. | 144 |
| 91 A. | 149 |
| 91 B. | 130 |
| 91 B. | 140 |

| | pag. | | pag. | | pag. |
|----------------|------|----------------|------|--------------------|------|
| 91 B. | 140 | 101 C. | 147 | 115 D. | 137 |
| 91 B. | 149 | 102 E. | 153 | 116 B. | 134 |
| 91 C. | 144 | 103 B. | 147 | 116 B. | 136 |
| 91 E. | 149 | 103 C. | 129 | 116 D. | 150 |
| 92 B. | 144 | 103 C. | 138 | 117 A. | 137 |
| 92 B. | 147 | 103 C. | 144 | 117 B. | 146 |
| 92 B. | 149 | 104 A. | 140 | 118 A. | 130 |
| 92 C. | 147 | 104 A. | 147 | 118 A. | 135 |
| 92 C. | 149 | 104 D. | 149 | Phaedrus. | |
| 92 D. | 147 | 105 A. | 140 | 228 B. | 28 |
| 93 B. | 149 | 105 A. | 144 | 231 C. | 162 |
| 93 C. | 136 | 105 B. | 140 | 232 E. | 88 |
| 93 C. | 144 | 105 B. | 149 | 234 C. | 64 |
| 94 B. | 150 | 106 C. | 149 | 246 B. | 63 |
| 94 C. | 149 | 106 D. | 144 | 252 D. | 60 |
| 94 D. | 144 | 107 A. | 135 | 260 B. | 62 |
| 95 B. | 137 | 107 A. | 145 | 271 C. | 63 |
| 95 C. | 189 | 107 C. | 131 | Philebus. | |
| 95 C. | 147 | 108 A. | 140 | 13 E. | 120 |
| 96 A. | 147 | 108 A. | 153 | 50 D. | 50 |
| 96 B. | 151 | 108 C. | 130 | 52 E. | 121 |
| 96 C. | 135 | 108 C. | 149 | 57 D. | 119 |
| 96 C. | 141 | 108 D. | 129 | Politicus. | |
| 96 C. | 147 | 108 D. | 130 | 278 A. | 164 |
| 96 D. | 135 | 108 D. | 136 | 291 B. | 163 |
| 96 D. | 147 | 109 A. | 141 | 293 C. | 56 |
| 96 D. | 149 | 110 A. | 145 | 303 E. | 120 |
| 96 E. | 144 | 110 A. | 150 | Protagoras. | |
| 96 E. | 147 | 110 B. | 145 | 312 D. | 56 |
| 96 E. | 149 | 110 D. | 145 | 319 D. | 61 |
| 97 D. | 135 | 110 D. | 150 | 330 C. | 101 |
| 98 B. | 146 | 110 E. | 136 | 331 B. | 57 |
| 98 C. | 147 | 110 E. | 141 | 358 D. | 119 |
| 98 C. | 149 | 111 C. | 145 | Respublica. | |
| 99 C. | 129 | 111 D. | 145 | IV. 439 B. | 52 |
| 99 C. | 149 | 111 D. | 147 | Rivales. | |
| 99 D. | 139 | 112 B. | 139 | 138 A. | 121 |
| 99 D. | 144 | 112 E. | 145 | 138 C. | 96 |
| 99 D. | 152 | 112 E. | 153 | Sophista. | |
| 99 E. | 144 | 113 E. | 139 | 223 A. | 89 |
| 100 B. | 130 | 113 E. | 155 | 232 D. | 120 |
| 100 B. | 141 | 114 B. | 150 | 234 A. | 63 |
| 100 C. | 139 | 115 A. | 145 | 240 C. | 163 |
| 100 C. | 139 | 115 A. | 147 | 263 DE. | 56 |
| 100 D. | 139 | 115 C. | 145 | 264 E. | 62 |

| | Symposion. | pag. | | | pag. | | | pag. |
|--------|------------|------|-------------|-------|------|----------|-------|------|
| 185 E. | . . . | 83 | 215 B. | . . . | 51 | 166 A. | . . . | 120 |
| 189 C. | . . . | 98 | 215 E. | . . . | 89 | 169 C. | . . . | 89 |
| 199 E. | . . . | 99 | 220 C. | . . . | 99 | 183 E. | . . . | 89 |
| 206 A. | . . . | 99 | 221 D. | . . . | 99 | 200 D. | . . . | 54 |
| 206 C. | . . . | 99 | Theaetetus. | | | 205 B. | . . . | 131 |
| 207 C. | . . . | 88 | 143 A. | . . . | 89 | Theages. | | |
| 209 B. | . . . | 101 | 153 B. | . . . | 58 | 124 B. | . . . | 120 |
| 214 E. | . . . | 50 | 155 C. | . . . | 19 | 126 C. | . . . | 120 |
| | | | 165 B. | . . . | 31 | | | |

§ 1.

De formis ταύτό, τοιούτο, τόκοῦτο quamquam et grammatici (cf. Krüger § 25, 5, 3. Kühner ed. 1869 p. 229 et p. 465, 2) et interpretes (vide eos apud Kühner p. 466 not. 1) singulas ediderunt observationes, tamen nisi omnes scriptores hac de re accurate perlustrati fuerint, non potest sperari fore ut res extra omnem dubitationem ponatur. Quam igitur operam hoc in genere Fridericus Franke oratoribus Atticis praestitit in *Lectionibus Aeschineis* insertis Philologo (tom. I. suppl. p. 432), eam mecum statui praestare Platoni, cum qualis sit apud eum formarum illarum vicinarum ratio noverim neminem qui accuratius indagaverit. Neque arbitror opellam meam inutilem fore ad quaestionem de mutabili littera v pronominum illorum diiudicandam, cum Platonis libros manu scriptos inter omnes constet maximi esse momenti sive eorum vetustatem sive eorum virtutem spectes. Itaque omnes dialogos Platonicos libris bonae notae servatos (hac in quaestione distinguere inter dialogos genuinos et non genuinos est supervacaneum) perlegimus secuti quidem Hermanni editionem utpote optimis libris nixam, sed ita ut hic illic Gaisfordii, Bekkeri aliorum collationes inspicerentur. Quodsi quando cum eo erravimus, idcirco universam rationem non magis sublatam puto quam si quod libenter concedimus unum alterumve exemplum omisimus. Sed veniamus ad rem atque ordiamur a forma

Ταύτόν, ταύτό.

Formae in v exeuntis habentur exempla in Lys. 3, Protag. 10, Men. 7, Apol. et Crit. 3, Alcib. I et II 5, Hipparch. Erast. Theag. 3, Theaet. 33, Cratyl. 15, Soph. 39, Politic. 21, Euthyphr. 7, Phaed. 11, Gorg. 17, Lach. 3, Charm. 6, Phaedr. 7, Symp. 4, Phileb. 21, Parm. 41, Euthyd. 6, Legg. 38, Rep. 32, Tim. 27, Criti. et Min. 7. Locis igitur

366 habes formam ταῦτόν; videamus porro, quot locis forma ταῦτό reperiatur. Sunt autem hi quos exscribendos curavimus: 1) Prot. 334 C. τοῖς δ'έντός ταῦτό τοῦτο χάριστον, 2) Gorg. 470 B. ἀπόκριναι ταῦτό τοῦτο, 3) Alcib. I 129 B. τίν' ἂν τρόπον εὔρεθείη αὐτό ταῦτό (ταῦτό definite Gaisf.), 4) Erast. 138 C. ἔστιν ἄρα ταῦτό ὡς ἔοικε βασιλεὺς τύραν-

νος Bodl. τοῦτο, 5) Cratyl. 409 A. ἄλλιος οὖν εἴη μὲν ἂν κατὰ τὸ ἀλί-
 ζειν εἰς ταῦτό τοὺς ἀνθρώπους, 6) Politic. 263 D. συλλαβὸν εἰς ταῦτό οὐδέν, 7) ibid. 267 C. ἅμα βασιλικὸν ταῦτό κληθὲν καὶ πολιτικόν (ταῦτό definite testatur Gaisf.), 8) Symp. 184 C. δεῖ δὴ τῷ νόμῳ τούτῳ συμβα-
 λεῖν εἰς ταῦτό, 9) Parm. 148 B. τούναντίον δέ γε πάθος ἐστὶ τὸ εἶναι ταῦτό τοῖς ἄλλοις τῷ ἑτερον εἶναι τῶν ἄλλων (ταῦτό definite Gaisf.), 10) Euthyd. 272 C. μὴ οὖν καὶ τοῖν ξένοις τις ταῦτό τοῦτο ὀνειδίσῃ, 11) ibid. p. 278 A. καλοῦσι δὲ ταῦτό τοῦτο, 12) ibid. 278 A. διαλέληθε ταῦτό ὄνομα, 13) Rep. 329 A. συνεργόμεθα τινες εἰς ταῦτό παραπλησίαν ἡλικίαν ἔχοντες, 14) ibid. 503 B. εἰς ταῦτό συμφύεσθαι αὐτῆς τὰ μέρη ὀλιγάκις ἐθέλει, 15) Tim. 65 B. κατὰ σμικρὰ δὲ μόγις τε εἰς ταῦτό πάλιν ἑαυτοῖς καθίσταται (ταῦτό definite Paris. A.), 16) 82 B. μόνως γὰρ δὴ φαμέν ταῦτόν ταῦτῳ κατὰ ταῦτό καὶ ὡσαύτως καὶ ἀνὰ λόγον προσγιγνώ-
 μενον καὶ ἀπογιγνώμενον ἑάσει ταῦτόν ὃν αὐτῷ σῶν καὶ ὑγιὲς μένειν, 17) Legg. 642 B. καὶ δὴ καὶ ἐμοὶ νῦν ταῦτό τοῦτο ἐγγέγονεν, 18) ibid. 644 D. καὶ ἐν ἐμοὶ μὴν ταῦτό τοῦτο πάθος ἐνι, 19) 669 D. ἐπὶ δὲ θη-
 ρίων φωνὰς καὶ ἀνθρώπων καὶ ὀργάνων καὶ πάντας ψόφους εἰς ταῦτό οὐκ ἂν ποτε συνθεῖεν, 20) 708 D. τὸ δ'αὖ παντοδαπὸν ἐς ταῦτά συνερρύηκός γένος — τὸ δὲ συμπνεῦσαι — εἰς ταῦτόν, 21) 757 D. πρὸς ταῦτό τοῦτο σκοπούμενον χρεῶν νομοθετεῖν, 22) 811 A. ἐκλέξαντες καὶ τινες ὅλας ῥήσεις εἰς ταῦτό συναγαγόντες. Inde vides in 366 ταῦτόν cadere 22 ταῦτό vel si mavis in 100 ταῦτάν circa 6,01 ταῦτό.

τοιούτον, τοιοῦτο.

Eosdem dialogos quos supra evolventibus nobis praebet Lys. 4 τοι-
 οῦτον, Prot. 7, Meno 9, Apol. et Crito 9, Alcib. I et II 3, Erast. 1, Theaet. 22, Cratyl. 11, Soph. 9, Politic. 8, Ephro. 2, Phaedo 16, Gorg. 13, Lach. 3, Charm. 7, Phaedr. 7, Symp. 8, Phileb. 7, Parm. 11, Eu-
 thyd. 3, Legg. 66, Resp. 52, Tim. 17. Quos numeros si coniunxeris, habebis summam 295.

Forma τοιοῦτο his locis extat: 1) Alcib. II 145 B. τὸν τοιοῦτο συμβουλεύειν εἰδότε (Bekk. Stallb. Turic. scrips. τοιοῦτον, at vid. Hermann. praef. XXIII.). 2) Theaet. 150 CD. οὐδέ τί μοι ἔστιν εὖρημα τοιοῦτο

γεγονός τῆς ἐμῆς ψυχῆς ἔχονον (τοιούτο Bodl. anelore Gaisf.). 3) Symp. 183 C. ἐάν τι ἐρώσι τοιούτο γιγνόμενον [Parm. 144 C. καὶ πῶς ἂν τοιούτο γένοιτο; τοιούτο coni. Hr. pro τοι τοῦτο quia τοι in interrogatione ferri non potest]. 4) Euthyd. 283 E. καταψεύδεται τοιούτο πρᾶγμα. 5) Legg. 933 C. καὶ συμβουλεύειν μὴ δεῖν ἐπιχειρεῖν τοιούτο δρᾶν. 6) ibid. 936 B. ὁ πεινῶν ἢ τι τοιούτο πάσχων (τοιούτο. Paris A. Vatic. Q). 7) Rep. 443 C. τοιούτο μὲν τι ἦν ὡς ἔοικεν ἢ δικαιοσύνη (τοιούτο Vind. F. Aug. B. Flor. T. — Bekk. Turic. Schneider. τοιούτον). 8) ibid. 470 C. ὅταν τι τοιούτο δρῶσι. τοιούτο Par. A. cf. adn. critic. Schneideri. 9) ib. 586 C. αὐτὸ τοιούτο καί, ad quem locum Schneiderus haec adnotavit: „τοιούτο] Ita Par. A. Vind. B. Vat. H. τοιούτον ἔν Ang. B. τοιούτον reliqui cum editis. Quo saepius formae pleniores ταῦτόν, τοιούτον, τοσοῦτον, τηλικούτον ante consonas in locum exiliorum substitutae substituendaeve secundum optimos codices sunt, eo minus iisdem codicibus, si quando exilius praebent, quo quidem scriptorem minime prorsus abstinuisse constet, fides neganda est. Hic vero facile intelligitur similitudine verborum antecedentium inductos librarios v adscivisse“¹⁾.

In 100 igitur τοιούτον apparet cadere 3,38 τοιούτο.

τοσοῦτον, τοσοῦτο.

Dialogorum quos supra indicavimus hi soli τοσοῦτον praebent: Prot. 4, Meno. 4, Apol. 4, Alcib. I. 5, Theaet. 4, Cratyl. 2, Soph. 4, Politic. 1, Ephro. 2, Phaedo. 3, Gorg. 5, Charm. 2, Symp. 5, Parm. 3, Resp. 5, Tim. et Crit. 2, Legg. 18. Locis igitur 73 Plato usurpavit formam τοσοῦτον, his tribus tantum τοσοῦτο: 1) Prot. 314 B. ἡμεῖς γὰρ ἔτι νέοι ὥστε τοσοῦτο πρᾶγμα διελέσθαι. 2) Alcib. I. 120 D. οὐκοῦν ἐν μὲν τοῦτο τοσοῦτο κακὸν ἔχει ἢ αἰησις αὐτῇ. 3) Charm. 170 D. ἀλλὰ τοσοῦτο μόνον ὡς ἔοικε γινώσεται (τοσοῦτον Γb.). Ratio autem quae numeris 73 et 3 continetur eadem est quae efficitur numeris 100 et 4, 1.

Pronominis τηλικούτος Plato tam paucas formas generis neutrius nobis suppeditat (cf. Legg. 686 B. ἄρ' οὐκ ἄξιον ἐπισκοπεῖν τηλικούτον καὶ τοιούτον σύστημα ἥτις ποτὲ τύχη διέφθαιρεν) ut nobis supersedendum sit de hoc pronomine disputare.

Summam igitur disputationis ut faciamus, Platonem τοσοῦτον, τοιούτον, ταῦτόν multo frequentius posuisse quam τοσοῦτο, τοιούτο, ταῦτό numeris ita probatum est, ut dubitationi nullus relinquatur locus. Etiam hoc numeri (6,01 4,1 3,38) effecerunt, formam ταῦτό esse

¹⁾ Accedit 10) Symp. 185 E., ubi Hermannus alios secutus τοιούτον οἶον scripsit; sed Jahn's testimonio Bodl. habet τοιούτο.

apud Platonem frequentiore quam τοσοῦτο et τοιοῦτο. Ut denique rationem quae omnino extat inter usum formarum plenarum et f. exilium, numeris indicemus, Plato 734 locis illas, 35 has usurpavit, ita ut in centena exempla formarum v habentium possis dicere 4,7 exempla formarum litera v carentium cadere. Inde apparet falsum esse quod Franko (Lect. Aesch. p. 433) disputans de formis τοιοῦτον τοσοῦτον τηλικούτον tradit: „In Platone, ut Sauppius testatur, litera v semper addita est.“ Ac quamquam res non ita se habet ut Sauppius putat, tamen videndum est ne e legibus artis criticae Platoni ubique plenae formae sint restituendae; nam quid valent 35 exempla contra 734? Sed hac de re iudicent homines peritiores. Hic habes quae de his formis potui eruere. Si quis autem mihi obiciat, quasi in arena domum me posuisse quod libros impressos, non libros manu scriptos adhibuerim, velim teneat me non id mihi sumsisse ut quaestionem prorsus absolverem, sed ut eo deducerem quo liceret per recensionem quae codicum optima familia quasi fundamento niteretur. Non quod volui, sed quod potui me dedisse libere fateor.

§ 2.

Ut v finale, ita etiam in verbis quibusdam σ finale non fixam sedem habet ut in οὔτως in cuius locum non raro οὔτω cedit. Hoc in verbo cum interpretes saepe falsae legi, qua nos jubemur semper ante vocalem οὔτως, ante consonantem οὔτω ponere potius obsequi voluerint quam codicibus optimis, nobis necessarium visum est nullum exemplum proferre nisi codicum optimorum auctoritate confirmatum. Itaque Gaisfordi collationem codicis Bodleiani diligenter perlustravimus eosque inde locos enotavimus quos οὔτως vel οὔτω habere aperte atque definite ille testatus est, ut, cum nunquam e silentio conclusum sit, quod hic damus, in Bodleiano extare putandum sit. Ac primum quidem supposito locos qui σ ante vocalem habent. Sunt autem hie: 1) Theaet. 152 B. οὔτω ἐκαστέρῳ (Herm. οὔτως). 2) Protag. 331 C. οὔτω ἀπλοῦν (Hr. οὔτως). 3) Phaedr. 257 D. οὔτω ἡγεῖ (Hr. οὔτως). 4) Symp. 191 C. οὔτω αὐτῶν (Hr. οὔτως). 5) Erast.

οὔτω ἀεὶ (Hr. οὔτως, Bodl. οὔτω). 6) Apol. 22 E. οὔτω ὥσπερ ἔχω (Hr. οὔτως). 7) Cratyl. 439 D. οὔτω ἢ μή (Hr. οὔτως). 8) Theaet. 209 C. οὔτω ἐξ ὧν (Hr. οὔτως. Wohlrab οὔτω reduxit.). 9) Prot. 351 C. οὔτω ὥς σὺ ἐρωτᾷς (Hr. οὔτως). Non raro fit, ut in fine enuntiationis οὔτω ponatur, etiamsi insequentis enuntiationis verbum primum a vocali incipit, id quod haec exempla docent: 1) Gorg. 479 B. ἢ σὺ δοχεῖ καὶ σοὶ οὔτω; (Hr. οὔτως) — Εμοίγῃ. 2) Lys. 214 D. ἢ σὺ καὶ σοὶ δοχεῖ

οὕτω; (Hr. οὕτως) Ἐμοιγε ἔφη. 3) Charm. 158 B. ἔχει δ' οὖν οὕτω (Hr. οὕτως). εἰ μὲν 4) Phaedr. 262 B. ΦΑΙ. Γίγνεται οὕτω (Hr. οὕτως) ΣΩ. Ἔστιν. 5) Meno. 98 E. ΜΕΝ. Οὕτω . ΣΩ . Ἀλλὰ μὴν (Hr. οὕτως). 6) ibid. 99 A. ΜΕΝ. Δοκεῖ μοι οὕτω . ΣΩ . Οὐκοῦν (Hr. οὕτως). 7) Euthyphr. 10 C. ἡ οὐ ξογχωρεῖς οὕτω; ΕΥΘ . Ἐγωγε (Hr. οὕτως). 8) Parm. 144 A. Ἔστιν οὕτω . (Hr. οὕτως) . Εἰ. —

2) Nunc ad eos locos transeamus qui σ ante consonantem habent. Eorum habent σ a) ante γ. 1) Euthyphr. 6 B. οὕτως (Hr. οὕτω) γεγενέσθαι. 2) Apol. 19 A. οὕτως (Hr. οὕτω) γενέσθαι. 3) Erast. 136 A. οὕτως γίγνεσθαι. b) ante τ. 4) Theaet. 144 B. οὕτως ταῦτα (Hr. οὕτω). 5) Euthyd. οὕτως τυγχάνεις (Hr. οὕτω). 6) Parm. 137 D. οὕτως τό. 7) ibid. 135 C. οὕτως τήν. c) ante δ. 8) Gorg. 522 C. οὕτως διαχειμένους (Hr. οὕτω). 9) Alcib. II. 146 B. οὕτως δέ. 10) Parm. 151 D. οὕτως δὴ (Hr. οὕτω). d) ante π, φ. 11) Gorg. 500 E. οὕτως φημί (Hr. οὕτω). 12) Protag. 320 D. οὕτως πείσας (Hr. οὕτω). 13) Meno 91 D. οὕτως περιφανῶς (Hr. οὕτω). 14) Lys. 220 A. οὕτως φήσομεν (Hr. οὕτω). 15) Symp. 180 C. οὕτως παρηγγέλθαι. 16) Alcib. I. 112 D. οὕτως πλανᾷ (Hr. οὕτω). 17) Phaedo. 113 D. οὕτως πεφυκότων (Hr. οὕτω). e) ante λ. 18) Phaedo 100 C. οὕτως λέγω (Hr. οὕτω). 19) ibid. 102 B. οὕτως λέγεις (Hr. οὕτω). 20) Euthyd. 293 D. οὕτως λέγεις. 21) Charm. 156 C. οὕτως λέγουσι. f) ante μ. 22) Men. 94 A. οὕτως μεγαλοπρεπῶς (Hr. οὕτω). 23) Lach. 184 B. οὕτως μικρᾶς (Hr. οὕτω σμικρᾶς), g) ante κ. 24) Gorg. 460 D. οὕτως καί (Hr. οὕτω). 25) Meno 80 C. οὕτως καί (Hr. οὕτω). 26) Phaedr. 259 D. καὶ ταῖς ἄλλαις οὕτως κατὰ τὸ εἶδος (Hr. οὕτω). 27) Alcib. I. 129 C. οὕτως καί. h) ante ζ et σ, id quod valde memorabile 28) Phileb. 21 B. οὕτως ζῶν (Hr. οὕτω). 29) Euthyd. 299 C. οὕτως σύ (Hr. οὕτω) cf. Theaet. 202 C., quem locum infra exscribemus. Saepe fit, ut in fine enuntiationis οὕτως reperiatur, etiamsi insequentis enuntiationis initium est consonans. cf. haec exempla 1) Gorg. 516 C. οὐχ οὕτως; ΚΑΑ. Ναί. 2) Hipparch 231 E. ἔχει γὰρ οὕτως . ΣΩ . Τὸ μὲν. 3) Charm. 170 E. Ναί, οὕτως . Περί. 4) Lys. 214 C. οὐχ οὕτως; Ναί, ἡ δ' οὐ. 5) ibid. 218 E. οὐχ οὕτως; Ναί. 6) Euthyd. 282 B. ἡ οὐ δοκεῖ σοι ἔφην ἐγὼ οὕτως; Πάνυ. 7) Phaedr. 270 B. οὕτως . ΣΩ . Ψυχῆς. 8) Alcib. I. 117 C. ΑΑ . Οὕτως . ΣΩ . Τί. 9) Politic. 263 D. Ἦν καὶ ταῦτα οὕτως . Εε . Τό. 10) ibid. 296 A. Οὐχ ἐννοῶ νῦν γ' οὕτως . Εε . Καί. 11) ibid. 309 A. Λέγεται γοῦν πως οὕτως . Εε . Τούς. 12) ibid. 267 D. Οὕτως . Εε . Τὸ δὴ. 13) 287 C. οὐκοῦν χρὴ δρᾶν οὕτως . Εε . Κατὰ μέλη. 14) Parm. 133 D. ὅσα αὖ ὀνομάζεται οὕτως . Πῶς λέγεις. 15) Soph. 244 D. ΘΕΑΙ . Οὕτως . ΕΕ .

Καί. 16) 245 C. idem. 17) 266 B. Οὕτως . ΕΕ . Τούτων. 18) 240 B. Οὕτως ΕΕ . Τί δέ. 19) 218 E. Οὕτως . ΕΕ . Μέθοδον. 20) Euthyphr. 11 D. οὕτως . ΣΩ . Κινδυνεύω. 21) Erast. 138 B. Οὕτως . Καί. His igitur exemplis iusistamus, si quae forte leges de formae plenae et exilis discrimine inde possint erui. Antea autem videndum est, quid grammatici et interpretes hac de re protulerint. Schneiderus ad Reip. I. III, 406 E. [Vol. I. p. 288] ubi legitur οὕτω ἰατρικῇ χρῆσθαι haec adnotavit: „Jam vero omnibus repugnantibus hiatum tollere non sum ausus, quia, quemadmodum οὕτως ante consonam nonnunquam soni causa ponitur, ita οὕτω ante vocalem eandem vim habere potest“. Haec igitur verba nobis praecipiunt, ut οὕτως ante vocalem, οὕτω ante consonantem ponatur, soni vero causa etiam οὕτως ante consonantem et οὕτω ante vocalem. At nullum puto in exemplis a nobis congestis neque in iis quae οὕτω ante vocalem neque in iis, quae οὕτως ante consonantem habent, talem rationem inventurum esse. Confer quaeso exempla illa 29, quae οὕτως ante consonantem habent. Estne hic causa idonea, cur οὕτως euphoniae servire putet? Immo vero, illorum locorum complures οὕτως vel ante σ et ζ demonstrant ut 28, 29. Idem pertinet ad exempla οὕτω ante vocalem habentia. Etiam hic nusquam fere reperiās soni rationem habitam esse. Quod cum ita sit, Schneideri praeceptum nobis abiciendum est. Altera lex Schneiderianae cognatione quadam coniuncta cuius auctor a Wohlrabio (Prolegg. ad Theaet. p. 43) Lehrsius esse perhibetur, a responsione formarum ducta est. „Hoc in adverbio, inquit Wohlrabius l. c., rectissime Lehrsius animadvertendum esse dixit, quid ei respondeat. Ubique enim legendum erit: πῶς — οὕτως (p. 182 C., 188 E., 199 C.), οὕτως — ἄλλως (p. 169 E, 182 C., 202 C.) atque eadem ratione p. 184 D. οὕτως — ἐκείνως (cf. p. 203 E.), p. 183 A. οὕτω — οὕτω, p. 203 A. οὕτως — οὕτως scribendum erit.“ Hoc in genere Bodleianus nobis haec exempla tradidit. a) πῶς — οὕτως 1) Alcib. II. 140 D. ἢ πῶς σοι δοκεῖ; Ἐμοὶ μὲν οὕτως. 2) Phaedo. 75 B. ἢ πῶς λέγομεν; Οὕτως. 3) Phileb. 59 A. φαίμεν ἂν ταῦτα ἢ πῶς; — Οὕτως. 4) ibid. 20 C. ἢ πῶς; — Οὕτως. 5) Politic. 295 C. ἢ πῶς; — Οὕτως. 6) Soph. p. 244 E. idem. 7) Politic. 258 B. idem. 8) Theaet. 199 C. ἢ πῶς ποιήσεις; Οὕτως. b) ἄλλως — οὕτως. 9) Theaet. 182 C. εἴτε ἄλλως εἴτε οὕτως λέγουσιν. 10) ibid. 202 C. οὕτως αὐτὸ ἐνύπνιον ἢ ἄλλως ἀκήχοας; (resp. οὕτω μὲν οὖν). 11) Alcib. II. 145 D. ἢ ἄλλως πως; Οὐκ, ἀλλ' οὕτως. 12) ibid. 146 C. ὡσαύτως σοι δοκεῖ ἢ ἄλλως πως; οὐκ, ἀλλ' οὕτως. 13) Parm. 163 A. κατὰ τοσοῦτον οὐκέθ' ὡσαύτως ἔχει ὥς εἶχεν ἀλλ' ἐτέρως . Οὕτως. c) οὕτως — οὕτως. 14) Theaet. 203 A. οὕτως ἢ οὐχ οὕτως γράμματα

ἐμάθομεν. 15) Theaet. 188 A. οὕτω τ' ἔχειν φάναι καὶ μὴ οὕτω. 16) ibid. 178 B. οὐχ οὕτω. Οὕτω (Hr. bis οὕτως). d) Nescio cur Wohlrabius ὥς — οὕτως, ὥσπερ — οὕτως omiserit, quae inter se non minus respondent quam πῶς — οὕτως aliaque, cf. 17) Gorg. 476 C. οὕτως (Hr. οὕτω) κάεσθαι ὥς ἂν τὸ κάον κάη. 18) Protag. 341 A. οὐχ οὕτως (Hr. οὕτω) Σμωνίδης ὑπελάμβανε ὥσπερ σὺ ὑπολαμβάνεις. 19) Gorg. 521 C. ἀλλ' ὥσπερ με ἀδίκως ἀφείλετο, οὕτως καί (Hr. οὕτω). 20) Gorg. 509 C. οὕτως ὥς. 21) Erast. 135 B. ἄρ' οὖν οὕτως (Hr. οὕτω) λέγεις, ὥσπερ. 22) Parm. 130 A. ὥσπερ ἐν τοῖς ὀρωμένοις διήλθετε, οὕτως (Hr. οὕτω) καί. 23) Phaedo. 76 E. οὕτως ὥσπερ καὶ ταῦτα ἔστιν, οὕτως καί. 24) Prot. 320 C. ὁποτέρως βούλοιο, οὕτως (Hr. οὕτω) διεξιέναι. Haec sunt exempla, quae Lehrsil praeceptum illustrent, quo quaestio de formis οὕτως et οὕτω magis tacta quam exhausta esse videtur; nam in una tantum re nobis iudicium datum est de formis eligendis. Sed dubito an semper hoc iudicium certum sit. Vocabulo ὥσπερ certe etiam οὕτω respondere nemo non novit. cf. Parm. 130 B. αὐτὸς σὺ οὕτω διήρησαι ὥς λέγεις. Et alioquin negaverim codices illam responsionem tueri. cf. Rep. 340 C. ἀλλ' εἰ νῦν οὕτω λέγει Θρασύμαχος, οὕτως αὐτοῦ ἀποδεχώμεθα ubi Vind. D. solus οὕτως ante λέγει praebet. Phileb. 60 A. οἶμαι, γὰρ οὕτω πως τὰ τότε λεχθέντα ῥηθῆναι. Πῶς cf. etiam hos locos, de quibus quidem nullum certum Bodleiani testimonium habemus Phaedo 81 A. οὕτω φῶμεν ἢ ἄλλως. Eph. 12 D οὕτω φῶμεν ἢ ἄλλως σοι δοκεῖ. Cratyl. 433 C. οὕτω φῶμεν ἢ ἄλλως. Parm. 162 C. ὃ ἂν οὕτω τε καὶ μὴ οὕτως ἔχη. Phileb. 48 A. Οὐχ, ἀλλ' οὕτω ταῦτά γε καὶ οὐχ ἄλλως ἂν συμβαίνοι γινόμενα. Inde videmus Lehrsilianum praeceptum non magis nobis satisfacere quam Schneiderianum. Nam ut non mihi in animo est omnino negare, responsioni in formis οὕτως et οὕτω discernendis aliquid tribuendum esse, ita necessitatem hanc illamve formam ponendi ad responsionem efficiendam prae fracte nego. Restat lex, quam in novam Kühneri grammaticam receptam et p. 230, 3a explicatam invenimus. Secundum eam οὕτως ante vocalem, οὕτω ante consonantem adhibetur, ante consonantem etiam οὕτως, si huic verbo gravius pondus inest. Hic alia via difficultatem tollendi inlita est. Nam cum illae duae leges a forma sola profectae sint, haec ad sensum potius spectat. At quaerat quispiam, quamobrem οὕτως maiorem vim habeat quam οὕτω; literam σ enim ad sensum valere ut τ in ούτοσί non potest concedi. Et ne pronuntianti quidem οὕτως aptiorem occasionem praebet audientis animum commovendi quam οὕτω. Ac tamen aliquid veri haec lex habere videtur, quod Plato solitario οὕτως ad responsionem affirmativam instituendam

saepius utitur quam solitario οὕτω, quamquam huius rei alia causa infra mihi proponenda esse videtur. Ni fallor, usus Platonius formarum οὕτως et οὕτω duce Gaisfordio e Bodleiano exploratus has leges habet:

- 1) Perraro ante vocalem οὕτω ponitur, qua de re inter sese consentiunt grammatici;
- 2) saepissime contra οὕτως ante consonantem sedem habet; neque sonus neque significatus quidquam hic valere videtur;
- 3) in fine enuntiationis nihil interest, utrum οὕτως an οὕτω ponatur, quamquam hic οὕτως saepius ponitur quam οὕτω. Inde potest explicari, quod οὕτως solitarium saepius affirmanti responsioni inservit quam οὕτω.
- 4) Formae ut inter sese respondeant, scriptor potest (non debet) adduci ut alteram formam alteri praeferat.

Ex his legibus cum nullus fructus in artem criticam redundet, ei, qui in ea versatur, οὕτως aut οὕτω ex auctoritate sola optimorum codicum repraesentandum est, quod quia non fecit Hermannus, non satis potest vituperari.

§ 3.

Periodologiam Platoniam campum esse, in quo non satis possis virescentare, quis est qui neget? Hoc igitur capite secuti Naegelsbachium harum rerum auctorem ac magistrum primum *periodi anaphoram* deinde *periodi palindromiam* e Platone disquiramus. Antequam autem negotium adgreddiamur, quid sit periodi anaphora e Naegelsbachio discendum est, qui, ut rem definiat, his verbis utitur (in libro de stilo lat. ed. II. p. 467): Wir verstehen unter derselben wie gesagt nicht blos die bekannte Wiederholung desselben Wortes am Anfang mehrerer Sätze, sondern hier vornehmlich die Wiederkehr derselben Wortfolge entweder in dem nämlichen Satze oder in verschiedenen: Tum addit de usu huius collocationis verborum haec (p. 470): Diese Form anaphorischer Wortstellung, in welchen sich abermal das den alten Sprachen eigenthümliche Uebergewicht des plastischen über das einseitig logische Princip der Wortfolge bemerklich macht, findet sich schon bei Homer; vgl. meine Anmerk. zu Il. α, 284, ingleichen bei Hesiod. Theog. 793: ὅς κεν τὴν ἐπίορχον ἀπολείψας ἐπομόσῃ ἀθανάτων, d. i. ὅς κεν ἀθανάτων τὴν (ταύτην h. e. Στόγα) ἀπολείψας (von ἀπολεῖν) ἐπομόσῃ ἐπίορχον, endlich auch und gar nicht selten in der attischen Prosa. Vgl. Plat. Soph. 251 D. ἄλλο ἄλλω μηδὲν μηδενί. Rep. VII. 515 C. σκόπει — αὐτῶν λύσιν τε καὶ ἔασιν τῶν τε δεσμῶν καὶ τῆς ἀφροσύνης. ib. 516 E. οὕτως — οἶμαι πᾶν μᾶλλον.

πεπονθέναι ἂν δέξασθαι ἢ ζῆν ἐκείνως, d. i. πᾶν πεπονθέναι μᾶλλον ἂν δέξασθαι.

Hactenus Naegelsbachius. Equidem addo haec exempla: Apol. 37 D. καλὸς ἂν μοι ὁ βίος εἴη ἐξελθόντι τηλικῶδε ἀνθρώπῳ ἄλλην ἐξ ἄλλης πόλιν πόλεως ἀμειβομένῳ καὶ ἐξελαυνομένῳ ζῆν. ibid. 34 A. ἀλλὰ τοῦτου πᾶν τούναντίον εὐρήσετε ὡς ἄνδρες πάντας ἔμοι βοηθεῖν ἐτοίμους τοῖ διαφθείροντι, τῷ κακὰ ἐργαζομένῳ τοὺς οἰκείους αὐτῶν, ὥς φασι Μέλητος καὶ Ἄνυτος. ibid. 25 D. τοσοῦτον σὺ ἔμοῦ σοφώτερος εἶ τηλικούτου ὄντος τηλικόσδε ὢν. Phileb. 57 B. σκοποῖν ἄρ' ἐστὶ τις ἐτέρας ἄλλη καθαρωτέρα ἐπιστήμης ἐπιστήμη, καθάπερ ἡδονῆς ἡδονή. Cratyl. 383 A. (Κρατύλος φησὶν) ὀρθότητά τινα τῶν ὀνομάτων πεφυκέναι καὶ Ἕλλησι καὶ βαρβάροις τὴν αὐτὴν ἅπασιν. ibid. 414 D. πολλὴ εὐπορία ἐστὶ καὶ πᾶν ἂν παντί τις ὄνομα προσαρμόσειεν. Theaet. 172 B. λόγος δὲ ἡμᾶς ὡς Θεόδωρος ἐκ λόγου μείζων ἐξ ἐλάττονος καταλαμβάνει. ibid. 183 E. συμπροσέμξα τῷ ἀνδρὶ πάνυ νέος πάνυ πρεσβύτη. Phaedr. 277 E. μεγάλης ἄξιον σπουδῆς λόγον. Politic. 271 D. τότε αὐτῆς πρῶτον τῆς κυκλήσεως ἦρχεν ἐπιμελούμενος ὅλης ὁ θεός. Rep. 8. 549 C. γίνεται δὲ γ' εἶπον οὗτος ὡδὲ πως ἐνίοτε πατρὸς ἀγαθοῦ ὢν νέος ἐν πόλει οἰκοῦντος οὐκ εὖ πολιτευομένη. ibid. 8. 559 E. ἡ πόλις μετέβαλλε βοηθησάσης τῷ ἐτέρῳ μέρει συμμαχίας ἔξωθεν ὁμοίας ὁμοίῳ. ibid. 10. 597 D. βουλόμενος εἶναι ὄντως κλίνης ποιητῆς ὄντως οὔσης. Euthyd. 299 E. χρυσίον ἐν τοῖς χρανίοις ἔχουσι πολὺ τοῖς ἑαυτῶν. Legg. I. 626 D. νῦν δὲ ὑφ' ἡμῶν ὀρθῶς ἐρρήθη τὸ παλαιόους εἶναι πάντας πᾶσι δημοσίᾳ τε καὶ ἰδίᾳ ἐκάστους αὐτοὺς σφίσιν αὐτοῖς. Apol. 32 C. οἷα δὲ καὶ ἄλλοις ἐκεῖνοι πολλοῖς πολλὰ προσέταττον. Phaedo. 93 D. Ἀλλὰ προωμολόγηται ἔφη μηδὲν μᾶλλον μηδ' ἥττον ἐτέραν ἐτέρας ψυχὴν ψυχῆς εἶναι. Lys. 214 D. τοῦτο τοίνυν αἰνίττονται οἱ τὸ ὅμοιον τῷ ὁμοίῳ φίλον λέγοντες ὥς ὁ ἀγαθὸς τῷ ἀγαθῷ μόνος μόνῳ φίλος. ibid. 216 E. τῷ ἀγαθῷ ἄρα τὸ μήτε ἀγαθὸν μήτε κακὸν μόνῳ μόνον συμβαίνει γίνεσθαι φίλον. Hipp. mai. 299 D. ἄρ' οὖν φήσει τῇδ' ἡδέος ὅτι οὖν ὅτου οὖν διαφέρει τούτῳ τῷ τῇδ' εἶναι. Divino Cobeti ingenio effectum est ut prolatis exemplis etiam hoc accederet: Euthyd. 295 E. σὺ γάρ, inquit Socrates, πάντως πού κάλλιον ἐπίστασαι διαλέγεσθαι ἢ ἐγὼ τέχνην ἔχων ἰδιώτου ἀνθρώπου. Haec verba nullam habent interpretationem quae probari possit. Quum enim ἰδιώτης hoc loco appareat esse idem quod τέχνην οὐκ ἔχων, nonne cum Cobeto mirabimur Platonem quasi dicentem τέχνην ἔχων τέχνην οὐκ ἔχοντος? Cur Plato non dixit ἰδιώτης ὢν? Quo verborum tam molestas ambages? Ne multa; hic nemo dubitare potest quin τέχνην ἔχων ad Euthydemum, ἰδιώτου ἀνθρώπου ad Socratem spectet. Qualis igitur medela loco ad-

hibenda est? Audiamus Cobetum (Mnem. vol. 9 (1860) p. 363 cl. Nov. Lect. p. 734): Apparet, inquit, ἰδιώτου ἀνθρώπου ita suspensum esse ex adverbio κάλλιον, ut praecesserit οὐ ἐμοῦ. Ultro igitur emicat haec emendatio: οὐ γὰρ πάντως ἐμοῦ κάλλιον ἐπίστασαι διαλέγεσθαι τέχνην ἔχων ἰδιώτου ἀνθρώπου et si unquam antea nunc interpolatorem ἄφύκτον ἔχομεν, qui ante saeculum nonum quum ΠΑΝΤΩΣ ΕΜΟΥ in πάντως που abiisset, stulte de suo ἢ ἐγὼ interposuit et sic se nihil intelligere ostendit." Cobetus praeter Plat. Apol. 25 B. etiam haec exempla indicavit: Rep. Lac. X, 4 ἰδιῶται ἰδιωτῶν διαφέρουσιν ἀρετῇ ἀσχοῦντες ἀμελούντων, (articulum removit Cob.) Herod. IV. 157. αἱ τὸ ἐμεῦ Λιβύαν μαλότροφον οἶδας ἄμεινον | μὴ ἐλθὼν ἐλθόντος, ἄγαν ἄγαμαι σοφίαν σευ, quibus velim addantur haec: Xen. Cyrop. V. 3. 33 πῶς δ' ἂν ἀντιβλέψαι τις τῆμῶν δύναιτο Γαδάτα, εἰ ἡττώμεθα αὐτοῦ εὖ ποιούντος τοσοῦτοι ὄντες ἐνός ἀνδρός καὶ τούτου οὕτω διακειμένου, ubi Bornemannus recte εὖ ποιούντας correxit. Euripid. Hippol. 631 γέγηθε κόσμον περιτιθεῖς ἀγάλματι | καλὸν κακίστῳ.

Sed orationem convertamus ad rem alteram de qua nobis proposuimus loqui, ad *periodi palindromiam*. Ea tum locum habet, si unde digressa est eo regreditur oratio cf. Naegelsbach. II. Exc. XIII. p. 264 adnot. ad II. α 138 et haec exempla Platonica: Rp. 8. 547 B. Στάσεως ἦν δ' ἐγὼ γενομένης εἰλχέτην ἄρα ἑκατέρῳ τῷ γένει τὸ μὲν σιδηροῦν καὶ χαλκοῦν ἐπὶ χρηματισμὸν καὶ γῆς κτῆσιν καὶ οἰκίας χρυσοῦ τε καὶ ἀργύρου, τὸ δ' αὖ, τὸ χρυσοῦν τε καὶ ἀργυροῦν, ἅτε οὐ πενομένῳ ἀλλὰ φύσει ὄντε πλουσίῳ τὰς ψυχὰς ἐπὶ τὴν ἀρετὴν καὶ τὴν ἀρχαίαν κατάστασιν ἡγέτην. Cratyl. 404 B. καὶ τό γε ὄνομα ὃ Ἄιδης ὦ Ἑρμόγενης πολλοῦ δεῖ ἀπὸ τοῦ ἀειδοῦς ἐπωνομάσθαι, ἀλλὰ πολὺ μᾶλλον ἀπὸ τοῦ πάντα τὰ καλὰ αἰεὶ εἰδέναι ἀπὸ τούτου ὑπὸ τοῦ νομοθέτου Ἄιδης ἐκλήθη. Praeterea haec collegi exempla: Lys. 209 B. οὐχοῦν ἔξεστί σοι ἐνταῦθ' ὅτι ἂν βούλῃ πρῶτον τῶν γραμμάτων γράφειν καὶ ὅτι ἂν δεύτερον. καὶ ἀναγιγνώσκειν ὡσαύτως ἔξεστι. Prot. 314 A. σιτία καὶ ποτὰ πριάμενον παρὰ τοῦ καπήλου ἔξεστιν ἐν ἄλλοις ἀγγείοις ἀποφέρειν καὶ πρὶν δέξασθαι αὐτὰ εἰς τὸ σῶμα πίνοντα ἢ φαγόντα, καταθέμενον ἔξεστι συμβουλεύσασθαι. Crito 54 B. οὔτε γὰρ ἐνθάδε σοι φαίνεται ταῦτα πράττοντι ἄμεινον εἶναι οὔδ' ἐδικαιότερον οὔδ' ἐδοσιώτερον οὔδ' ἄλλῳ τῶν σῶν οὔδενί, οὔτε ἐκεῖσε ἀφικομένῳ ἄμεινον ἔσται. Meno 72 B. ἀτὰρ ὦ Μένων κατὰ ταύτην τὴν εἰκόνα τὴν περὶ τὰ σμήνη, εἴ μου ἐρομένου μελίττης περὶ οὐσίας ὅτι ποτ' ἔστι, πολλὰς καὶ παντοδαπὰς ἔλεγεσ αὐτὰς εἶναι, τί ἂν ἀπεκρίνω μοι, εἴ σε ἡρόμην. Charm. 164 E. καὶ λέγει πρὸς τὸν αἰεῖ

εἰσιόντα οὐκ ἄλλο τι ἢ σωφρόνει φησίν. Imprimis in verbis aliorum afferendis Plato hanc periodi palindromiam frequentat cf. Protag. 345 C. ταῦτά τε οὖν πάντα πρὸς τὸν Πιπτακὸν εἴρηται καὶ τὰ ἐπιόντα γε τοῦ ἄσματος ἔτι μᾶλλον δηλοῖ. φησὶ γάρ· Τοῦνεκεν — χθονός· ἔπειθ' ὑμῖν εὐρὼν ἀπαγγελέω, φησίν. Gorg. 484 B. οὗτος (sc. ὁ νόμος) δὲ δὴ, φησίν, ἄγει δικαίων τὸ βιαιότατον ὑπερτάτα χειρὶ — ἀπριάτας — λέγει οὕτω πως. — Palindromiae ignoratione non raro deceptos esse interpretes his duobus exemplis demonstratur. Euthyd. 296 D. δῆλον ὅτι καὶ παῖς ὢν ἡπίστω καὶ ὅτ' ἐγίγνου καὶ ὅτ' ἐφύου καὶ πρὶν αὐτὸς γενέσθαι καὶ πρὶν οὐρανὸν καὶ γῆν γενέσθαι, ἡπίστω ἅπαντα εἶπερ αἰεὶ ἐπίστασαι. Ex hoc loco Badhamus prius ἡπίστω eliminare vult: ἡπίστω, inquit (Add. in Euthyd. p. 83), molestae iterationis vitandae causa expellendum censeo. At tum debuit etiam verbo γενέσθαι iterato offendi, quod egregie Heindorfius his verbis defendit: „Posterius hoc γενέσθαι quod abesse poterat, commode tamen in hoc dicentis affectu iteratur.“ Et quamquam de verbo ἡπίστω iterato idem potest dici, tamen huius repetitionis haud scio an potius haec causa sit afferenda, quod scriptor cum id ageret ut verbi ἡπίστω fines dilataret hoc verbum semel positum non idoneum esse iudicavit tam multis quasi oneribus portandis ideoque hoc verbum unde digressa erat oratio repetivit. Alter locus, in quo palindromia neglecta Badhamum in errorem induxit extat in Euthyd. p. 299 C. οὐκοῦν ἔφη καὶ ἐν τῷ πολέμῳ ἐπειδὴ ἀγαθὸν ἐστὶν ὅπλα ἔχειν, ὡς πλεῖστα δεῖ ἔχειν δόρατά τε καὶ ἀσπίδας, ἐπειδὴπερ ἀγαθὸν ἐστὶν; His extremis verbis ἐπειδὴπερ ἀγαθὸν ἐστὶν cum praecedant ἐπειδὴ ἀγαθὸν ἐστὶν offensus Badhamus non dubitavit hanc coniecturam proponere: οὐκοῦν ἔφη καὶ ἐν τῷ πολέμῳ ἐπειδὴπερ ἀγαθὸν ἐστὶν ὅπλα ἔχειν, ὡς πλεῖστα δεῖ ἔχειν δόρατά τε καὶ ἀσπίδας; Sed cf. simile exemplum Apol. 27 D. Οὐκοῦν εἶπερ δαίμονας ἡγοῦμαι, ὡς σὺ φῆς, εἰ μὲν θεοὶ τινὲς εἰσιν οἱ δαίμονες, τοῦτ' ἂν εἴη ὃ ἐγὼ φημί σε αἰνίττεσθαι καὶ χαριεντίζεσθαι θεοὺς οὐχ ἡγούμενον φάναι ἐμὲ θεοὺς αὖ ἡγεῖσθαι πάλιν, ἐπειδὴπερ γε δαίμονας ἡγοῦμαι. Etiam interrogatio habet palindromiam suam; nam si is qui interrogantis partibus fungitur, interrogationem propositam pluribus verbis subsequentibus dilucidare debet, eius verba prima ut audientis memoriae subveniat, repetere solet. Cf. Meno 71 B. ἢ δοκεῖ σοι οἷόν τ' εἶναι ὅστις Μένωνα μὴ γινώσκει τὸ παράπαν ὅστις ἐστί, τοῦτον εἰδέναι εἴτε καλὸς εἴτε πλούσιος εἴτε καὶ γενναῖός ἐστιν εἴτε καὶ τάναντία τούτων; δοκεῖ σοι οἷόν τ' εἶναι; Euthyd. p. 271 τίς ἦν ὃ Σώκρατες ὃς χθὲς ἐν Λυκείῳ διελέγου; ἢ πολὺς ὑμᾶς ὄχλος περιειστήκει — τίς ἦν; Meno, 93 B. ἢ οὐκ ἀκρίκοις ὅτι Θεμιστοκλῆς Κλεόφαντον τὸν υἱὸν ἱππέα μὲν ἐδιδάξατο ἀγα-

θόν; ἐπέμενε γοῦν — ἢ ταῦτα οὐκ ἀκήκοας τῶν πρεσβυτέρων; cf. 90 C.

§ 4.

Legentibus Euthyd. 303 C. ὧ μακάριοι σφω̃ τῆς θαυμαστῆς φύσεως, οἳ τοσοῦτον πρᾶγμα οὕτω ταχὺ καὶ ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ ἐξείργασθον *offensioni* nobis sunt verba οὕτω ταχὺ καὶ ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ. Nam cum ταχὺ idem quod ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ significet, recte dubitaveris an hic καὶ genuinum sit. Constat enim inter omnes similis significationis adverbia (vel nomina quae adverbiorum loco usurpantur) non raro ad vim notionis augendam (cf. Autenrieth ad Naegelsbachii Il. I, 99) ita copulari, ut coniunctio καὶ omittatur. Quod si fit, grammatici dicunt adverbia ἐκ παραλλήλου poni. Cf. exemplum nostro simillimum Euthyd. p. 304 A. ὥς ταχὺ ὑμᾶς ἐκ τοῦ παραχρῆμα μιμεῖσθαι οἷός τ' ἦν. Quod quum ita sit, loco supra indicato particulam καί, utpote fraude librariorum invectam, in qua miror Schleiermacherum et Cousinlum solos haessisse, quorum ille falsa vertit „so leicht und in so weniger Zeit“, hic: quel admirable talent d'achever une affaire si difficile en si peu de temps, delendam censeo. Hac de figura, cui grammatici nomen σχῆμα ἐκ παραλλήλου indiderunt, quamquam multi multa exposuerunt, cf. Stallb. ad Legg. III. 701 D. Ast. ad Legg. I. 629 A. Engelhardt ad Dial. sel. p. 22. Lübker, Grammatische Studien p. 95, Fabri-Heerwagen ad Liv. 21. 63. 9. Seyffert ad Lael. p. 282, cum Platonicus usus hoc in genere mihi non satis exploratus esse videatur, e Platone exempla congerere congestaque in ordinem redigere atque illustrare haud inutile duxi.

Saecpissime adverbia ad tempus spectantia ἐκ παραλλήλου collocantur. 1) Legg. IX. 867 A. ὁ μὲν τὸν θυμὸν φυλάττων καὶ οὐκ ἐκ τοῦ παραχρῆμα ἐξαίφνης ἀλλὰ μετὰ ἐπιβουλῆς ὕστερον χρόνῳ τιμωρούμενος ἐκουσίῳ ἔοικεν, ὁ δὲ ἀταμιεύτως ταῖς ὀργαῖς καὶ ἐκ τοῦ παραχρῆμα εὐθύς χρώμενος ἀπροβουλεύτως ὅμοιος μὲν ἀκουσίῳ, ἔστι δὲ οὐδ' οὗτος αὖ παντάπασιν ἀκούσιος, ἀλλ' εἰκὼν ἀκουσίου, ubi velim notes dictionis varietatem. Dem. de f. leg. § 42 ταῦτα τοίνυν καὶ πόλλ' ἕτερ' ἐνῆν παραχρῆμα τότε εὐθύς ἐξελέγχειν καὶ διδάσκειν ὑμᾶς. Cobetus quidem copulationem εὐθύς παραχρῆμα impugnare studet. Scribit enim Nov. Lect. p. 731: παραχρῆμα Atticum et vetus est, εὐθύς et εὐθέως remanserunt in usu. Itaque sicubi haec coniuncta esse video, suspicio subit animum vocabulo antiquo et obsoleto adscriptum esse serius illud quo omnes tum utebantur. Et similia leguntur in Mnemosyne. vol. IX (1860) p. 440: „ubi παραχρῆμα legitur, Graeculi εὐθύς vel εὐθέως adscribunt, namque quid

esset παραχρῆμα, illis temporibus vulgo ignorabatur.“ At hoc non recte dixit Cobetus, nam etiam ἐξαίφνης, ταχύ verbo παραχρῆμα adiungitur. Atque universa sententia Cobeti falsa est; nam res non in vocabulo παραχρῆμα solo sita est, quod sane videtur linguae tantum quotidianae proprium fuisse cf. Lübker l. c. p. 95. Sed hic id agitur, ut primum exquiras, num εὐθὺς παραχρῆμα omnino queat dici. Quod ubi negaveris, tum demum licebit de interpolatione cogitare. Sed εὐθὺς παραχρῆμα dici posse, nonne iam germanicum illud sogleich auf der Stelle demonstrat?

2) Etiam ad notionem „semper“ exprimendam saepe adverbiorum copulationes adhibentur. Phileb. 36 E. θαῦμα γάρ ἐμέ γ' ἔχει διὰ τέλους αἰεὶ περὶ τὰ αὐτὰ ἃ νῦν δὴ προὔθεμεθα ἀπορήματα. Tim. 38 C. ὁ δ' αὖ διὰ τέλους τὸν ἅπαντα χρόνον γεγονώς τε καὶ ὦν καὶ ἐσόμενος. Lysias 21, 19 διὰ τέλους τὸν πάντα χρόνον cf. Scheibe Lect. Lysiac. p. 368 et Rauchenstein in censura commentationis P. R. Mülleri „de emendandis aliquot locis in orat. Lys.“ (Fleckeisen, Annal. Vol. 81 (1860) p. 327.) Legg. II. 664 A. αἰεὶ διὰ βίου παντός cll. Xen. Cyrop. 8. 2. 1 διὰ παντός αἰεὶ τοῦ χρόνου. Hertlinius Fleckeis. Annal. Vol. 95 (1867) haec exempla attulit: Thuc. 4. 66. 1. αἰεὶ κατ' ἔτος ἕκαστον, ibid. II. 85. 3 καθ' ἡμέραν ἑκάστην αἰεὶ. Xen. Hell. 1. 4. 15. Soph. Oed. Col. 682 κατ' ἡμαρ αἰεὶ, quibus velim addatur καθ' ἡμέραν αἰεὶ in fragmento Sophoclis apud Cobetum Mnem. 9 (1860) p. 96. — Legg. VII. 807 E. σχεδὸν ἀρξάμενον ἐξ ἔω μέχρι τῆς ἐτέρας αἰεὶ συνεχῶς ἔω τε καὶ ἡλίου ἀνατολῆς. Fortasse etiam huc referendum est: Apol. 28. B. ἐμοῦ γάρ πολλοὶ κατήγοροι γεγόνاسι πρὸς ὑμᾶς καὶ πάλαι πολλὰ ἤδη ἔτη καὶ οὐδὲν ἀληθὲς λέγοντες. De copulatione ἑκάστοτε τὰ πολλά, cf. Hertlinium in Coniect. ad. scr. graec. Wertheim 1862 p. 23 N. — 3) ἔπειτα μετὰ τοῦτο cf. Euthyphr. 3 A. ἔπειτα μετὰ τοῦτο δῆλον ὅτι τῶν πρεσβυτέρων ἐπιμεληθεὶς πλείστων καὶ μεγίστων ἀγαθῶν αἴτιος τῇ πόλει γενήσεται. Thuc. II. 9. 1. ἔπειτα ὕστερον cum adnot. Krügeri.

Aliorum adverbiorum hae copulationes apud Platonem reperiuntur
1) ὥς ἀληθῶς τῷ ὄντι, cf. Phaedo 66 C. φλυαρίας ἐμπίπλησιν ἡμᾶς πολλῆς ὥστε τὸ λεγόμενον ὥς ἀληθῶς τῷ ὄντι ὅπ' αὐτοῦ οὐδὲ φρονῆσαι ἡμῖν ἐγγίγνεται οὐδέποτε οὐδέν. Quae huc exempla attulit Heindorfius, eorum vereor ne hoc unum in rem quadret: Lach. 183 D. τοῦτον τὸν Στησίλεων ὃν ὑμεῖς μετ' ἐμοῦ ἐν τοσούτῳ ὄχλῳ ἐθεάσασθε ἐπιδεικνύμενον καὶ τὰ μεγάλα περὶ αὐτοῦ λέγοντα ἃ ἔλεγεν ἐτέρωθεν ἐγὼ κάλλιον ἐθεασάμην ἐν τῇ ἀληθείᾳ ὥς ἀληθῶς ἐπιδεικνύμενον quocum potest apte comparari Arist. Thesm. 830 πόλλ' ἂν αἱ γυναῖκες ἡμεῖς ἐν δίκῃ μεμψαίμεθ' ἂν | τοῖσιν ἀνδράσιν δικαίως. Nam alter locus Rep. I. p. 347

D. ὁ τῷ ὄντι ἀληθινὸς ἄρχων οὐ πέφυκε τὸ αὐτῷ συμφέρον σκοπεῖσθαι ἀλλὰ τὸ τῷ ἀρχομένῳ si inde ὁ, quod „codd. mss. Bekkeri et Schneideri omnes“ omittant, expuleris et cum Richtero (Fleckeisen Annal. Vol. 95 (1867) p. 141) ἀληθινὸς scripseris, quia tum τῷ ὄντι ad πέφυκεν pertinet, nullam iam habebit adverbiorum copulationem. 2) Crito 46 D. νῦν δὲ κατάδηλος ἄρα ἐγένετο, ὅτι ἄλλως ἔνεκα λόγου ἐλέγετο ad quem locum Stallb. adnotavit: „ἄλλως i. e. temere, sine ratione explicatur formula ἔνεκα λόγου, dicis causa.“ Similes sunt hi loci: Lach. 196 B. νῦν δὲ τί ἂν τις ἐν ξυνουσίᾳ τοιαῦτα μάτην κενοῖς λόγοις αὐτὸς αὐτὸν κοσμοῖ. Apol. 17 B. ἀλλ' ἀκούσεσθε εἰκῇ λεγόμενα τοῖς ἐπιτυχοῦσιν ὀνόμασιν. Arist. Ran. 732. οἷσιν ἡ πόλις πρὸ τοῦ οὐδὲ φαρμακοῖσιν εἰκῇ ῥαδίως ἔχρησάτ' ἂν. cf. Fritzsche ad Aristoph. Thesm. 830 p. 322. 3) Saepe reperitur ἴσως τάχα vel τάχα ἴσως cuius copulationis exempla indicavit Heindorfius ad Euthyd. p. 272 C. cf. Soph. 247 D. τάχ' οὖν ἴσως ἂν ἀποροῖεν. Politic. 264 C. τάχ' ἂν ἴσως εἴης ἡσθημένος. Tim. 28 E. ἴσως τάχ' ἂν — τῆς ἀξίας τύχοι διηγήσεως. Legg. 744 A. τάχ' ἂν ἴσως. Harum particularum discrimen statuunt interpretes ut Stallb. ad Legg. I. 629 A. „τάχα est forsitan, fortasse, ἴσως autem opinor, puto“ et Shilleto ad Dem. de f. leg. § 147 p. 80 in adnot. critica: „Plerumque τάχ' ἂν, τάχα που, τάχ' ἴσως coniungunt Graeci quando τάχα fortasse valet.“ 4) παντὶ σθένει κατὰ τὸ δυνατόν. Legg. I. 646 A. χρὴ γεύεσθαι καὶ μὴ φεύγειν παντὶ σθένει κατὰ τὸ δυνατόν. Dem. 3. 6. εἰ γὰρ μὴ βοηθήσετε παντὶ σθένει κατὰ τὸ δυνατόν, θεάσασθ' ὃν τρόπον ὑμεῖς ἐστρατηγηκότες πάντ' ἔσεσθε ὑπὲρ Φιλίππου cf. Westermanni adnot. Comparari potest Rep. VI. 499 A. ξυντισταμένως ἐκ παντὸς τρόπου. cf. Rehdantz ad (Dem.) 10, 59 p. 306. 5) Saepissime occurrunt πάλιν αὖθις, αὖ πάλιν et similia. Tim. 32 A. καὶ πάλιν αὖθις. Criti. 116 A. Tim. 78 B. αὖ πάλιν. ibid. 73 C. πάλιν δὲ εἰς πῦρ αὖθις. ibid. 74 C. πάλιν αὖ. Memoratu dignus est hic locus: Arist. Nub. 975 εἰτ' αὖ πάλιν αὖθις. 6) Maxime autem memorabile est σχῆμα ἐκ παραλλήλου praepositionibus, quae nihil nisi adverbia sunt, formatum, quod tamen, ni fallor, sola coniunctione praepositionum ἀπὸ — ἔνεκα (in ἀπὸ βοῆς ἔνεκα) et praepositionum ἔνεκα et χάριν continetur, cf. Thuc. VIII. 92. 9 καὶ ὁ μὲν Θηραμένης ἐλθὼν ἐς τὸν Πειραιᾶ ὅσον καὶ ἀπὸ βοῆς ἔνεκα ὠργίζετο. Xen. Hell. II. 4. 31 ἐπεὶ δ' οὐκ ἐπείθοντο, προσέβαλλεν ὅσον ἀπὸ βοῆς ἔνεκεν. Legg. III. 701 D. τίνος δὴ χάριν ἔνεκα ταῦτα ἐλέχθη; ad quem locum Boeckhius (In Plat. Min. p. 196) tum vera tum falsa adnotavit: Quod paullo post legitur τίνος δὴ χάριν ἔνεκα, Steph. Thes. L. Gr. T. IV. p. 349 B. ait esse σχῆμα παράλληλον. Sed videtur vir Graece doctissi-

mus vim eius figurae naturamque parum habuisse perspectam; alioquin non ita esset locutus. Et omnino accurata tractatio totius capituli in libris grammaticis desideratur adhuc. Illud autem cognovi nunquam iungi duas praepositiones ἐκ παραλλήλου nisi quarum alterutra possit absque casu scribi, ita ut adverbii teneat locum quod neque χάριν potest neque ἐνεκα. Itaque delendum alterutrum. Utrum autem sit inducendum, absque libris non licet diiudicare: multa enim possunt disputari in utramque partem.⁴ Sed alter locus est, qui copulationem praepositionum ἐνεκα et χάριν habet; Polit. 302 B. enim legitur οὐ μὴν ἀλλ' εἰς γὰρ τὸ ὅλον ἴσως πάνθ' ἐνεκά τοῦ τοιούτου πάντες δρωμεν χάριν. Hoc exemplum si contulerimus cum altero supra allato, ea nulla alia re nisi collocatione differre apparebit. Nam hic una praepositio substantivum antecedit, altera subsequitur, illic duae simul praepositiones substantivo praemissae sunt. Cum vero etiam in ἀπὸ βοῆς ἐνεχεν illa collocatio extet, fortasse putaveris praepositiones ἐκ παραλλήλου non posse poni nisi eae substantivo suo diremitae sunt. Quod iudicium quominus fiat certum firmumque, obstat locorum huius usus penuria.

§ 5.

Aristophanes et Plato cum illud dicendi genus quo Attici homines urbani utebantur, nobis repraesentent, ille comoediis, hic dialogis, alterum semper cum altero comparandum atque alterum saepe ex altero interpretandum esse apparet. Hic igitur mihi in animo est duas accuratiore persequi sermone locutiones, quae Platoni et Aristophani maxime propriae sunt, quarum una verbis φλυαρσις ληρσις etc. ἔχων, altera verbis τοῦτ' ἐξεῖνo continetur. De illa locutione disputarunt Teuffel. ad Nub. 181 Cobet. N. L. p. 6, Kock. ad Ran. 202. Ruhnken ad Tim. p. 257. Deuschle et Kratz ad Gorg. 490 E. Krüger 56, 8, 4. Madvig. § 176 not. b et c. En exempla apud Aristophanem et Platonem obvia: Ran. 512 ληρσις ἔχων, ibid. 524 οὐ μὴ φλυαρήσεις ἔχων ὦ Ξανδία, ibid. 202 οὐ μὴ φλυαρήσεις ἔχων. Av. 341 τοῦτο μὲν ληρσις ἔχων. Lys. 945 ληρσις ἔχων. Plat. Gorg. 490 E. φλυαρσις ἔχων. ibid. 497 A. ὅτι ἔχων ληρσις. Euthyd. 295 C. Οὐκ ἀποκρινεῖ ἔφη πρὸς αὐτὸν ἀσὶ ὑπολαμβάνης, ὅτι ἔχων φλυαρσις καὶ ἀρχαιότερος εἰ τοῦ δέοντος. Ex his exemplis hae observationes mihi eliciendae esse videntur: 1) Huius locutionis usus Platoni et Aristophani proprius demonstrat eam e quotidiano sermone desumptum fuisse, 2) locutio non potest adhiberi nisi in verbis ληρσῖν, φλυαρσῖν, παίζειν, 3) Horum verborum secundae tantum personae cum participio ἔχων coniunguntur. 4) Cum quibus tantum locis Platoniceis participium ἔχων ver-

bum suum antegrediatur ceteris subsequatur, hanc collocationem qua ἔχων verbo postponitur, magis usitatam dices. Sed alter etiam usus cognatusque participii ἔχων in interrogatione pronomine τί instituta extat, quem haec exempla possunt dilucidare: Arist. Thesm. 852 τί κοιτύλλεις ἔχων. Eccl. 853 τί γάρ ἐστις ἔχων ἐνταῦθα. ibid. 1151 τί δῆτα διατρίβεις ἔχων. Nab. 509 τί κυπτάζεις ἔχων; ibid. 131 τί ταῦτ' ἔχων στραγγεύομαι; Thesm. 473 τί ταῦτ' ἔχουσαι καῖνον αἰτιώμεθα; Plato Phaedr. 236 E. τί δῆτα ἔχων στρέφει. His locis vides ἔχων conditionibus de quibus modo diximus non esse subiectum, sed cum omnibus omnium personarum verbis coniungi et modo verbum antegredi, modo subsequi. Hic autem usus nobis ansam praebet participium ἔχων explicandi; eius enim significatio hic aperta est τί ἔχων = in qua conditione, in quo statu versaris quod. Actio igitur ex agentis conditione ducitur. Quam interpretationem si adhibemus in locutionem ληρεῖς ἔχων, haec verba significare necesse est: nugaris cum in hac conditione verseris, cum sic te habeas vel ut uno verbo rem cum G. Hermanno declaremus, ληρεῖς ἔχων significat nugar es (cf. Naegelsbach stil. lat. § 54 ed. II.), ληρεῖς sine ἔχων nugaris.

Altera locutio quamquam a Platone et Aristophane saepissime frequentatur, tamen etiam alibi nobis occurrit legentibus veluti apud Euripidem. Sed frustra eam quaeri apud Aeschylum et Sophoclem quotidiani sermonis contemptores Kruegerus (gram. gr. II. 51, 7, 6) bene animadvertit eiusque rei hanc causam recte statuit, quod ea locutio familiare quiddam habeat, qua in re consentientem habet Bernhardy (synt. gr. p. 279). Huius locutionis usum ut cognoscamus, postquam eius vim explicavimus, varios quos ea emensa est gradus indagare atque ordine exponere necessarium est. Vis igitur copulatum verborum τοῦτ' ἐκεῖνο haec est, ut ἐκεῖνο rem antegressam aut omnibus notam indicet, τοῦτο autem eam nunc habere effectum declaret qua de re adeundi sunt Krüger. 51, 7, 4 qui haec exempla protulit Arist. Ach. 41, Euripid. Hec. 622, Orest. 804, Plato Symp. 223, A. Dem. Mid. § 59, Kühner § 629, Matthiae § 471, 11. Haec autem locutio hos habet usus: 1) ἐκεῖνο enuntiatione relativa accuratius definitur: Hipp. mai. 296 C. ἀλλ' ἄρα τοῦτ' ἦν ἐκεῖνο ὃ Ἰππία ὁ ἐβούλετο ἡμῶν ἢ ψυχὴ εἰπεῖν. Arist. Ach. 41. τοῦτ' ἐκεῖν' οὐ γὰρ λέγον εἰς τὴν προεδρίαν πᾶς ἀνὴρ ὥστίζεται. Lucian. Anach. C. 18. τοῦτ' ἐκεῖνο ἦν ἄρα ὃ ἐγὼ περὶ ὑμῶν ἤκουον τῶν Ἀθηναίων ὡς εἵητε εἰρωνες ἐν τοῖς λόγοις. (Theaet. 145 C. τοῦτ' αὐτὸ τοίνυν ἐστὶν ὃ ἀπορῶ). 2) ἐκεῖνο attributo vel apposito in clariore luce ponitur Symp. 223 A. ταῦτα ἐκεῖνα φάναι τὸν Ἀλκιβιάδην τὰ εἰωθότα. Σωκράτους παρόντος πῶν καλῶν μεταλαβεῖν ἀδύνατον ἄλλω. quocum conferri potest. Rep. I. 337 A. ὃ Ἡρά-

κλεις ἔφη αὕτη ἐκείνη ἢ εἰωθυῖα εἰρωνεία Σωκράτους. — Phaedr. 226 C. ἢ τοῦτ' ἐκεῖνό ἐστιν ἢ λόγων τέχνη ἢ θρασύμαχος τε καὶ οἱ ἄλλοι χρώμενοι σοφοὶ μὲν αὐτοὶ λέγειν γέγονασιν ἄλλους τε ποιοῦσιν οἱ ἄν' ἀωροφορεῖν αὐτοῖς ὥς βασιλεῦσιν ἐθέλωσιν. cf. Nauck. Stud. Euripid. II. 145.

3) Pronominis ἐκεῖνο rationem illustrat insequens enuntiatio vinculo carens Charm. 166 B. τοῦτό ἐστιν ἐκεῖνο · ἐπ' αὐτὸ ἦκεις ἐρευνῶν, Eurip. Hel. 622. τοῦτ' ἐστ' ἐκεῖνο · συμβεβᾶσιν οἱ λόγοι οἱ τῆσδ' ἀληθεῖς · ὦ πόθεινος ἡμέρα ἢ σ' εἰς ἐμὰς ἔδωκεν ὠλένας λαβεῖν, Arist. Ran. 318. τοῦτ' ἐστ' ἐκεῖν' ὦ δέσποθ', οἱ μεμνημένοι ἐνταῦθά που παίζουσιν οὐς ἔφραξες νῶν. Euripid. Med. 98. τόδ' ἐκεῖνο, φίλοι παῖδες · μήτηρ κινεῖ καρδίαν. Arist. Ach. 820. τοῦτ' ἐκεῖνο, ἔχει πάλιν ὄθεν περ ἀρχὰ τῶν κακῶν ἀμῖν. ἔφο. Plat. Euthyd. 296 B. Τοῦτ' ἐκεῖνο, ἔφη · ἦκει τὸ αὐτὸ παράφθεγμα. Arist. Ran. 1341 ἰὼ πόντις δαῖμον, τοῦτ' ἐκεῖν' · ἰὼ ξύνοιχοι, τάδε τέρα θεάσασθε · τὸν ἀλεκτρονῶνα μου συνάρπάσασα φρούδῃ Γλύκῃ. Cf. Vergil. Aen. 4. 675. „Hoc illud, germana, fuit. Me fraude petebas“ cum Reissigii adnotatione in Lect. lat. § 217. 4) locutionem omni explicatione nudam habes hoc loco: Phaedr. 241 D. τοῦτ' ἐκεῖνο ὦ Φαῖδρε · οὐκέτι ἂν πέρα ἀκούσαις ἐμοῦ λέγοντος, ἀλλ' ἤδη σοι πέρας ἔχεται ὁ λόγος. Hic enim formula ad orationem praecedentem referenda est „ad versum hunc quo disputationem finierat Socrates“. „Hoc illud est: (interpretatur Heindorfius) quod ante dixeram, me dithyrambos propemodum loqui.“ 5) Maiorem nobis parit molestiam locutionis usus qualis extat his locis: Symp. 210 E. πρὸς τέλος ἤδη ἰὼν τῶν ἐρωτικῶν ἐξαίφνης κατόψεται τι θαυμαστὸν τὴν φύσιν καλόν. τοῦτο ἐκεῖνο ὦ Σώκρατες οὐ δὴ ἐνεκεν καὶ οἱ ἔμπροσθεν πόνοι ἦσαν. Phaedr. 252 C. ὅμως δὲ ἢ γε αἰτία καὶ τὸ πάθος τῶν ἐρώωντων τοῦτ' ἐκεῖνο τυγχάνει ὄν. His locis si quid video, interpretes quidam persuaserunt sibi pronomina οὗτος et ἐκεῖνος inter se esse conjuncta ut αὐτὸς οὗτος, quod quamvis rarum sit, tamen e similitudine linguae latinae defensionem habere videtur, ubi „hic ille“ item (quamvis etiam raro) conjuncta sunt cf. Tac. Ann. XIV. 22 „hunc illum nomine deum destinari credebant“, et interpretationem Haasii ad Reissigii lect. lat. Not. 378^b). Sed etiam hic ἐκεῖνο ad antegressa, τοῦτο ad praesentia referendum est. Ibi τοῦτο ἐκεῖνο per se sunt accipienda, hic pro ἐστὶ aliud verbum habes simile significans cf. Arist. Pac. 289: νῦν τοῦτ' ἐκεῖν' ἦκει τὸ Δάτιδος μέλος, ὃ δεφόμενός ποτ' ἔδε τῆς μεσημβρίας. Aristophanes etiam duplicem τοῦτο eodem sensu quo τοῦτ' ἐκεῖνο adhibuit cf. Nub. 26. τοῦτ' ἐστὶ τοῦτὶ τὸ κακὸν ὃ μ' ἀπολώλεκεν. Pax. 64. τοῦτ' ἐστὶ τοῦτὶ τὸ κακὸν αὖθ' οὐγὼ λέγον. (Nub. 1052 ταῦτ' ἐστὶν αὖτ' ἐκεῖνα, ᾧ.)

— ἡ δὲ ἐν τῷ 20 ὡς ἐν τῷ 8 ἡ δὲ ἐν τῷ 25 ὡς ἐν τῷ 1 ἡ δὲ ἐν τῷ 25 ὡς ἐν τῷ 1 ἡ δὲ ἐν τῷ 25 ὡς ἐν τῷ 1

§ 6.

De formulis iuris iurandi apud oratores Atticos Rehdantzius quidem orationibus Demosthenis a se editis commentationem subiunxit plenam praeclararum observationum (cf. etiam Froberger, Lys. Vol. I. app. p. 1242 § 95), sed qui earum usum apud Platonem diligentius disquisiverit, novi neminem. Itaque exemplis Platoniceis quae formulas iuris iurandi habent congestis, has leges tibi suppedito:

Formulae iuris iurandi quae affirmationi inserviunt apud Platonem frequentissimae sunt formulae νῆ Δία et νῆ τὸν Δία, quarum illa rursus frequentior est quam haec; nam in 20 νῆ Δία cadere 8 νῆ τὸν Δία observavi (Rationem igitur habes 2,5 : 1). Earum usus est triplex: 1) Nude ponuntur ad assensum indicandum; Theaet. 178 E. νῆ Δία ὦ μέλε. Gorg. 448 A. νῆ Δία. Protag. 312 A. οὐ δέ ἦν δ' ἐγὼ πρὸς θεῶν οὐκ ἂν αἰσχύνοιο εἰς τοὺς Ἕλληνας αὐτῶν σοφιστὴν παρέχων; Νῆ τὸν Δία ὦ Σώκρατες εἴπερ γε ἂν διανοῶμαι χρὴ λέγειν. Non raro ἴσως accedit, quod affirmationem quasi mollit. Phaedr. 243 D. ἴσως νῆ Δί' ὦ Σώκρατες. Meno. 89 C. ἴσως νῆ Δία. Crat. 425 H. ἴσως νῆ Δί' ὦ Σώκρατες (Phaed. 102 A. νῆ Δία ὦ Φαίδων σιχότως γε.) 2) Assensus indicandi causa etiam cum aliis verbis vel cum universa enuntiatione hae formulae ita apud Platonem coniunguntur, ut saepius subsequantur quam antecedant. Etiam hoc velim ex exemplis observetur non raro eas exaggerationi inservire. cf. Legg. VII. 821 C. νῆ τὸν Δία ὦ εἶναι ἀληθὲς τοῦτο λέγεις. Phaedo 90 D. ubi praecedit οἰκτρὸν ἂν εἴη τὸ πάθος, respondetur νῆ τὸν Δία ἦν δ' ἐγὼ οἰκτρὸν δῆτα. Ibid. 94 E. νῆ Δία ὦ Σώκρατες ἔμοιγε δοκεῖ. Theaet. 170 D. ἦ μυρίοι ἐχάστατέ σοι μάχονται ἀντιδοξάζοντες. Θε. Νῆ τὸν Δία ὦ Σώκρατες, μάλα μυρίοι δῆτα, φησὶν Ὅμηρος. Ibid. 148 C. σμικρὸν τι αἶε εἶναι ἐξευρεῖν καὶ οὐ τῶν πάντη ἀκρῶν. Θε. νῆ τὸν Δί' ἔγωγε καὶ μάλα γε τῶν ἀκροτάτων. Euthyd. 292 E. νῆ τὸν Δία ὦ Σώκρατες εἰς πολλήν γε ἀπορίαν ὥς ἔοικεν ἀφίεσθαι. Phaedr. 263 D. εἰπέ καὶ τόδε — εἰ ὠρισάμην ἔρωτα ἀρχόμενος τοῦ λόγου Φαι. Νῆ Δί' ἀμηχάνως γε ὥς σφόδρα. Phaed. 74 B. φῶμέν τι εἶναι ἢ μηδέν; Φῶμεν μέντοι νῆ Δί' ἔφη ὁ Σιμμίας θαυμαστῶς γε. Phaed. 73 D. καὶ ἄλλα που μυρία τιαυτ' ἂν εἴη. Μυρία μέντοι νῆ Δί' ἔφη ὁ Σιμμίας. Ibid. 65 D. φαμέν τι εἶναι δίκαιον αὐτὰ ἢ οὐδέν; Φαμέν μέντοι νῆ Δία. Ibid. 106 D. παρὰ πάντων ἂν ὁμολογηθεῖη μηδέποτε ἀπόλυσθαι. Παρὰ πάντων μέντοι νῆ Δία ἔφη ἀνθρώπων τέ γε καὶ ἔτι μᾶλλον ὥς ἐγῶμαι παρὰ θεῶν. Ibid. 81 A. οὕτω φῶμεν ὦ Κέβης ἢ ἄλλως; Οὕτω νῆ Δί' ἔφη ὁ Κέβης. Ibid. 68 B. οὐ πολλὴ ἂν ἀλογία εἴη; —

Πολλή μέντοι νή Δία ἢ δ' ὅς. Crito 50 C. ταῦτα ἢ τί ἐροῦμεν; Ταῦτα νή Δί' ὦ Σώκρατες. Protag. 340 B. ταῦτόν σοι δοκεῖ εἶναι — ἢ ἄλλο; Ἄλλο νή Δί' ἔφη ὁ Πρόδικος. Rep. I. 332 A. ἄλλο δὴ τι ἢ τὸ τοιοῦτον ὡς εἰκὲ λέγει Σιμωνίδης. Ἄλλο μέντοι νή Δί' ἔφη. Euthyphr. 4 B. οὐ γὰρ οἶμά γε τοῦ ἐπιτυχόντος — ἀλλὰ πόρρω που ἤδη σοφίας ἐλαύνοντος. Πόρρω μέντοι νή Δί' ὦ Σώκρατες. Prot. 355 C. ὑπὸ τίνος; φήσει. τοῦ ἀγαθοῦ φήσομεν νή Δία. cf. Theaet. 197 A. 3) Asseverandi causa illae formulae omnino unicuique sententiae affirmativae possunt adiungi. Rep. I. 328 E. ἐγὼ σοι νή τὸν Δία ἐρῶ. Theaet. 164 A. καὶ ἐγὼ νή τὸν Δία ὑποπεύω. Apol. 35 D. μὴ οὖν ἀξιοῦτέ με ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι τοιαῦτα δεῖν πρὸς ὑμᾶς πράττειν ἄλλως τε μέντοι νή Δία πάντως καὶ ἀσεβείας φεύγοντα. ibid. 39 C. φημί γὰρ τιμωρίαν ὑμῖν ἤξειν εὐθὺς μετὰ τὸν ἐμὸν θάνατον πολὺ χαλεπωτέραν νή Δί' ἢ οἶαν ἐμὲ ἀπεκτόνατε. Euthyd. 293 B. ἐπιδείξον τοίνυν νή Δί' ἔφην ἐγὼ ἔχοντα. Cratyl. 431 E. ἴσως ἄρα νή Δί' ἔσται ὡς περ ἐν ταῖς ἄλλαις τέχναις. ibid. 408 B. νή τὸν Δία εὖ ἄρα μοι δοκεῖ Κρατύλος λέγειν. Phaedo. 60 C. νή τὸν Δία ὦ Σώκρατες εὖ γ' ἐποίησας ἀναμνήσας με. ibid. 64 AB. νή τὸν Δία οὐ πάνυ γέ με νῦν δὴ γελασσίοντα ἐποίησας γελάσαι. ibid. 96 E. νῦν δὲ δὴ ἔφη ὁ Κέρβης τί σοι δοκεῖ περὶ αὐτῶν; Πόρρω που ἔφη νή Δί' ἐμὲ εἶναι. Protag. 340 B. καὶ ἐγὼ εἶπον. Νή τὸν Δία, εἰς καιρόν γε παρατετύχηκεν ἡμῖν ἐν τοῖς λόγοις Πρόδικος ὅδε. Euthyd. 305 C. ἀλλ' ἐπαίειν αὐτόν φασι περὶ τοῦ πράγματος νή τὸν Δία κτλ.

Non tam saepe quam νή τὸν Δία et νή Δία (ratio 1 : 4) formula νή τοὺς θεοὺς ad sententiam confirmandam usurpatur. Quo in usu hae leges a Platone observatae esse videntur; primum a formula νή τοὺς θεοὺς semper sententia incipit; deinde formula sere recipit particulam γε, sed ita ut non violetur Porsoni praeceptum notissimum: „Post ius iurandum quallia sunt νή Δία, νή τὸν Δία, μὰ Δία, οὐ μὰ Δία, νή τὸν Ἀπόλλω ut cetera huius modi numquam sequitur particula γέ nisi alio vocabulo interposito“ cf. Cobet N. L. p. 551 Kock ad Eq. 698. Lys. 205 B. νή τοὺς θεοὺς, ἔφη ὁ Κτήσιππος, πάνυ γε. Prot. 310 C. νή τοὺς θεοὺς, ἐσπέρας γε. Lach. 197 A. νή τοὺς θεοὺς καὶ εὖ γε λέγεις. Phaedo. 88 C. νή τοὺς θεοὺς ὦ Φαίδων συγγνώμην γε ἔχω ὑμῖν. Gorg. 491 A. νή τοὺς θεοὺς, ἀτεχνῶς γε αἰεὶ σκυτέας τε καὶ κναφέας — λέγων οὐδὲν παύει. Protag. 310 D. καὶ γελάσας, Νή τοὺς θεοὺς ἔφη ὦ Σώκρατες, ὅτι γε μόνος ἐστὶ σοφός, ἐμὲ δὲ οὐ ποιεῖ. Unus contrarius locus superest: Theaet. 155 C. καὶ νή τοὺς θεοὺς γε ὦ Σώκρατες ὑπερφυῶς ὡς θαυμάζω, unde γε eliminandum esse videtur. Accuratiore notitia digni sunt etiam hi loci: Euthyd. 298 E. καὶ ὁ Κτήσιππος γελάσας, Νή τοὺς

θεούς. ἔφη . οὐ γὰρ δύναμαι σε, de quo usu velim conferas Legg. IV. 715 D. ναὶ μὰ Δί' ὦ ξένη· καθ' ἡλικίαν γὰρ οὐδὲ βλέπεις. Lys. 206 B. οὐ μὰ τὸν Δία, πολλή γὰρ ἂν ἀλογία εἴη. Rep. II. p. 374 E. μὰ Δία ἤν' ὀξέω οὐκ ἄρα φαῦλον πρᾶγμα ἡράμεθα. ibid. 376 D. μὰ Δία ἤν' ὀξέω οὐκ ἄρα ἀφετέον et Gorg. p. 481 C. νῆ τοὺς θεούς ἀλλ' ἐπιθυμῶ qui locus habet consimilem in eodem dialógo p. 463 D. μὰ τὸν Δία ὦ Σώκρατες ἀλλ' ἐγὼ οὐδὲ αὐτὸς συνίημι ὅτι λέγεις.

Jus iurandum mulierum affirmans νῆ τὴν Ἥραν cum et apud Xenophontem et apud Platonem Socrati attribuitur, inde id eum frequentasse in his sermonibus concludendum est. cf. Breitenbach ad Xen. Comm. I. 5. 5. Huius usus haec e Platone exempla enotavi : Gorg. 449 D. νῆ τὴν Ἥραν ὦ Γοργία ἄγαμαί γε τὰς ἀποκρίσεις ὅτι ἀποκρίνεις ὡς οἶόν τε διὰ βραχυτάτων. Phaedr. 230 B. νῆ τὴν Ἥραν, καλή γε ἡ καταγωγὴ. Apol. 24 E. Εὖ γε νῆ τὴν Ἥραν λέγεις. Theaet. 154 D. Εὖ γε νῆ τὴν Ἥραν ὦ φίλε καὶ θείως. Lach. 181 A. Εὖ γε νῆ τὴν Ἥραν ὦ Σώκρατες ὅτι ὀρθοῖς τὸν πατέρα.

Aliud ius iurandum quo Socrates usus esse videtur, est νῆ τὸν κύνα de quo cf. hoc scholion ad Apol. 21 E. νῆ τὸν κύνα] Ῥαδαμάνθυος ὅρκος οὗτος ὁ κατὰ κύνους ἢ χηνούς ἢ πλατάνου ἢ κριοῦ ἢ τινος ἄλλου τοιούτου.

οἷς τὴν μέγιστος ὅρκος ἅπαντι λόγῳ κύων,
ἔπειτα χήν, θεοὺς δ' ἐσείγων,

Κρατῖνος Χείρῳσι . κατὰ τούτων δὲ νόμος ὀμνύναι, ἵνα μὴ κατὰ θεῶν αἱ ὅρκοι γίνωνται . τοιούτοι δὲ καὶ οἱ Σωκράτους ὅροι. Gorg. 469 C. νῆ τὸν κύνα, ἀμφιγνοῶ μέντοι. Charm. 172 E. νῆ τὸν κύνα ἔφην καὶ ἐμοί τοι δοκεῖ οὕτω. Cratyl. 411 B. καὶ μὴν νῆ τὸν κύνα δοκῶ γέ μοι οὐ κακῶς μαντεύεσθαι. Phaedr. 98 E. ἐπεὶ νῆ τὸν κύνα πάλαί ἂν ταῦτα τὰ νεῦρά τε καὶ ὅσα ἡ περὶ Μέγαρα ἢ Βουωτοῦς ἦν. Rep. 3. 399 E. Καὶ νῆ τὸν κύνα λεληθάμεν γε. Phaedr. 228 B. εἰς περίπατον ἦει ὡς μὲν ἐγὼ οἶμαι νῆ τὸν κύνα ἐξεπιστάμενος τὸν λόγον. Lys. 211 E. οἶμαι δὲ νῆ τὸν κύνα μᾶλλον. Accedit Apol. 22 A. καὶ νῆ τὸν κύνα ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι . δεῖ γὰρ πρὸς ὑμᾶς τἀληθὴ λέγειν . ἢ μὴν ἐγὼ ἐπαθόν τι ποιῶντα οὗτον qui locus ideo valde memorabilis est, quod propter interpositam sententiam formulam νῆ τὸν κύνα formula ἢ μὴν excepit (cf. Lehrs. Vers. Phaedri. p. 142.)

Prorsus singulare ius iurandum legimus Politic. 257 B. εὖ γε νῆ τὸν ἡμέτερον θεόν ὦ Σώκρατες τὸν Ἄμμωνα καὶ δικαίως, καὶ πάντο μὲν οὖν μνημονικῶς ἐπέπληξας μοι τὸ περὶ τοὺς λογισμοὺς ἀμάρτημα.

Particulae *νῆ* contraria est particula *μά*; illa enim est affirmantis, haec negantis. Sed adposita particula *ναί* negatio eximitur particulae *μά* veluti in *ναί μά Δία*. Hanc autem formulam quae raro tantum articulum accipit (11. : 1) Plato imprimis frequentasse videtur in responsionibus antegressa exaggerantibus, veluti Lys. 211 B. *ναί μά Δία σφόδρα γε*. Euthyd. 284 D. *ναί μά Δία, σφόδρα γε*. Hipp. min. 365 E. *ναί μά Δία, λίαν γε*. Rep. I. 339 E. *ναί μά Δία, σαφέστατά γε*. Euthyd. 291 A. *ναί μά Δία ὦ Σώκράτες τῶν κρειττόνων μέντοι τις ἐμοὶ δοκεῖ, καὶ πολὺ γε*. Gorg. 489 E. *ἀλλὰ ναί μά Δία τούτους λέγων καὶ σφόδρα γε*, ubi vides adverbia augmenta. Simili modo prae formulae accedit his duobus locis: Meno 90 E. *ναί μά Δία ἔμοιγε καὶ ἀμαθία γε πρὸς*. Gorg. 518 B. *εἰ μέλλεις τι γήσιον ἀπεργάζεσθαι εἰς φιλίαν τῷ Ἀθηναίων δήμῳ καὶ ναί μά Δία τῷ Πυριλάμπους γε πρὸς*. Etiam universa enuntiatione gradatio illustratur cf. Euthyd. 279 C. ubi Socrates Cliniam qui se nullum memorabile bonum putat omisisse, his verbis adloquitur *ναί μά Δία, κινδυνεύομέν γε τὸ μέγιστον τῶν ἀγαθῶν παραλιπεῖν*. ibid. 307 B. *ναί μά τὸν Δία, καὶ μάλα ἀληθῆ λέγεις*. Lys. 207 E. *ναί μά Δί' ἐμέ γε ὦ Σώκράτες καὶ μάλα γε πολλὰ κωλύουσιν*. Singularis est formulae usus his locis duobus dialogi: Gorg. 473 E. ubi ea sola responsum efficitur, et 483 E. ubi eam mediae orationi interpositam habemus: *οὗτοι κατὰ φύσιν ταῦτα πράττουσι καὶ ναί μά Δία κατὰ νόμον γε τὸν τῆς φύσεως*.

Ut particulae *νῆ* et *μά* inter se sunt oppositae, ita *ναί μά* et *οὐ μά*; nam *νῆ* et *ναί μά* affirmationem indicant, *μά* et *οὐ μά* negationem. Atque ut in affirmatione *ναί μά Δία*, sic in negatione *οὐ μά Δία* saepissime usurpatur. Sed aliquod discrimen in usu harum inter se oppositarum formularum statuendum est; nam *ναί μά Δία* raro articulum recipit, *οὐ μά Δία* raro articulum abicit (ratio exemplorum cum articulo et sine articulo circa 100 : 53). Praeterea has leges usus formulae *οὐ μά* habere videtur: 1) ea responsum negans efficit: Meno. 83 B. *οὐ μά Δία* (cuius solitarii usus apud Platonem nullum aliud exemplum novi). Apol. 26 E. *οὐ μέντοι μά Δί' τοῦδ' ὅπωςτιον*. 2) Enuntiatio formula adiecta negationem fortem accipit: Euthyd. 295 C. *οὐ τοίνυν μά Δία ἀποκρινοῦμαι πρὶν ἂν πύθωμαι*. Meno. 92 B. *οὐδὲ μά Δία ἔγωγε συγγέγονα πώποτε αὐτῶν οὐδενί*. Rep. I. 370 A. *οὐδέν ἦν δ' ἐγὼ μά Δί' ἄτοπον*. Apol. 17 B. *ὁμεῖς δ' ἐμοῦ ἀκούσαθε πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν, οὐ μέντοι μά Δί' ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, κεκαλλιεπημένους ἔγε λόγους*. Hic vides formulam ad notionem λόγους pertinere. 3) Saepissime fit ut etsi formula iis quae neganda sunt praemissa est, tamen etiam negatio accedat. cf. Madvig. gr. gr. § 209 Not. 2. Krüger gr. gr. § 67, 11, 3. Lys. 218 C. *οὐ μά τὸν Δία,*

οὐ πάνυ εὐπορῶ ἔγωγε. Lach. 190 E. οὐ μὰ τὸν Δία ὦ Σώκρατες, οὐ χαλεπὸν εἰπεῖν. Theaet. 142 D. οὐ μὰ τὸν Δία, οὐκ οὐν γε ἀπὸ στόματος. Rep. III. 390 C. Οὐ μὰ τὸν Δία ἢ ὁδὸς οὐ μοι φαίνεται ἐπιτήδειον. Legg. 814 B. Οὐ μὰ τὸν Δία ὦ ξένε, οὐδαμῶς εὐσχημον γίγνεται ἄν. Meno 82. A. Οὐ μὰ τὸν Δία ὦ Σώκρατες οὐ πρὸς τοῦτο βλέψας εἶπον, ἀλλ' ὑπὸ τοῦ ἔθους. Cratyl. 401 B. οὐ μὰ τὸν Δία οὐδὲ τοῦτο οἶμαι ῥάδιον εἶναι. Rep. II. 378 B. οὐ μὰ τὸν Δία ἢ ὁδὸς οὐδὲ αὐτῷ μοι δοκεῖ ἐπιτήδεια εἶναι λέγειν. Crito. 43 B. οὐ μὰ τὸν Δί' ὦ Σώκρατες οὐδ' ἄν αὐτὸς ἤθελον ἐν τῷσδε ἀγροσπνία καὶ λύπῃ εἶναι. 4) *Fréquens est copulatio formulae cum ἀλλά quod, cum formula aliquid eorum quae praecesserunt negatum sit, rem veram apponit.* Symp. p. 173 A. ἀλλὰ τίς σοι διηγεῖτο, ἢ αὐτὸς Σωκράτης; Οὐ μὰ τὸν Δία, ἣν δ' ἐγώ, ἀλλ' ὅσπερ Φοῖνιχι. Cratyl. p. 386 B. οὐ μὰ τὸν Δία ἀλλὰ πολλάκις δὴ αὐτὸ πέπονθα. Meno. 95 B. οὐ μὰ τὸν Δία ὦ Σώκρατες ἀλλὰ τότε μὲν ἄν αὐτῶν ἀκούσας ὥς διδασκόν, τότε δὲ ὥς οὔ. Phaedr. 261 B. ἢ πῶς οὐ ταῦτ' ἀνέχεαι; Οὐ μὰ τὸν Δί' οὐ παντάπασιν οὕτως ἀλλά. Theaet. 196 A. ἢ πάντες λέγουσιν τε καὶ οἶονται δώδεκα αὐτὰ εἶναι; Οὐ μὰ τὸν Δία ἀλλὰ πολλοὶ δὴ καὶ ἑνδεκα. Rep. I. 350 E. καίτοι τί ἄλλο βούλει; Οὐδὲν μὰ Δία ἣν δ' ἐγώ, ἀλλ' εἴπερ τοῦτο ποιήσεις, ποίει. *ibid.* 334 B. Οὐ μὰ τὸν Δί' ἔφη ἀλλ' οὐκέτι οἶδα ἔγωγε ὅτι ἔλεγον. τοῦτο μέντοι ἔμοιγε δοκεῖ εἶναι. κ. τ. λ.

Saepius quam οὐ μὰ τὸν Δία apud Platonem legitur μὰ Δία. Hanc formulam plerumque negatio insequitur; nam sine ea haec pauca tantum exempla reperi: Euthyd. 292 A. ἴσως οὐ πάνυ γ' εὐπορεῖς. Μὰ τὸν Δία ὦ Σώκρατες Apol. 26 D. οὐδὲ ἥλιον οὐδὲ σελήνην ἄρα νομίζω θοὺς εἶναι ὥσπερ οἱ ἄλλοι ἄνθρωποι; Μὰ Δί' ὦ ἄνδρες δικασταί· ἐπεὶ τὸν μὲν ἥλιον λίθον φησὶν εἶναι, τὴν δὲ σελήνην γῆν. Phileb. 36 A. πότερον ἀλγοῦνθ' ὅλως ἢ χαίροντα (φῶμεν); Μὰ Δί', ἀλλὰ διπλῇ τινὶ λύπῃ λυπούμενον. Euthyd. 293 C. ἀλλ' οὐκ ἀνάγκη σε ἔχει πάντα ἐπίστασθαι ἐπιστήμονά γε ὄντα; Μὰ Δί' ἔφη ἐγώ. Cum negatione vero plerumque responsio negativa hac formula formatur. Pronomen personale ut in responsione affirmanti, sic etiam hic saepe adiungitur veluti μὰ Δί' οὐκ ἔγωγε quod legitur Charm. 173 D. 167 D. Lys. 208 E. Phaedo. 103 D. Euthyd. 293 C. Lach. 192 E. Symp. 202 C. Meno. 96 B. Euthyphro 13 C. (bis). Cratyl. p. 392, 409 E. Theaet. 162 C. 190 C. 207 D. 154 A. Rep. III. 386 B, 400 C. Rep. X. 608 D. Μὰ Δί' οὐκ ἔμοιγε extat.: Lys. 207 E. Gorg. 511 C. Symp. 206 A. Cratyl. 428 A.; Μὰ Δί' οὐ σύ γε Cratyl. 393 B; μὰ Δί' ἣν δ' ἐγώ μὴ σύ γε Rep. I. 345 B; μὰ Δί' οὐδέ γε σὺ ἐξ ὧν ὁμολόγεις Gorg. 516 D. (Lach. 193 D. Καλῶς οὖν σοι δοκούμεν λέγειν; Μὰ τὸν Δί' ὦ Σώκρατες, ἐμοὶ μὲν οὔ.) Alia nomina accedunt in his

exemplis: Euthyd. 290 E. μὰ Δί' οὐ μέντοι. Gorg. 470 E. μὰ Δί' οὐ δῆτα. Meno. 93 E. ἴσως μὰ Δί' οὐ. Cratyl. 403 D. μὰ Δί' οὐδ' ὅπως (Rép. II. 375 B. μὰ Δία ἢ δ' ὅς οὐ ῥαδίως). Etiam ad universam enuntiationem negandam formula adhibetur cf. hosce locos Lys. 210 D. Μὰ Δία ἔφη ὦ Σώκρατες οὐ μοι δοκεῖ. Theaet. 207 E. μὰ Δί' οὐ τοίνυν ἀμνημονῶ οὐδέ γε πῶ ἡγούμαι. Lys. 204 A. μὰ Δία ἦν δ' ἐγὼ οὐ φαυλός γε ἀνὴρ, ἀλλ' ἱκανὸς σοφιστής. Lys. 208 A. οὐκ ἂν ἐφ' ἐν σε ἀλλὰ διακωλύοιεν; Μὰ Δί' οὐ μέντοι ἂν ἔφη ἐφ' ἐν. 208 D. καὶ ὅς γελάσας, Μὰ Δία ἔφη ὦ Σώκρατες οὐ μόνον γε διακωλύει ἀλλὰ καὶ τυπτοίμην ἂν εἰ ἀπταίμην. Philob. 34 E. Μὰ Δί' οὐ ῥαδίον ἴσως εἰπεῖν. Prot. 312 E. Μὰ Δί' ἔφη οὐκέτι ἔχω σοι λέγειν. Vellim observes loquentem ad oppositionem indicandam non raro, ἀλλὰ formulae praemittere cf. Lys. 216 C. Πῶς ἢ δ' ὅς λέγειν; Ἀλλὰ μὰ Δία ἦν δ' ἐγὼ οὐκ οἶδα. Gorg. 503 B. ἀλλὰ μὰ Δί' οὐκ ἔχω ἔγωγε σοι εἰπεῖν. 498 D. Ἀλλὰ μὰ Δί' οὐκ οἶδ' ὅτι λέγεις. Meno. 84 D. Ἀλλὰ μὰ τὸν Δία ὦ Σώκρατες ἔγωγε οὐκ οἶδα. Theaet. 181 F. ἀλλὰ μὰ Δί' ἔγωγε οὐκ ἔχω εἰπεῖν. 185 D. ἀλλὰ μὰ Δία ὦ Σώκρατες ἔγωγε οὐκ ἂν ἔχοιμι εἰπεῖν. ibid. 200 C. ἀλλὰ μὰ Δία ὦ Σώκρατες ἔγωγε οὐκ ἔχω τὴν χρὴ λέγειν. Rep. III. 400 A. ἀλλὰ μὰ Δί' ἔφη οὐκ ἔχω λέγειν. (Gorg. 463 DE. μὰ τὸν Δία ὦ Σώκρατες ἀλλ' ἐγὼ οὐδὲ αὐτὸς συνίημι ὅτι λέγεις. Rep. I. 345 E. Μὰ Δί' οὐκ ἔφη ἀλλ' εὖ οἶδα). Ex his exemplis porro licet videre articulum formulae μὰ Δία per raro adroni.

Aliae minus usitatae formulae iurisiurandi sunt hae: 1) μὰ τὸν κύνα. Gorg. 482 B. εἰ τοῦτο εἴσαις ἀνέλεγκτον, μὰ τὸν κύνα τὸν Αἰγυπτίων θεόν, οὐ σοι ὁμολογήσει Καλλικλῆς ὦ Καλλίκλεις, ἀλλὰ διαφωνήσει ἐν ἅπαντι πῶ βίω. 461 B. ταῦτα οὐκ ὅπῃ ποτὲ ἔχει, μὰ τὸν κύνα ὦ Γοργία οὐκ ὀλίγης συναυσίας ἐστίν, ὥστε ἱκανῶς διασκέψασθαι. 2) μὰ τὸν Ποσειδῶ. Symp. 214 D. μὰ τὸν Ποσειδῶ, μηδὲν λέγε πρὸς ταῦτα. 3) per iocum μὰ τὸν Ζῆθον. Gorg. 489 E. εἰρωνεύει ὦ Σώκρατες. Μὰ τὸν Ζῆθον ὦ Καλλίκλεις ὦ σὺ χρώμενος πολλὰ νῦν δὴ εἰρωνεύου πρὸς με. 4) solempne iurisiurandum extat Symp. 219 CD. εὖ γάρ ἴστε μὰ θεούς, μὰ θεάς, οὐδὲν περιττότερον, καταδεδαρθηχώς, ἀνέστην μετὰ Σωκράτους ἢ εἰ μετὰ πατρὸς καθηῦδον ἢ ἀδελφοῦ πρεσβυτέρου. 5) ellipsis iurisiurandi hoc loco extat: Gorg. 466 E. ἐγὼ οὐ φημι; φημι μὲν οὖν ἔγωγε Σω. Μὰ τὸν — οὐ σὺ γε, ἐπεὶ τὸ μέγα δύνῃσθαι ἔφης ἀγαθὸν εἶναι τῷ δυναμένῳ. cf. scholion ad Aristoph. Ran. 1374 μὰ τὸν! ἑλλειπτικῶς ὁμνύει καὶ οὕτως ἔθος ἐστὶν ἀρχαίοις, ἐνίοτε μὴ προστιθέναι τὸν θεὸν εὐλαβείας χάριν. εἰώθασιν δὲ τοῖς τοιούτοις ὕμνοις χρῆσθαι ἐπευφημιζόμενοι ὥστε εἰπεῖν μὰ τὸν ὄνομα εἰς μὴκέτι προσθῆναι καὶ Πλάτωνα δὲ τῷ τοιούτῳ κεχρησθαι.

Platonem hic philosophum intellegi recte statuit Fritzsche in adnotatione ad hunc locum.

Restat ut frequentis commutationis particularum $\nu\alpha\iota$ et $\mu\alpha$ in libris manu scriptis mentionem faciamus. cf. Cobet N. L. p. 651. „Saepius scribae $\nu\eta$ Δία et $\mu\alpha$ Δία aliud agentes inter se confuderunt.“ Cuius erroris hoc exemplum apud Platonem mihi deprehendisse videor. Socrates quaerit e Critone Euthyd. 305 B. $\pi\acute{o}\tau\epsilon\rho\omicron\nu$ τῶν ἀγωνίσασθαι δεινῶν ἐν τοῖς δικαστηρίοις, ῥήτωρ τις ἢ τῶν τοὺς τοιούτους εἰσπεμπόντων, ποιητῆς τῶν λόγων, οἷς οἱ ῥήτορες ἀγωνίζονται; Crito autem respondet Ἥκιστα $\nu\eta$ τὸν Δία ῥήτωρ, οὐδὲ οἶμαι πώποτ' αὐτὸν ἐπὶ δικαστήριον ἀναβεβηχέναι. Cum igitur Crito oratorem eum fuisse neget, id quod tum ex adposito ἥκιστα tum ex adiuncta enuntiatione elucet, $\nu\eta$ τὸν Δία hic locum habere nequit mutandumque est in $\mu\alpha$ τὸν Δία. Idem vitium Legg. XII. 965 E.

In commentationibus Platonicis (ann. 1868 editis) formulam πρὸς θεῶν similesque tractavimus vocativis additas; hic alios usus earum tangere necessarium est. Saepe imperativus tales formulas adsumit cf. Euthyphr. 5 C. $\nu\acute{\upsilon}\nu$ οὖν πρὸς Διὸς λέγε μοι. 6 B. ἀλλὰ μοι εἰπέ πρὸς Φιλίου. ibid. 13 E. εἰπέ δὴ πρὸς Διός. Theaet. 161 A. ἀλλὰ πρὸς θεῶν εἰπέ. Phaedr. 234 E. εἰπέ πρὸς Διὸς φίλου. Gorg. 460 A. καὶ πρὸς Διός — ἀποκαλύψας εἰπέ. ibid. 500 B. καὶ πρὸς Φιλίου — μήτε αὐτὸς οἷου δεῖν πρὸς ἐμὲ παίζειν μήτε ἀποκρίνου. ibid. 519 E. εἰπέ πρὸς Φιλίου. Euthyd. 273 D. καὶ πρὸς θεῶν εἰπτόν μοι. Legg. 720 E. φέρε δὴ πρὸς θεῶν. Phaed. 93 B. φέρε δὴ πρὸς Διός. Theaet. 209 A. φέρε δὴ πρὸς Διός. Gorg. 514 D. φέρε πρὸς θεῶν. Sed formulae etiam affirmantis propriae sunt id quod demonstratur his locis: Soph. p. 234 A. φημί καὶ πρὸς γε θαλάττης καὶ γῆς καὶ οὐρανοῦ καὶ τῶν ἄλλων συμπαντων. Theaet. 152 C. ἄρ' οὖν πρὸς Χαρίτων πάσσοφός τις ἦν ὁ Πρωταγόρας. Phileb. 54 B. πρὸς θεῶν ἄρ' ἂν ἐπανερωτῶής με. Soph. 253 C. ἢ πρὸς Διὸς ἐλάθομεν εἰς τὴν τῶν ἐλευθέρων ἐμπεσόντες ἐπιστήμην. Gorg. 514 E. πρὸς Διὸς ὦ Καλλίχλεις οὐ καταγέλαστον ἂν ἦν τῇ ἀληθείᾳ. Phaedo. 103 A. πρὸς θεῶν οὐχ ἐν τοῖς πρόσθεν ἡμῖν λόγοις ὠμολογεῖτο. De vi atque significatione huius formulae cf. Naegelsbach ad II. I. 338. Krüger § 68, 37, 2.

§ 7.

Nemo non novit locutionem illam Sophoclis maxime propriam, εὖ οἶδα καὶ οὐχ εἰχάζω (Alcib. 105 C.), cui loco velim etiam addantur hi: Gorg. p. 452 E. ὁ δὲ χρηματιστῆς αὐτός ἄλλω ἀναφανήσεται χρηματιζόμενος καὶ οὐχ αὐτῷ. Phaedr. 234 D. δοκῶ γάρ σοι παίζειν καὶ οὐχὶ ἐσπουδαχέναι.

Euthyd. 283 B. διὰ ταῦτα προσεκαιρότην τε καὶ οὐκ ἐσπουδάσάτην.
Xen. Symp. IV. § 28 (Cob. N. L. p. 628) οὗτοι μὲν δὴ οὕτως ἐσκόψαν
τε καὶ οὐκ ἐσπουδάσαν. Politic. p. 802 A. μόνιμοί τε εἰσι καὶ οὐκ ἀνα-
τρέπονται. Sed Plato eam imprimis in imperativo adhibuisse videtur, qua
de re haec observavi:

a) Interdum fit apud Platonem ut iubenti imperativo ad vim eius
augendam addatur μὴ φθονήσης. Men. 71 D. εἰπον καὶ μὴ φθονήσης.
Prot. p. 320 C. μὴ φθονήσης ἀλλ' ἐπίδειξόν. (Hipp. min. 372 E. σὺ οὖν
χάρισαι καὶ μὴ φθονήσης ἰάσασθαι τὴν φοχὴν μου). Cum hoc usu verbi
φθονεῖν comparandus est usus substantivi φθόνος, quem haec exempla
possunt illustrare: Soph. 217 B. φθόνος οὐδεὶς οὐδὲ χαλεπὸν εἰπεῖν. Phaedo
61 D. ἃ μὲν οὖν τυγχάνω ἀκηχοῦς, φθόνος οὐδεὶς λέγειν (Soph. 248 A.
ἐκεῖνο δὲ ἀνεπίφθονον ἀποφήνασθαι).¹⁾

b) Praeter μὴ φθονήσης etiam saepius μὴ ἄλλως ποιεῖ imperativo
adiungitur, ut vis eius magis eluceat. cf. Crito 45 A. ἀλλ' ἐμοὶ πείθοο
καὶ μὴ ἄλλως ποιεῖ. Ibid. 46 A. ἀλλὰ παντὶ τρόπῳ ὧς Σωκράτης πείθου
μοι καὶ μηδαμῶς ἄλλως ποιεῖ. Phaedo 117 A. ἀλλ' ἴθι πείθοο καὶ μὴ
ἄλλως ποιεῖ. Rep. I. 328 A. ἀλλὰ μένετε καὶ μὴ ἄλλως ποιεῖτε (Parm.
136 E. Ταῦτα δὴ εἰπόντος τοῦ Ζήνωνος, ἔφη ὁ Ἀντιφῶν φάναι τὸν Πυ-
θόδωρον, αὐτὸν τε δεῖσθαι τοῦ Παρμενίδου καὶ τὸν Ἀριστοτέλη καὶ τοὺς
ἄλλους ἐνδείξασθαι ὃ λέγοι καὶ μὴ ἄλλως ποιεῖν.) Symp. 173 E. μὴ
ἄλλως ποιήσης ἀλλὰ διήγησαι. Hipp. min. 373 C. καὶ μηδαμῶς γε ὧς
Ἰππία ἄλλως ποιεῖ ἀλλὰ καὶ ἡμῶν ἕνεκα καὶ τῶν προσεβημένων σοὶ λόγων
ἀποκρίνοο ἃ ἂν σε ἐρωτᾷ Σωκράτης. (Rep. II. 369 B. Ἐσχεπτὰ ἔφη ὁ
Ἀδείμαντος ἀλλὰ μὴ ἄλλως ποιεῖ).

Rep. I. 338 A. μὴ ἄλλως ποιεῖ καὶ μὴ φθονήσης καὶ Γλαῦκωνα
τόνδ' διδάξει καὶ τοὺς ἄλλους habes utramque locutionem conjunctam.

c) ut μὴ φθονήσης et μὴ ἄλλως ποιεῖ, ita etiam adhibetur μὴ ἀμα-
λήσητε hoc loco: Phaedo 118 A. ἀλλ' ἀπόδοτε καὶ μὴ ἀμαλήσητε.²⁾

¹⁾ cf. Rep. 427 A. ἀλλὰ λίγῃ καὶ μὴ διάτριβι coll. 503 B. ὅτις εἰπὼν τὰς ἐν ἀπο-
τελευτήμασι.

²⁾ Ad disputationem progredendam saepenumero Socrates alterum verbis μὴ ἀπο-
κάμης aloquitur cf. Rep. IV. 435 DE μὴ τοῖσιν ἀποκάμης ἀλλὰ σκόπει. Alcib. I. 126
E. μὴ κάμης ἀποκρινόμενος ἀλλὰ προθυμοῦ εἰπεῖν. Prot. 333 B. ἴθι δὴ ἣν δέγω ἢ Πρω-
ταγόρα μὴ ἀποκάμωμεν, ἀλλὰ καὶ τὰ λοιπὰ διασκεψόμεθα. Cratyl. 428 A. εἰ οὖν καὶ
σμικρὸν τι ὅς τ' εἰ πλέον ποιῆσαι, μὴ ἀποκάμης ἀλλ' εὐεργέτης καὶ Σωκράτης τόνδ', δικαίως
δέεις καὶ ἐμὲ.

1) Ὅτιον τριῶν γένερων ἑκάστης ἑκαστὴν ἔχει ἄλλο ἐναντίον αὐτῆς ἰσὺς τῆς αὐτῆς ἢ ἡμεῖς οὐκ οἴομεν ὅτι αἱ ἀνωτέρω ἀποδείξεις αὐτῆς ἰσχυρὰν ἀποδείξιν παρέχουσιν. 2) μὴ φθονήσης ἀλλὰ χαρίζου. 3) μὴ ἄλλως ποιεῖς, ἀλλ' οὕτως. 4) μὴ ἀμέλει ἀλλὰ ποιεῖς.

Q. 8.

E studio assimilandi cum multa alla vltia nata sunt tum etiam hoc
 quod imperfecti et aoristi copulatio non raro a librariis et editoribus sublata
 est veluti hoc loco: Euthyd. 275 D. ἤρυνθρίας τε καὶ ἀπορήσας ἔβλεπεν
 εἰς ἐμέ. Bekker. in comment. critic. adnot. ἔβλεψεν Or, ἔβλεπεν Bodl.
 ἀνέβλεψεν Γ, ἐνέβλεψεν reliq. cum edit. Steph. Herm. recep. Bodleiani
 scripturam, Bekk. Ast. Stallb. Winckelm. Turic. Hirsch. Badb. tenent
 ἔβλεψεν qua in re Vaticanum secuti esse videntur. Falso; nam collatio
 codicis Vaticani in usum meum a Francisco Ruehlio secundum editionem
 Hermannii facta nullam habet adnotationem, ita ut etiam Vaticanus imper-
 fectum habere putandus sit. Inde vides nullum iam aoristi ἔβλεψεν praesi-
 dium posse peti e meliorum librorum auctoritate. Neque vero hoc loco
 βλεπεν repugnat imperfecti aut rationi aut usui. Nam aoristo ἤρυνθρίας
 quod factum est narratur, imperfecto ἔβλεπεν quod tum fiebat describitur.
 cf. Herod. 1. 10 εἰσελθοῦσαν δὲ καὶ τιθεῖσαν τὰ εἴματα ἐθιέετο ὁ Γόγης
 cum adnotatione Steinii. Item habes imperfectum Euthyd. 283 A. ἡμεῖς
 πάντες ἐβλέπομεν πρὸς αὐτόν. Imperfecti igitur ratio potest hic bene ex-
 plicari; imperfecti autem et aoristi copulationem haec exempla illustrent:
 Xen. Cyrop. V. 4. 42. προσῆλθες τε πρὸς αὐτὸ τὸ τεῖχος καὶ ἐθεᾶτο ἡμᾶς
 οὐ πολλοὺς ὄντας. Rep. VIII, 569 B. γινώσκει ὁ δῆμος οἷος οἷον θρέμμα
 γεννῶν ἡσπάζετό τε καὶ ἠύξε. Parm. 127 A. ἀνεγνώρισέ τέ με ἐκ τῆς
 προτέρας ἐπιδημίας καὶ με ἡσπάζετο. Crito. 52 C. οὕτω σφόδρα ἡμᾶς
 ἤρυν καὶ ὠμολόγεις καθ' ἡμᾶς πολιτεύεσθαι, τὰ τε ἄλλα καὶ παῖδας
 ἐν αὐτῇ ἐποιήσω. Symp. 219 E. μετὰ ταῦτα στρατεία ἡμῖν εἰς Ποτί-
 δαιαν ἐγένετο κοινῇ καὶ συνεσιτοῦμεν ἐκεῖ. Phaedo 61 A. ἐπειδὴ ἡ τε
 δίκη ἐγένετο καὶ ἡ τοῦ θεοῦ ἐορτὴ διεκώλυέ με ἀποθνήσκειν. Rep. X.
 600 A. εἰ μὴ δημοσία, ἰδία τισὶν ἡγεμῶν παιδείας αὐτοὺς ζῶν λέγεται
 Ὅμηρος γενέσθαι, οἳ ἐκεῖνον ἡγάπων ἐπὶ συνουσία καὶ τοῖς ὑστέροις ὁδόν
 τινα παρέδοσαν βίου Ὅμηρικῇ. Phaedo 61 C. καὶ ἄμz λέγων ταῦτα
 καθῆκε τὰ σκέλη ἐπὶ τὴν γῆν καὶ καθεζόμενος οὕτως ἤδη τὰ λοιπὰ διε-
 λέγετο. Crito. 50 D. οὐ πρῶτον μὲν σε ἐγενήσαμεν ἡμεῖς καὶ δι' ἡμῶν
 ἐλάμβανε τὴν μητέρα σου ὁ πατήρ καὶ ἐφύτευσέ σε.

Hoc autem omnino tenendum est non temere a scriptoribus diversa tempora poni. cf. Xen. Cyrop. 5. 5. 22. ἔλθων οὖν ἐπειθ' αὐτοῦς καὶ οὗς ἐπείσα τούτους ἔχων ἐπορεύομην. Xen. Anab. 2. 4. 18. ὁ δὲ Κλέαρ-

χας ἀκούει· ἐπαράχθη σφόδρα καὶ ἐφοβήθη· Quidamquāvis enim . ubique
[causa tam aperta est. . . .]

Etiam participia eidem verbo adiuncta diversa tempora possunt in-
ducere. cf. Hom. Il. 1. 891 τῷ μὲν τάρβησαντε καὶ αἰδομένῳ. Inde
verisimile est Euthyd. 288 C. ἐλεήσαντε καὶ οἰκτείροντε Platonem scrip-
sisse; nam non solum Bodleianus, sed ut Rühlus definite adnotavit, etiam
Vat. θ οἰκτείροντε praebet. Et quid prohibet, quominus haec vestigia
librorum optimorum sequamur? Aoristus ἐλεήσαντε exprimit misericordiam
animos sublisce, praesens οἰκτείροντε illam misericordiam adhuc permanere.

Alia interpretatio illis imperfectis adhibenda est, quae paene aoristo-
rum locum obtinent, qualia sunt ἐκέλευον, ἐλέγον. cf. nostr. Com. Plat.
p. 98 ubi οὐδὲν ἐλέγεν Euthyd. p. 286 C. restituimus. Protag. 348 C.
μόγισ προύτραπτο εἰς τὸ διαλέγεσθαι καὶ ἐκέλευεν ἐρωτᾶν αὐτὸν ὡς ἀπο-
κρινόμενος. Phaedr. 228 B. ἥσθη ὅτι εἴποι τὰν συγχόρουβαντιῶντα καὶ
προάγειν ἐκέλευε. Phaedo. 59 E. οὐ πολὺν ὄρου χρόνον ἐπασχὼν ἤκε
καὶ ἐκέλευεν ἡμᾶς εἰσιέναι ubi ἐκέλευεν non manus secunda sed manus
prima cum aliis libris habet, recte igitur restitutum. cf. Herm. adp. in
praef. XI. huius ipsius verbi saepe imperf. pro aoristo legi docet Sintonis
ad Plat. Them. p. LI. Etiam hic librariorum atque interpretum videre licet non
raro titubantes atque corrigentes. Phaedr. 228 A. B. εὐ οἶδα ὅτι Λυαίου
ἡγόρον ἀκούων ἐκείνος οὐ μόνον ἀπαε ἤκουσεν, ἀλλὰ πολλάκις ἐπαγαλαμβα-
δὼν ἐκέλευσεν οἱ λέγειν. Libri deteri. cum vulg. ἐκέλευσεν quod tunc
Stallb. Xen. Anab. 1. 7. 1 καὶ ἐκέλευε Κλέαρχον μὲν τοῦ δεξιῦ χερὶ
ἡγεῖσθαι, αὐτὸς δὲ τοῦ ἐξουτοῦ διατάξει. Pantazides corrigebat ἐκέλευσε
adversante Herthnio in Fleckeis. Ann. Vol. 95 (1867) p. 475.

Occasionem assimilandi etiam suppeditavit usus dualis in cuius locum
saep̄ pluralem cedere notum est. Inprimis si participia verbo adduntur,
modo verbum pluralem induit et participium dualem, modo participium
pluralem et verbum dualem. Adeo fit, ut participia eidem verbo ad-
iuncta et in plurali et in duali ponantur. Hac autem mutatione offensi
librarii non raro assimilandi studio indulgebant, quod libri meliores
produnt. Veluti rest. Herm. τελευτῶντες cum Bodl. pro τελευτῶντι
hoc loco: Phaedr. 254 B. τελευτῶντες δέ, ὅταν μηδὲν ἢ πέρας κακῶς
πορεύεσθον ἀγομένῳ, εἰδάντε καὶ ὁμολογήσαντε ποιήσιν τὸ κελεύόμενον
ibid. 261 B. ἀλλ' ἢ τὰς Νέστορος καὶ Ὀδυσσεὺς τέχνας μόνον περὶ λόγων
ἀκήχρας, αὖ ἐν Ἠλίῳ σχολάζοντες συνεγραψάν· σχολάζοντες corr. E.
ibid. 278 B. νοὶ καταβάντε εἰς τὸ Νυμφῶν γυνὰ τε καὶ μουσεῖον ἤκουσαν
μὲν λόγων . καταβάντες G. Recte Winckelmann rest. εἰσελθόντες Euthyd.

273 A. εἰσελθόντας δὲ περιπατεῖσθιν. nam ut Bodl. etiam Vall. pluralem habere videtur. ibid. 273 B. ἰδόντες δὲ αὐτὸν ὁ τε Διονυσόδωρος καὶ ὁ Εὐθύδημος πρῶτον μὲν ἐπιστάγας διελυσγέσθην ἀλλήλων, ἄλλην καὶ ἄλλην ἀποβλέποντες εἰς ἡμᾶς. Winckelm. ἰδόντες et ἀποβλέποντες e B. Θ. repos. Num. plur. restituendus, p. 277 E. ταύτω οὐδὲν ἄλλο ἢ χορεύετον περὶ σὲ καὶ οἶον ὀρχεῖσθαι παίζοντα, ubi Vat. Θ παίζοντας praebet quocum Bodleianus consentit, ut Oxonii exploravi.

§ 9.

Cuius animum figurae διπλασιασμοῦ vis qualem demonstrat illud Klopstockianum: auferstehen, ia auferstehen wirst du mein Staub nach kurzer Ruh vel illud Schillerianum: dort, dort ist Alles was noch übrig ist von ihm, semel percusserit, is nunquam hanc figuram hoc loco concedet, ubi Phaedrus orationem Lysiacam ambulans dicitur ediscere, ἀπαντήσας δὲ τῶ νοσοῦντι περὶ λόγων ἀκοήν, ἰδὼν μὲν, ἰδὼν ἦσθαι ὅτι ἔξοι τὸν συγχορυβαντιῶντα καὶ προάγειν ἐκέλευε. θεομένου δὲ λέγειν τοῦ τῶν λόγων ἐρασ- τοῦ ἐθρύπτετο. ὡς δὴ οὐκ ἐπιθυμῶν λέγειν. τελευτῶν δὲ ἔμελλε καὶ εἰ μὴ τις ἔκων ἀκούοι βία ἐρεῖν. (Phaedr. 228 B.), Hermannus adnotavit (praef. XVII.): „ἰδὼν, quod male iterari nemo non videt, nec tamen aut Stephanus ἰόντα¹⁾ aut Winckelmannus εἰς ὧν scribendo persanavit, donec melior emendandi via aperiatur, circumscripsi“. Hanc autem meliorem viam vide ne mihi contigerit ut invenirem. Cum enim verba ἐθρύπτετο ὡς δὴ οὐκ ἐπιθυμῶν λέγειν insequantur, verbum ἦσθαι quodammodo restringendum esse videtur. Phaedrus laetitiam debet celare et quasi intra pectus continere. Itaque prius ἰδὼν ut ipsum μὲν indicat, non alterum foedatum esse videtur. Quod si mutaveris in ἰδία (ἰδία μὲν ἰδὼν ἦσθαι), clandestinam laetitiam expressam habebis; nam ἰδία interdum significacionem adverbii „c f a m“ accipere videtur, quod tum vis verbi patitur tum haec exempla probant: Rep. 8. 556 D. ἄρ' οἶε αὐτὸν οὐχ ἠγέσθαι κακία τῇ σφετέρᾳ πλουτεῖν τοὺς τοιοῦτους καὶ ἄλλον ἄλλω παραγγέλλειν ὅταν ἰδία συγγίνωνται ὅτι Ἄνδρες ἡμεῖς εἰσὶν οὐδέν. Arist. Eq. 465 οὐχ οὐκ ἐν Ἀργεὶ μὲν οἷα πρῆτα λαμβάνει. πρόφασιν μὲν Ἀργεῖους φίλους ἡμῶν ποιεῖ. ἰδία δ' ἔκαστ' Ἀλακεδαιμονίους συγγίνεται. Dem. 41, 17. ὥστε μηδὲ τοῦτ' εἶναι λέγειν ὡς λάθρα καὶ ἰδία κρυψάμενοι τοὺς ἐπράττο-

¹⁾ Iohannes dialogi recentissimus interpres eum secutus est; vertit enim: und als er einem Menschen begegnete, der von der Sucht besessen war, Reden zu hören, freute er sich, wie er ihn kommen sah, dass er einen Genossen seiner Verführung haben würde und forderte ihn auf weiter zu gehen.

μεν ταῦτα. Diod. XX. 31, ἐν ἀπορρήτοις, ἰδίᾳ πρὸς Ἀντίγονον (αὐτε-
θεῖσθαι φιλίαν ex quo loco Cobetus (Nov. Lect. p. 566) ἰδίᾳ expellendum
censet argumentans: „vides interpretamentum adhaesisse verbis ἐν ἀπορρή-
τοις.“ Sed ni fallor, hic σχῆμα ἐκ παραλλήλου extat.

Figura διπλασιασμοῦ e nostro loco remota supersunt hi loci quibus
reperitur illa figura, quos exscribemus atque si opus fuerit illustrabimus,
ut etiam planius fiat, ἰδὼν μὲν, ἰδὼν supra Platonem non posuisse. 1) Initio
Legum Clinias interrogatus: θεός ἢ τις ἀνθρώπων ὑμῖν ὧ ἔενοι ἐλάτρε
τὴν αἰτίαν τῆς τῶν νόμων διαθέσεως; respondit: θεός ὧ ἔνεε, θεός ὧς
γε (τὸ δίκαιότατον εἰπεῖν). Recte Stallbaumius: „Venuste hac figura utitur
Cretensis quippe qui patriae suae leges tam sanctas habeat, ut ei de di-
vina earum origine dubitare nefas videatur.“ 2) Phaedr. 242 D. δεινὸν
ὦ Φαῖδρε δεινὸν λόγον αὐτός τε ἐχόμεσας ἐμέ τε ἡγάχασας εἰπεῖν.
3) Rep. 608 B. Μέγας γάρ ἐφημὶ ῥ' ἀγών ὦ φίλε Γλαύκων, μέγας.
4) Enthyd. 284 E. Σὺ μὲν, ἐφη ὁ Διονυσόδωρος, λοιδορεῖ ὦ Κτήσιππε, λοιδο-
ρεῖ. 5) Gorg. 499 B. τοῦ, τοῦ ὦ Καλλικλείς ὡς πανούργος εἶ. Rep. 432 D.
6) Tim. 22 B. ὦ Σόλων, Σόλων, Ἕλληνες αἰεὶ παῖδες ἐστε, γέρων δὲ
Ἕλληνα οὐκ ἔστιν. Hanc repetitionem vocativi ut intellegamus, verba Kolsteri
inserta Philol. T. V. 601 adponenda sunt quippe quibus omnino egre-
gia interpretatio huius figurae contineatur: Durch die Anadiplosis gibt der
Redende gleichsam seinem eigenen Ausdrucke seinen Beifall zu erkennen;
es ist als ob er erst während des Redens inne würde, dass sein Ausdruck
wirklich dem Gedanken adäquat sei. Die Schwierigkeit für den Gedan-
ken das richtige Wort zu finden, deutet auf eine heftigere Bewegung des
Gemüthes hin, denn dem Gefühle ist der Ausdruck leicht zu schwach, zu
farblos. Das gilt, wenn auch etwas modificirt, selbst für die Anadiplosis
des Vocativs, wie wenn Horaz sagt: Eheu fugaces, Posthume, Posthume,
labuntur anni. Das erste Posthume ist einfache Anredo, während das
zweite andeutet, dass die Persönlichkeit des Posthumus zu dem Satze in
einem näheren Verhältnisse stehe; sei es dass der Dichter bei ihm vor-
zugsweise Empfänglichkeit für seine Bemerkung voraussetzt, sei es dass
er durch seine Persönlichkeit eben doppelt an das Schmerzliche des Satzes
erinnert wird. Wo nur immer sich die Anadiplosis findet, da sind gleich-
sam zwei Personen in dem Redenden, Verstand und Gefühl, welche zu-
gleich das Wort ergreifen, so dass das letztere die Worte des ersteren
bestätigt. cf. etiam Doederlini orationem in honorem Schillerei habitam
(Verm. Reden und Aufsätze III. p. 187) qui de simili repetitione vocativi
apud hunc poetam scite iudicavit. — Aliis aliorum scriptorum exempla huius
figurae tibi suppeditant Ast. ad Legg. Vol. II. pp. 5. Bekker (Hom. Blüt.

272 A. εἰσελθόντας δὲ περιπατεῖσθην. nam ut Bodl. etiam Vatt. pluralem habere videtur. ibid. 273 B. ἰδόντες δὲ αὐτὸν ὃς τε Διονυσόδωρος καὶ ὁ Εὐθύδημος πρῶτον μὲν ἐπιστάντες διελεγέσθην ἀλλήλων, ἄλλην καὶ ἄλλην ἀποβλέποντες εἰς ἡμᾶς. — Winckelm. ἰδόντες et ἀποβλέποντες e B. O. repos. Num. plur. restituendus, p. 277 E. ταύτῳ οὐδὲν ἄλλο ἢ χορεύεσθαι περὶ σὲ καὶ οἷον ὀρχεῖσθαι παίζοντα, ubi Vat. Θ παίζοντες praebet quocum Bodlejanus consentit, ut Oxoni exploravi.

§ 8.

Cuius animum figurae διπλασιασμοῦ vis qualem demonstrat illud Klopstockianum: auferstehen, ia auferstehen wirst du mein Staub nach kurzer Ruh, vel illud Schillerianum: dort, dort ist Alles was noch übrig ist von ihm, semel percusserit, is nunquam hanc figuram hoc loco concedet, ubi Phaedrus orationem Lysiacam ambulans dicitur ediscere: ἀπαντήσας δὲ τῷ νοσοῦντι περὶ λόγων ἀκοήν, ἰδὼν μὲν, ἰδὼν ἦσθαι ὅτι ἔξοι τὸν συγκαρβαντιῶντα καὶ προάγειν ἐκέλευε. θεομένου δὲ λέγειν τοῦ τῶν λόγων ἐρασ- τοῦ ἐθρύπτετο ὡς δὴ οὐκ ἐπιθυμῶν λέγειν. τελευτῶν δὲ ἔμαλλε καὶ εἰ μὴ τις ἔχων ἀκούοι βία ἐρεῖν. (Phaedr. 228 B.), Hermannus adnotavit (praef. XVII.): ἰδὼν, quod male iterari nemo non videt, nec tamen aut Stephanus ἰόντα ἢ aut Winckelmannus εἰς ὧν scribendo persanavit, donec melior emendandi via aperiatur, circumscripsi. Hanc autem meliorem viam vide ne mihi contigerit ut invenirem. Cum enim verba ἐθρύπτετο ὡς δὴ οὐκ ἐπιθυμῶν λέγειν insequantur, verbum ἦσθαι quodammodo restringendum esse videtur. Phaedrus laetitiam debet celare et quasi intra pectus continere. Itaque prius ἰδὼν ut ipsum μὲν indicat, non alterum foedatum esse videtur. Quod si mutaveris in ἰδία (ἰδία μὲν ἰδὼν ἦσθαι), clandestinam laetitiam expressam habebis, nam ἰδία interdum significati- nem adverbii „c f a m“ accipere videtur, quod tum vis verbi patitur tum haec exempla probant: Rep. 8. 556 D. ἀρ' οἶε αὐτὸν οὐκ ἠγέσθαι κακία τῇ σφέτερᾳ πλουτεῖν τοὺς τοιοῦτους καὶ ἄλλον ἄλλῳ παραγγέλλειν ὅταν ἰδία εὐγγίγῃνται ὅτι Ἄνδρες ἡμετέροι εἰσὶν οὐδέν. Arist. Eq. 465 οἰκὸν ἐν Ἀργεῖ μ' οἶα πρῖνται λαμβάνει. προφασίν μὲν Ἀργεῖους φίλους ἡμῶν ποιεῖ. ἰδία δ' ἔκει Ἀλαεδαμονίσις εὐγγίγεται. Dem. 41, 17. ὥστε μὴδὲ τοῦτ' εἶναι λέγειν ὡς λάθρα καὶ ἰδία κρυψάμενοι τοὺς ἐπράττο-

ἢ Lehrling dialogi recentissimus interpres eum secutus est; vertit enim: und als er einem Menschen begegnete, der von der Sucht besessen war, Reden zu hören, freute er sich, wie er ihn kommen sah, dass er einen Genossen seiner Verzüc- kung haben würde und forderte ihn auf weiter zu gehen.

μεν ταῦτα. Diod. XX. 31, ἐν ἀπορρήτοις ἰδίᾳ πρὸς Ἀντίγονον συνε-
θεῖσθαι φιλίαν ex quo loco Cobetus (Nov. Lect. p. 566) ἰδίᾳ expellendum
censet argumentans: „vides interpretamentum adhaesisse verbis ἐν ἀπορρή-
τοις.“ Sed ni fallor, hic σχῆμα ἐκ παθᾶλλήλου extat.

Figura διπλασιασμοῦ e nostro loco remota supersunt hi loci quibus
reperitur illa figura, quos exscribemus atque si opus fuerit illustrabimus,
ut etiam planius fiat, ἰδὼν μὲν, ἰδὼν supra Platonem non posuisse. 1) Initio
Legum Clinias interrogatus: θεός ἢ τις ἀνθρώπων ὑμῖν ὧ ἔενοι ἐλήφθαι
τὴν αἰτίαν τῆς τῶν νόμων διαθέσεως; respondit: Θεός ὧ ἔενε, θεός ὡς
γε τὸ δίκαιότατον εἰπεῖν. Recte Stallbaumius: „Venuste hac figura hitur
Cretensis quippe qui patriae suae leges tam sanctas habeat, ut ei de di-
vina earum origine dubitare nefas videatur.“ 2) Phaedr. 242 D. θεῶν
ὦ Φαῖδρε δεινὸν λόγον αὐτός τε ἐχόμεσας ἐμέ τε ἡγάχασας εἰπεῖν.
3) Rep. 608 B. Μέγας γάρ ἔφη ὁ ἀγὼν ὧ φῶς Γλαύκων, μέγας.
4) Enthyd. 284 E. Σὺ μὲν, ἔφη ὁ Διονυσόδωρος, λοιδορεῖ ὦ Κτήσιππε, λοιδο-
ρεῖ. 5) Gorg. 499 B. τοῦ τοῦ ὦ Καλλίκλεις ὡς πανούργος εἶ. Rep. 482 D.
6) Tim. 22 B. ὦ Σόλων, Σόλων, Ἕλληνες αἰεὶ παῖδες ἐστε, γέρον δὲ
Ἕλληνα οὐκ ἔστιν. Hanc repetitionem vocativi ut intellegamus, verba Kolsteri
inserta Philol. T. V. 601 adponenda sunt quippe quibus omnino egre-
gia interpretatio huius figurae contineatur: Durch die Anadiplosis gibt der
Redende gleichsam seinem eigenen Ausdrucke seinen Beifall zu erkennen;
es ist als ob er erst während des Redens inne würde, dass sein Ausdruck
wirklich dem Gedanken adäquat sei. Die Schwierigkeit für den Gedan-
ken das richtige Wort zu finden, deutet auf eine heftigere Bewegung des
Gemüthes hin, denn dem Gefühle ist der Ausdruck leicht zu schwach, zu
farblos. Das gilt, wenn auch etwas modificirt, selbst für die Anadiplosis
des Vocativs, wie wenn Horaz sagt: Eheu fugaces, Posthume, Posthume,
labuntur anni. Das erste Posthume ist einfache Anrede, während das
zweite andeutet, dass die Persönlichkeit des Posthumus zu dem Satze in
einem näheren Verhältnisse stehe; sei es dass der Dichter bei ihm vor-
zugsweise Empfänglichkeit für seine Bemerkung voraussetzt, sei es dass
er durch seine Persönlichkeit eben doppelt an das Schmerzliche des Satzes
erinnert wird. Wo nur immer sich die Anadiplosis findet, da sind gleich-
sam zwei Personen in dem Redenden, Verstand und Gefühl, welche zu-
gleich das Wort ergreifen, so dass das letztere die Worte des ersteren
bestätigt. cf. etiam Doederlini orationem in honorem Schillerei habitam
(Verm. Reden und Aufsätze III. p. 187) qui de simili repetitione vocativi
apud hunc poetam scite iudicavit. — Aliis aliorum scriptorum exempla huius
figurae tibi suppeditant Ast. ad Legg. Vol. II. pp. 5. Bekker (Hom. Blätt.

ier p. 194). Aug. Nauck (Euripid. Stud. II. p. 184) Westermann ad Dem.
 II. 19. ἡγοῦμαι πρὸς (ὅτι) ἡ... (cf. Nauck ad Euripid. Suppl. p. 184).

§ 10.

Ut Latini *includere aliquem in carcere* et *includere aliquem carcere* possunt dicere, ita etiam Graecis verba sunt, quae prout lingua vel sententia postulat tum dativum instrumentalem tum constructionem cum praepositione ἐν admittunt. Cuius usus tibi suppedito haec exempla Platonica:

1) Euthyd. 302 A. ἐν δικτύῳ εἰλημένος (cf. Arist. Av. 1088 δεδεμένος ἐν δικτύῳ) Rep. VII. 517 A. εἰ πως ἐν ταῖς χερσὶ δύναντο λαβεῖν (aliquem ita comprehendere ut cum in manibus de potestate tua teneas interpretatur Stallbaumius) Gorg. 522 A. τί ἂν οἶσι ἐν τούτῳ τῷ κακῷ ἀποληφθέντα ἱατρὸν ἔχειν εἰπεῖν; Soph. p. 285 B. σχεδὸν γὰρ αὐτὸν περιελήφαμεν ἐν ἀμφιβληστροῖσι τινὶ τῶν ἐν τοῖς λόγοις περὶ τὰ τοιαῦτα ὀργάνων. Tim. 26 B. καὶ οὐκ ἂν οἶδ', εἰ δουαίμηνι ἅπαντα ἐν μνήμῃ πάλιν λαβεῖν.

2) Multo latius hac in re patet usus verbi δεῖν. cf. Rep. IX. 579 B. ἄρ' οὖν οὐκ ἐν ποιούτῳ μὲν δεσποτηρίῳ δέδεται ὁ τύραννος. Legg. IX. 864 E. ἐν δημοσίῳ δεσμῷ δέθεται ὑπὸ τῶν νομοφυλάκων. Rep. VII. 567 D. ἐν μακαρίᾳ ἄρα ἀνάγκῃ δέδεται. Phaedo. 88 D. οὐκ οὖν ἐν τούτῳ τῷ πάθει μάλιστα καταδεῖται ψυχὴ. ibid. 108 B. δεδεμένος ἐν ἀνάγκαις. Cratyl. 404 A. οὐδ' ἂν ὁ Κρόνος δύνατο ὁ πατὴρ συγκατέχειν αὐτῷ ἐν τοῖς δεσμοῖς δήσας τοῖς αὐτοῦ λεγομένοις. Legg. IX. 882 B. δήσας ἐν πέδασι (Aesch. II. 76. ὃν πολλοὶ δεδεμένον ἐν πέδασι ἐμνημόνευον). cf. Lobeck Paral. p. 524. Krüger § 68, 12, 2. At praepositio deest: Cratyl. 403 C. οἶσι οὖν τὸν Ἄϊδην οὐκ ἂν πολλοὺς ἐκφύγειν εἰ μὴ τῷ ἰσχυροτάτῳ δεσμῷ ἔδει τοὺς ἐκείσε ἰόντας. nam hic δεῖν et δεσμός translate adhibita sunt, id quod demonstrant loci quae insequuntur ἐπιθυμία ἄρα τινὶ αὐτοὺς ὡς τοῖς δεῖν εἴτερ τῷ μέγιστῳ δεσμῷ δεῖ, καὶ οὐκ ἀνάγκῃ. Translate autem adhibitum δεῖν potest omittere praepositionem cf. hunc locum classicum cum annotatione Hertlinii, Cyrop. V. 1. 12. δεδεμένους ἰσχυρότερα ἀνάγκῃ ἢ εἰ ἐν σιδήρῳ δέδεσντο. Idem valet in hunc locum: Gorg. 508 E. ταῦτα ἡμῖν ἔχει ἐν, πῶς πρόσθε λόγος οὕτως φανέντα κατέχεται καὶ δέδεται καὶ εἰ ἀγροικώτερόν τι εἰπεῖν ἔστι, σιδηροῖς καὶ ἀδαμαντίναις λόγοις. — Tim. 69 E. ἐν δὲ τοῖς στήθεσι καὶ τῷ καλουμένῳ θώρακι τὸ τῆς ψυχῆς θυμὸν γένος ἐνέδουν. Quod apud comicos iam saepe legitur ἐν τῷ ἐσθρῷ δεῖν (cf. Koch ad Arist. Ran. 618, Nub. 592, Sauppe Ep. crit. ad Herm. p. 58), apud Platonem quod equidem sciam, non reperitur.

3) Phileb. 46 B. ἐν τοιούτοις νοσήμασι *ἐχόμενοι*. Legg. X. 887 E. ἐν εὐφοραῖς παντοίαις *ἐχομένων* καὶ ἐν εὐπράγαις. Legg. II. 654 E. ἀνδρικῆς ψυχῆς ἐν πόνοις *ἐχομένης*. (ita recte restitutum ex *ἐρχομένης*). Phaed. 108 B. ἐν πάσῃ *ἐχομένη* ἀπορία. Gorg. 522 A. οὐχοῦν οἷσι ἐν πάσῃ ἀπορία ἂν αὐτὸν ἔχεσθαι ὅτι χρή εἰπεῖν. Theaet. 191 BC. ἀλλὰ γὰρ ἐν τῷ τοιούτῳ *ἐχόμεθα* ἐν ᾧ ἀνάγκη πάντα μεταστρέφοντα λόγον βασανίζειν. cf. Baehr ad. Herod. 9. 37 et 8. 52. Sed praepositionem etiam posse deesse demonstratur his locis: Prot. 321 D. ἀπορία οὖν *ἐχόμενος* (Sauppe cum Bodl. Vat. θ *σχόμενος*). Lach. 192 E. περιπλεῦμονιά τοῦ οὐίεος *ἐχομένου*. Rep. IX. 583 D. οὐχοῦν καὶ τῶν περιωδυνία τῶν *ἐχομένων* ἀκούεις λεγόντων. Legg. IX. 881 B. μανίας *ἐχόμενος*. Valde memorabilis est praepositio ἐν hoc loco: Theaet. 165 B. τὸ λεγόμενον ἐν φρέατι συνεχόμενος ubi exspectaveris ἐν φρέατι *σχόμενος*; nam aliis locis συνέχω propter praepositionem cum dativo solo coniungitur cf. Gorg. 512 A. μεγάλοις καὶ ἀνιάτοις νοσήμασι συνεχόμενος. Soph. 250 D. πάσῃ συνεχόμεθα ἀπορία. ibid. 237 A. ἐναντιολογία μὴ συνέχεσθαι quae e libris optimis restituta sunt pro ἐν ἀντιλογία συνέχεσθαι. Gorg. 525 E. μέγαις τιμωρίαις συνεχόμενον. ibid. 479 A. τοῖς μεγίστοις νοσήμασι συνεχόμενος. Tim. 43 A. οἷς αὐτοῖς ἐνείχοντο δεσμοῖς.

4) Ut δεῖν, ita locis compluribus ζευγνύναι construitur. cf. Politic. 302 E. μοναρχία τοίνυν ζευχθεῖσα μὲν ἐν γράμμασι ἀγαθοῖς οὓς νόμους λέγομεν ἀρίστη πασῶν τῶν ἔξ. Menex. p. 240 C. Ἀθηναίους ἐν τῇ αὐτῇ ταύτῃ ἀνάγκῃ ζεύξαντας Ἑρετριεῦσιν ἄγειν. cum adn. Sialib.

§ 11.

Enuntiatio cum in aliis linguis tum in lingua graeca etiam ita institui potest, ut subjectum et praedicatum sine verbo substantivo componantur. cf. Germanicum illud ein Mann ein Wort. Qua de re Langil egregia dispositio extat habita cum philologi Germaniae Gottingam convenissent. Hanc autem formam enuntiationis apparet eo rariorem esse, quo plures verbi ἑμφάσεις et eo frequentiores, quo pauciores ἑμφάσεις sententia postulati. Inde haec tria possunt proponi:

1) tertia verbi εἶναι persona facilius potest deesse quam aliæ, quod εἶ, ἔσμεν etc. saepissime etiam subjectum includunt.

2) Praesens tempus cum saepe absolute adhibeatur, potest facilius omitti quam alia tempora.

3) Indicativus saepius omittitur quam alii modi.

Exempla omissi ἔστι τίβι libros Platonicos evolyenti ubique occurrunt; itaque satis habeo formulas quasdam Platonicas quibus fere ἔστι deest hoc.

loco tractasse. 1) οὐδὲν οἶον Gorg. 447 C. οὐδὲν οἶον τα αὐτὸν ἐρωτᾷν ὦ Σώκρατες. ibid. 481 B. οὐδὲν μέντοι οἶον τὸ αὐτὸν ἐρωτᾷν. Germanice „es ist am besten, Gallice il n'y a rien de“. 2) τοῦτο ἐκεῖνο vide supra p. 16. 3) τί τοῦτο; Fuerunt qui supplerent διαφέρει ut Helndorfius ad Charm. p. 65 permoti hoc loco Rep. I. 349 A. τί δέ σοι τοῦτο διαφέρει; Sed hic locus non cogit nos de tali ellipsi cogitare. Nam etiam τί οὖν δὴ; τί δέ etc. dicitur et ut hic, etiam in formula τί τοῦτο verbum substantivum (i. e. ἐστὶ) supplendum est id quod demonstravit Schneiderus ad Rep. V. p. 472 B. 4) Semper apud Platonem proportio verbum substantivum aspernatur cuius forma est haec: Gorg. 465 C. ὁ κομμωτικὴ πρὸς γυμναστικὴν, τοῦτο σοφιστικὴ πρὸς νομοθετικὴν. Tim. 28 C. ὅτι περ πρὸς γένεσιν οὐσία, τοῦτο πρὸς πίστιν ἀλήθεια. 32 B. ὅτι περ πῦρ πρὸς αἶρα, τοῦτο ἀήρ πρὸς ὕδωρ καὶ ὅτι ἀήρ πρὸς ὕδωρ, ὕδωρ πρὸς γῆν. 32 A. ὅτι τὸ ἔσχατον πρὸς τὸ μέσον, τὸ μέσον πρὸς τὸ πρῶτον. Causa est aperta; (concludenti brevitatis necessaria. cf. Euthyphr. 12 B. ἵνα θεός, καὶ αἰδώς.

Praesentis aliae formae si menti scribentis obversantur, pronomina, quae subiecti loco sunt, fere ponuntur, ne dubitatio exoriat. —

a) Phaedr. 262 D. οὐ γάρ που ἔγωγε τέχνης τινὸς τοῦ λέγειν μέτοχος. Prot. 385 C. ἐγὼ δὲ τὰ μακρὰ ταῦτα ἀδύνατος. Phileb. 58 B. ἄρ' οὖν αἴτιος ἐγὼ τοῦ μὴ καλῶς ὑπολαβεῖν σε. Cratyl. 418 A. οὐκ ἔγωγε ὦ Ἑρμόγενης αἴτιος ἀλλ' οἱ θέμενοι τὸ ὄνομα. Soph. 252 D. τοῦτο μὲν οἷός τε καὶ γὰρ διαλύειν. Rep. II. 358 B. ἀλλ' ἐγὼ τις ὡς ἔοικε δυσμαθής. Crito. 46 B. ἐγὼ οὐ μόνον νῦν, ἀλλὰ καὶ ἀεὶ τοιοῦτος. Theaet. 169 B. ἰσχυρικώτερος μέντοι ἐγὼ ἐκείνων. ibid. 160 C. καὶ ἐγὼ κριτὴς κατὰ τὸν Πρωταγόραν. Phaedr. 266 B. τούτων δὲ ἔγωγε αὐτός τε ἐραστὴς ὦ Φαῖδρε τῶν διαιρέσεων καὶ συναγωγῶν. — Symp. 176 C. ἡμεῖς μὲν γὰρ ἀεὶ ἀδύνατοι. Theaet. 173 C. οὐχ ἡμεῖς οἱ ἐν τῷ τοιῷδε χορεύοντες τῶν λόγων ὑπηρέται, ἀλλ' οἱ λόγοι οἱ ἡμέτεροι ὥσπερ οἰχέται. Parm. 126 A. οὐν ἡμεῖς δυνατοί. Rep. II. 368 D. ἐπειδὴ οὖν ἡμεῖς δεινοί. Theaet. 150 D. τῆς μέντοι μαισίας ὁ θεός τις καὶ ἐγὼ αἴτιος. ibid. 152 A. ἄνθρωπος σὺ τε καὶ γὰρ. — Nullam personae notam habes Theaet. 145 E. ἢ οὐχ' ὥσπερ ἐπιστήμονες, ταῦτα καὶ σοφοί.

b) Phaedr. 238 D. τούτων μέντοι σὺ αἴτιος. Rep. VI. 509 C. σὺ γὰρ αἴτιος ἀναγκάζων τὰ ἐμοὶ δοκοῦντα περὶ αὐτοῦ λέγειν. ibid. V. 474 A. σὺ μοι τούτων αἴτιος. [Arist. Eq. 1356 ἀλλ' οὐ σὺ τούτων αἴτιος. Dem. de f. leg. § 336 τούτων ἀπάντων ἡμῖν αἴτιος σὺ διδάξαι.] Rep. III. 398 E. σὺ γὰρ μουσικός. Gorg. 452 C. ἡ σὺ τούτου δημιουργός. ibid. 465 D. σὺ γὰρ τούτων ἔμπειρος. Prot. 351 E. δίκαιός σὺ ἡγεῖσ-

θαι. Phaed. 117 AB. οὐ γὰρ τούτων ἐπιστήμων. Etiam adverbia sine εἶναι cum subiectis copulantur: Symp. 219 A. οὐδὲ τούτων ἔτι πόρρω. Phaedr. 229 A. εἰς καιρόν ὡς ἔοικεν ἀνυπόδητος ὢν ἔτυχον. οὐ μὲν γὰρ ἀεί. [Symp. 212 D. ὅπου Ἀγάθων]. Subiectum insuper deest his duobus locis: Theaet. 143 D. σοὶ δὴ οὐκ ὀλίγιστοι πλησιάζουσιν καὶ δικαίως. ἄξιός γάρ τά τε ἄλλα καὶ γεωμετρίας ἕνεκα. Gorg. 487 D. καὶ μὴν ὅτι γε οἷος παρρησιάζεσθαι καὶ μὴ αἰσχύνεσθαι, αὐτός τε φῆς. Aliorum temporum verbi substantivi omissio apud Platonem rara est. En exempla omissi ἦν: Rep. VI. 503 B. ὅκνος γάρ ἔφην ὡς φίλε ἐγὼ εἰπεῖν τὰ νῦν ἀποτετολμημένα. Theaet. 142 B. ἀλλὰ πολὺ θαυμαστότερον, εἰ μὴ τοιοῦτος ἦν. Rep. VI. 484 A. ἐμοὶ γοῦν ἔτι δοκεῖ ἂν βελτιόνως φανῆναι, εἰ περὶ τούτου μόνου ἔδει ρηθῆναι καὶ μὴ πολλὰ τὰ λοιπὰ διελθεῖν μέλλοντι κατόψεσθαι, τί διαφέρει βίος δίκαιος ἀδίκου. Sed legitima est haec omissio in structura εἰ μὴ διὰ τινα cum accusativo (= wenn einer nicht gewesen wäre). Gorg. 516 E. Μιλτιάδης εἰς τὸ βάραθρον εἰ μὴ διὰ τὸν πρῦτανιν, ἐνέπεσεν ἄν. Krüger 54, 12, 10. Matthiae p. 1151. Bernhardy p. 236. ἦν menti scribentis vel dicentis obversari recte contendit Schneider ad Js. 5. 92 his verbis: Ueberall ist ἦν zu ergänzen und der wörtliche Sinn, „wenn es nicht an gelegen hätte“, denn auch ausserhalb des hypothetischen Satzes steht διὰ so, z. B. Js. 20, 8 ὢν οὐδὲν διὰ τὸν ψεύγοντα τὴν δίκην. (quantum in reo fuit) ἀγέννητόν ἐστιν, ἀλλὰ κατὰ μὲν τὸ τούτου μέρος ἅπαντα πέπρακται.“ cf. Frohberger ad Lys. 12. 60. — Rara etiam est omissio coniunctivi et optativi, cuius haec exempla extant: a) Rep. III. 416 D. ἂν μὴ πᾶσα ἀνάγκη. ibid. II. 371 A. ὢν ἂν αὐτοῖς χρεῖα. Legg. XI. 914 D. ἐὰν δέ τις ἄλλου τῶν μὴ παρόντων, ὑπότερος ἂν παράσχη τὸν ἐγγυητὴν ἀξιοχρεῶν ὑπὲρ τοῦ ἀπόντος ὡς παραδώσων ἐκείνῳ, κατὰ τὴν ἐκείνου ἀφαίρεσιν ἀφαιρείσθω. ibid. XI. 932 D. ἐὰν δὲ δοῦλος μηνύσῃ, ἐλεύθερος ἔστω, καὶ ἐὰν μὲν τῶν κακούντων ἢ κακουμένων δοῦλος, ὑπὸ τῆς ἀρχῆς ἀφείσθω, ἐὰν δέ τις ἄλλου τῶν πολιτῶν, τὰ δημόσιον ὑπὲρ αὐτοῦ τιμὴν τῷ κεκτημένῳ καταβαλλέτω. (cf. Stallb. ad Legg. II. 655 E.) — Phileb. 28 A. Οὐδὲ ἂν ὦ Φίληβε λύπη πᾶν κακόν. Legg. VI. 752 E. νομοφύλακας δ' ἂν ἡμῖν πρῶτους αἰρεῖσθαι ἀναγκαιότατον ἀπάσῃ σπουδῇ. Meno. 96 B. οὐχοῦν εἰ μήτε οἱ σοφισταὶ μήτε οἱ αὐτοὶ καλοὶ καὶ ἀγαθοὶ ὄντες διδάσκαλοι εἰσι τοῦ πράγματος, δῆλον ὅτι οὐκ ἂν ἄλλοι γε; Multo frequentior est omissio infinitivi εἶναι. α) Politic. 280 B. πάλιν οὖν ἔοικεν ἐπανιτέον ἀρχόμενον ἀπὸ τελευτῆς. Euthyd. 288 D. φιλοσοφητέον ὡμολογήσαμεν τελευτῶντες. Gorg. 492 D. τὰς μὲν ἐπιθυμίας φῆς οὐ κολαστέον. Rep. V. 467 B. ἀλλὰ οὐ πρῶτον μὲν ἡγεῖ παρασκευαστέον τὸ μή ποτε κινδυνεῦσαι. β) Ut

latine dicitur: *putas me bonum vel putas me bonum esse*, ita etiam graece. Symp. 219 A. σὺ δὲ αὐτὸς οὕτω βουλεύου ὅ τι σοί τε ἄριστον καὶ ἐμοὶ ἡγεῖ. Lach. 178 B. ὑμᾶς δὲ ἡμεῖς ἡγησάμενοι καὶ ἱκανοὺς γινῶναι. Phaedr. 235 E. εἴ με οἶε — οἶόν τε δὴ παρὰ ταῦτα πάντα ἄλλα εἰπεῖν. Theaet. 183 C. ἐπιστήμην αἰσθῆσιν οὐ συγχωρησόμεθα. ibid. 184 A. αἰσθῆσιν — ἐπιστήμην ἀπεκρίνω. ibid. 182 E. οὐδὲν ἄρα ἐπιστήμην μᾶλλον ἢ μὴ ἐπιστήμην ἀπεκρινάμεθα ἐρωτώμενοι ὅ τι ἐστὶν ἐπιστήμη. Euphr. 11 D. ἀλλὰ σὺ μοι δοκεῖς ὁ Δαίδαλος cf. Engelhardt. Gorg. 517 B. δοχοῦσι γεγονέναι καὶ μᾶλλον οἶοί τε τῇ πόλει ὧν ἐπεθύμουν ἐκπορίζειν. Symp. 182 B. νενομέθηται καλὸν τὸ χαρίζεσθαι ἐρασταῖς. γ) Ut ἐστὶ apud genetivum non raro deest. (cf. Stallb. ad Rep. X. 615 A. Theaet. 201 A. οὐκοῦν τοῦτό γε βραχείας σχέψεως), ita etiam εἶναι. cf. Euthyphr. 4 AB. οὐ γὰρ οἶμαί γε τοῦ ἐπιτυχόντος ὀρθῶς αὐτὸ πρᾶξαι, ἀλλὰ πόρρω που ἤδη σοφίας ἐλαύνοντος. Non raro fit, ut verbum substantivum omittatur ad concursum infinitivorum vitandum. Crito 50 B. ἢ δοκεῖ σοι οἶόν τε ἔτι, ἐκείνην τὴν πόλιν εἶναι καὶ μὴ ἀνατετράφθαι. Durior ut videtur omissio his locis: Gorg. 492 D. τὰς μὲν ἐπιθυμίας φῆς οὐ χολαστέον, εἰ μέλλει τις οἶον δεῖ εἶναι, ἐὼντα δὲ αὐτὰς ὡς μεγίστας πλήρῳσιν αὐταῖς ἀμόθεν γέ ποθεν ἐτοιμάζειν. Theaet. 176 D. ἀλλ' ἄνδρες οἷους δεῖ ἐν πόλει τοὺς σωθησομένους. Sed mire Hermannus titubavit in hoc loco quem Bodl. Euthyd. 289 B. sic tradit: οὐδὲ ταύτης ἔοικεν ὄφελος οὐδὲν, εἴ τι δεῖ τοῖς πρόσθεν ὡμολογημένοις ταχμαίρεσθαι δεῖ. Adnotavit Hermannus (Praef. p. X.). „Dura infinitivi post ἔοικεν ellipsis quam eo fidentius supplevi, quo certius corruptam librorum lectionem esse ipsa Oxon. vestigia produnt. Is enim δεῖ post ταχμαίρεσθαι iterat; huic igitur illo loco primitivo ut opinor et genuino reddita satis elementorum supererat, unde infinitivum εἶναι exsculperem.“ Non recte; nam in omissione verbi substantivi non esse haerendum ut opinor exempla a nobis prolata satis probant. Ac multo facillior medela extat, si δεῖ post τι in δὴ mutaveris. Constat enim inter omnes, qui in arte palaeographica versantur, quam saepe haec duo verba permutentur. De collocatione cf. Prot. 332 C. καὶ εἴ τι δὴ ὡσαύτως πράττεται. —

Sed altera etiam res est, quae in omissione verbi substantivi observatione digna est; sunt enim adiectiva quaedam, quibus illa ommissio maxime propria esse videtur. Unum tantum hic accuratius tractare necessarium esse videtur, adiectivum *ἔτοιμος*, in quod ea quoque valent quae supra proposuimus. Praesentis enim et indicativi tempora verbi substantivi adiectivo *ἔτοιμος* facilius deesse possunt quam imperfectum, futurum, coniunctivus, optativus etc. cf. Legg. I. 643 A. τὰ μὲν τοίνυν ὑμέτερά ἀκούειν

ὥς ἔοικεν ἔτοιμ' ἂν εἶη, τὰ δ' ἐμὰ βούλεσθαι μὲν ἔτοιμα, δύνασθαι δὲ οὐ πάνυ ῥάδια. Inprimis autem εἰμὶ omittitur. Euthyd. 285 C. παρακινδυνεύειν ἔτοιμος καὶ παραδίδωμι ἑμαυτὸν Διονυσοδώρῳ. Lach. 180 B. ἐπαινῶ ὑμῶν τὴν διάνοιαν καὶ κοινωνεῖν ἔτοιμος. Demosth. 9. 4. εἰ δ' ἂν συμφέρει χωρὶς κολακείας ἐθελήσεις ἀκούειν, ἔτοιμος λέγειν. Propter membrum secundum his locis non est necessaria personae nota, quam expressam habes: Lach. 194 A. ἐγὼ μὲν ἔτοιμος μὴ προαφίστασθαι. Cratyl. 384 D. ἔτοιμος ἔγωγε καὶ μανθάνειν καὶ ἀκούειν. Haec exempla nos movent, ut medelam adhibeamus Lys. 7. 34. μάρτυρας ἔχων αὐτῷ προσήλθον, λέγων ὅτι μοι πάντες εἰσὶν οἱ θεράποντες, οὓς ἐκεκτήμεν ἐπειδὴ παρέλαβον τὸ χωρίον, καὶ ἔτοιμός εἰμι, εἴ τινα βούλοιτο, παραδοῦναι βασανίζειν, ἡγούμενος οὕτως ἂν τὸν ἑλεγχον ἰσχυρότερον γενέσθαι τῶν τούτου λόγων καὶ τῶν ἔργων τῶν ἐμῶν. Cod. ἔτοιμος ἦμην. εἰμι Kayserus et Scheibe proposuerunt. Westermann ἔτοιμος ἦ μὴν. Dobraeus ἔτ. εἶην. Hertl. ἔτ. ἦν. Sed ni fallor, legendum: καὶ ἔτοιμος, εἴ τινα κ. τ. λ. verbo substantivo omisso. Nam de persona propter προσήλθον non maior dubitatio exoriri potest quam loco Demosthenis atque omissio nequaquam durior est. — Sed εἰμὶ etiam posse poni his exemplis docemur: Theag. 127 E. ἐγὼ γάρ σοι ἔτοιμός εἰμι ὥς διὰ βραχέων εἶπεῖν. Rep. I. 336 A. ἔγωγ' οὖν ἔτοιμός εἰμι κοινωνεῖν τῆς μάχης. Tim. 26 C. λέγειν εἰμὶ ἔτοιμος. Prot. 348 A. ἔτοιμός εἰμὶ σοι παρέχειν ἀποκρινόμενος. Gorg. 510 B. ὅρᾳς ὥς ἐγὼ ἔτοιμός εἰμι ἐπαυεῖν. Cobetus εἰμὶ cum adiectivo ἔτοιμος coniunctum delendum censet. cf. Var. Lect. 293. Miror. nam apud poetas metrum εἰμὶ tuetur cf. Eur. Hec. 985 ὥς ἔτοιμός εἰμ' ἐγώ. Arist. Ran. 860. ἔτοιμός εἰμ' ἔγωγε κοῦκ ἀναδύομαι.

Aliarum personarum omissionis haec supposito tibi exempla: Politic. 277 E. λειπτόν ἐπειδὴ καὶ σὺ ἔτοιμος ἀκολουθεῖν. Crito 45 B. ξένοι οὗτοι ἐνθάδε ἔτοιμοι ἀναλίσκειν. Phaedr. 252 A. πάντων καταφρονήσασα δουλεύειν ἐτοιμή καὶ κοιμᾶσθαι ὅπου ἂν ἑᾷ τις ἐγγυτάτω τοῦ πόθου. Verbum habent adiunctum hi loci: Prot. 313 B. ἔτοιμος εἰ ἀναλίσκειν. Symp. 211 D. οὓς νῦν ὁρῶν ἐκπέπληξαι καὶ ἔτοιμος εἶ καὶ σὺ καὶ οἱ ἄλλοι. Symp. 208 C. ὑπὲρ τούτων κινδύνους τε κινδυνεύειν ἔτοιμοί εἰσι πάντας ἔτι μᾶλλον ἢ ὑπὲρ τῶν παίδων. ibid. 207 B. ἔτοιμά ἐστιν ὑπὲρ τούτων καὶ διαμάχασθαι τὰ ἀσθενέστατα τοῖς ἰσχυροτάτοις καὶ ὑπεραποθνήσκειν. ad quem locum cf. Vögelin in extr. vol. Mus. Helv. p. 318.

§ 12.

Etiam loci habent sua fata; quod quam verum sit, demonstrat hic locus: Euthyd. 289 B. τοιαύτης τινὸς ἄρα ἡμῖν ἐπιστήμης δεῖ ὧ καλῶς

παῖ ἦν δ' ἐγώ, ἐν ᾗ συμπέπτωκεν ἅμα τό τε ποιεῖν καὶ τὸ ἐπίστασθαι χρῆσθαι τούτῳ ὃ ἂν ποιῇ. Φαίνεται ἔφη. Πολλοῦ ἄρα δεῖ ὥς ἔοικεν ἡμᾶς λυροποιούς δεινούς εἶναι καὶ τοιαύτης τινὸς ἐπιστήμης ἐπηβόλους· ἐνταῦθα γὰρ δὴ χωρὶς μὲν ἡ ποιοῦσα τέχνη, χωρὶς δὲ ἡ χρωμένη, διήρτηται δὲ τοῦ αὐτοῦ πέρι. In his verbis primus haesit Heusdius cuius de hoc loco sententia haec est: (Spec. crit. p. 61): „Dixerat in antecedentibus Socrates sibi et Cliniae istius modi opus esse scientia in qua et *facere* et *facto* uti de una eademque re concurrant. Inde hanc nunc conclusionem minus recte efficit, multum abesse, ut ipse et Clinias lyras et facere et tractare possint. Sed noli dubitare quin recte omnino concluserit Socrates. Scripsit enim Plato: ἡμᾶς λυροποιούς δεῖν δεινούς εἶναι. *Multum igitur abest, ut egregios nos esse oporteat lyrarum opifices scientiaeque esse peritos quae in lyris tractandis cernitur. Nam hac in re et facere et facto uti non concurrunt, sed alia est quae facit, ars, alia quae utitur.*

Heindorfius hanc de loco sententiam protulit: „Quae sequuntur, πολλοῦ ἄρα δεῖ, ὥς ἔοικεν, ἡμᾶς λυροποιούς δεινούς εἶναι, *multum igitur abest ut simus praestantes lyrarum fabricatores*, haec qui quaeso conclusionis loco praegressis subiici possunt? Non illud sane ex Socratis argumentatione efficitur, sed hoc potius, *omnino eos non oportere lyrarum fabricatores esse* quemadmodum post illa infert Socrates, Οὐδὲ μὲν αὐλοποιῶν γε δηλονότι δεόμεθα. In promptu est corrigere, ἡμᾶς λυροποιούς δεῖν εἶναι quam correctionem ab Heusdio quoque excogitatam video, nisi quod voluit ἡμ. λυροποιούς δεῖν δεινούς εἶναι. Sed nihil hic ad sensum fecerit hoc δεινούς, neque, si hoc posuisset Plato, illa fuisset additurus καὶ τοιαύτης τινὸς ἐπιστήμης ἐπηβόλους. Jam si δεινούς mutaris in δεῖν, verum hunc habebis argumentationis tenorem: *Minime igitur opus est ut artem lyras fabricandi addiscamus. Ac ne scientia quidem αὐλοποιῶν nobis est opus. Igitur ne λογοποιῶν quidem. Nam ut nihil nobis prodest λυροποιῶν absque κιθαριστικῇ, nihil αὐλοποιῶν absque αὐλητικῇ, ita ne ista quidem λογοποιῶν, in qua tantopere sophistae isti gloriantur, quidquam ipsa proderit iis qui non insuper scientiam teneant orationibus perite utendi.*

Winckelmannus accuratius perscrutatus locum rursum novi aliquid detexit. Primus enim recte interpretatus est verba τοιαύτης τινὸς ἐπιστήμης ἐπηβόλους. Illa verba, inquit, omnes animadverto interpretes referre ad scientiam lyras fabricandi. Verum enim vero necessario oportet hic intelligi scientiam eam, in qua investiganda cum maxime versantur sc. in qua facere et facto uti est arcte copulatum. Quis enim sibi persuadeat, intra tam breve spatium, cum modo paulo ante dictum esset τοιαύτης

τινὸς ἄρα ἡμῖν ἐπιστήμης δεῖ, nunc τοιαύτης τινὸς ἐπιστήμης de alia scientia accipiendum esse. Et omnino mirum esset, cur noluerit Plato sic simpliciter dicere: πολλοῦ ἄρα δεῖ — ἡμᾶς λυροποιούς δεῖν δεινοὺς εἶναι, sed sententiam hoc inutili additamento onerare καὶ τοιαύτης τινὸς ἐπιστήμης ἐπηβόλους. Quamobrem — ut illud taceam illis coniecturis orationem effici minime elegantem πολλοῦ δεῖ — δεῖν, cuius simile quippiam exemplum mihi sese nondum obtulit — acquiesco nunc in vulgata cui hanc sententiam autumo subiectam esse; *multum igitur abest ut si simus periti lyrarum fabricatores, idcirco censendi simus illam quam quaerimus scientiam adepti esse* unde sponte sequitur nos ne oportere quidem esse lyrarum fabricatores, ita ut verba paululum traiecta sic sint ordinanda: ἡμᾶς λυροποιούς δεινοὺς καὶ τοιαύτης τιν. ἐπ. ἐπηβ. εἶναι. quamquam fateor, tamen sic habere verba quod displiceat et paulo aliter scripta ea expectari, hunc fere in modum ἡμᾶς λυρ. δειν. ὄντας. Sed in illo hyperbato εἶναι καὶ — non esse haerendum, alias multis exemplis docebo.

Stallbaumius probavit quae a Winckelmanno de loco prolata sunt medelamque indicatam etiam vehementius amplexus est. Scriptum, inquit, oportuit ἡμᾶς λυροποιούς δεινοὺς ὄντας εἶναι καὶ κ. τ. λ. Videtur igitur participium errore intercidissee. Nuper huic sententiae accessit Susemihlius in Vers. germ. p. 789. 3.

Haec sunt loci fata, quae ideo uberrime explanavimus, ut eluceret non raro multos conatus necessarios esse ad verum inveniendum. Saepe enim verum non subito invenitur, sed gradatim; conatus conatum sequitur, donec omnis difficultas sit sublata. Ita hoc loco vestigiis Winckelmanni insistemus qui veram sententiam invenit, non item veram formam sententiae. Ab hac igitur re nostrum munus incipiet. Quaeritur, quomodo exprimi possit, hoc non simul esse illud, hoc et illud non posse esse una. Ac primum quidem prae fracte nego verba πολλοῦ ἄρα δεῖ ὥς ἔοικεν ἡμᾶς λυροποιούς δεινοὺς εἶναι καὶ τοιαύτης τινὸς ἐπιστήμης ἐπηβόλους significare illud quod vertit Winckelmannus. Hac enim enuntiatione scriptor infitias it primum nos esse lyrarum fabricatores, deinde nos esse τοιαύτης τινὸς ἐπιστήμης ἐπηβόλους. Duo igitur praedicata abrogantur eidem subiecto. An si haec verba habebis, πολλοῦ δεῖ ἡμᾶς εἶναι πλουσίους καὶ εὐδαίμονας, vertes: nos divites non eosdem beatos? Nonne potius interpretaberis, non divites, non beati sumus. Si autem nolis haec praedicata inter se iungi, dicendum tibi erit aut πολλοῦ δεῖ ἡμᾶς πλουσίους ὄντας καὶ εὐδαίμονας εἶναι, (et haec medela nostro loco iam adhibita est.) aut πολλοῦ δεῖ πλουσίους εἶναι καὶ εὐδαίμονας. Dele igitur

ἡμᾶς nostro loco et scribe: πολλοὺ ἄρα δεῖ ὡς ἔοικεν λυροποιούς δεινούς εἶναι καὶ τοιαύτης τινὸς ἐπιστήμης ἐπηβόλους: iam habebis quae postulaverunt interpretes.

§ 13.

Clarkianum optimum Platonicum librum fundamentumque recensio-
nis esse XXIV dialogorum, qui eo continentur, ex quo Turicenses et C. F.
Hermannus Platonem ediderunt, omnibus qui hac de re iudicant, persua-
sum est. Neque igitur mirum est, quod voces postulantium ubique audi-
untur, ut in Gaisfordii collationem succedat denique altera eaque accura-
tior. Aliquot quidem dialogi denuo legebantur notaque est in Germania
Jowettii collatio Symposio adhibita; sed cum ea nequaquam sit accurata
(nescio utrum ipsius an Jahni culpa acciderit), mecum decrevi collationem
a me factam hic cum iis communicare, qui amore illum suavissimum dia-
logum amplectuntur. Usus autem sum in libro conferendo editione C. F.
Hermanni enotavique vel levissima. Quo facto operam meam cum Jo-
wettii opera contuli nobisque dissentientibus librum denuo inspexi, ita ut
putem, quae hic suppedito, numeris esse absoluta.

συμπόσιον ἢ περὶ ἔρωτος ῥήθικός. In mg. περὶ ἀγαθοῦ fort. m. paululum recent.
pag. 139. A. 2. πρώτην. 3. τίς. 4. περιμενεῖς. Falso Jahn. περιμένεις 4. καὶ γὰρ
supr. α ut v. recens.

B. 1. συνουσίαν ut V. 7. ἢ δὲ δ cum ὅς ligatum. 7. εἰπέ (sic) acc. '
recentior.

C. 1. ἦ. 2. οὐθέν nihil supra. 4. ἦν.

pag. 140. C. 6. ἀφοῦ, 8. ἦ. 8. πράττει. 8. ἐστὶ sed. ras. post ἰ

A. 1. οἰόμενός τε. 2. ἢ; ras. 2. οὗτου οὖν. 2. νυνὶ acc. ' ut vid. recen-
tior. 3. καὶ γὰρ cor. videtur recentior esse. 7. ἄρα. 8. ἦ.

B. 1. ἦν. 1. ἄλλοσπερ. 2. α. εἰ ras.

C. 3. ὅτ' ἂν. 5. ὅτ' ἂν. 7. πλουσίων ras. aut macula. 8. οἴεσθαι τε.

D. 1. ἡγεῖσθαι. 4. αἰεὶ ut V. 4. αἰεὶ γάρ.

pag. 141. D. 7. ὁπόθεν ποτε. 8. τὸ μαλαχός. 9. αἰεὶ ut V.

E. 6. τοιοῖδέ τινες.

A. 1. ἐξαρχῆς. 3. γάρ. 3. λελουμένον τε. 4. βλαυτάς. m. rec. del.
acc. supr. α et pon. acc. supr. αυ. 5. ἐρίσθαι. 9. ἢ δ ὅς. δ
cum ὅς ligat. falso Jahn.

B. 1. πρὸς το. 1. ἀνιέναι. 1. ἐπὶ. 1. καγὼ. 3. την. 4. ἴσων pr. m.
ἴσων II. m. delete accentu circumfl.

C. 3. ἐστιῶντος.

pag. 142. D. 1. ἰέναι. 1. θοίνην ras. supr. η. acc. supr. οι m. recent. 1. ἄρα.
1. ἀγων. 1. με τι. 3. ὁδοῦ pro ὁ τοῦ. Jahnus errat. 4. ἀλλ' ἔωμεν.
4. σφάς. 5. ἰέναι. 5. πῶς. -

- E. 1. ἀνεωγμένην. 1. θυραν. 2. οἱ fort. acc. recent. 5. ὦι pro ὦ.
5. φᾶναι. 6. εἰς αὐθις. 8. οἷός τε ἰδεῖν ut V. Jowett οἷός τ' falso.
10. ἤχοιμη pr. m. sed. ead. m. rasura effecit ἤχοιμη. 11. ἐπι.
- A. 1. ἔστιν. 1. εἰσῆι. 8. φᾶναι. 4. ἡ δ' ὅς. 4. ἐρυξιμαχόν. 5. ἐμέ pro ἐ
μέν. 8. ἔστηκεν. 8. οὐ. 8/9. ἀτοπον γ'. 9. οὐκουν ras. supr.
(pr. m. ut vid. οὐκούν). 9. κάλεισ acc. recent.
- pag. 143. B. 2. γάρ τε. 2. τύχη. Apud Jahn „ὅπη ἂν τύχοι B.“ Falso. B. habet ὅποι
ἂν τύχη. 2. ἔστηκεν. 3. δ'. 4. εἰ σοι. 4. φᾶναι. 5. ἐστιάτε. 6. ἐπει-
δ' ἂν (f. Jahn ἐπειδ' ἂν). 6. ἐφεστῆκει. 7. οὐδέ πώποτε (non πώποτε
ut Jahn).
- C. 1. ὑφ' ὑμῶν. 1. ἐπι. 2. ἵν' (non ἵνα ut Jahn). 3. σφας. 5. εἰ δὲ οὐκ
ἔάν. acc. supr. i recentior. 6. σφας. 6. μεσούν. 8. φᾶναι.
- D. 1. ὅ σοι acc. acut. rec. ὁ in ras. 1. 2. πρόσσεστιν pro προσέστη.
3. γαρ. 4. φᾶναι. 5. τὸ κ. (Jahnus falso tacet). 7. ὕδωρ.
- E. 1. τιμῶμεν. 1. παρα. 3. μεν. 3. τίς. 5. εἴγε pro ἡ γε. 5. παρα.
5. ἐξέλαμψεν. 6. πρώτην.
- pag. 144. A. 1. μετα. 1. κατακλινεντος. 2. σφας. 3. αἰσαντας ras. em. 3. ταλλα.
falso Jahn ταλλα. 5. φᾶναι. 6. τινα.
- B. 1. παρήστε] mg. παρήτ^ε (man. recentiss. post. saec. XII.). 4. ῥαστώνην
v prius em. ras. 5. αὐτόν supr. ὁ vid. ὡ eras. 5. τόν add. ante
'Ερωξ. 6. ἀκουμένου. 6. η pr. m. 6. φᾶναι. (rec.) 8. φᾶναι.
8. ἐρμαῖον.
- C. 1. ἡ δ' ὅς δ cum ὅς ligat. 3. αἰτί ut V. 4. εξαίρω. 8. ταληθῆ.
δ
9. ἀηλῆς (δ recentius acc. recent. In mg. ἀηδῆς ead. m. recent.)
- D. 2. ἔστιν. 4. κρατκαλοῦντα (corr. rec.). 5. δλλα. 5. φᾶναι.
5. παιδρων (falso Jahn παιδρων). 7. ἄτταν. 7. αὐ pro ἂν.
7. βούλωνται.
- pag. 145. E. 4. φᾶναι. 7. αὐλιτρίδα Jahnus tacet. 7. ἱαν. 7. η ἂν.
8. ἐνδον. 9. οἶων.
- A. 1. φᾶναι. 2. καὶ sine uncis. 3. μεν. 3. ἐστ. 4. την.
6. δεινόν φησιν. 7. παίονας pr. m. παιᾶνας em. m. recentiss. (atr. nigr.)
- B. 3. σκεφασθαι. 4. καταλογαδην. 4. συγγράφειν ut V. 5. προδικος.
5. ἤττον. 6. βιβλίω hoc loco.
- C. 4. ἀξίω pr. m. ἀξίως m. recentiss. (atram. nigr.) 6. ἐρανον.
- pag. 146 D. 1. ξυνδοχεῖ. 1. ἂν. 2. ἐπαδεξία. 5. καὶ ἔστιν. 6. φᾶναι.
- E. 1. οὐτέ. 4. τουτωνίων pr. m. 4. ἔσου. 7. ταῦτα. 8. ξυνέφ.
ων
- A. 3. αξιομνημόνεύτον (rec. correct.). 6. ἐνθενδε ποθεν.
- B. 1. η δ' ὅς pr. m. 2. εἰσιν. 3. ὑπουδενός. 5. ἔδος. 7. το. 7. γενεσθαι.
8. Παρμενείδης pr. m. e ante i m. recentiss. del.
- C. 1. ἀκουσιλεως. 7. σύγγ.
- pag. 147. D. 1. τιμαί. (Punctum.) 3. ἐπι. 3. γάρ ἔστιν. 6. ὑπό του pr. m. ὑπό του m. rec.
7. πρς. 8. οἰδ' ἐνός.

- E. 1. ταυτόν. 2. ὅτ' αν. 3. τινι.
A. 1. μαχόμενοι. 6. και μην. 7. οὐκ αν.
8. ποιήσκειν. 8. ὥστε.
B. 2. ἡρώων. 3. παρ' αυτοῦ. 4. και μην. 4. ὑπεραποθνήσκειν.
pag. 148. B. 6. ἀλκυστις. 7. ὑπερ.
C. 1. αὐτῷ. 3. τῷ. 4. ἐδοξεν. 8. τῇ.
D. 2. οἰάγρου. 3. φασμα. 3.4. ἐφ' ἡν. 4. ἤκεν. 5. κιθαρωδός.
5. τολμάν. 6. ἀποθνήσκειν.
E. 4. ἀποθάνοι. 5. οἵκαδε δ' ἐλθὼν ut V.
A. 3. αὐτόν. 4. αἰσχυλῶσα. 5. ἐρᾶν. 6. ἡρώων. 7. ὡς φησὶν ἡ in ras.
B. 1. τιμῶσιν. 1. τον.
pag. 149. B. 2. θαυμάζουσιν. 3. ὅτ' αν. 5. δια. 5. ἀλκυστιδός.
7. ἐγωγε φημί. 9. τελευτήσας ut C.
C. 2. τινας. 2/3. διεμνημόνευε ut V.
D. 1. ὁποῖον pro ὁπότερον. 4. ἴσμεν. 5. ἴστον. 6. τῷ θεῷ acc. supr.
α ut vid. recentior, ras. supr. ε. 7. μὲν.
E. 1. διόνης. 4. εὐληχε.
A. 1. ὦιδ'. 1. αὐτὴ ἐφ' αὐτῆς. 3. οὐκ ἐστὶ. 4. τοιοῦτο revera.
pag. 150. A. 6. ἐρᾶν. 7. ἐστὶ. 7. ἀλλὰ. 7. καλός. 8. ἐρᾶν.
B. 2. ἐρῶσιν. 3. ἦττον. 5. το. 8. τουναντίον.
C. 1. ἡ pr. m. 5. ἐπὶ το. 5. τρεπονται. 6. ἐπιπνοί. 8. εὐκρινῶς.
D. 2. ἐπειδ' αν. 2. ἀργωνται revera. 2. ἴσχειν. 3. οἶμαι εἶσιν. 4. ἐρᾶν.
7. χρεν.
E. 1. ἐρᾶν. 5. χρεν.
pag. 151. A. 1. καθόσον. 1. ἐρᾶν. 2. το. 2. ὥστί. 3. τολμάν.
B. 1. εν. 1. ἡλιδι pr. m. 1. οὐ pr. m. ut V. 4. ἔχουσιν. 7. οἰκοῦσιν.
C. 1. τοῦτό γε. 1.2. φιλογυμνασσία. . . . in ras. 6. ἀριστογυίτονος.
7. κατελυσεν. 8. ου pr. m. 8. μεν.
D. 2. οὐδέ. 3. ἐνθαδε δε. 7. ἐρᾶν. 8. κᾶν.
pag. 152. E. 2. το. 2. ελιν. 4. αἰετὶς pr. m. m. rec. superscripts. ᾱ et spirit. l.
supr. ει. 4. τολμῶν. 4. ἀλλοτιουν.
A. 1. τοῦτο φιλοσοφίας. 2. καρποϊταν. 2. ἡ. 3. παρὰ τοῦ. 3. ἡ τινα.
etiam V. τινα. 5. δεήσαςιν. 6. ἐθέλοντες. 7. οὐδ' αν.
B. 3. αὐτῶν. 3. ἐπιτα. 6. ὡς. 6. ὁμνόντι pr. m. 7. τῶν ὄρκων.
7/8. οὐ φασίν.
C. 1. πεποιήκασιν. 3. τῇδε. 3. ἐρᾶν. 4. ἐπειδ' αν δε.
5. τοῖς ἐρασταῖς. 6. ταυτα. 6. ἡ om. ante ἡλικ. add. οἱ. 7. ἑτεροι ut V.
7. ὁρῶσι . . ras. (v ut videtur antea). 7. τοιοῦτο . . v. eras, sed a man. I.
D. 2. ταῦτα τίς. 3. ἡγήσας' αν. 4. το δε. 4. ὦιδ' ἐχει. 4. ἐστὶν.
pag. 153. D. 5. ἐξαρχῆς. 5. καθ. 7. ἐστὶ. 8. καλὸν pro καλῶς.
E. 1. πονηρὸς δ' ἐστὶν.
A. 1. συντ. 3. δια. 4. ποτέρῳ (v recentius). 4. ποτε. 5. ποτέρων.
B. 1. αλῶναι. 7. ὅσπερ. Bekk. falso οπερ.
C. 1. ἦντιν' οὐν. 3. μῶν supr. μόνῃ m. recentiss.
4. δ'. 4. τῇ. 6. ἐκείνο. 7. μέρος.

- pag. 154. C. 8. κολακεία. 9. τῷ νόμῳ τούτῳ. 9. συμβαλεῖν. 9. ταῦτα. 9. τὴν.
 D. 1. τον. 1. τὴν. 2. συμβῆναι sine corr. 2. τῷ ut V. pro τό.
 3. ὅτ' ἄν. 4. χ correctum ex γ. 5. ἄν | οὖν. 7. ἐπὶ οὖν sine corr.
 7. αὖ (puncta nigra supr. αὖ) ὑπουργῶν.
 E. 1. συμβαλλέσθαι. 3. ξυνιόντων sine corr. 3. ταυτὸν. 3. συμπίπτει sine
 corr. 6. ἐπὶ.
 A. 3. ἦτον. 4. αὐτοῦ. 5. ὁποῦν sine ras. 5. ὁποῦν sine ras. 5. τον.
 6. αὐτον. 6. καὶ. 7. τὴν. 7. τοῦ om. ut V.
 B. 3. καθ. 8. ἀρετὴν.
 C. 1. αὐτοῦ.
- pag. 155. C. 3. συμβάλλομεν. 4. ἴσα pr. m.
 D. 1. τῶν ἱατρῶν. 3. παύσαι. 4. τον. 6. ἐπειδ' ἄν. 6. δ' ἄν.
 E. 1. δε. 2. ἀναλαβὼν τί. 2. τοιοῦτο. 4. οὐκ ἄν. 5. φάναι. 5. δε. 7. τον.
 A. 2. το μὲν γαρ. 3. διελεσθαι. 3. ἐστίν. 4. ἀνῶν (= ἀνθρώπων).
 6. ζώων. 7. καθεωραχέναι.
 B. 1. ἐπὶ. 2. ἀπο. 4. ἔχη.
- pag. 156. B. 6. το. 7. ὑγιεινέρος pr. m. (falso Jahn. ὑγιεινός pr. m.) m. rec.
 corr. ὑγιεινῷ ἔρωσ (falso Jahn ὑγιεινῷ). 8. ἐστίν ut V. 8. ἔλεγον.
 C. 1. δ'. 2. σώμασιν. 6. τίς.
 D. 6. ἐρᾶν.
 E. 2. ὡς φασὶν οἷδε. 3. συνέστησεν.
 A. 2. προσεχοντι. 2. κατα. 3. ταῦτα. 3. ἴσως. 4. γαρ. 5. ἐμφέρεσθαι
 sine corr. 7. φάναι. 8. ἀλλὰ ἴσως.
- pag. 157. B. 4. ἐστίν.
 C. 1. βραδέος ἐκ. 4. καὶ ἐστίν. 6. ἐν μὲν. 6. αὐτῇ re vera. 8. ἐνταῦθα
 πῶς ἐστίν.
 D. 1. ἡ. 3. παιδείᾳ (i. e. acc. supra εἰ delend.) pr. m. ut vid. παιδεία
 ο αἷς
 E. 3. μηδὲ μίαν. 4. ἐργῶντες corr. m. recent. (ἐργῶντες m. pr.)
 8. καθόσον. 8. παρήκει.
 A. 1. ἐνεστον pr. m.
- pag. 158. A. 3. ἐπειδ' ἄν. 6. κράσιν. 7. ζώοις. 8. ὅτ' ἄν.
 B. 2. ἀλλὰ ἀνόμοια. 4. ἐρυσίβαι. 5. ἀλλήλα m. pr. 6. φορὰς supr. α ras.
 acc. pos. m. recentior.
 C. 2. ἀλλό τι. 2. ἡ. 5. μὴ δέ. 6. περὶ τον.
 D. 2. κατ' (non κατὰ). 4. ἐυλλήβδην sine corr. 5. ταγαθά (falso Bekkerus).
- pag. 159. E. 3. ἡ.
 A. 3. αὐτῇ (ἡ ras et em. sed. acc. a vet. m.). 3. ὥστί. 5. ἐστίν.
 7. ὡγαθὲ φάναι ὡγαθὲ (sic re vera B.) φάναι supr. α ras.
 8. γελωτο ποιεῖς.
 B. 2. ἐξόν. 5. pro ῥηθήσεσθαι B. ἦτ | τηθήσεσθαι. | significat finem versus.
 ἦτ fortasse paululum recentius; excedit lineam. 8. φάναι ras.
 supr. α.
 C. 1. οὕτως. 3. καὶ μὴν. 4. ἡ ἡ . . . ras pr. m. (m. II. ἡ).
 5. οἱ om. 7. ἄν. 7. κατασκευαζαι.

- pag. 160. D. 7. αὐτή. 7. ἡπερ m. pr. 8. οὐ pro οὐ. corr. m. rec. 4. κοινόν. acc. acut.
 5. δέ ut V. 5. ἀλλή ἐν ὧν εἶδει. acc. et spir. ἐν ut vid. recent.
 6. στρογγυλον.
 8. χερσίν. 8. δὲ.
 A. 3. ταλλα. 4. ὁποτέρωσθε. 5. ὁρμήσει . . ras (v ut videtur. ὁρμήσειεν C.)
 θεῖν. 6. καὶ εἰς. 7. ἅπερ εἶδομεναι m. pr. corr. m. rec.
 B. 3. το b1a. 6. ὅμοια. pr. m. 8. ὡταυ.
 C. 1. ἀναβασιν.
- pag. 161. C. 7. οὕτε ut V. 7. εἰων. 9. αν εἰων. m. pr. 9. τε m. pr. τέ m. rec.
 D. 3. το. 5. δέτι. 5. θείωσιν. 6. δεχα. 6. ἐφ. 8. ὅα | ὡιά.
 E. 1. οἱ om. 9. ὡιά. 2. ἐκίλευν (l. e. v delend.) corr. legere voluit
 ἐκίλευτο; posuit enim punctum post τό. 4. αὐτοῦ. 5. ταλλα m. pr.
 (τάλλα m. recentiss). 5. ἐκίλευεν revera. 6. ἐπι. 7. συσπαστά.
 7. βάλλοντα pr. m. supra manus recentiss. βαλλάντια. 8. εν m. pr.
 8. στομα. 8. ἀπέδει.
 A. 2. τί. 5. τον. 7. ποθουν. 7. αὐτοῦ. 7. ξυνεῖναι pro ξυνήει. ξ sine ras.
 B. 1. ἀπεθνήσκον. 2. το. 3. ὁπότι. 3. τόδε pr. m. corr. m. II. τὸ δέ.
 3. λειφθείη revera.
- pag. 162. B. 5. εἴτε ut V. 6. ἀπολλυντο supr. o m. rec. ὡ pos
 C. 2. μετεθηκε m. I. 2. οὕτω αὐτῶν. 3. ἐποίησεν. 8. ἐπιμελοῖντο revera.
 D. 4. ἡμῶν adest. 4. ἐστιν. 5. ζητει. 5. αἰεῖ. 6. το. 6. ἔχαστον.
 6. ξύμβολον sine ras. 8. φιλογυναῖκες.
 8. τέ (τε V. C.) 8. εἰσι.
 E. 1. γεγόνασιν. 2. γίνονται. 5. τετραμμέναί εἰσι. 7. ατε m. pr. 7. τεμαχια.
 A. 1. καὶ εἰσιν.
- pag. 163. A. 5. ἀνδρίας. 6. αὐτοῖς revera. 8. ἐπειδὴν δε.
 B. 2. ἀλλ' ὑπὸ ut V. 3. καταζην. 4. α. . si ras. antea αἰεῖ. 5. συγγενές
 sine ras. 5. ὅτ' ἀν. 6. παιδεραστης.
 C. 1. ἐκπλήττοντα revera (ut V. ex. auct. Bekk.). 4. οὐδ' ἀν. 5. οὐδεν
 (V. οὐδέν). 6. δόξειεν (ut V.). 7. ἐτέρω. 7. χαίρειν. 7. ξυνών sine
 ras. 8. ἄλλότι.
 D. 1. δῆλη ἐστιν. 2. αὐτοῖς. 4. παραλλήλων. 5. ἐρατο. 5. ἄρα γε
 6. αὐτῶι.
 E. 1. θέλω. 2. m. pr. συμφυῆσαι i in ras. — συμφῶσαι m. II. 3. ἕως τάν.
 3. ζητήσεως m. pr. ζητε ὡς m. II., ut videtur, ponit enim acc. circumfl.
 supr. ζη et e supr. τη et spirit. asp. supr. ως.
 3. ζην. 4. ἐπειδ' ἀν. 4. δυοῖν. 6. ταῦτ' ἀκ. 7. οὐδάν. 7. ἄλλό τι.
- pag. 164. E. 8. ἀτεχνως pr. m. 8. οἷοιτ' ἀν. 9. δυεῖν revera. 10. το. 11. ἡμεν.
 A. 2. διωκίσθημεν. 3. ἐστιν. 4. μη. 5. διασχησθῶμεθα. 5. περίμεν pr.
 m. recentiss. m. περιώμεν. 6. κατα.
 6. διαπεπρησμένοι (ut V.).
 B. 1. τα. 1. ὡς pro ὧν.
 C. 2. εἰσιν. 3. καθ. 4. εὐδαῖμον m. pr. εὐδαμον m. recentiss. falso Jahnus
 εὐθαῖμον. 6. ἀρχαίαν. 7. ἐγγυτάτω re v. 8. τοῦτο | τοῦτον i. e. v delend.
 8. ἴστι. 8. αὐτῶι pr. m. αὐτῶι m. II.
 D. 1. τον. 3. τα.

pag. 165. D. 7. ἔστι. 7. ἀλλ' οἷος. fort. acc. circumfl. ex. om. 7. ἡ pr. m.
7. οὗτος pr. m.

E. 1. τι. 2. λοιποὶ pr. m. 3. φᾶναι. 4. ξυνήδεν sine ras. 6. ἀπορήσω^{σι}
σι multo recentius.

A. 2. ου pr. m. bis. 3. ἐπειδὴν hic. 3. φοβέο. 6. το. 7. μὲν τὰν.

B. 1. ἀνδρίαν τον pr. m. 2. ἀκρίβαντα, corr. m. recentiss. ὀκρίβαντα.
4. ουδεπωσπιούν. 7. φᾶναι. 7. που.

C. 1. μαντὰν pr. m. (corr. m. rec.). 1. φᾶναι. 2. τὸν Σωκράτη om. 2. τί.
2. ἀγροικον. 3. ἡγοιο. 6. ἤμεν.

D. 1. αὐτοὺς pr. m.

pag. 166. D. 2. ἡ. 2. φᾶναι. 3. εὐχάν. 3. οἶοιτο m. pr. corr. fort. ead. m.
3. Jahnus adnotavit „αἰσχρὸν ὃν ποιεῖν B. V. C.“ sed B. non habet ὃν.
5. αὐτῷ pr. m. 5. οπηρῶν pr. m., m. rec. p. spir. supr. επ.
6. ὀπιούν.

E. 1. φᾶναι. 4. δε.

A. 3. οἷος ὡν ut V. falso Jahnus οἷος ὡν. 3. αἴτιος macula. 7. ἀνεμεσητον.

B. 3. ἔρωτος (corr. rec.). 3. οὐ δόντος pro οὐδ' ἐντός. 4. πλησιάζει. 4. αἰεῖ.
4. ξύνεστι sine ras. 4. ἔστιν. 5. αἰεῖ. 7. ἱαπέτου.

pag. 167. C. 1. αἰεῖ. 2. γράμματα pro πράγματα. 3. Παρμενίδης m. recentiss. del. ε;
Jahnus tacet. 5. αὐτοῖς. 6. ἐξοδ. 7. ἔστι.

D. 1. ἔστιν. 2. τι. 6. πηδναται.

E. 1. τὸ αὐτό. 6. αὐ ἐξ ἧς; m. r. vult. ἐξῆς. 7. ἀλλ' ἡ τι pr. m. 8. ἡδὴν.
9. ἄ... εἰ ras (αἰεῖ antea). 9. ποσίν.

A. 2. δε. 8. αἰεῖ.

pag. 168. B. 2. ἄλλω. 2. ουκ ἐπι pr. m. 2. δὴν. 5. ταῦτα. 6. μετα. 8. οὗτε bis.

C. 3. βασιλῆς pr. m. corr. m. rec. 6. μηδὲ μίαν. 6. Acc. supr. κρατοῖ et
κρατῶν recentiores esse videntur. 9. εἰς. 9. ἀνδρίαν.

D. 3. ἄν om. 7. ἐν' om.

E. 2. καὶ pr. m. corr. m. rec. 3. ἡ.

A. 1. διδάξειεν. 2. ζώων.

pag. 169. A. 4. ζῶια. 5. μὲν. 7. μην.

B. 3. κυβερνᾶν. 5. οὐκ ἐτι fort. pr. m. ε et ι certum, incerta tertia linea;
m. II. corr. ἐν; in marg. m. recentiss. οὐκ ἐνεστιν ras. 6. τοῦ δε
pr. m. (acc. recent.). 6. ἐναρχῆ. 8. ἐρᾶν.

C. 1. γέγονεν. 3. μετα τοῦτο. 4. μοι τί. 6. κοίτην ὕπνον τε νυκτεῖ pr. m.
κοίτην ὕπνον τ' ἐ νύκτε pr. m. II.

D. 2. ξυνόδους sine ras. 3. ξυνιέναι sine ras. 6. ἀγαθός. 7. ἀβρότης.
7. pr. m. χληδης m. recentiss. corr. χλίδης. 8. ἡμέρου. 8. ἐπιμελῆς.
8. ἀνελῆς corr. m. recentiss. ἀμ.

E. 5. καλῆς. om.

pag. 170. E. 8. καθόσον.

A. 2. πρεπόντος pr. m. corr. m. rec. 4. ἄρα. 5. φᾶναι. 5. ἀκουμένου ut V.
7. θαυμαστῶς ἐροῖ acc. - rec. 7. ἱερὸν. 8. φᾶναι.

B. 1. εὐ ἱερὶ pr. m. εὐ ἱερὶ m. rec. 1. τὸ δε. 6. εὐχάν.

- C. 2. πη *revera*. 3. ἀνεμίμνησκεν *revera*. 3. ἀτεχνως. 4. ἐπεπόνθει.
4. γοργίου. 5. δαινου. 5. τον. 6. αυτον. 6. ποιήσαιεν. 7. ηνίκα.
- D. 4. ἀβελτερίας (correctio recentiss.): 4. ταληθῆ. 5. αυτών. 7. εἰ.
- pag. 171. D. 8. το δέ.
- E. 1. οἰοῦν. 4. προουρήθη. 5. δόξῃ. 7. καί φατε.
- A. 2. δηλονότι. 2. γινώσκουσιν. 3. εἰδόσιν ut V. 4. ηἰδῆ. 4. οὐδ (non
οὐ δ'). 6. χαιρέτω δῆ. (sic ante punct.).
- B. 3. ὀφλῶ. 4. ταληθῆ. 4. ὀνόμασιν. 5. ὅποια δ' ἂν (*revera*).
7. ὀπη. 7. φᾶναι. 8. σμικράττα. 8. ἐρέεσθαι.
- C. 1. ἡδῆ. 2. φᾶναι. 2. μεταταῦτα. 4. και μὴν. 6. ὁποῖος τίς.
7. ἴθι. 8. ταλλα. 8. μεγαλοπρεπῶς.
- D. 1. οἴος.
- pag. 172. D. 2. εἶναί τινος. 2. εἰ. 3. ἐστίν. 4. ἐστίν. 5. αὐτό. 7. ἡ. 8. φᾶναι.
- E. 1. ὁμολογεῖσθαι. 2. ὀλίγωι *revera*. 4. τοῦτο ὅπερ ἐστίν ἐστι. 4. ἡ.
4. φᾶναι. 5. πειρω. 5. φᾶναι. 6. ἐστιν.
- A. 1. οὐδενος ἡ. 1. ἐστι ut V. 2. παρα. 3. ἐστίν. 4. αὐτοῦ ἡ. 4. φᾶναι.
6. ἡ. 6. φᾶναι. 8. ἡ.
- B. 2. σοὶ δε. 2. καμοὶ φᾶναι. 3. ἄρ. 4. ὡμ. *revera*. 5. ὁ. 7. φᾶναι.
- C. 3. εννοεῖς.
- pag. 173. C. 4. ἕκαστα *revera*. 6. ὅτ' ἂν.
- D. 3. εν τω. 3. ἔχῃς. 4. ὅτ' ἂν. 5. ἄλλο τι. 6. ἄλλο pr. m. ἄλλο m. r.
6. ὁμολογοῖαν pr. m. ὁμολογοῖ αν m. rec.
7. συμφᾶναι. 8. τοῦτο. 8. ἐστίν. 8. ἐρᾶν. 8. αὐτῶι.
9. ἐστίν. 9. τὰ pro τῶ.
- E. 1. σωζόμενά μοι παρόντα. 1. φᾶναι. 2. μὴ. 3. μὴ ἔχῃ. 3. μὴ ἐστίν.
4. ἅττα ἐστίν. 4. ὧν ἡ (falso Jahnius ὁ ἡ). 5. ἐστίν. 5. φᾶναι.
6. ἀνομολογησώμεθα *revera*. 6. ἄλλο. 6. ἐστίν ras. 7. μεν.
- A. 1. αὐτῶι. 1. φᾶναι. 1. ἀναμνήσθητι *revera*. 2. ἐφῆσθα. 6 et 7. φᾶναι.
7. ἄλλο. 9. δέ.
- B. 1. ἔχῃ. 2. ἐρᾶν. 2. ἐστι. 3. φᾶναι. 3. το.
- pag. 174. B. 4. ἄρα. 7. και μὴν.
- C. 1. φᾶναι. 1. ταγαθὰ. 3. κἂν pr. m. κἂν m. rec. 4. φᾶναι. 4. οὐκἂν.
5. οὐ μεν. 6. φᾶναι.
- D. 1. ἀντιλεγειν. 2. μεν. 5. ποτε. 8. ἀπ' ἐμαυτοῦ. 9. διελθῇ pro δεῖ δῆ.
- E. 3. διηει. 4. αὐτήν. 9. ἐστι. 10. ἡ.
- A. 1. ἡ καὶ ἂν μὴ. 1. αμαθεις. 1. ἡ (acc. recent.)
2. ἐστίν τί. 3. ὀρθο δοξάζειν.
- pag. 175. A. 8. ην.
- B. 1. ὁ μὴ. 2. τον. 3. αυτόν. 4. ἄλλα τι pr. m. 4. ην pr. m.
7. ξομπ. sine ras.
- C. 2. οἱ. 2. αυτόν. 2. ην. 3. καγῶ. 5. φῆς. 5. ἡ. 6. φᾶναι sup. a ras.
- D. 1. ταγαθὰ. 1. ἄλλὰ μὴν. 4. ὁ γε γ' ὧν acc. sup. o recent.
- E. 1. μὴν. 1. ἴφην. 4. ην.

- pag. 176. 9. αὐτῶι pr. m. αὐτῶι m. rec. 9. ξυνδ. sine ras. 10. ἱερων.
- A. 1. και. 5. ἀλλότι. 5. ἡ περι. 7. ἐστι. 8. ἡν pr. m. ἡν m. rec. 8. τινος ἐστι.
- B. 2. ἡσιῶντα pr. m. man. corr. fortasse vult. ei. 3. προσαιτῆς οὐσα, Jah- nus errat. 4. ἡν. 5. τας. 7. ἡδεν. 7. την.
- C. 2. αὐτῶι. 5. το. 7. καθέστηκεν. 7. πέντης pr. m. corr. m. rec. 7. αἰεί.
- D. 2. χαμαιπετης αἰεί. 3. αἰεί. 6. αἰεί. 7. ἐπιθυμητης. 7. πορισμος (Jahnus errat.). 7. φιλοσόφων. 7. δια.
- E. 1. τότε. 2. αὐτης. 2. τε om. 2. ὅτ' ἄν. 3. τότε. 3. ἀποθνήσκει. 3. την. 4. το. 4. αἰεί. 5. ποτε. 6. ἐστιν. 6. ὡδε.
- A. 1. γενεσθαι. 4. καγαθόν. 5. αὐτό pr. m. corr. m. rec. 5. οὐκὸν pr. m. οὐκὸν corr. m. rec.
- B. 1. δηλονότι. 2. ἄν pro αὐ. 3. ἐστιν. 6. δὲ αὐτῶι. 6. πατρός μεν. 7. ἐστι.
- C. 1. θαυμαστὸν ras. supr. 2. τετραειρομένηι i diverso atramento scriptum. 4. γάρ ἐστι. 5. ἀβρόν. 5. μακάριστον. 5. το. 6. οἶαν.
- pag. 178. D. 1. μετα. 2. ἐστι. 2. μεν. 3. ἐστι. 3. φῆς. 4. ἐστιν. 5. ὡδε. 5. σαφ. ἐρῶι sed. ω ex. α corr. 6. αὐτῶι.
- E. 3. ερα pr. m. (ἐρᾶ rec. m.) pro ἐροίτο. 4. τι. 4. ἡν. 4. αὐτῶι. 5. ταγαθά. 6. ἡν pr. m. corr. m. rec. ἡν.
- A. 1. ἀγάθων pr. m. corr. m. rec. 2. οὐκ ἐτι. 2. ερεσθαι. 2. ἵνα τί. 4. τον. 5. ποτερα. 5. οἶει γενερα. 6. ταγαθά. 6. αἰεί. 6. ἡ. 7. ἡν.
- B. 1. ἐρᾶν φαμέν. 2. αἰεί. 2. ἀλλὰ τινὰς φαμέν. 2. ἐρᾶν. 3. ἡν. 4. ἔρωτος τί. 6. ὡσπερ τι ἡν. 7. ποιήσεις ἐστι τί. 7. γὰρ τι. 8. μη. 8. ὁτωιῶν. 8. πᾶσα.
- pag. 179. C. 2. εἰσί. 3. ἡδῆ (falso Jahnus ἡδῆ). 4. ἀλλὰ ἀλλὰ ut V. 4. ἐξουσιν. 4. ἀπο. 5. την.
- D. 1. περὶ τον. 3. ἀλλοιμεναλλη corr. m. rec. ἀλλ' οἱ μὲν ἄλλη. 3. ἐπαυτόν pr. m. 4. ἡ pr. m. 5. κατα pr. m.
- D. 5. ἐρᾶν. 5. οὔτε. 7. ἐρᾶν.
- E. 1. μενγε. 1. οἶαν pr. m. corr. m. rec. 2. οὔτε. 2. ἡμίσεος. 3. οὔτε. 4. ἐπὶ corr. m. rec. 5. αὐτοῖς. 6. το εἰ. 7. καλῆι. 8. το. 8. ἀλλό.
- A. 1. ἐστιν. 1. ἡ pr. m. corr. m. rec. 1. ἡ ante σοὶ pr. m. corr. m. rec. ἡ. 1. σοι. 2. ἡν. 2. ἄρ'. 2. ἡδῆ pro ἡ δ' ἡ. 3. ἐστι. 5. ἄρ'. 6. αἰεί. 7. ξυλλ. sine ras. 7. τοῦτο ἀγ. pr. m. corr. m. rec. 8. αὐτό pro αὐτῶ. 8. αἰεί.
- B. 1. ἐστιν. 4. αἰεί. 1. ἡδῆ pro ἡ δ' ἡ. 1. τὸν pro τῶν. corr. m. rec. 2. τινα pr. m. corr. m. rec. 2. ἡ σπουδῆι (Jahnus errat.). 3. σύντασις.
- pag. 180. 4. ἄν σε. 5. παρά. 6. ἀλλὰ. 6. ἐστι. 8. ἡν. 8. ὅτι.
- C. 1. ἡδῆ pro ἡ δ' ἡ. 1. χουουσιν. 2. ἐφη. 2. καὶ om. 6. ἐστιν. ἐστι. 7. ζώω. 7. ενεστιν pr. m. corr. m. rec. 8. τὰ δέ.
- D. 1. ἐστι. 2. θεῶι. 2. το. 2. καὶ. 2. εἰλήθρια. 3. δια. 3. ὅτ' ἄν. 4. ὤλεων. 5. ὅτ' ἄν. 6. συνσπείρεται puncta posuit m. rec. 7. ἀνελ- λεται acc. pos. m. rec.

- E. 1. σπαργώντι. 1. ποιήσεις *revera*. 2. ὠδίνος. 2. ἀπολαύειν. 2. ἔστιν.
3. μην. 4. ἦν.
- A. 2. αἰεὶ.
- pag. 181. 6. καὶ. 6. ἡρετό. 8. ἦ. 8. ἐπειδ' ἄν. 9. γεννᾶν.
- B. 2. το. 2. ξυμ. *sine ras.* 5. ὑπεραποθνήσκειν. 7. ἄν.
- C. 2. ἀνελτερον. *sed. m. rec. corr.* 2. ἡ *pr. m.* 2. εἶπεν. 3. διανόει *pr. m.*; *m. rec. del.* ' *et pos.* ' *supr.* εἰ. 3. δεινός *pr. m.* 6. τα.
- D. 2. το. 2. αἰεὶ τὸ εἶναι. 2. καὶ *om.* 3. αἰεὶ. 4. ζώων. 4. ζῆν.
7. αὐτῷ *revera*. 8. αἰεὶ. 8. τα δε.
- E. 1. ξύμπαν *sine ras.* 2. τὴν. 2. τόποι. 3. λύπαι. 4. τα. 5. τα.
- pag. 182. A. 1. ὅτι. 3. ταυτὸν. 4. μελετᾶν. 6. σώζει *sine ras.* 8. σώζεται *sine ras.*
8. ὄνητόν *pro* θνητόν *pr. m. corr. m. recentias.* 8. οὕτω. *corr. m. rec.*
οὕτω. 8. παντάπασιν. 8. αὐτόν.
- B. 1. αἰεὶ. 3. μετεχειν. 4. ταλλα. 4. ἀθάνατον. 4. ἀλλῇ. 5. εἰσαυτοῦ. 8. ἦν.
- C. 6. ἐς *ut V.*
- D. 1. χρήματα *ut VO.* 2. οὐσπινασοῦν.
2. ὑπεραποθνήσκειν. 8. περὶ.
- pag. 183. E. 4. εἰσιν.
- A. 1. τὴν. 1. εἰσι. 2. γαρ. 2. οἱ. 2. κυουσιν. 3. κυειν. 7. πόλεων.
8. διακόσμησις.
- B. 1. ὅτ' ἄν. 3. γεννᾶν. 3. ἐπιθυμεῖ. 4. περὶ ὧν (*errat Jahnius*).
6. κύων. 6. καὶ ἄν.
- C. 4. ἀπὸν. 7. καλλίων ὧν *pr. m. corr. m. rec.*
- pag. 184. 6. κατέλιπε το (Inde *pr. m.* κατέλιπεν τὸ) *corr. m. rec.*
ras. supr. ras. ras. supr.
- D. 7. ἡμῖν.
- E. 3. ἤδη. 4. δε.
- A. 1. καν. 2. ταῦτά ἐστιν. 2. τ' ἄν. 4. οἶός. 5. ἴοντα. 6. ἵεναι. 7. αὐτῶν.
7. ἐρᾶν. 8. γεννᾶν.
- B. 1. ὁτωιοῦν. 1. τὸ. 3. ταυτὸν. 3. πᾶσιν.
- C. 1. καὶ ἔάν. 1. αὐτῷ. 2. ἐρᾶν. 5. ἰδεῖν. 5. αὐτῷ. 5. ξυγγ. *sine ras.*
- pag. 185. 7. τα. 7. ἰν' αἰδη.
- D. 1. παρενί. 2. τινος. 4. το. 5. μεγαλο πρεπεῖς. 5. τίχτει.
- E. 5. ἰῶν.
- A. 1. αἰεὶ. 2. φθινον. 3. τότε μὲν τότε δέ. 4. το. 6. αὐτῷ. 8. ζώωι.
- B. 1. ἀλλ'. 1. καθ. 2. αἰεὶ. 3. τινα. 6. το. 7. καθορᾶν. 8. το.
- pag. 186. C. 1. ἵεναι. 2. αἰεὶ. 3. ἐπ' ἀναβαθμοῖς. 3. δυεῖν *revera*.
5. καλῶν *ante* ἐπιτηδευμάτων *om.* (*errat Jahnius*). 6. καὶ *pro* ἕως.
- D. 1. ὃ ἐστι. 3. ποτ' εἰδής. 4. ἐσθῆτα *revera*. 7. ξυν. *sine ras.* 7. αἰεὶ.
7. αὐτοῖς. 7. μήτ' *ut C.* 8. θεάσασθαι. 8. ξυν. *sine ras.*
- E. 1. εἰ τω. 1. εἰλικρινές. 4. δυναιτο.
- i
- A. 1. ἄρ'. 2. ὧ δεῖ (*i m. rec.*). 2. ξυν. *sine ras.* 5. ἀλλὰ ἀλῃ. *ut V.*
7. θεοφιλῇ. 7. τῷ.
- pag. 187. B. 6. τιμᾶν. 8. αἰεὶ.
- C. 1. ἀνδρειαν. 1. εἰμι. 6. τί. 7. ἐμνήσθη. 8. φόφον.

- D. 1. φάναι. 2. εἶδε. 3. ἀλλ' (errat Jahnus). 7. σφάς. 7. τνας.
- E. 1. ἴων. 1. και. 2. τενίας. 4. ἀπωμεν. 4. ἐφ. 5. ἤχθομεν m. rec. ex
χ. corr. λ. 5. φάναι. 5. ὄϊσι pr. m.
7. τενίας. 8. εἰάν εἶπω. 8. ἄρα. 9. καν.
- pag. 188. A. 2. ἡ bis 3. κτελεύει (v m. recentiss.)
4. ἴεναι. 5. τενίας. 6. ἐκίπροσθε.
B. 6. ὠῖδε pro ὄδε. 7. ὄραι. 7. δὲ ἄν. revera. 8. ἡρακλεις. 8. τοῦτ'
εἰπεῖν pro τοῦτο τί ἦν.
λ
C. 1. ἐνλογῶν (λ fortasse m. rec.). 1. αὖ. 1. εἰώθεις revera.
3. ὡς pro καί.
C. 4. γελοιός ἐστι. 6. κατακρίσῃ (Jahnus errat.) 6. φάναι. 8. οὐ pr. m.
9. ἀφ. 9. οὐκ ἔτι. 9. ἐξεστίν.
D. 1. ἡ. 4. ἡ. 5. ἐπάμυναί. 6. φάναι. 7. εἰς αὐθις σε. 8. φάναι.
E. 1. τενίων pr. m. m. rec. ταινιών.
1. ἀναδησώμεθα. 1. καὶ om.
- pag. 189. 4. αἰεῖ. 5. τενίων. 7. ἐπειδῇ. 11. τί ἐστίν. 11. ἔκπομα γον. 12. φάναι.
A. 5. τίς. 7. φάναι.
B. 4. γαρ. 5. αὐ φάναι. 6. γαρ. 9. πρίν σε. 9. ἐπιδεξία.
C. 4. δὲ. 5. ἐπιδεξία revera. 6. φάναι.
- pag. 190. 8. ἴσου.
D. 1. ὦν. 1. εἶπε ut V. 1. τουναντίον. 2. ἐστι. 2. ἡ. 4. φάναι.
6. οὐδάν. 7. φάναι. 9. ἐρυξίμαχε.
E. 2. φάναι. 3. ἡ. 3. ταληθῇ. 4. παρίης. 4. φάναι. 5. οὐκάν. 7. ἄν.
A. 3. την. 3. ὠῖδ'. 8. σιληνοῖς.
B. 1. ἐρμολυφείους. 3. διχαδε. 7. ταλλα. 7. μετα.
- pag. 191. 8. ἡ.
C. 1. μεν. 6. αὐλητρις μονα. 9. ταυτόν. 9. ὅτ' ἄν. 9. μὲν τοῦ.
D. 3. κάν. 5. ἐσμεν. 6. κομιδῇ. 7. ὁμόσας. 8. ὅτ' ἄν.
E. 2. τῶν om. 5/6. οὐδ' ἐπεθορύβητο. 7. ὑπο τουτουῖ.
A. 3. ξυν. sine ras. 4. οὐκάν. 4. ταῦτα. 6. αὐτός τι. 7. βία. errat. Jahn.
- pag. 192. 8. ἵνα μη αυτοῦ.
B. 2. ἐμοὶ ἐνεῖναι. 3. ὄντιν' οὖν. 3. ξυν. sine ras.
C. 1. ὅτ' ἄν. 4. χρήσομαι revera. 8. ἀλλὰ δε. 8. ἐμου. 8. ὅμοιος τέ
ἐστίν.
D. 3. αἰεῖ. 3. ἐστι. 5. σιληνωδες. 6. σιληνος. 7. ἀνοχθεις. 8. οὔτε.
9. μελει. 9. αὐτῶ.
E. 1. οὐδάν εις. 4. λέγω ὑμῖν pro λέγων μὲν οὐ. 6. αυτοῦ. 7. ἐώρακεν.
- pag. 193. 7. καὶ ἐμοί.
A. 4. ἔρμαῖον. 6. ἡῖδε. 6. γαρ. 7. pro του. 7. τιωθως.
B. 2. ταληθῇ. 4. αὐτῶκα v em. ras. 7. διαλεχθεις ras. supr. 8. μετα.
8. συγγ. 8. προυκ.
C. 2. προσεπάλαιεν. 5. το καρτερον. 6. ἰστέον. 7. ἀτεχνως.
D. 1. οὐδε. 2. ἐπειδῇ. 4. ἐπιβουλεύσας. 6. ἡβούλετο.

pag. 194. E. 2. προς. 2. ὄντιν οὖν. 2. το. 2/3. οὐκάν. 7. καμ' (falso Jahnus).
7. φασι. 7. πούτινα. 8. οἶον.

A. 2. δρᾶν. 3. το. 4. δειχθῆι (errat Jahnus). 7. δρᾶν. 8. ὁποῦν rev.

B. 2. Σωκρατη. 6. τι^ς (s m. rec.) ἄλλός. 6. ἐστιν. 6. ἀγροικος.

C. 4. ἦ. 5. ἦν. 6. μνησθῆναι. 7. εἶναί σοι. 8. ἦ.

pag. 195. D. 1. ἦ. 2. πρεσβύτερόν τοῦ. 2. ἔσῳι τι τι ex. em. in ras. 3. μου.
3. εἶναί σου. 7. ἔλεξε.

E. 1. καὶ τίς ἐστ'. 3. ἐμοί. 4. εἰ δῃ. 4. κοινώσασθαι. 6. ἀντι.

A. 2. μη. 3. ὦν r. supr. 3. ἦτοι pr. m. ἦτοι m. II. 4. ὅταν. 5. καγῶ.

6. ἐμοί. 6. ταῦτά ἐστιν. 7. αὐτός. 8. γ'.

B. 2. νῶν. 4. οὐδ' ἐπ (falso Jahnus). 5. τοῦτο.

C. 1. κατακλινεις. 5. κατεφρόνησαν καὶ κατεγέλασεν.

pag. 196. 6. ὕβριςεν. 6. κεῖνό. 6. τί. 7. γὰρ ἐστὶ. 7. καταδεδαρθηκως.

D. 1. ἀνεστην. 1. ἦ. 2. καθηυδον. 3. το δὴ μετα.

3. ἠτιμάσθαι. 6. εἴωι. 6. οὐκάν. 6. ποτ'. 7. οὐθ' ἐπως.

E. 1. οὔτε. 1. ἴδῃ. 2. ἦ. 3. ωτε. 3. αὐτόν. 3. διεπεφεύγει reuera
(errat Jahnus). 5. οὐδενός· ἄλλου. 5. περιηα. 6. προυγεγόνει.

6. μετα. 9. ὁπόταν. 9. ἀπολειφθέντες.

A. 2. ἐν τ' αὖ. 4. ὁπόταν pro ὁ πάντων. 5. ἐωράκει.

B. 2. εἴου. 2. ἦ. 3. ἦ. 4. ἦ ὅσα ut V.

pag. 197. C. 8. ἦ. 1. δ' αὐτό ἐρρεξε. 2. ποτε. 2. ξυνν. sine ras. 3. ἔωθεν.
in ras.

3. ἐστήκει rev. 3. προ^υχώρει u m. rec. 4. ἀνίει. 4. εἰστήκει hic.

6. ἔλεγεν reuera. 7. τί. 7. ἐστήκει.

D. 1. γε ἦν. 2. δ'. 3. την. 3. ἐστήκει hic. 5. προσευξομενός ο in ras.

6. γαρ. 7. ταριστεια.

E. 1. ἦ. 2. ἐθέλων. 3. αὐτόν. 4. ταριστεια. 6. το. 7. ταριστεια.

pag. 198. A. 6. αὐτῷ r. s. 7. ἦ. 8. ἦτιον. 8. το ἐφ ἱππου.

B. 1/2. ἐμοίγ'. 2. το σὺν δῃ. 3. τῷ φθαλμῷ. 4. ἡρέμα. 4. παρασχοπων.
6/7. ἀμύνηται.

C. 1. διώκουσιν. 4. το. 5. εἶναί με pr. m. εἶναι μητε m. rec. (εἶναι με
id. est. m. rec. delet accent. supr. ai et scribit μητε.)

C. 7. βρασιδαν.

D. 2. κατα ταῦτ'. 3. καὶ. 4. τίς. 5. λέγων. 6. τίς. 6. δε. 6. σιληνοῖς.
7. αὐτόν. 7. τοὺς. 8. γαρ. 8. οὖν.

E. 1. σιληνοῖς. 2. ἐθέλοι τίς. 1. τὸν-λόγον. 2. γελοιοι.

4. ἂν om. 4. τινά. 4. κανθηλιους.

pag. 199. 6. αἰεί. 6. τὰ αὐτά.

A. 1. καταγελάσειεν. 1. διεγυμένους. 1. ἂν pro αὐ. 3. τὸν λόγον.

3. πλείστα ἀγάλματα. 4. αὐτοῖς. 4. ἐπὶ. 4. τείναντας. 5. ἐτι pro ἐπὶ.
5. καὶ ἀγαθῶι. 6. ἐστιν.

B. 1. ὕβριςεν. 5. ἐξαπατάσθαι. 6. γνῶντα.

- C. 4. φᾶναι. 4. ἀλκιβιάδῃ. 4. ἂν ποτε οὕτω. 5. *ομφῶς (m. vet.)
 5. ἐνεχείρεις οὐδ' ἐνεκα.
 D. 2. ἱρᾶν. 3. ὑφενός. 3. ἐλαθεσ. 4. το. 4. δράμα. 4. σιληνικόν.
 5. πλεον. 6. αὐτῶι.
 pag. 200. E. 3. παρα. 4. φᾶναι. 5. ὑπὸ κάτω. 8. εα. 8. ἀλλὰ ut V. 9. φᾶναι.
 10. δι. 10. αὐτὸν pro αὐτὸν. 10. ἐπιδεξι' ut V. 10. ὑπο.
 A. 2. τοῦ τοῦ. 3. φᾶναι. 5. φᾶναι. 8. εὔρε. 8. ἐαυτῶ . .
 ras in seq.
 B. 2. παρα. 3. ἀνωγμέναις (errat Jahnus). 4. ἀντικρυς. 5. σφᾶς.
 6. οὐκ ἐτι. 8. ἐδὲ revera.
 C. 2. ἐξίγρεσθαι. 3. αἰδόντων.
 pag. 201. 6. ἐπιδεξια. 6. αὐτοῖς.
 D. 1. μεμνησθαι. 1. ἐφαρχῆς. 3. αὐτοῦ. 5. τραγωιδίῳ ποιόν. 5. κωμωιδίῳ ποιόν.
 9. κατακομίσαντες. 9. καὶ ὥσπερ.
 συμπόσιον ἢ περὶ ἔρωτος.

Hae sunt lectiones Platonici convivii, quarum multas e Clarkiano hanc ob causam exscripsimus, ne dubitationi relinqueretur locus. Haec duo quidem mea collatione effecta videntur, primum Clarkianum et Vaticanum multo saepius inter se consentire quam adhuc putatum sit, deinde omnes paene correctiones quippe quae manibus recentissimis debeantur¹⁾ exiguum habere pretium. Sed, ni fallor, etiam alii fructus ex ea redundabunt, quos tamen aliis permiserim percipiendos. Mihi hoc loco²⁾ unam observationem reservavi.

Cobetis Mnem. 9 (1860) p. 373 hoc nos docet: Veteres, inquit, constanter dixerunt τιθεῖς, προστιθεῖς, διατιθεῖς, ἐπιτιθεῖς et ἰεῖς, ἀφιεῖς, ἀνιεῖς, ξυνιεῖς ceteraque. Sequiorum temporum magistri et scribae, qui didicerant ut nos omnes olim τίθημι, τίθης, τίθησιν et ἱημι, ἱης, ἱησι Graeca esse, si quando in veterem formam τιθεῖς et ἰεῖς incidissent, corrigebant scilicet τίθης et ἱης, ξυνίης. Factum est, ut de ea re Brunckius verum videret (ad Sophocl. Oed. Tyr. 628), Porsonus contra vehementer falleretur (ad Eurip. Orest. vs. 141)."

¹⁾ Ubi nihil notatum, manus correctrix semper recentissima est; manum veterem definite distinxī.

²⁾ Tribus locis Symposii quondam opem tulisse mihi videor; In Spec. crit. (Goetting. 1867) p. 44 transpositione facta scripsi p. 178 B. ἡδ' Ἔρος. Ἠσιόδῳ δὲ καὶ Ἀκουσίλειος ὁμολογεῖ ὅς φησι μετὰ τὸ χάος δύο τούτω γενέσθαι, Γῆν τε καὶ Ἔρωτα. Παρμενίδης δὲ τὴν Γένεσιν λέγει, in libro qui inscribitur Festgruss der philologischen Gesellschaft p. 90 expunxi Ἀγάθων post φέρτω; in diario Zeitschrift für österreichische Gymn. 1869 p. 86 mutavi 185 E. οὐχ ἱκανῶς in οὐχὶ καλῶς, quam correctionem (si correctio est nominanda) nunc possum stabilire hoc egregio exemplo Rep. V. 453 A. ἄρ' οὐχ οὕτως ἂν κάλλιστα τις ἀρχόμενος καὶ κάλλιστα τελευτήσει.

Ut alias, etiam hic veram formam egregii Platonis libri interdum nobis servaverunt; veluti formam contractam $\xi\nu\nu\iota\varsigma$ habent Clark. Vat. Ven. Soph. p. 238 et p. 243 B. Eandem formam intactam librarii codicum Paris. AD. Vat. Θ Ven. II reliquerunt Rep. I. p. 347 B. His tribus locis Hermannus suo iure genuinam formam restituit; aliis autem locis ob labem contractam nondum ea restituta est. Librarii enim levi errore saepe scribunt vel $\xi\nu\nu\iota\varsigma$ ¹⁾, quam formam non debuit Kühnerus defendere (Gr. ed. 1869 p. 644 Not. 4) vel $\xi\nu\nu\iota\varsigma$ (cf. Cobet N. L. p. 699). Inde locus in Euthyd. p. 301 E. emendandus est, quem omnes Interpretes effugisse miror. Hic enim Clark. et ut Fr. Rühlus adnotavit, etiam Vaticanus Θ nobis praebent ω Πόσειδον ἣν δ' ἐγὼ ἤδη κολοφῶνα ἐπιτιθεῖς τῇ σοφίᾳ. Scribe igitur ἐπιτιθεῖς. Sed graviora quoque vitia hae formae subierunt; veluti in nostro dialogo p. 214 E. (et ob hunc locum disputatio instituta est) Clarkianus habet παρίης, quod in παριεῖς eodem iure mutaveris quo 200 D. ἔχης in ἔχεις. Eodem modo corrigatur Meno 78 D. ubi idem liber suppeditat nobis προστιθεῖς. Gravissimum vero vitium reperitur Phileb. 50 D. ubi pro ἀφείς in Clarkiano legitur ἀφείης. Τίθης denique, ἴης similia interpolata esse non libet exemplis demonstrare.

§ 14.

Euthyd. 302 E. legimus: τῶν δέ γε ζῶων ἔφη ὡμολόγηκας ταῦτ' εἶναι σά, ὅσα ἂν σοι ἐξῇ καὶ δοῦναι καὶ ἀποδοῦσθαι καὶ θῦσαι ἂν θεωῖς ὅτῳ ἂν βούλῃ. ἂν post θῦσαι delendum censuit Steph. probante Heindorfio, incluserunt Turic. Hirschig. omisit Badham; voculam defendit Stallb. his verbis: „Repetitum videtur perinde ac si plene diceretur καὶ θῦσαι ἂν ἐξῇ; quo fit ut conditione apud θῦσαι iterum inculcata huius ipsius verbi notio aliquanto fortius efferenda sit. Fateor tamen non alia mihi in promptu esse huius usus exempla“. — Hermannus autem defensio haec est (Praef. p. XII.) „Quos cancellos Turicenses p. 302 E. particulae ἂν post θῦσαι addiderunt, removi quia illa ipsa ad liberam facultatem indicandam eleganter iteratur“.

Sed de iterato ἂν hic non potest cogitari. nam ut rarissimam repetitionem particulae ἂν apud coniunctivum cuius quod meminerim nullum exemplum apud Platonem est (cf. Kr. § 69, 7, 3) universe concedamus, hic ea habere locum nequit; nam si ἂν tertio membro adiungitur, id cum accipiat peculiare quiddam, a duobus praegressis membris quasi avellitur; nemo videt, cur in hoc membro iterum nos de ἐξῇ cogitare scriptor velit; is cum iam in primo membro καὶ posuerit, etiam tertium eodem modo

¹⁾ Veluti locis supra allatis codices deteriores habent $\xi\nu\nu\iota\varsigma$.

subiungere debet. Quod quum ita sit, loco subveniendum est correctione aliqua, quam equidem ita instituo, ut scribendum putem δὴ pro ἄν. Nunc autem omnia recte se habent; nam δὴ hic est latinum „denique“ cuius significationis Hartungius (Lehre von den Partikeln I. p. 264) cum alia tum haec exempla Platonica attulit: Rp. II. 367 C. αἶον ὄραν, ἀκούειν, φρονεῖν καὶ ὑγιαίνειν δὴ. Meno 87 E. ὑγίεια, φαμεν, καὶ ἰσχύς καὶ κάλλος καὶ πλοῦτος δὴ. Adde Phileb. 29 D. περί τε τῆς ἐν τοῖς ζωοῖς γῆς τῆς ἐνθάδε καὶ τῆς ἐν τῷ παντί, καὶ τῶν ἄλλων δὴ πάντων — οὕτως ἀποκρίνεται ibid. 50 B. μηνύει δὴ νῦν ὁ λόγος ἡμῖν ἐν θρήνοις τε καὶ ἐν τραγωδίαις, μὴ τοῖς δράμασι μόνον ἀλλὰ τῇ τοῦ βίου συμπαθείᾳ τραγωδία καὶ κωμωδία, λύπας ἡδοναῖς ἅμα κεράνυσθαι, καὶ ἐν ἄλλοις δὴ μυρίοις. Permutationis autem voculae δὴ cum vocula ἄν exempla atque testimonia ubique reperiuntur. Audi quaeso Cobetum qui in Var. Lect. p. 101 haec scripsit: „Particulae ἄν aliud periculum imminet a vocabulo δὴ quae sexcenties in unciali scriptura eius sedem occupavit“ cf. eius Nov. Lect. p. 501, ubi tamen hac observatione abusus est; scripsit enim Symp. p. 199 A. οὐ γὰρ δὴ ποὺ τοῖς γε εἰδούσι pro οὐ γὰρ ἄν ποὺ τοῖς γε εἰδούσι, ibid. p. 221 E. σατύρου δὴ τινα ὑβριστοῦ δοράν pro σατύρου ἄν τινα ὑβριστοῦ δοράν. Sed cum optimi libri ἄν his locis non agnoscant, hae coniecturae sunt vanae. Alia eius confusionis exempla dedit Cobetus in eodem libro p. 549. cf. etiam diarium, quod inscribitur Philolog. Anzeiger 1870 p. 202.

Ab hac confusione ne Platonis quidem libri sunt liberi; veluti Lys. 204 A. Clark. Vat. Θ nobis tradiderunt ἡδέως δὴ σοι μεταδιδόμεν pro ἡδέως ἄν σοι μεταδιδόμεν. Eodem modo Gorg. p. 452 C. in Clarkiano scriptum est τί δὲ ἄν pro τί δὲ δὴ. Idem vitium occurrit iterum in eodem dialogo p. 492 E., ubi multi libri iique optimi nobis praebent οἱ λίθοι γὰρ ἄν οὕτω γε καὶ οἱ νεκροὶ εὐδαιμονέστατοί εἰσιν. Hic cum ἄν et εἰσιν inter se pugnent, medicina requiritur et aut εἰσὶν in εἶεν aut ἄν in δὴ mutandum est. Hoc multo facilius esse quam illud arbitratus emendavi locum sic: οἱ λίθοι γὰρ δὴ οὕτω γε καὶ οἱ νεκροὶ εὐδαιμονέστατοί εἰσιν. De particulis γὰρ δὴ consociatis cf. Baümlein Griech. Partikeln p. 100 Naegelsbach Nov. Exc. ad Hom. p. 435, 3. Plane eadem ratione vitium redarguitur Euthyd. p. 298 AB. ubi nunc legitur: οὐχοῦν καὶ ὁ Χαιρέδημος ἔφη ἕτερος ὢν πατὴρ οὐχ ἄν πατήρ εἶη. At Clarkianus Vat. Θ Vindob. pro εἶη nobis suppeditant ἔστιν. Quam ob rem si me audies leges verbis, οὐχ ἄν deletis οὐχοῦν καὶ ὁ Χαιρέδημος ἔφη ἕτερος ὢν πατὴρ ἔστιν. Ac rursum non raro ἄν pro δὴ restituendum esse videtur; quam medelam equidem adhibuerim his duobus locis: Symp. 215 B. οὐδ'

αὐτὸς δὴ πού ἀμφισβητήσαις ubi cum Baitero malim scribere οὐδ' αὐτὸς ἄν πού ἀμφισβητήσαις (ell. Phaedr. 266 D. καλὸν πού τι ἂν εἶη. Theaet. 197 A. τρόπον μὲν γὰρ ἄν πού φαῖμεν) quam cum Sauppe apud Jahnium οὐδ' αὐτὸς ἄν δὴ πού ἀμφισβητήσαις; et Rep. IV. p. 439 B. οὐχοῦν εἴ ποτέ τι αὐτὴν ἀνθέλκει διψῶσαν, ἕτερον ἄν τι ἐν αὐτῇ εἶη αὐτοῦ τοῦ διψῶντος καὶ ἄγοντος ὥσπερ θηρίον ἐπὶ τὸ πῖν; οὐ γὰρ δὴ, φάμεν, τό γε αὐτὸ τῷ αὐτῷ ἑαυτοῦ περὶ τὸ αὐτὸ ἅμα πάναντία πράττοι quod exemplum animus meus propter creberrimam commutationem vocularum δὴ et ἄν inclinatur ut eximatur iis, quae ἄν ex antecedentibus supplere dicuntur et ut emendetur οὐ γὰρ ἄν. Sed utut res se habet, Krügerus certe non debuit proferre hoc exemplum in grammatica sua § 69, 7, 4.

§ 13.

Supra § 13. Turicenses et C. F. Hermannum laudavimus quod optimorum codicum familiae maiorem auctoritatem tribuerunt quam Bekkerus. Inprimis C. F. Hermannus hac via Platoni multum profuit profuissetque plus, si ea quae in vol. I. p. V¹⁾ editionis suae praefatus est, revera in textu quem vocant constituendo ubique fecisset. Sed a proposito non semper eum stetisse et alii intellexerunt atque doluerunt²⁾ et ego mea dissertatione saepius demonstrare conabor. Hic autem aliquot locos tentabo, qui e Clarkiano non possunt describi nisi paululum eius verbis mutatis:

Euthyd. p. 294 C. καὶ ὁ Κτήσιππος ὑπολαβὼν Πρὸς Διὸς ἔφη Διονυσόδωρε τεκμήριόν τί μοι τούτων ἐπιδείξαιτον τοιόνδε, ᾧ εἶσομαι ὅτι ἀληθῆ λέγετον. Clark. Vat. habent λέγεις τοῦ pro λέγετον³⁾; veri igitur vestigia nobis servaverunt, nam mihi persuasum est Platonem scripsisse ᾧ εἶσομαι ὅτι ἀληθῆ λέγεις. Numerum singularem non esse debere nobis offensionem haec exempla demonstrant: Euthyd. p. 301 C. τοῦτα μὲν ἔχων παρήκας,

¹⁾ primam Clarkiani manum ita pro fundamento habui, ut quicquid eius scribi a Platone potuisse videretur, etiam in pari aliarum lectionum bonitate unice tuerer, quas autem emendationes flagitaret, non vulgatae magis auctoritate, ceterorumque codicum suffragiis quam eo iudicio regerem, ut quaeque proxime ad illius vestigia accederet; postremo si quid in aliis extaret, quo Bodl. careret, optione data semper prior ad illorum interpolationem quam ad huius mutilationem statuendam essem.

²⁾ Veluti nuper Vermehren Plat. Studien Praef.: „Und selbst wo es sich lediglich um eine Sichtung des handschriftlichen Materials handelt, ist er seinem Grundsatz, den massgebenden Handschriften möglichst zu ihrem Rechte zu verhelfen, nicht überall treu geblieben.“

³⁾ Accuratius dicas Clarkianum habere λέγεις στον.

ἐπεὶ τὰ ἄλλα μοι δοκεῖτε, ὥσπερ αἱ δημιουργοὶ — ἀπεργάζεσθαι *ibid.* 293 B. πότερον δὴ σε ἔφη ὦ Σώκρατες ταύτην τὴν ἐπιστήμην περὶ ἣν πάλαι ἀπορεῖτε, διδάξω ἢ ἐπιδείξω ἔχοντα 278 B. οἱ τὰ σχολύθρια τῶν μελλόντων καθιζήσεσθαι ὑποσπῶντες χαίρουσι καὶ γελῶσιν, ἐπειδὴν ἴδωσιν ὕπτιον ἀνατετραμμένον. De hac numeri mutatione cf. Stallb. ad Phaedr. p. 231 A. Kock ad Arist. Nub. 375 Hd. ad Protag. p. 319 D. Stallb. Ind. ad Rep. s. v. Numerus. Nostro loco, ubi Διονυσόδωρος praecessit, ἐπιδείξατο, non λέγεις memorabile. Error, ni fallor, inde ortus est, quod primum nescio quis librarius mutatione numeri offensus supra lineam posuit, ut extaret λέγετο, deinde insequens librarius genuinam et interpolatam lectionem conglutinavit. Cuius rei apud Platonem cum alia in ceteris dialogis tum haec in Charmide exempla extant: p. 161 B. οὐκ ἄρα σωφροσύνη ἂν εἴη αἰδώς, εἴπερ τὸ μὲν ἀγαθὸν τυγχάνει ὄν, αἰδώς δὲ οὐδὲν μᾶλλον ἀγαθὸν ἢ καὶ καχόν. Clark. μὴ οὐδέν cf. Spec. critic. p. 37, p. 160 C. σωφροσύνη ἂν εἴη μᾶλλον τι τὸ ἡσυχῇ πράττειν ἢ τὸ σφόδρα τε καὶ ταχέως. Cum Clark. praebet ἡ τοῦ, haud scio an legendum sit, τὸ ἡσυχῇ πράττειν τῷ σφόδρα τε καὶ ταχέως cf. 159 C. καὶ μὲν δὴ καὶ τὸ καθαρίζειν ταχέως καὶ τὸ παλαίειν ὀξέως πολὺ κάλλιον τοῦ ἡσυχῇ τε καὶ βραδέως ubi in Clark. extat κάλλιον που. p. 165 A. εἶθ' ἵνα δὴ καὶ σφεῖς μηδὲν ἥττον συμβουλάς χρησίμους ἀναθεῖεν, ταῦτα γράψαντες ἀνέθεσαν Clark. αὐτοὺς φῆς.

eras

Euthyd. 295 A. Ἀλλ' ἦν, ἔφη, ἐβελήσης μοι ἀποκρίνεσθαι, ἐγὼ ἐπιδείξω καὶ σὲ ταῦτα τὰ θαυμαστά ὁμολογοῦντα. Participium ὁμολογοῦντα *apud Clark. Nat. G.* Recte; nam hoc verbum hoc loco aptum esse negandum est, cum sophista sine dubio hoc dicat: si mihi respondebis, demonstrabo etiam in te illas admirabiles virtutes inesse. Non est quod dubites; nam te ipsum illa mirabilia habere potest ostendi. Nunc autem vide, quid lectio vulgata significet. Ego demonstrabo, etiam te illa mirabilia concedere. Cur hoc? An fortasse Socrates assensum suum celare voluit? Si sophista non tortuose loqui maluit quam clare, dicendum ei erat: aut ποιήσω σε ὁμολογεῖν (cf. *supr.* 298 D. αὐτίκα δέ γε ἂν μοι ἀποκρίνη ὦ Κτήσπτα, ὁμολογήσεις ταῦτα) aut ἐπιδείξω σε — ἔχοντα (cf. 286 A. ἄρτι ἐπιδείξαμεν μηδένα λέγοντα ὡς οὐκ ἔστι 293 B. πότερον — διδάξω ἢ ἐπιδείξω ἔχοντα) cf. Badhami Add. ad Euthyd. p. 90 qui et

Memoratu dignum in collatione Gaisfordii ὁμολογοῦντα sine ulla adnotatione scriptum extare, sed hoc verbum in Clarkiano deesse ipse vidi.

ipse intellexit vulgatam lectionem non posse defendi. Quodsi is scripsit ἄλλ' ἢν ἔφη ἐθελήσῃς μοι ἀποκρίνασθαι, ἐγὼ ἐπιδείξω καὶ σὲ ταῦτα τὰ θαυμαστὰ ὁμοίως ἔχοντα, nemo opinor ei fidem habebit. Ne longus sim, Plato scripsit ἐγὼ ἐπιδείξω καὶ σοὶ ταῦτα τὰ θαυμαστά. Nota est structura δεικνύναί τι ἔν τινι cf. Frohberger ad Lys. 12. 27. Stallb. ad Rep. III. p. 392 D. ad Politic. 262 C. Hertlein ad Cyrop. I. 6. 29 et hoc exemplum: Men. 82 B. ἀλλά μοι προσκάλεσον τῶν πολλῶν ἀκολουθῶν τούτων τῶν σαυτοῦ ἕνα ὅντινα βούλει, ἵνα ἐν τούτῳ σοὶ ἐπιδείξωμαι.

Euthyd. p. 301 A. Ἀλλὰ τίνα τρόπον ἔφη ἑτέρου ἑτέρῳ παραγενομένου τὸ ἕτερον ἕτερον ἂν εἴη; Ἄρα τοῦτο ἔφην ἐγὼ ἀπορεῖς; ἤδη δὲ τοῖν ἀνδρῶν τὴν σοφίαν ἐπεχείρουν μιμεῖσθαι, ὅτε ἐπιθυμῶν αὐτῆς. Sophistarum fallacias ut effugiat, Socrates ipse eas imitari conatur. Hoc verbis ἤδη δὲ τοῖν ἀνδρῶν τὴν σοφίαν ἐπεχείρουν μιμεῖσθαι expressum est. Pro ἤδη δὲ τοῖν ἀνδρῶν autem tradita sunt ab optimis libris Clark. Vat. haec verba: ἤδη διὰ τῶν ἀνδρῶν σοφίαν κ. τ. λ. Primum nemo intellegit, cur interpretes noluerint cum his libris scribere τῶν ἀνδρῶν; nam de duobus etiam numerum pluralem posse adhiberi notum est; veluti in nostro dialogo occurrit p. 293 A. ὥσπερ Διοσκούρων p. 306 D. περὶ τῶν υἱέων. Sed summa difficultas sita est in verbo tradito διὰ quod quomodo cum δὲ permutari potuerit cum nequeas intellegere, id corruptum putare corruptionisque causam indagare debes. Audi quaeso, et iudica num id mihi contigerit. διὰ facillime emendabitur, si syllabam δι repetiveris; tum habebis διδία vel (iota adscriptum etiam in Bodleiano interdum desideratur) δ'ιδία. Ex tenebris, ut ita dicam, lux subito nobis affulsit. nam ιδία quod vertes „für mich, auf eigene Faust, auf eigene Gefahr, ad sententiam optime quadrare quis est qui neget? cf. etiam haec exempla: Theaet. 177 B. ἐν μέντοι τι αὐτοῖς συμβέβηκεν ὅτι ἂν ιδία λόγον δέη δοῦναι τε καὶ δέξασθαι περὶ ὧν ψέγουσι καὶ ἐθελήσωσιν ἀνδρικῶς πολὺν χρόνον ὑπομεῖναι καὶ μὴ ἀνάνδρως φεύγειν, τότε ἀτόπως αἱ δαιμόνιαι τελευτῶντες οὐκ ἀρέσκουσιν αὐτοὶ αὐτοῖς περὶ ὧν λέγουσι. Xen. Anab. V. 7. 31. εἰ μὲν οὖν ταῦτα καλῶς ἔχει, δοξάτω ὑμῖν, ἵνα ὥς τοιούτων ἐσομένων φυλακὴν ιδία ποιήσῃ τις. ιδία vertit Rehdantz „auf eigene Hand (für seine Person)“. Xen. Mem. 3. 3. 3 ἀλλὰ τοῦτο μὲν, ἔφη, οὐκ ἐμὸν οἶμαι τὸ ἔργον εἶναι, ἀλλὰ ιδία ἕκαστον δεῖν τοῦ ἑαυτοῦ ἵππου ἐπιμελεῖσθαι.

Theaet. 200 D. λέγε δὴ τί ἂν αὐτὸ μάλιστα εἰπόντες ἦμεν ἂν ἡμῖν αὐτοῖς ἐναντιωθῆμεν; Bekkerus adnot. ἂν] ἂν αὐτὸ Δ et pr. II. Accedit his etiam Clarkianus; nam is quoque liber, ut ipse vidi, αὐτὸ post ἂν interposuit. Quod Campbell hoc non memoravit, id praeter alia documento est eum non totum dialogum perlegisse, sed hic illic tantum inspexisse.

αὐτὸ quod optimi libri nobis servaverunt si permutaveris in αὐτοί; habebis restitutam Platonis veram manum; notum est reflexivo pronomini saepe pronomen αὐτός addi cf. Krlg. §. 51, 2, 12. Sop. p. 238 D. ὥστε ὅπρταν αὐτὸ ἐπαχειρῇ τις ἐλέγχειν ἐναντία αὐτὸν αὐτῷ περὶ ἐκείνο ἀναγκάζεσθαι λέγειν ibid. p. 268 B. τὸν δὲ ἰδίᾳ τε καὶ βραχείᾳ λόγοις ἀναγκάζοντα τὸν προσδιαλεγόμενον ἐναντιολογεῖν αὐτὸν αὐτῷ. Euthyphr. 6 A. καὶ οὕτως αὐτοὶ αὐτοῖς τὰ ἐναντία λέγουσι περὶ τε τῶν θεῶν καὶ περὶ ἑμοῦ.

Nunc transeamus ad locos duos, quos e Clarkiano non poterimus emendare, nisi uni demserimus verbum, alteri inseruerimus. Prior locus habetur in Euthydemo p. 271 C. D. ubi Socrates de sophistis Euthydemo atque Dionysodoro haec dicit: πάνσοφοι ἀτεχνῶς τῷγε, οὐδ' ἤδη πρὸ τοῦ ὅτι εἶεν οἱ παγκρατιασταί. τούτῳ γάρ ἐστιν κομιδὴ παμμάχῳ, οὐ κατὰ τῷ Ἀκαρνᾶνε τοῖ παγκρατιασταῖ ἀδελφῷ, ἐκείνῳ μὲν γάρ τῷ σώματι μόνον οἶω τε μάχεσθαι ἐγενέσθην. τούτῳ δὲ πρῶτον μὲν τῷ σώματι δεινότητῳ ἐστὸν καὶ μάχῃ ἢ πάντων ἔστι κρατεῖν, ἐν ὅπλοις γάρ αὐτῷ τε σοφῶς πάνυ μάχεσθαι καὶ ἄλλον ὅς ἂν διδῶ μισθόν, οἶω τε ποιῆσαι. Clark. καὶ μάχῃ ἢ πάντων κρατεῖν. om. ἔστι igitur. Vat. Θ autem id habere videtur; neque enim Bastius neque Rühlus omissionem indicant; quam ob rem Bekkero hac in re nullam fidem habendam esse puto. Vulgata, quin sit corrupta, non potest dubitari. nam τῷ σώματι et μάχῃ non possunt inter se sic iungi. Diu multumque de loco cogitavi, multas emendationes tentavi, quas omnes postquam iterum atque iterum exploravi, abiēci. Quod ratio mihi denegavit, fors obtulit. Cum enim Cantabrigiae versarer conferens in usum Jw. Mülleri librum Galeni de Hippocratis et Platonis placitis, Godofredi Herrmanni exempla Platonica in bibliotheca Univ. asservata in manus sumsi ut coniecturas iis adscriptas et quod sciam haud editas¹⁾ in usum meum transcriberem. Quarum pleraeque extant in primo volumine exempli Heindorfii; ei praeterea aliquot folia adiuncta sunt, quibus continentur coniecturae quae a sodalibus societatis Graecae Lipsiensis excogitatae esse videntur, nam Winckelmannum, Sauppium memoratos ibi invenimus et non raro assensum vel dissensum Hermannii. In his etiam coniecturae in Euthydemum sunt quas perlegens summopere laetabar, cum locum qui tamdiu me vexaverat egregie sanatum deprehenderem hoc modo: τούτῳ δὲ πρῶτον μὲν τῷ σώματι δεινότητῳ ἐστὸν καὶ μάχῃ πάντων κρατεῖν. Insequuntur verba Euthyd. p. 273 A.

¹⁾ Praeterquam quod W. H. Thompson in editione Phaedri aliquot coniecturas in hunc dialogum collatas in lucem edidit cf. Preface p. X.

ὑπισθεν δὲ αὐτοῦ ἐρασταὶ πάνυ πολλοί τε καὶ ἄλλοι καὶ Κτήσιππος apud G. Hermannum sic emendata²⁾: πάνυ πολλοί, ἄλλοι τε καὶ Κτήσιππος. Non recte; verum est quod dedimus in Spec. critic. p. 39. nam quod coniectando invenimus, optimo libro Clarkiano confirmatum vidimus, qui καὶ omisit.

Alter locus, quem tractaturi sumus, legitur in Protagora p. 312 D. Ibi Socrates et Hippocrates inter se deliberant quid sit sophista. Inter alia dicit Hippocrates: τί ἄν εἴποιμεν αὐτὸν εἶναι ὃ Σώκρατες ἢ ἐπιστάτην τοῦ ποιῆσαι δεινὸν λέγειν; ἢ ex cod. Vind. 54 et Vatic. 1029 solis adscivit Stallbaumius, libri plerique et optimi ἢ non agnoscunt. Verba non decent anxium timidumque Hippocratem. Scribe optimos libros secutus τί ἄν, εἰ εἴποιμεν αὐτὸν εἶναι ὃ Σώκρατες ἐπιστάτην τοῦ ποιῆσαι δεινὸν λέγειν; iam Hippocratis modestia apparebit. Ad τί ἄν supplendum est λέγοις vel εἴποις cf. Arist. Nub. 154 τί δῆτ' ἄν ἕτερον εἰ πύθοιο Σωκράτους φρόντισμα; Lys. 899 τί δῆτ' ἄν εἰ πύθοιο καὶ τὴν τῶνδ' ὄβριν, Krüger §. 69, 7, 2. Saepissime hoc fit in Clarkiano, ut syllabae similes intercidant.

§ 16.

Innumerabiles loci adhuc iacent in Platonis dialogis, qui hanc ob causam nondum secundum Clarkianum repraesentati sunt quod editores non edocentur definito certoque testimonio quid habeatur in illo praestantissimo libro, sed e silentio concludere coguntur id quod inter omnes constat non sine periculo esse. Loci quos nunc tractaturi sumus te docebunt quam vere dixerim:

Soph. p. 263 D. E. ὥδ' εἴσαι ῥᾶον, ἄν πρῶτον λάβῃς, αὐτὰ τί ποτ' ἔστι καὶ τί διαφέρουσιν ἕκαστ' ἀλλήλων. Hermann scripsit Praef. p. XXVIII: αὐτὰ τί ποτ' ἔστι O et V. (id. est Cl. et Vat.), αὐτὰ om. B. S. T., male profecto, quum ipsa per se spectata mutuis singulorum discriminibus opponantur.⁶ At etiam Clark. om. αὐτὰ idemque testatur Bekk. de Vat. Cum. insuper sententia nequaquam flagitet hoc verbum, iurē τῷδε deleveris.

Politic. p. 293 C. ἀναγκαῖον δὲ καὶ πολιτείαν ὥς ἔοικε ταύτην ὀρθὴν διαφερόντως εἶναι καὶ μόνην πολιτείαν, ἐν ᾗ τις ἄν εὐρίσχοι τοὺς ἄρχοντας ἀληθινῶς ἐπιστήμονας καὶ οὐ δοκοῦντας μόνον, ἔαν τε κατὰ νόμους ἔαν τε ἄνευ νόμων ἄρχωσι καὶ ἐχόντων καὶ ἀκόντων ἢ πενόμενοι ἢ πλουτοῦν-

²⁾ Huic coniecturae nomen Heinr. Aug. Mau si recte legi adpositum est.

τες, τούτων ὑπολόγιστέον οὐδὲν οὐδαμῶς εἶναι κατ' οὐδεμίαν ὀρθότητα. In Clarkiano post ἄρχοις verba multo melius sic scripta sunt: καὶ ἐχόντων ἢ ἀκόντων καὶ πένοντες ἢ πλουτοῦντες, eaque sine ulla haesitatione Platoni restituenda videntur. Cf. verba antecedentia p. 298 B. τοὺς δὲ ἰατροὺς δὲ οὐχ ἥκιστα νανομίκαμεν, ἐάν τε ἐχόντας ἐάν τε ἀκόντας ἡμᾶς ἰῶνται — καὶ ἐάν κατὰ γράμματα ἢ χωρὶς γραμμάτων καὶ ἐάν πένοντες ὄντες ἢ πλούσιοι, πάντως οὐδὲν ἥττον ἰατροὺς φάμεν κ. τ. λ. Cassa igitur Campbellii adnotatio: „καὶ — καὶ Whether — or. Note the variety of expression“ demonstratque eum librum Clarkianum hic non inspexisse.

Alcib. I. p. 104 E. Restitue cum Clarkiano ὄρα δὴ· οὐ γάρ τοι εἴη ἂν θαυμαστόν, εἰ, ὥσπερ μόγις ἠρξάμην, οὕτω καὶ μόγις παυσαίμην pro quibus Turicenses quos secutus est Hermannus non recte substituerunt ὄρα δὴ· οὐ γάρ τοι εἴη ἂν θαυμαστόν εἰ ὥσπερ καὶ μόγις ἠρξάμην, οὕτω μόγις καὶ παυσαίμην.

Lys. 209 C. dedit Hermannus τί δέ; τῷ γείτονι ἄρ' οὐχ ὁ αὐτὸς ὅρος ὥσπερ τῷ πατρὶ περὶ σοῦ hisque verbis defendit: „ὥσπερ Sic h. Stallb. ὥσπερ Bekk. Turic. at Oxon nihil mutat; ipsum ὥσπερ post ὁ αὐτὸς docte tuctur Stallb. ad Phaed. c. 36.“ E silentio conclusit vir doctissimus quae conclusio semper lubrica est. Bodleianus habet ὥσπερ quod reducendum esse apparet.

Errant Bekkerus et Stallbaumius cum dicunt Clarkianum habere Lach. p. 184 E. πεπαιδευμένος καὶ ἡσυχῶς. Is liber nobis praebet ἢ καί, sed, quod non parvi momenti est, omittit ἢ post πείθοιο. p. 185 A. eiusdem dialogi ὅ post οἶκος ut in Vat., etiam in Bodleiano codice deest; quare delebis hunc articulum. cf. Gorg. 519 A. ἢ καταβολὴ αὐτῇ τῆς ἀσθενείας.

Protag. 331 B. καὶ ὑπὲρ σοῦ δὲ εἴ με ἐώης, ταῦτά ἂν ταῦτα ἀποκρινάμην, ὅτι ἦτοι ταῦτόν ἐστι δικαιοῦς ὁσιότητι ἢ ὅτι ὁμοιάτατον. Bekkerus complures libros memorat, qui ταῦτόν γε praestant; his quod nondum accessit Clarkianus, Gaisfordii negligentiaetribuendum est, qui non adnotaverit γε, quod editioni Stephanianae desit, Bodleianum tueri.

Frustra operam Hermannus consumsit; cum in Charm. p. 170 A. ἐπιστήμη πῶς ἐπιστήμης οὕσα ἄρα πλείον τι οἶα τ' ἔσται διαφέρειν ἢ ὅτε τούτων τόδε μὲν ἐπιστήμη, τόδε δὲ οὐχ ἐπιστήμη, pro τόδε δὲ corripuit defenditque τὸ δὲ arbitratus sic legi in Bodleiano. Nam etiam hic conclusio e silentio Hermannum in errorem perduxit; Clarkianus, crede mihi, lectionem τόδε δὲ servat.

Nuper Cronius scripsit (Beiträge zu Gorgias p. 123): „475 A möchte das nach dem Vorgange Bekkers von den Zürchern und Hermann ebenso wie von Stallbaum verdrängte καὶ vor τὸ αἰσχροὺν als Lesart des Clarkianus wiederherzustellen sein. Man muss eben die Beziehung auf die unmittelbar vorhergehende Antwort des P. im Auge behalten.“ Irritus labor: καὶ hoc loco nunquam deteges in Clarkiano.

Idem fallitur in eodem libro p. 118 ubi de p. 472 A B. haec dicit: Bekker schrieb mit den meisten Handschriften, unter denen aber nach Gaisford nicht der Clarkianus ist, ἐνθάδε. Etiam Clarkianus ἐνθάδε tuetur. Quod cum ita sit, suaserim Cronio ut bonis libris obtemperans hanc scripturam reducat.

Theaet. 153 B. Τί δέ; ἡ τῶν σωμάτων ἕξις οὐχ ὑπὸ ἡσυχίας μὲν καὶ ἀργίας διόλλυται, ὑπὸ γυμνασίων δὲ καὶ κινήσεων ἐπὶ πολὺ σώζεται; Apparatus criticus quo Wohlrabius locum instruxit, est hic: „ὡς ἐπὶ πολὺ Steph. ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ Heindorf. ἐπὶ τὸ πολὺ Stob. ἐπὶ πολὺ Herm. ὡς om. Cl. Δ Π τὸ add. Δ Π.“ Inde putaveris in Clarkiano repraesentari ἐπὶ πολὺ idque definite Campbellius testatur. Id non verum; nam loco iterum atque iterum inspecto confirmare possum ibi extare ἐπὶ τὸ πολὺ quod velim Platoni reddatur.

Phaedo. 68 C. εἰ γὰρ ἐθελήσεις ἢ δ' ὅς ἐννοῆσαι τήν γε τῶν ἄλλων ἀνδρείαν τε καὶ σωφροσύνην, δόξει σοι εἶναι ἄτοπος. Pro ἐθελήσεις reperitur (non semel locum exploravi ut omnem dubitationem tollerem) in Clarkiano ἐθέλεις quod editores cum arbitrarentur futurum ibi esse immerito spreverunt. Nam praesens tempus nihil habere quod animum legentis offendat docent bene Heindorfius et Stallbaumius.

§ 17.

Libros Platonicos interpolatos esse nemo non novit; vel optimi hoc vitio laborant. Sed animadvertimus bonos libros saepius quam deteriores interpolatorum manus nobis prodere. Hoc demonstrare volumus his locis:

Cratyl. 413 B. ἱκανῶς γὰρ μέ φασι πεπύσθαι καὶ ἀκηχοέναι Hermannus Praef. p. XIX scribit: „καὶ ἀκηχοέναι ex glossemate fluxisse iam Stallb. intellexit.“ καὶ ἀκηχοέναι igitur uncis inclusit. Sed cum Clarkianus aliique libri καὶ omiserint, non intellego cur editores et ipsi interpolatoris manare functi sint. Scribendum erat ἱκανῶς γὰρ μέ φασι πεπύσθαι [ἀκηχοέναι] vel potius ἀκηχοέναι e textu expellendum. Vide ne idem qua-

dret in haec verba, quae leguntur in Gorg. 461 C. οἱ κάλλιστε Πῶλε, ἀλλά τοι ἐξεπίτηδες κτώμεθα ἑταίρους καὶ υἱεῖς, ἵνα ἐπειδὴν αὐτοὶ προσβύτεροι γιγνόμενοι σφαλλώμεθα, παρόντες ὑμῖς αἱ νεώτεροι ἐπανορθώτε ἡμῶν τὸν βίον καὶ ἐν ἔργοις καὶ ἐν λόγοις. Clark. Vat. Θ. ἑτέρους υἱεῖς. De filiis hic non potest cogitari; nam verba ad Polum solum spectant; accedit ut κτώμεθα dici possit de amicis (cf. Eurip. Orest 804 τοῦτ' ἐκείνο, κτᾶσθ' ἑταίρους, μὴ τὸ συγγενὲς μόνον), non item de filiis. Clarius igitur luce est Platonem verba sic exhibuisse οἱ κάλλιστε Πῶλε ἀλλά τοι ἐξεπίτηδες κτώμεθα ἑταίρους, ἵνα ἐπειδὴν αὐτοὶ προσβύτεροι γιγνόμενοι κ. τ. λ. Interpolatione remota verba hunc sensum effundant, quem Kratzius elicit: „Wir sind eben alte Leute, die ihre Fehler machen, aber, versichert er (τοι), eben dazu ziehen wir uns einen Nachwuchs von Schülern, dass diese in's Geleise bringen können, was wir verderben. Ut in Cratylo, ita etiam hic editores si vestigia optimorum librorum essent secuti, locum ab interpolationibus duabus potuerunt liberare. Quod ἑτέρους in Clarkiano Vaticano scriptum est, non est quod offendaris; nam saepissime ἑταῖρος et ἕτερος inter se permulantur id quod elucet ex his exemplis: Lys. 206 D. ἑταῖρος] Clark. ἕτερος ^{αι} recent. Gorg. 510 A. ἑταῖρόν] Cl. ἕτερον. Phaed. p. 69 B. ἑταῖροις] ἑτέροις ^{αι} recentiss. Symp. p. 188 C. ἑταῖραι] Cl. ἕτεροι. Phaedr. p. 264 E. ἑτέρους] Cl. ἑταίρους. ib. 278 E. ἑταῖρόν] Cl. ἑτέρον. Prot. 315 A. ἕτερος] Cl. ἑταῖρος.

Euthyd. p. 278 B. σὲ δὲ τοῦτο ὥς οὗτοι ἐνδείκνυνται, διαλέληθε ταῦτο ὄνομα ἐπ' ἀνθρώποις ἐναντίως ἔχουσι καίμενον ἐπὶ τῷ τε εἰδῶτι καὶ ἐπὶ τῷ μῇ. Libri deteriores duabus, boni libri una tantum interpolatione locum perturbatum habeat. Illi enim dant quod supra exscripsimus, hi (Clark. Vat. Θ) ἐπὶ ante τῷ τε εἰδῶτι omiserunt. Si igitur quod Plato revera scripsit repraesentare velis, non solum cum libris praestantibus omittes ἐπὶ ante τῷ τε εἰδῶτι, sed delebis etiam ἐπὶ ante τῷ μῇ, ita ut habeas σὲ δὲ τοῦτο ὥς οὗτοι ἐνδείκνυνται διαλέληθε ταῦτο ὄνομα ἐπ' ἀνθρώποις ἐναντίως ἔχουσι καίμενον, τῷ τε εἰδῶτι καὶ τῷ μῇ¹⁾. cf. haec exempla: Cratyl. p. 414 A. καὶ τὸ ἄρρεν καὶ ὁ ἀνὴρ ἐπὶ παραπλησίῳ τινὶ τούτῳ ἐστὶ, τῇ ἄνω ῥοῇ ibid 415 A. ἐξ ἀμφοῖν οὖν τούτοις ἐύχεται, μήχανος τε καὶ τοῦ ἀνείν, τὸ ὄνομα ἡ μηχανή. Gorg. 451 C. περὶ τὸ αὐτὰ γάρ ἐστι, τὸ τε ἄρτιον καὶ τὸ περιττόν. Menex. p. 241 B. ὑπ' ἀμφοτέρων, δη. ξυμβαίνει τῶν τε Μαραθῶνι μαχεσαμένων καὶ τῶν ἐν Σαλαμῖνι ναυ-

¹⁾ Clark. διαλέληθεν, ταῦτο, ἔχουσι.

μαχησάντων παιδευθῆναι τοὺς ἄλλους Ἕλληνας. Interpolatam praepositionem redarguunt boni libri etiam Phaedr. p. 252 D. καὶ τούτῳ τῷ τρόπῳ „πρὸς τε τοὺς ἐρωμένους καὶ πρὸς τοὺς ἄλλους ὁμιλεῖ τε καὶ προσφέρεται. Bekk. πρὸς (ante τοὺς ἄλλους) om. Δ GT. et pr. Π.“ His accedit Clarkianus, qui item hoc verbum omisit. Quin expellimus hoc alterum πρὸς ex textu?

Lach. 178 AB. εἰσὶ γάρ τινες οἱ τῶν τοιούτων καταγελῶσι καὶ ἐάν τις αὐτοῖς συμβουλεύσεται, οὐκ ἂν εἴποιεν ἃ νοοῦσιν, ἀλλὰ στοχαζόμενοι τοῦ συμβουλευομένου ἄλλα λέγουσι, παρά τὴν αὐτῶν δόξαν. Bekk. λέγουσι Σ. B. ω. νοοῦσι Clark. Vat. Θ. G. Manifesta interpolatio. Editor prudens debuit sic locum scribere, ἀλλὰ στοχαζόμενοι τοῦ συμβουλευομένου ἄλλα [νοοῦσι] παρά τὴν αὐτῶν δόξαν.

Euthyd. p. 276 D. Γινὺς δέ ἡμᾶς ὁ Εὐθύδημος ἐκπεπληγμένους ἔν' ἐπιμᾶλλον θαυμάζοιμεν αὐτόν, οὐκ ἀνίει τὸ μειράκιον, ἀλλ' ἡρώτα καὶ ὥσπερ εἰ ἀγαθοὶ ὀρχησταί, διπλᾶ ἐστρέφε τὰ ἐρωτήματα περὶ τοῦ αὐτοῦ καὶ ἔφη. καὶ post ἡρώτα non agnoscunt Clark. Vat. Θ. Winckelmannus primus delevit probante Stallbaumio in adnotatione critica; retinent tamen Turicenses Hermannus Hirschigius Badhamus. Stallbaumius adnotavit: „Haec quia antecedentia illustrant, usu constanti ac perpetuo ἀσυνδέτως adilciuntur.“ Et revera saepe fit, ut sententiae comparisonem habentes ἀσυνδέτως adiungantur cf. haec duo exempla: Rp. VI. 497 B. ἐπαπῶμαι μηδεμίαν ὀξίαν εἶνα: τῶν νῦν κατάστασιν πόλεως φιλοσόφου φύσεως. διὸ καὶ στρέφεσθαι τε καὶ ἀλλοιοῦσθαι αὐτήν. ὥσπερ ξενικὸν σπέρμα ἐν γῇ ἄλλῃ σπειρόμενον ἐξίτηλον εἰς τὸ ἐπιχώριον φιλεῖ κρατούμενον ἵεναι, οὕτω καὶ τοῦτο τὸ γένος νῦν μὲν οὐκ ἴσχειν τὴν αὐτοῦ δύναμιν, ἀλλ' εἰς ἄλλότριον ἦθος ἐκπίπτειν. Theaet. 172 D. ἡ τοῖς μὲν τοῦτο ὃ αὐτὸ εἶπες ἀεὶ πάρεστι σχολή καὶ τοὺς λόγους ἐν εἰρήνῃ ἐπὶ σχολῇ ποιοῦνται, ὥσπερ ἡμεῖς νυνὶ τρίτον ἤδη λόγον ἐκ λόγου μεταλαμβάνομεν, οὕτω καὶ αἱ εἰρήναι αὐτοῦς ὃ ἐπελθὼν τοῦ προκειμένου μᾶλλον καθάπερ ἡμᾶς ἀρέσῃ. Interpunctione mutata addere poteris hoc quoque exemplum: Euthyd. 291 B. ἀλλ' ἡμεῖς πάνυ γελοῖοι, ὥσπερ τὰ παιδία τὰ τοὺς κορύδους διώκοντα, ἀεὶ ὥμεθα ἐκάστην τῶν ἐπιστήμῶν αὐτίκα λήψεσθαι, αἱ δ' αἰὲς ὑπεξέφυγον (coll. Rep. IV. p. 432 D.). Sed hoc loco asyndeton nequit tolerari; nam ad ἡρώτα similitudo aliquid novi addit; rem possis sic explicare: sophista quaesivit idque eo modo qui similis est saltationis quae vocatur διπλή. Si ἡρώτα attributum aliquod haberet quo definiretur accuratius, tum sententia comparativa ad rem illustrandam potuit adgregari ἀσυνδέτως. Nunc autem aut καὶ cum libris deterioribus interpolandum id quod plerique inter-

pretes fecerunt. aut quod equidem tibi propono non solum καὶ quod non habent Clark. Vat. sed etiam ἡρώτα quod iidem libri habent eiciendum est. ita ut legatur: ἀλλ' ὥσπερ οἱ ἀγαθοὶ ὀρχησταὶ διπλᾷ ἔστρεψε τὰ ἑρωτήματα περὶ τοῦ αὐτοῦ καὶ ἔφη. Nemo non concedet haec verba Platone esse digna.

Euthyd. p. 300 C. sophista hanc absurdam conclusionem facit, ut demonstret ὅτι ἔστι λέγοντα σιγᾶν. Ὅταν σιγᾷς, ἔφη ὁ Εὐθύδημος, οὐ πάντα σιγᾷς; Ἐγώ γε ἤ δ' ὅς. Οὐχοῦν καὶ τὰ λέγοντα σιγᾷς, εἴπερ τῶν ἀπάντων ἐστὶ τὰ λέγοντα. Conclusio aperta. Si siles, omnia siles; atqui τὰ λέγοντα ad omnia illa pertinent. Ergo siles τὰ λέγοντα et ἔστι λέγοντα σιγᾶν. Pro τὰ λέγοντα omnes libri manu scripti exhibent τὰ λεγόμενα; nam errat Stallbaumius scribens „τὰ λέγοντα tuetur Vat. Θ.“ Rühlus testatur etiam in hoc libro τὰ λεγόμενα esse. τὰ λεγόμενα non potest seruari; nam neminem esse puto, qui Winckelmanno assentiatur lectionem omnium librorum sic defensuro; si taces, omnia taces, atqui quaecunque dicuntur i. e. quaecunque sermonis ope eloquimur et proinde etiam ipsa τὰ λέγοντα ad omnia pertinent, ergo taces τὰ λέγοντα.“ Conclusio ut fiat, τὰ λέγοντα aperte dicendum est ad omnia pertinere. Quid faciemus? Omnes libri nos docent locum esse interpolatum, cum interpolator falsa margini adscripserit. Pro his si recta substituemus, nonne et ipsi interpolabimus locum? Quid multa? Plato scripsit οὐχοῦν καὶ τὰ λέγοντα σιγᾷς, εἴπερ τῶν ἀπάντων ἐστὶ. scilicet τὰ λέγοντα quod supplendum est ex enuntiatione antecedenti.

Protag. p. 319 D. ἐπαιδᾶν δὲ τι περὶ τῆς πόλεως διοικήσεως δέη βουλευσασθαι, συμβουλεύεται αὐτοῖς ἀνιστάμενος περὶ τούτων ὁμοίως μὲν τέχτων, ὁμοίως δὲ χαλκεύς κ. τ. λ. In Kroschelii editione haec leguntur: „Bodl. Vat. pro περὶ τῆς habent περὶ τῶν τῆς quod Sauppius recepit. Sed illorum codicum fides in talibus haudquaquam tanta est quanta Sauppio videtur. Et h. l. περὶ τῶν τῆς πόλεως si verum esset, delendum esset διοικήσεως.“ Ita Kroschelius mirum in modum; veram rationem cognovit vir Platonis peritissimus, non audet eam sequi. Quid quaeso nos prohibet quominus διοικήσεως deleamus? cf. p. 318 E. τὸ δὲ μάθημά ἐστιν εὐβουλία περὶ τε τῶν οἰκείων ὅπως ἂν ἄριστα τὴν αὐτοῦ οἰκίαν διοικῶι καὶ περὶ τῶν τῆς πόλεως ὅπως τὰ τῆς πόλεως δυνατότατος εἴη καὶ πράττειν καὶ λέγειν. Lach. 180 B. ὅσοι τὰ τῶν πόλεων πράττουσιν.

§ 18.

Quamquam Clarkianus librique cum eo quasi cognatione coniuncti locis permultis interpolationes arguant, tamen interpretes saepe eas malue-

runt servare quam librorum praestantissimorum familiae obsequi veluti his locis:

Parm. 138 B. ὅρα δὲ, οὕτως ἔχον εἰ οἷόν τε ἔστιν ἐστάναι ἢ κινεῖσθαι. Verbum substantivum, quod optimi libri non agnoscunt, retinet Hermannus hoc nisus argumento: „ante ἐστάναι eiciendo cum Tur. ἔστιν in tanta omissionis proclivitate Oxoniensi obtemperare non potui.“ At primum non solum Oxoniensis, sed etiam Vat. Δ Ven. II. verb. subst. hic aspernati sunt; deinde etiam alibi εἶναι apud οἷόν τε supplendum est, cf. p. 156 C. χρόνος δέ γε οὐδεὶς ἔστιν, ἐν ᾧ τι οἷόν τε ἅμα μήτε κινεῖσθαι μήτε (sic. Cl.) ἐστάναι p. 162 B. οἷόν τε οὖν τὸ ἔχον πως μὴ ἔχειν οὕτω, μὴ μεταβάλλον ἐκ ταύτης τῆς ἕξεως; Οὐχ οἷόν τε p. 156 E. ἄρ' οὖν ὅτε μετέχει, οἷόν τε ἔσται τότε μὴ μετέχειν ἢ ὅτε μὴ μετέχει, μετέχειν. Οὐχ οἷόν τε. p. 139 B. οὐ γὰρ οἷόν τε atque adeo hanc omissionem frequentissimam esse statuunt grammatici cf. Krüger § 62, 1, 3, Kühner (1870) § 354 p. 36. Haec inconstantia Hermannii maxime vituperanda est.

Parm. 134 B. ἄγνωστον ἄρα ἡμῖν ἔστι καὶ αὐτὸ τὸ καλὸν ὃ ἔστι καὶ τὸ ἀγαθὸν καὶ πάντα ἃ δὴ ὡς ἰδέας αὐτὰς οὖσας ὑπολαμβάνομεν. Bekk. „ἡμῖν καὶ Δ E et pr. II: ἡμῖν ἔστι καὶ Steph. cum. codic. reliq.“ Falso; Clarkianus non est in eorum numero nullamque habet interpolationem ut Δ E et pr. II. E silentio collationis Gaisfordianae cum concluderint editores, in errorem inducti sunt.

Phaedr. p. 260 B. γελοῖον γὰρ ᾧ Σώκρατες εἶη . εἶη abest a Clarkiano et ut videtur a Vaticano Δ. Cum ᾧ sine εἶη possit poni (cf. Kühner § 354 Not. 2 c et exempla a nobis allata supra p. 33) nullam causam video, cur hic interpolationem tui sint interpretes. Aliter res se habet Parm. p. 141 C. ubi ab tribus codicibus praestantissimis (Cl. Vat. Ven. II) traditur ἀνάγκη γὰρ ᾧ. Hic optativus non potest tolerari; quare pro ᾧ propono δῆ, cf. supra p. 50 Baumlein Gr. Partikel p. 100 (δῆλα γὰρ δῆ).

Parm. 148 E. καὶ τὸ ἐν ἄρα εἰ μέλλει αὐτὸ αὐτοῦ ἄψεσθαι, ἐφεξῆς δεῖ εὐθύς μεθ' ἑαυτὸ κεῖσθαι, τὴν ἐχομένην χώραν κατέχον ἐκείνης ἢ αὐτό ἔστιν. Δεῖ γὰρ οὖν . οὖν abest a libris Cl. Ven. II Vat. Δ et potest abesse cf. p. 165 C. δεῖ γάρ.

Soph. p. 264 E. ἕως ᾧ αὐτοῦ τὰ κοινὰ πάντα ποριερόντες τὴν οὐκείαν λιπόντες φύσιν ἐπιδείξωμεν μάλιστα μὲν ἡμῖν αὐτοῖς, ἔπειτα δὲ καὶ τοῖς ἐγγυτάτω γένει τῆς τοιαύτης μεθόδου πεφυκόσιν. Hoc a Stallbaumio cum Clarkiano deletum δὲ cur Turicenses Hermannus Campbellius alii

reducerint, equidem non video; nam haec omissio est paene legitima cf. Kr. §. 69, 24, 1.

Soph. p. 234 A. iusiurandum habemus φημί, καὶ πρὸς γέ θαλάττης καὶ γῆς καὶ οὐρανοῦ καὶ τῶν ἄλλων συμπαντων. Verba καὶ γῆς desunt in codd. omnibus, Ven. E et Flor. 1 si exceperis eaque facile desiderantur. Recte igitur Campbellius haec verba uncis inclusit.

Euthyd. p. 304 D. ἀτὰρ γελοῖον μὲν μοι δοκεῖ εἶναι τὸ νουθετεῖν σε, ὅμως δὲ ἃ γ' ἤκουον, ἐθέλω σοι ἀπαγγεῖλαι. μὲν om. Bodl. Vat. Θ. Winckelmannus ad hunc locum nubem exemplorum conghessit; unde apparet dici γελοῖον μὲν — ὅμως δέ. Sed hoc non erat evincendum; nemo enim hoc dubitat; potius erat demonstrandum ὅμως δέ sine μὲν non posse dici. Id autem nullo modo potest demonstrari. Nam sine μὲν hoc exemplum simillimum reperitur Apol. 22 B. αἰσχύνομαι οὖν ὑμῖν εἰπεῖν ὡς ἄνδρες τὰ ληθῆ· ὅμως δὲ ῥητέον quo iubemur μὲν e loco Euthydemii quam celerrime expellere.

Coniunctionibus insertis permulti loci Platonis vexati sunt. Exemplorum a me collectorum haud absonum videtur nunc haec legentium iudicio proponere:

Euthyd. p. 274 B. ἐπ' αὐτό γε τοῦτο πάρεσμεν ὡς Σώκρατες ὡς ἐπιδείξοντες καὶ διδάξοντες, εἴαν τις ἐθέλῃ μαθάνειν. Ἄλλ' ὅτι μὲν ἐθελήσουσιν ἅπαντες οἱ μὴ ἔχοντες, ἐγὼ ὑμῖν ἐγγυῶμαι, πρῶτος μὲν ἐγώ, ἔπειτα δὲ ὅδε καὶ οἱ ἄλλοι οὗτοι. Verbum ἀλλά ante ὅτι deest in Bodlei. Vat. Θ delendumque esse docent hi loci: Rep. III. p. 412 B. Εἴεν ἦν δ' ἐγώ· τὸ δὴ μετὰ τοῦτο τί ἂν ἡμῖν διαιρετέον εἴη; ἄρ' οὐκ αὐτῶν τούτων οἵτινες ἄρξουσιν τα καὶ ἄρξονται; Τέ μὲν; Ὅτι μὲν πρεσβυτέρους τοὺς ἄρχοντας δεῖ εἶναι, νεωτέρους δὲ τοὺς ἀρχομένους, δῆλον; Δῆλον. Phaedo. 87 A. ὡς δὲ καὶ ἀποθανόντων ἡμῶν ἔτι που ἔσται, οὐ μοι δοκεῖ τῇδε ὡς μὲν οὐκ ἰσχυρότερον καὶ πολυχρονιώτερον φυγὴ σώματος, οὐ ἐυχωρῶ τῇ Σιμίου ἀντιλήψει. Euthyd. p. 278 A. Ut hic ἀλλά ita vide ne οὖν ab aliena manu intrusum sit Phaedr. p. 246 B. πῇ δὲ οὖν θνητὸν καὶ ἀθάνατον ζῶον ἐκλήθη, πειρατέον εἰπεῖν· πᾶσα ἡ ψυχὴ παντὸς ἐπαμελεῖται τοῦ ἀφύχου, πάντα δὲ οὐρανὸν περιπολεῖ, ἄλλοτ' ἐν ἄλλαις εἵδεσι γιγνομένη· τελέα μὲν οὖν οὐσα καὶ ἐπτερωμένη μετεωροποιεῖ τε καὶ πάντα τὸν κόσμον διοικεῖ· ἡ δὲ πτερορρησασα φέρεται, ἕως ἂν στερεοῦ τινὸς ἀντιλάβηται κ. τ. λ. p. 271 O. λόγων αὖ τόσα καὶ τόσα ἔστιν εἶδη, τοιόνδε ἕκαστον. οἱ μὲν οὖν τοιοῦδε ὑπὸ τῶν τοιῶνδε λόγων διὰ τήνδε τὴν αἰτίαν εἰς τὰ τοιάδε εὐπαιθεῖς, οἱ δὲ τοιοῦδε διὰ τὰδε δυσπαιθεῖς quibus locis libri qui nobis duces esse debent in verbis Platonis constituendis οὖν post μὲν omiserunt. Simili modo

interpolatus locus reperitur. Phaedr. p. 71 B. τί δ' αὖ; ἔστι τι καὶ τοιόνδε ἐν αὐτοῖς, οἷον μεταξὺ ἀμφοτέρων πάντων τῶν ἐναντίων δυοῖν ὄντων δύο γενέσεις, ἀπὸ μὲν τοῦ ἑτέρου ἐπὶ τὸ ἕτερον; μείζονος μὲν γὰρ πράγματος καὶ ἐλάττωνος μεταξὺ αὐξήσεως καὶ φθίσεως καὶ καλοῦμεν οὕτω τὸ μὲν αὐξάνεσθαι, τὸ δὲ φθίνειν; γὰρ compendio a manu recentissima scriptum supra lineam habetur. Hermannus non admisit vocabulum; cur quod hic fecit, aliis locis neglexit? Idem cur non cum libris optimis et plerisque Phaedr. 284 C. scripserit ἐγὼ μὲν οἶμαι pro ἐγὼ δὲ οἶμαι non possum assequi. Notus usus est; Hirschigius igitur recte μὲν recepit dolendumque est, quod nuperrimus Phaedri editor Thompsonus in veterem errorem relapsus est.

Ex his paucis exemplis quibus alio loco etiam complura adiciemus, apparet quam inconstanter rationem a se propositam Hermannus secutus sit. Si re vera Clarkianus fundamentum criseos Platonicae est, non modo hinc modo illinc flosculos decerpēs, sed illum in rebus vel minutissimis quasi ducem sequeris. Euthyd. p. 273 B. ἔπειτα ἰόντε ὁ μὲν παρὰ τὸ μισθόν ἐκαθέζετο, ὁ Εὐθύδημος, ὁ δὲ παρ' αὐτὸν ἐμὲ ἐξ ἀριστερᾶς. Articulus ο. ante Εὐθύδημος deest etiam in Clarkiano; nihil obstat, quominus eum deleamus cf. Soph. Philoct. 371 ὁ δ' εἶπ' Ὀδυσσεύς, Kr. 50, 1, 11. Eum quamquam Gaisfordius et Bekkerus a Clarkiano et Vaticano abesse recte contenderunt, cur Stallbaumius Turicenses Hirschigius Hermannus Badhamus tamen retineant, non intellego; nam etsi Plato plerumque nomen iam memoratum cum articulo poñit, tamen etiam sine articulo id usurpat. Sic nostrum nomen p. 286 E. 284 C. 285 C. sine articulo reperitur; Εὐθύδημος sine articulo p. 289, 294 C. (in eadem enuntiatione etiam cum articulo) 297 B. (bis) 277 B. 297 D. 304 C. 305 D. 276 C. Alia exempla in quavis pagina legenti occurrunt. — p. 273 B. nunc scribunt ἰδὼν αὖν με ὁ Κλεινίας ἀπὸ τῆς εἰσόδου μόνον καθήμενον, ἀντιπρὸς ἰὼν παρακαθέζετο ἐκ δεξιᾶς ὥσπερ καὶ σὺ φῆς adnotantque: καὶ om. Vat. Θ. Arbitrantur igitur hoc verbum Clarkianum tueri. Sed errant; καὶ non conspicitur in Clarkiano nullaque est causa, cur non id deleatur. Euthyd. p. 284 E. ὥς εὖ ἴσθ' ὅτι κακῶς λέγουσιν οἱ ἀγαθοὶ τοὺς κακοὺς. Ἡ καὶ τοὺς μεγάλους, ἔφη ὁ Εὐθύδημος, μεγάλως λέγουσι καὶ τοὺς θερμοὺς θερμῶς. Μάλιστα δὴ πού, ἔφη ὁ Κτήσιππος. Antea καὶ om. ἡ et Clarkianus et Vaticanus, de qua re cum adhuc nihil adnotatum sit, editores non potuerunt particulam extinguere. Nunc autem possum confirmare in his duobus codicibus ἡ deesse. Quam si deleveris, Euthydemus non interrogat, sed orationem Ctessippi cum aliqua irrisione continuat.

§ 19.

Interpolationes multo saepius quam adhuc viri docti putarunt in Platonis libros irrepsisse, mihi cum Badhamo est persuasum. Exempla in unoquoque dialogo nobis occurrunt, modo diligenter atque attente legamus; in Euthydemo vide ne haec recte deprehenderim:

p. 272 A. Socrates de Euthydemo et Dionysodoro fratribus haec dicit: ἔπειτα τὴν ἐν τοῖς δικαστηρίοις μάχην κρατίστῳ καὶ ἀγωνίσασθαι καὶ ἄλλον διδάξαι λέγειν τε καὶ συγγράφεσθαι λόγους οἷους εἰς τὰ δικαστήρια. Coniunctio καὶ ante ἀγωνίσασθαι offensionem habet; nam cum τὴν ἐν τοῖς δικαστηρίοις μάχην praecesserit, membro καὶ ἀγωνίσασθαι alterum coniunctione καὶ non potest adgregari, nisi ad idem obiectum τὴν ἐν τοῖς δικαστηρίοις μάχην referetur. Eadem causa me prohibet quominus assentiar Hertlinio qui (Fleckeisen Ann. Vol. 95 (1867) p. 538) αὐτῷ ante καὶ intercidisse putat; nam αὐτῷ et ἄλλον inter se potuerunt opponi, si Plato ἔπειτα τὴν ἐν τοῖς δικαστηρίοις μάχην κρατίστῳ καὶ αὐτῷ ἀγωνίσασθαι καὶ ἄλλον διδάξαι scripsisset. Haec considerans ut aliis permultis locis ita hic quoque καὶ interpolatum censeo, quo deletio locus erit sanus. cf. Gorg. 449 D. ῥητορικῆς γὰρ φησὶ ἐπιστήμων τέχνης εἶναι καὶ ποιῆσαι ἄν καὶ ἄλλον ῥήτορα. Phaedr. 270 B. καὶ ἐπιστάμενος αὐτὰ ἀξιῶ ἰατροὺς εἶναι καὶ ἄλλον ποιεῖν ὥς ἂν τὴν τούτων ἐπιστήμην παραδῶ. Dem. 34. 1. οὐδεμίαν πώποτε δίκην πρὸς ὑμᾶς ἤλθομεν οὔτ' ἐγκαλοῦντες οὔτ' ἐκαλούμενοι ὑφ' ἐτέρων. Theaet 149 A. ἀπορώτατός εἰμι καὶ ποιῶ τοὺς ἀνθρώπους ἀπορεῖν. Lach. p. 186 C. καὶ γὰρ χρήμασιν ἐμοῦ δυνατώτεροι ὥστα μαθεῖν παρ' ἄλλων καὶ ἅμα πρεσβύτεροι ὥστε ἤδη εὐρηκέναι.

p. 305 C. οὐδὲ οἶμαι πώποτ' αὐτὸν ἐπὶ δικαστήριον ἀναβεβηκέναι, ἀλλ' ἐπαίειν αὐτὸν φασὶ περὶ τοῦ πράγματος νῆ τὸν Δία καὶ δεινὸν εἶναι καὶ δεινοὺς λόγους συντιθέναι. Verba καὶ δεινὸν εἶναι molesta sunt; nam ad ἐπαίειν relata supervacanea, per se accepta manca sunt. Quas difficultates evitabis, si καὶ ante δεινὸν deleveris.

p. 277 C. Πότερον οὖν εἰσὶν οἱ λαμβάνοντες ὅτιοῦν οἱ ἔχοντες ἤδη ἢ οἱ ἂν μή; Οἱ ἂν μή ἔχωσιν. Sic enuntiatio non potest stare; nam mirum quod ἔχωσιν in interrogatione supplendum in responsione positum est. Fallor aut Plato scripsit etiam in responsione οἱ ἂν μή. Manus aliena infersit ἔχωσιν.

p. 299 A. ἀλλ' ἢ που ὦ Εὐθύδημε, ἔφη ὁ Κτήσιππος, πόλλ' ἀγαθὰ ἀπὸ τῆς ὑμετέρας σοφίας ταύτης ἀπολέλαυκεν ὁ πατήρ ὁ ὑμέτερός τε καὶ ὁ τῶν κυνιδίων. Ante ὁ Κτήσιππος in omnibus praene libris ἔφη deesse testantur interpretes; de Clarkiano tacent. Sed is quoque liber ἔφη non

habet. Nullum igitur praesidium huius verbi in libris. Inde sequitur ut etiam ὁ Κτήσιππος ciciendum sit; nam cum praecesserit πολὺ μέντοι ἔφη δικαιότερον τὸν ὑμέτερον πατέρα τύπτειμι, ὅτι μαθὼν σοφοὺς υἱεῖς οὕτως ἔφυσεν, et in his verbis ἔφη ad Ctesippum referendum sit, non necessarium esse videtur in altera enuntiatione Ctesippum iterum nominare.

Clarkianum conferens vidi multo saepius quam apud Bekkerum adnotatum est hunc librum cum aliis libris bonae familiae consentire, id quod etiam hoc exemplum ex Euthydemo sumptum demonstrat.: p. 286 C. scripserunt Bekkerus Stallbaumius Hirschigius ἄλλο τι ψευδῇ λέγειν οὐκ ἔστι. Recte, nam non solum Vat. Θ sed etiam Clarkianus ἧ post ἄλλο τι omisit; et ἧ posse deesse quis est qui neget? cf. Kr. 62, 3, 8.

p. 299 C. ἧ καὶ τὸν Γηρυόνην ἂν ἔφη καὶ τὸν Βριάρεων οὕτω σὺ ὀπλίσαις; ἐγὼ δὲ ὦμην σε δεινότερον εἶναι ἅτε ὀπλομάχην ὄντα καὶ τόνδε τὸν ἑταῖρον. De genuitate verborum καὶ τόνδε τὸν ἑταῖρον dubito; primum enim mirum videtur quod haec verba addita sunt, cum oratio ad Euthydemum solum conversa sit; deinde nescio num frater possit dici ἑταῖρος; collocatio denique verborum inusitata est. Haec movent me, ut verba in marginem reiciam.

p. 305 C. οἶονται δ' εἶναι πάντων σοφώτατοι ἀνθρώπων, πρὸς δὲ τῷ εἶναι καὶ δοκεῖν πάνυ παρὰ πολλοῖς ὥστε παρὰ πᾶσιν εὐδοκιμεῖν ἐμποδῶν σφίσι εἶναι οὐδένας ἄλλους ἢ τοὺς περὶ φιλοσοφίαν ἀνθρώπους. Pro τῷ εἶναι plerique optimi libri nobis praebent τὸ εἶναι. Accusativum cum praepositio πρὸς hic non admittat, aut correctio adhibenda aut interpolatio statuenda est. Equidem interpolationem malim amplecti quam correctionem, cum putem librarium adverbium πρὸς nescientem illud εἶναι minime necessarium invexisse. Hic praepositionis usus nobis satis notus est. cf. Kr. § 68, 2, 2. Hertlein Xen. Cyrop. 2. 1. 31. Kratz ad Gorg. p. 516 D. (p. 139) Plat. Prot. 321 D. πρὸς δὲ καὶ αἱ Διὸς φυλακαὶ φοβεραὶ ἦσαν. Rep. I. 328 A. καὶ πρὸς γε παννυχίδα ποιήσουσι. Soph. p. 234 A. καὶ πρὸς γε θαλάττης καὶ οὐρανοῦ καὶ θεῶν.

p. 295 D. ἀλλ' εἰ δοκεῖ σοι, Εὐθύδημε, οὕτω ποιεῖν, ποιητέον. Haec Socratis verba, quibus se sophistae obsecuturum esse profitetur, corrupta esse censeo, nam verba εἰ δοκεῖ σοι οὕτω ποιεῖν ab hoc loco aliena, cum sine dubio significant „si tibi videtur hoc faciendum esse“ ita ut ποιεῖν pro ποιητέον εἶναι accipiendum sit cf. Hertlein Xen. Cyr. 2. 4. 22¹⁾. At Socrates, non Euthydemus ποιεῖ, Euthydemus iubet, Socrates iussa fa-

¹⁾ Rectius dicas δοκεῖν esse interpretandum „gut dünken“ cf. Kr. § 55, 3, 15.

cit. (cf. quae Socrates p. 295 B. dicit οὕτω γὰρ ποιήσω, ὅπως ἂν σὺ κελεύῃς). Verba autem, qualia nunc leguntur, ita comparata sunt, ut sophistae aliquid faciendum esse putes, ut οὕτω ποιεῖν ad σοὶ referas. Itaque aut σοὶ aut ποιεῖν ab hoc loco removendum est. Haec exempla me impellant, ut infinitivum ποιεῖν expellendum censeam: Prot. p. 362 A. οὕτω χρὴ ποιεῖν, εἴ σοι δοκεῖ. Theaet. 145 C. ἀλλὰ χρὴ ποιεῖν ταῦτα, εἴ σοι δοκεῖ. ibid. 184 A. ἀλλὰ χρὴ, εἴ δοκεῖ, οὕτω ποιεῖν. Rep. I. 328 B. ἀλλ' εἰ δοκεῖ, οὕτω χρὴ ποιεῖν. Symp. 175 B. ἀλλ' οὕτω χρὴ ποιεῖν, εἴ σοι δοκεῖ. Tim. 20 D. ταῦτα χρὴ δρᾶν, εἰ καὶ τῷ τρίτῳ κοινωνῶ Τιμαίῳ ξυνδοκεῖ. Arist. Nub. 11 ἀλλ' εἴ δοκεῖ, ρέγκωμεν ἐγκεκαλυμμένοι id. Av. 665 ἀλλ' εἴ δοκεῖ σφῶν, ταῦτα χρὴ δρᾶν. Phaed. 70 C. εἰ οὖν δοκεῖ, χρὴ διασκοπεῖσθαι. Charm. 169 D. ἀλλ' εἴ δοκεῖ ὦ Κριτία, νῦν μὲν τοῦτο ξυγχωρήσωμεν. Arist. R. 870. Scribendum igitur ἀλλ' εἰ δοκεῖ σοι, Εὐθύδημε, οὕτω ποιητέον.

p. 294 C. τὸ δὲ ἀνδρείοτατα ὁμῶσε ἔτην τοῖς ἐρωτήμασιν ὁμολογούντες εἰδέναι ὥσπερ οἱ κάπροι οἱ πρὸς τὴν πληγὴν ὁμῶσε ὠθούνενοι. ὁμῶσε significat εἰς ταυτό, εἰς τὸν αὐτὸν τόπον. cf. Cobet Nov. L. p. 99 „eodem modo ὁμῶσε ubique significat εἰς ταυτόν et ὁμῶσε χωρεῖν, ἰέναι, βαδίζειν, πορεύεσθαι, θεῖν, φέρεσθαι, ἐλαύνειν alia significant εἰς τὸν αὐτὸν τόπον πρὸς ἐλθεῖν et sic concurrere, congregari, conflare, manus conserere, similia.“ Inde facile intellegere licet quid sit τοῖς ἐρωτήμασιν ὁμῶσε ἰέναι. Veritas „den Fragen zu Leibe gehen. Quid autem sit πρὸς τὴν πληγὴν ὁμῶσε ὠθεῖσθαι, non potest intellegi. ὁμῶσε si pendet ab ὠθεῖσθαι, non potest ab eodem verbo pendere πρὸς τὴν πληγὴν; sed si τὴν πληγὴν sententiae inesse velis, tum ab ὁμῶσε pendere debet cf. Xen. Symp. II, 13 ποιήσῃ πάντας Ἀθηναίους τολμᾶν ὁμῶσε ταῖς λόγχαις ἰέναι; πρὸς τὴν πληγὴν et ὁμῶσε inter se repugnant. Quam repugnantiam tolles, si sustuleris ὁμῶσε perperam repetitum.

p. 285 A. καὶ εἶπον ὦ Κτήσιππε, ἐμοὶ μὲν δοκεῖ χρῆναι ἡμᾶς τῶν ξένων δέχεσθαι ἃ λέγουσιν ἐὰν ἐθέλωσι διδόναι καὶ μὴ ὀνόματι διαφέρεισθαι Verba ἐὰν ἐθέλωσι διδόναι expelle et conf. Phileb. 11 A. ὅρα δὴ Πρωταρχε τίνα λόγον μέλλεις παρὰ Φιλήβου δέχεσθαι. Thuc. 2. 3. τοὺς λόγους δεξάμενοι ἥσυχάζον

§ 20.

Quamquam multos iam locos Euthydemī tentavimus, tamen alia multa in hoc dialogo supersunt, quae interpretis diligentiam desiderant; itaque hac paragrapho dialogum Euthydemum percurramus, si quid aliud praeter

ea quae iam protulimus, conferre possimus ad scriptoris verba vel interpretanda vel emendanda vel tuenda:

Crito colloquio cum Socrate instituto p. 271 B. haec dicit: ὃν μὲν ἐγὼ λέγω, ἐκ δεξιᾶς τρίτος ἀπὸ σοῦ καθῆστο · ἐν μέσῳ δ' ὕμῶν τὸ Ἀξιόχου μαιράκιον ἦν . καὶ μάλα πολὺ ὧ Σώκρατες ἐπιδεδωχέναι μοι ἔδοξε καὶ τοῦ ἡμετέρου οὐ πολὺ τι τὴν ἡλικίαν διαφέρειν Κριτοβούλου, ἀλλ' ἐκεῖνος μὲν σκληρρός, οὗτος δὲ προφερής καὶ καλὸς καὶ ἀγαθὸς τὴν ὄψιν. Hunc locum qui tam multos interpretes vexavit vide ne enucleaverim hac ratione:

Primum inter se disceptant homines docti quo ἐκεῖνος, quo οὗτος sit referendum. Hac de re autem nulla potest dubitatio exoriri; nam in iis quae antecesserunt duos homines commemoratos reperimus ad quos scriptor si recte voluit loqui, non potuit ἐκεῖνος et οὗτος non referre. Qui aliud statuerunt interpretes, eos refellere operae pretium non videtur. Etiam hoc mihi omnes concesserint, nisi causa gravis obstet, pronomēn ἐκεῖνος ad remotius, οὗτος ad propius nobis trahendum esse. Hac via quae omnia respuit artificia, antequam ad alia perfugiamus, loci sententia nobis erit exploranda.

Duabus igitur enuntiationibus Axiochi filius, cui nomen est Cliniae, et Critobulus Critonis filius inter se comparantur ac priore quidem exponitur, qua in re inter se sint *similes*, posteriore qua in re *dissimiles*. Jam vero quaerendum est, qualis sit illa similitudo, quam Crito sibi detexisse videtur et qualis dissimilitudo. Considera quaeso verba καὶ μάλα πολὺ ὧ Σώκρατες ἐπιδεδωχέναι μοι ἔδοξε καὶ τοῦ ἡμετέρου οὐ πολὺ τι τὴν ἡλικίαν διαφέρειν Κριτοβούλου, iam senties omnem quaestionem pendere a significatione vocabuli ἡλικίαν. Quodsi cum interpretibus velis *aetatem* interpretari, illa καὶ μάλα πολὺ ἐπιδεδωχέναι per se accipienda sunt vel ut aliter dicam, si Clinias μάλα ἐπιδέδωκε, idcirco non dicendus est οὐ πολὺ τι διαφέρειν τὴν ἡλικίαν τοῦ Κριτοβούλου. Sed hoc nonne mirum est? Nonne potius expectas, ut Crito id quod consequitur ex ἐπιδεδωχέναι in altero membro describat? Vide ne id dixerit Crito. Vocabulum enim ἡλικία aliter explicandum est; id non solum significat *aetatem*, sed etiam *corporis staturam et magnitudinem* cf. Dem. 40, 56 οὐχ ἔξω ὀπόθεν προῖκα ἐπιδῶ τῇ θυγατρὶ, ἧς τῇ μὲν φύσει πατήρ εἰμι, τὴν δ' ἡλικίαν αὐτῆς ἂν ἴδῃτε, οὐκ ἂν θυγατέρα μου, ἀλλ' ἀδελφὴν εἶναι αὐτὴν νομίζατε. Herod. 3, 16 ὥς μὲντοι Αἰγύπτιοι λέγουσι, οὐκ Ἀμασις ἦν ὁ ταῦτα παθών, ἀλλ' ἄλλος τῶν τις Αἰγυπτίων ἔχων τὴν αὐτὴν ἡλικίην Ἀμάσι, τῷ λυμαινόμενῳ Πέρσαι ἐδόκεον Ἀμάσι λυμαίνεσθαι ad quem locum haec Steinius adnotavit: ἡλικίη hier wohl nach Hesychios = μέγε-

θος σώματος cf. IV. 111. 5. -Εν. Matth. 6. 27 προσθεῖναι ἐπὶ τὴν ἡλικίαν αὐτοῦ πῆχυν ἓνα." Acn. Tact. 1, 8 p. 5 Herch. τῶν δὲ λοιπῶν τοὺς ῥωμαλεωτάτους ἡλικία καὶ νεότητι unde non recte καὶ νεότητι eiecerunt cf. Meier opusc. II. p. 296. Quae disputavimus si vera sunt, Socrates hoc dicit: Clinias tantum crevit ut corporis magnitudine propemodum aequare videatur Critobulum.

Similitudinem duorum hominum postquam cognovimus, qualis sit eorum *dissimilitudo*, videamus. Crito dicit: Clinias est σκληρρός, Critobulus προφερής καὶ καλὸς καὶ ἀγαθός τὴν ὄψιν. Quorum adiectivorum vim exploraturi interpretem plerique in summas difficultates inciderunt, quod scholiastae qui significatum statuit qui ipsi verbo non potest inesse potius obsequi voluerunt quam rationi. Cum σκληρρός cognatum sit cum σκληρῆναι, non potest dubitari quin significet „*attenuatum, macilentum, exilem*." Quem eliciimus e verbo significatum, egregie firmat Photius vel is, a quo desumsit hanc glossam (Nab. II. p. 163) σκληρρόν · τὸν κατεσκληρότα καὶ ἀγεννῆ τὴν ἰδέαν. Verbo igitur σκληρρός notionem deformitatis accedere docemur hac glossa, verbo προφερής pulchritudinis notionem admisceri dicit Plato ipse. Inde elucet significatum duorum vocabulorum prorsus contrarium esse. Et si σκληρός attenuatum, macilentum, προφερής significat robustum et vegetum id quod cum ἐτυμολογία verbi aptissime congruit. Nunc omnia recte se habent; duo homines, ἡλικίαν si spectas, similes, ὄψιν si spectas, dissimiles sunt, Critobulus est formoso vultu, Clinias deformi. Cum hac autem descriptione Critobuli consentiunt veterum testimonia, cf. quae ipse dicit Xen. Conv. IV. 13 οὐκοῦν αὖ ἐγὼ λέξω, ἔφη, ἐξ ὧν ἐπὶ τῷ κάλλει μέγα φρονῶ κ. τ. λ. Neque repugnat quod Clinias p. 289 B. ὦ καλὲ παῖ et p. 290 D. ὦ κάλλιστε καὶ σοφώτατε Κλεινία invocatur; nam „καλὸς vulgare fuit Atticae urbanitatis blandimentum" Stallb. ad. Rep. X. 595 C. Protag. p. 362 A.

p. 273 C. μετὰ δὲ τοῦτ' εἶπον πρὸς τὸν Κλεινίαν, ὦ Κλεινία, τῷδε μέντοι τῷ ἄνδρι σοφῷ, Εὐθύδημός τε καὶ Διονυσόδωρος, οὐ τὰ σμικρά, ἀλλὰ τὰ μεγάλα. Badhamus inclusit Εὐθύδημός τε καὶ Διονυσόδωρος fortasse verborum collocatione offensus. Haec exempla haud scio an ei hanc offensionem eximant: Charm. p. 154 A. οὗτοι γὰρ τυγχάνουσιν οἱ εἰσιόντες πρόδρομοί τε καὶ ἐρασταὶ ὄντες. Prot. 310 C. ὁ γάρ τοι παῖς με ὁ Σάτυρος ἀπέδρα. Charm. p. 156 D. ἀλλὰ Ζάμολξις ἔφη λέγει ὁ ἡμέτερος βασιλεύς. Gorg. p. 495 D. Καλλικλῆς ἔφη Ἀχαρνεὺς ἡδὺ μὲν καὶ ἀγαθὸν ταύτῳ εἶναι ibid. Σωκράτης δὲ γε ἡμῖν ὁ Ἀλωπεκῆθεν οὐχ ὁμολογεῖ ταῦτα. Euthyd. p. 285 B. ἐφάτην γοῦν τὴν τέχνην σφῶν εἶναι τὴν νεωστὶ εὐρημένην ἀγαθοὺς ποιεῖν τοὺς ἀνθρώπους ἐκ πονηρῶν. Ephr. 11 C. An

Badhamus nomina non necessaria esse putavit? Sed si quid est non necessarium, non idcirco falsum habendum est. Neque igitur possum assentiri Cobeto eiusque discipulis ubique nomina propria non propterea necessaria delentibus. cf. quae hac de re disputavi in Comment. Plat. p. 113. Locorum multitudo obstat; veluti in nostro dialogo etiam p. 296 D. nomen adpositum habes: ὁ ἀδελφός σου οὗτος Διονυσόδωρος. Naberus debebat; at si hic eum audimus, etiam cogimur expellere nomen his locis: Meno 90 B. συζητήσον ἐμοί τε καὶ τῷ σου ξένῳ Μένωνι τῷδε ibid. 91 A. περὶ τοῦ ξένου τουτουῖ Μένωνος.

Badhamus cum inclusit μάχεσθαι in verbis p. 273 C. τὰ γὰρ περὶ τὸν πολεμὸν πάντ' ἐπίστασθον, ὅσα δεῖ τὸν μέλλοντα στρατηγὸν ἔσεσθαι, τὰς τε τάξεις καὶ τὰς ἡγεμονίας τῶν στρατοπέδων καὶ ὅσ' ἐν ὅπλοις [μάχεσθαι] διδασκτέον id certe effecit, ut verba possint converti; nam διδασκτέον est adiectivum verbale medii διδάσχομαι quod significat „docendum me praebeo“ (Arist. Nub. 127). Locutionem autem ὅσα ἐν ὅπλοις διδασκτέον tueri videtur Lach. 190 D. ἡ ἐν τοῖς ὅπλοις μάθησις. Ac tamen nescio an v. ὅσα διδασκτέον quasi lemma in marginem reicienda sint, cum nemo intellegat, cur voluerit scriptor his ambagibus uti atque aequabilitatem membrorum tam turpiter turbare.

p. 273 E. τοῦτο μέμνημαι σφῶ ἐπαγγελλομένῳ. Non satis notum est Graecos verbis recordandi participia temporis praesentis adiungere. Quod ut illustrem, haec exempla praebeo: Gorg 460 CD. μέμνησαι οὖν λέγων ὀλίγω πρότερον. Charm. p. 156 A. μέμνημαι ἔγωγε καὶ παῖς ὢν Κριτία τῷδε ξυνόντα σε. Prot. 359 C. μέμνησαι ὡς Πρωταγόρα ταῦτα ἀποκρινόμενος; Lach. p. 180 E. περιφέρει δέ τις με καὶ μνήμη ἄρτι τῶνδε λεγόντων. Theaet. 207 D. εἰτα ἀμνημονεῖς ἐν τῇ τῶν γραμμάτων μαθήσει κατ' ἀρχὰς σουτόν τε καὶ τοὺς ἄλλους ὁρῶντας αὐτά. Alcib. II. 150 B. οὐκοῦν μέμνησαι ἐν πολλῇ ἀπορίᾳ φάσκων εἶναι (at. 139 B. οὐκοῦν μέμνησαι ὁμολογήσας). Xen. Anab. 5. 9. 23 ἀετὸν ἀνεμνησάκετο ἑαυτῷ δεξιὸν φθεγγόμενον. Dem. de f. leg. § 253 μέμνησθε δήπου λέγοντ' αὐτόν.

p. 274 E. τόδε δέ μοι εἶπετον, πότερον τὸν πεπεισμένον ἤδη ὥς χρὴ παρ' ὑμῶν μαθάνειν, δύναισθ' ἂν ἀγαθὸν ποιῆσαι ἄνδρα μόνον ἢ καὶ ἐχεῖνον τὸν μήπω πεπεισμένον διὰ τὸ μὴ οἶεσθαι ὅλως τὸ πρᾶγμα τὴν ἀρετὴν μαθητὸν εἶναι ἢ μὴ σφῶ εἶναι αὐτῆς διδασκάλῳ; Hirschigius et Badhamus τὸ πρᾶγμα circumscripserunt; iis contrarius est hic simillimus locus: Prot. p. 327 A. τούτου τοῦ πράγματος, τῆς ἀρετῆς, εἰ μέλλει πόλις εἶναι, οὐδένα δεῖ ἰδιωτεύειν. Vana est etiam coniectura, quam hoc de loco protulit Britannus quidam (Journal of classical and sacred Philo-

logy Vol. IV p. 148). Is enim scribendum censet τὸ πρᾶγμα τῆς ἀρετῆς et comparat Crit. p. 53 D. Alex. apud Ath. III. p. 123 E. Henioch. ibid. IX. p. 408 A. quae exempla insuper non congruere in rem videntur.

p. 275 B. εἰπόντος οὖν ἐμοῦ σχεδὸν τι αὐτὰ ταῦτα ὁ Εὐθύδημος ἅμα ἀνδρείως τε καὶ θαρραλέως, Ἄλλ' οὐδὲν διαφέρει ὧς Σώκρατες ἔφη, εἰ μὴ μόνον ἐθέλη ἀποκρίνεσθαι ὁ νεανίσκος. Badhamus coniecit μάλα pro ἅμα eiusque coniecturae hanc causam Add. p. 79 attulit: „*Absurde praepositur ἅμα multis rebus tunc similibus quam sunt ἀνδρεία et θάρρος*“. At ἅμα non pertinet ad ἀνδρείως καὶ θαρραλέως, sed ad ἔφη; exprimit enim Socratem nondum sermoni finem imposuisse cum Euthydemus dixit: ἀλλ' οὐδὲν διαφέρει κ. τ. λ. cf. Crat. p. 399 E. ἅμα δὲ ἐκλείποντος τοῦ ἀναφύχοντος τὸ σῶμα ἀπόλλυται τε καὶ τελευτᾷ. Participium praesentis non esse necessarium evincit Protag. 335 C. καὶ ἅμα ταῦτα εἰπὼν ἀνιστάμεν ὡς ἀπὼν...

p. 275 C. οὐ γὰρ σμικρὸν τὸ ἔργον, δύνασθαι ἀναλαβεῖν διεξιόντα σοφίαν ἀμήχανον ὅσῃ Schleiermacherus vertit „denn wahrlich es ist keine kleine Sache, so unerdenklich tiefe Weisheit vortragen zu können“ quasi legerit οὐ γὰρ σμικρὸν τοι ἔργον. Ne quis animum inducat hoc corrigere, propono hoc exemplum Xen. Cyr. 2. 2. 11 τὰς ψυχὰς θήγειν αὐτῶν ἡμέτερον τὸ ἔργον cf. Dornseifen de articulo apud Graecos eiusque usa in praedicato p. 23 (Soph. p. 231 C. ὀρθὴ γὰρ ἡ παροιμία, τὸ τὰς ἀπάσας μὴ ῥάδιον εἶναι διαφεύγειν).

p. 276 C. μετὰ τοῦ Διονυσοδώρου τε καὶ Εὐθυδήμου Hirschigius inapte articulum interposuit ante Εὐθυδήμου nihil curans quod etiam p. 274 C. τοῦ Εὐθυδήμου τε καὶ Διονυσοδώρου legitur. cf. Protag. 321 E. τὸ τῆς Ἀθηνᾶς καὶ Ἡφαίστου οἶκημα. Rep. p. 491 C. τοῦ φόγου καὶ ἐπαίνου. Apol. 23 B. τῶν ἀστῶν καὶ ξένων. Euthyd. 298 D. τῶν βοῖδίων καὶ κυναρίων καὶ χοιριδίων. Kr. 58, 2, 1. Madv. § 16, b. Engelh. ad Menex. p. 252 (§ 6) Wohlrab. ad Theaet. 186 A.

p. 276 C. οἱ σοφοὶ ἄρα μανθάνουσιν, ἀλλ' οὐχ οἱ ἀμαθεῖς καὶ οὐκ ὀρθῶς ἄρτι Εὐθυδήμῳ ἀπεκρίνω. Omnes libri praeter Ven. E dicuntur habere οὐχ εὐθὺς pro οὐκ ὀρθῶς. Inde Winckelmannus dedit: καὶ τί οὐχ εὐθὺς ἄρτι Εὐθυδήμῳ ἀπεκρίνω vertitque: cur vero non statim ita respondisti? Vocabulum „ita“ in Graecis verbis non inest; sine hoc autem verbo coniectura cassa est. Scribendum est καὶ οὐχ εὖ ἄρτι Εὐθυδήμῳ ἀπεκρίνω. Talia vitia nobis obvia sunt in Platonis libris veluti Gorg. p. 470 C. praebent pro πότε libri plerique πότερον. Iniuria Hirschigius et Badhamus negationem οὐκ incluserunt cf. Vermehren Plat. Stud. p. 32.

p. 277 A. recte Hermannus edidit: Τί οὖν; ἡ δ' οὖς, ἄρα οὐ μανθάνεις ἅττ' ἄν ἀποστοματίζῃ τις, ὃ δὲ μὴ ἐπιστάμενος γράμματα μανθάνει; Libri praet. Coisl. οὐ μανθάνεις. Heindorf. Bekk. Ast. Turic. Hirsch. οὐ οὐ μανθάνεις; Badh. οὐ μὲν οὐ μανθάνεις. Sophista probare vult: μανθάνουσιν ἃ ἐπίστανται. Quod ut efficiat, his interrogationibus utitur: ὅταν οὖν τις ἀποστοματίζῃ ὅτι οὖν, οὐ γράμματα ἀποστοματίζει; Ὁμολόγει. Οὐκοῦν ὦν τι οὐ ἐπίστασαι ἔφη ἀποστοματίζει, εἴπερ πάντα ἐπίστασαι; Καὶ τοῦτο ὁμολόγει. Tum opponit mirabundus interrogatione insequenti sophista id quod est et id quod non est; illud igitur negare, hoc ponere debet. Unde elucet negationem οὐ ante μανθάνεις nullo modo posse desse. Quaeritur porro, num οὐ vel οὐ μὲν possit omitti. Mihi persuasi Platoni dicendum fuisse aut ἄρα οὐ μανθάνεις aut ἄρα οὐ μὲν οὐ μανθάνεις. Nam duplici modo contraria particulis μὲν — δέ inter se opponuntur; aut dicitur ἔνθα μὲν — ἔνθα δέ, τότε μὲν — τότε δέ, οἱ μὲν — οἱ δέ aut omisso ἔνθα μὲν, τότε μὲν, οἱ μὲν solum ponitur ἔνθα δέ, τότε δέ, οἱ δέ cf. quae hoc de usu disputavi in Specim. critic. p. 43 et haec exempla: Prot. p. 330 A. ἕκαστον δὲ αὐτῶν ἐστίν, ἣν δ' ἐγώ, ἄλλο, τὸ δὲ ἄλλο. Phaedr. p. 266 A. ὥσπερ δὲ σώματος ἐξ ἐνὸς διπλᾶ καὶ ὁμώνυμα πέφυκε, σχαιά, τὰ δὲ δεξιὰ κληθέντα. cf. Madv. § 188 Not. 2 p. 217. Quae cum ita sint, recte scripsit Hermannus ἄρα οὐ μανθάνεις neque audiendus est Badhamus qui duplici interpolatione locum inquinavit. Voculas οὐ et οὐ non raro inter se permutari nemo non novit. cf. Phaedr. p. 230 C. et D.

p. 279 D. τοῦτο δὲ καὶ πᾶς γνοίη. Hae locutione utitur Plato, ut quod apertum planumque est, significet cf. Euthyd. 301 B. ἀλλ' ἔγωγε οὐδ' ἄν παῖδα ὥμην τοῦτο ἀπορῆσαι. Menex. p. 240 D. ἐν τούτῳ δὲ ἄν τις γενόμενος γνοίη. Theaet. 177 B. ὥστε παίδων μηδὲν δοκεῖν διαφέρειν. Lys. p. 205 B. ὃ οὐχὶ καὶ πᾶς εἴποι. Symp. p. 204 B. δῆλον δὲ τοῦτό γε ἦδη καὶ παιδί. Praeter hanc locutionem Plato etiam his utitur: 1) Rep. V. 465 D. δῆλα καὶ τυφλῷ. Soph. p. 241 D. πῶς γὰρ οὐ φαίνεται καὶ τὸ λεγόμενον δὲ τοῦτο τυφλῷ. Rep. VIII. 550 D. καὶ μὴν καὶ τυφλῷ γε δῆλον (Ar. Plut. 48 δῆλον ὅτι καὶ τυφλῷ). 2) Lach. 196 D. κατὰ τὴν παρουσίαν ἄρα τῷ ὄντι οὐκ ἄν πᾶσα ὥς γνοίη quod scholiasta his verbis illustrat: καὶ κύων, ὥς γνοίη. ἐπὶ τοῦ ῥαδίου καὶ εὐγνώστου ὥστε καὶ τὰ ἀμαθέστατα ζῶα καταμαθεῖν. Hoc proverbium eleganti correctione restituit C. F. Hermannus Riv. 134 A. ἐγὼ μὲν ὥμην τὸ λεγόμενον δὲ τοῦτο καὶ ὅν γινῶναι, ubi pro καὶ ὅν libri suppeditant καὶ νῦν; 3) Phaedo 108 D. ἀλλὰ μέντοι οὐχ' ἡ Γλαύκου τέχνη γέ μοι δοκεῖ εἶναι διηγήσασθαι ἃ γ' ἐστίν · ὥς μέντοι ἀληθῆ, χαλεπώτερόν μοι φαίνεται ἢ κατὰ τὴν Γλαύκου τέχνην „Proverbium de rebus non multum in-

genii et sollertiae requirentibus." Stallb. 4) Per multis locis legitur δῆλον καὶ παντί ad id quod extra dubitationem positum est, significandum 5) potest denique comparari Men. 76 B. καὶ κατακεκαλυμμένος τις γνοίη ὦ Μένων διαλεγόμενου σου ὅτι καλὸς εἶ καὶ ἐρασταί σοι ἔτι εἰσί.

p. 280 C. ἄρ' ἂν οὗτοι εὖ πράττοιεν διὰ τὴν κτῆσιν, ὅτι κεκτημένοι εἶεν πάντα ἃ δεῖ κεκτηῖσθαι τὸν δημιουργόν; Circumscripserunt Hirschigius et Badhamus vocem κεκτηῖσθαι. Non nego hic ἃ δεῖ sine infinitivo magis usitatum esse cf. Class. ad Thuc. 4. 3. 5; ac tamen vereor infinitivum delere quippe quem putem nullam legem grammaticam violare et ex his locis praesidium habere: Phaedo p. 107 E. τυχόντας δ' ἐκεῖ ὧν δεῖ τυχεῖν ubi idem Hirschigius infinitivum debebat. Legg. II. 653 B. ὥστε μισεῖν μὲν ἃ χρηὶ μισεῖν εὐθύς ἐξ ἀρχῆς μέχρι τέλους, στέργειν δὲ ἃ χρηὶ στέργειν cll. Theaet. p. 185 E. τοῦτο γὰρ ἦν ὃ καὶ αὐτῷ μοι ἐδόκει, ἐβουλόμην δὲ καὶ σοὶ δόξαι. Politic. p. 291 C. ὃν ἀπὸ τῶν ὄντως ὄντων πολιτικῶν καὶ βασιλικῶν καίπερ παγγάλεπον ὄντα ἀφαιρῆν ἀφαιρετέον, εἰ μέλλομεν ἰδεῖν ἐναργῶς τὸ ζητούμενον.

p. 280 D. Δεῖν ἄρα ἔφην ὡς ἔοικε μὴ μόνον κεκτηῖσθαι τὰ τριαῦτα ἀγαθὰ τὸν μέλλοντα εὐδαίμονα ἔσεσθαι, ἀλλὰ καὶ χρηῖσθαι αὐτοῖς ὡς οὐδὲν ὄφελος τῆς κτήσεως γίγνεται. Infinitivum δεῖν c Clark. Vatic. restituit Winckelmannus cumque secuti sunt Stallb. Turic. Herm. At Hirsch. δεῖ ἄρα. Badh. δεῖ γ' ἄρα. Quid verum sit, non poteris dicere, nisi structurae vim perspexeris. Haec autem ex iis quae Kvěčala scripsit Symb. philol. Bonn. p. 657 sic, via atque ratione potest explanari: Enuntiationem εἶπομεν ὅτι οὐδὲν ἀληθείας μετέχειν δεοί (cf. Phaedr. 272 D) si habes, ratio aperta est; enuntiatio enim ab ὅτι incipiens obiecti loco est verbo εἶπομεν. Quid autem statuendum est, si quis ut Plato l. c. dicit ὃ εἶπομεν, ὅτι οὐδὲν ἀληθείας μετέχειν δεοί? Hic enuntiatio ὅτι — δεοί subiecti, enuntiatio ὃ εἶπομεν praedicati partibus fungitur; vel si mavis τοῦτό ἐστιν ante ὅτι οὐδὲν κ. τ. λ. supplendum est. Huius structurae duae aliae varietates reperiuntur, potest enim etiam dici 1) ὃ εἶπομεν, οὐδὲν ἀληθείας μετέχειν δεῖ. 2) ὃ εἶπομεν, οὐδὲν ἀληθείας μετέχειν δεῖν. Illa varietas non difficilis est explicatu, enuntiationem enim relativam appositionem vocare licet enuntiationis primariae; haec autem non intellegitur, nisi attractionem statueris, qua verbum εἶπομεν enuntiationis suae fines quasi transgreditur et δεῖ ad se attrahit; vel ut aliter dicam loquens quasi oblitus pronominis relativi verbum primariae enuntiationis obnoxium reddit verbo enuntiationis relativae cf. Phileb. 20 D. τόδε γε μὴν ὡς οἶμαι περὶ αὐτοῦ ἀναγκαιότατον λέγειν ibid. p. 54 D. ὅπερ ἀρχόμενος εἶπον τούτου τοῦ λόγου, τῷ μηνύσαντι τῆς ἡδονῆς περὶ τὸ γένεσιν μὲν, οὐσίαν δὲ μηδ' ἔν-

τινοῦν αὐτῆς εἶναι, χάριν ἔχειν δεῖν; Soph. p. 263 D. περὶ δὲ σοῦ λεγόμενα μέντοι θάτερα ὥς τὰ αὐτὰ καὶ μὴ ὄντα ὥς ὄντα, παντάπασιν ὥς ἔοικεν ἢ τοιαύτη σύνθεσις ἔκ τε ῥημάτων γιγνομένη καὶ ὀνομάτων ὄντως τε καὶ ἀληθῶς γίγνεσθαι λόγος ψευδής Rep. I. p. 347 B. οὐ δὲ ἕνεκα ὥς ἔοικε μισθὸν δεῖν ὑπάρχειν. In his exemplis omnibus enuntiatio relativa antecedit neque ut opinor potest statui attractio, si enuntiatio relativa infinitivum sequitur (cf. Kr. 55. 4. 7), quod tum verbum enuntiationis relativae non potest vim habere in verbum enuntiationis alterius; potius hic non de attractione, sed de violatione structuræ dicendum erit. Winckelmannus quidem duo exempla protulit, ubi infinitivus antecedit: Is. de Menecl. hered. § 12 ἐμοὶ μὲν οὖν ἔφη συμβαίνειν ἀποδημίαν ὥς οὐ οἶσθα et Gorg. 482 D. καὶ σου κατάγελᾶν ὥς γε μοι δοκεῖν, ὁρθῶς τότε. Sed loco Gorgiae infinitivus etiam aliam ob causam (cf. Stallb. adnot. crit.) non potest admitti neque ab editoribus admissus est; de loco autem Isaëi Schoemannus p. 207 ita iudicat: *Interest, inquit, tamen aliquid utrum antecedit ὥς cum verbo infinitivum regente an subsequatur. Nam ubi antecedit, scriptores unius verbi memores particulae facile oblivisci potuerunt; ubi subsequitur multo sane durior est structuræ abnormitas. Quamobrem talia apud poëtas ferenda puto, oratoribus placuisse non credo. Ac ne poetis quidem hunc usum concedo assentiorque Schillero, qui nuper Pers. 565 iure dubitavit an Pers. 565 recte dictum sit τυτθὰ δ' ἐκφυγεῖν ἄνακτ' αὐτὸν ὥς ἀκούομεν κ. τ. λ. Itaque nostro loco facio cum iis, qui dederunt δεῖ ἄρα comparoque p. 289 B. πολλοῦ ἄρα ὥς ἔοικε. Hipp. 231 D. δεῖ ἄρα ὥς ἔοικε. Altero vitio locus laborat in verbis ὥς οὐδὲν ὄφελος τῆς κτήσεως γίγνεται. Cum Jamblichus pro ὥς praebeat ἦν, Routhius homo Britannus coniecit ἦ quo locus sententiam veram accipit; ut autem locus nunc legitur id quod dicere vult scriptor, alio modo e possessione nullam utilitatem redundaturam esse, nequaquam dicit errantque interpretes qui hunc sensum extorquere velint τῆς pro μόνης vel αὐτῆς accipientes. Amplecterer ergo Routhii coniecturam, ni artis palaeographicae rationem spectam viderem; nam permutationis verborum ἦ et ὥς nullum novi exemplum. Itaque puto intercidisse ἄλλως post ὥς cf. Rep. III. p. 390 E. οὐδ' αὐτὸν τὸν Ἀχιλλέα ἀξιόσομεν οὐδ' ὁμολογήσομεν οὕτω φιλοχρήματον εἶναι ὥστε παρὰ τοῦ Ἀγαμέμνονος δῶρα λαβεῖν καὶ τιμὴν αὐτὸν λαβόντα νεκροῦ ἀπολύειν, ἄλλως δὲ μὴ ἐθέλειν. Gorg. 525 B. ὅμως δὲ δι' ἀληθόνων καὶ ὀδυνῶν γίγνεται αὐτοῖς ἢ ὠφέλεια καὶ ἐνθάδε καὶ ἐν Αἰδοῦ· οὐ γὰρ οἶόν τε ἄλλως ἀδικίας ἀπαλλάττεσθαι. Charm. p. 168 D.*

p. 281 C. πότερον οὖν ἂν μᾶλλον ἐλάττω τις πράττοι πένης ὢν ἢ πλούσιος; Πένης ἔφη· Πότερον δὲ ἀσθενής ἢ ἰσχυρός; Ἀσθενής· Πότερον

δὲ ἔντιμος ἢ ἄτιμος; Ἄτιμος. Πότερον δὲ ἀνδρείος ὢν καὶ σώφρων ἐλάττω
 ἂν πράττει ἢ δειλός; Δειλός. Οὐκοῦν καὶ ἀργός μᾶλλον ἢ ἐργάτης; Συνέ-
 χῶραι. Καὶ βραδύς μᾶλλον ἢ ταχύς, καὶ ἀμβλὺ ὁρῶν καὶ ἀκούων μᾶλλον
 ἢ ὀξύ; Πάντα τὰ τιαυῖτα ἐναχωροῦμεν ἀλλήλοις. Pro ἔντιμος Hertlinius
 (Coniecturen zu griech. Prosaikern Wertheim 1861 p. 6) coniecit ἐπίτιμος
 laudans Cobet. Nov. Lect. p. 749—55. Egregia quidem sunt quae hoc
 loco disputavit Cobetus, sed non satis accurata. Neque enim possum
 plane assentiri Cobeto p. 751 statuenti: *Opponitur ὁ ἔντιμος τῷ ἡτι-
 μασμένῳ quemadmodum ὁ ἐπίτιμος τῷ ἡτιμωμένῳ sive τῷ
 ἀτίμῳ et plane idem est ἡτιμῶσθαι atque τῆς ἐπιτιμίας ἐστερ-
 ῆσθαι quemadmodum ἡτιμάσθαι est ἐστερῆσθαι τιμῆς*. Pro quibus
 haec potius proposuerim: Verba ἔντιμος (τίμιος) et ἀτιμάζειν ad res humanas,
 ἐπίτιμος et ἀτιμοῦν ad res civiles spectant; si igitur de homine universe
 loqueris, adhibebis ἔντιμος et ἀτιμάζειν; si proprie de cive, ἐπίτιμος et
 ἀτιμοῦν. Sed verba ἀτιμία et ἄτιμος et ad hominem et ad civem pos-
 sunt referri vel ut etiam hoc aliter dicam, ἄτιμος est contrarium adiecti-
 vorum ἐπίτιμος et ἔντιμος, ἀτιμία substantivorum ἐπιτιμία et τιμή. cf.
 Legg. VI 774 B. τιμῆς παρὰ τῶν νεωτέρων ἄτιμος πάσης ἔστω ibid. VII
 810 A. ἄτιμος τῶν παιδείων ἔστω τιμῶν III 696 D. σωφροσύνη ἄνευ
 πάσης τῆς ἄλλης ἀρετῆς ἐν ψυχῇ τινι μεμονωμένη τίμιον ἢ ἄτιμον γίγνεται
 ἂν κατὰ δίκην. Rep. VII 539 D. αὐτός τε μετριώτερος ἔσται καὶ τὸ
 ἐπιτήδευμα τιμιώτερον ἀντὶ ἀτιμωτέρου ποιήσει. Politic. p. 288 A. καὶ
 τίμιον καὶ ἄτιμον. Legg. XI 930 E. φρονῆσαι δὲ χρή περὶ θεῶν θερα-
 πείας τοιόνδε προύμιον ἂν γενόμενον εἰς τὰς τῶν γεννησάντων τιμὰς τε
 καὶ ἀτιμίας ὀρθῶς συντεταγμένον. Nostro loco cum philosophus non de
 cive, sed de homine loquatur, adiectivum ἔντιμος apparet verum fal-
 sumque esse voc. ἐπίτιμος quod iusuper nusquam apud Platonem occur-
 rit. cf. Legg. VII 797 C. λανθάνειν γὰρ τῶν νέων τὰ ἥθη μεθιστάντα
 καὶ ποιεῖν τὸ μὲν ἀρχαῖον παρ' αὐτοῖς ἄτιμον, τὸ δὲ νέον ἔντιμον.

p. 282 C. ἐπειδὴ σοὶ καὶ διδακτὸν δοκεῖ καὶ μόνον τῶν ὄντων εὐδαίμονα
 καὶ εὐτυχῇ ποιεῖν τὸν ἄνθρωπον, ἄλλο τι ἢ φαίης ἂν ἀναγκαῖον εἶναι
 φιλοσοφεῖν καὶ αὐτὸς ἐν νῷ ἔχεις τοῦτο ποιεῖν; Badhamus inseruit εἶναι
 ob proximum ποιεῖν. At Symp. p. 208 A. λήθη ἐπιστήμης ἔξοδος, με-
 λέτη δὲ πάλιν κακὴν ἐμποιοῦσα ἀντὶ τῆς ἀπιούσης μνήμην σώζει ἐπιστήμην.
 Politic. p. 270 A. ὕπερ ἄρτι ἐρρήθη καὶ μόνον λοιπόν. Quod de ἐστὶ
 valet, idem opinor valet de εἶναι.

p. 282 E. ἐπιδείξατον τῷ μεираκίῳ, πότερον πᾶσαν ἐπιστήμην δεῖ
 αὐτὸν κτᾶσθαι ἢ ἔστι τις μία ἣν δεῖ λαβόντα εὐδαιμονεῖν τε καὶ ἀγαθὸν ἄν-
 δρα εἶναι καὶ τίς αὕτη· ὥς γὰρ ἔλεγον ἀρχόμενος, περὶ πολλοῦ ἡμῖν τυχε-

χάνει ὃν τονδε τὸν νεανίσκον σοφὸν τε καὶ ἀγαθὸν γενέσθαι. Pro ὡς γὰρ quod dedit Hermannus Clark. Vatic. alii habent ὥσπερ. Voculam γὰρ circumscr. post ὥσπερ Turicenses Stallb. (ed Tauchn. 50), deleuit Winckelmann. Coniunctio vix deesse potest. Suspicio igitur ὡς ante ὥσπερ intercidisse. cf. Rep. IV. 420 E. ἀλλ' ἡμᾶς μὴ οὕτω νουθέτει· ὡς, ἂν σοι πειθώμεθα, οὔτε ὁ γεωργὸς γεωργὸς ἔσται οὔτε ὁ κεραμεὺς κεραμεύς. Meno 100 B. ταῦτα πείθς καὶ τὸν ξένον τόνδε Ἄνυτον, ἵνα πραότερος ᾗ· ὡς ἐὰν πείσῃς τοῦτον, ἔστιν ὅτε καὶ Ἀθηναίους ὀνήσεις. Ne sonus malus te turbet, cf. Voemel ad Dem. f. leg. § 29 p. 421 Teuffel ad Arist. Nub. 77.

p. 283 A. καὶ ἡμεῖς πάντες ἐβλέπομεν πρὸς αὐτὸν ὡς αὐτίκα μάλα ἀκουσόμενοι θαυμασίους τινὰς λόγους· ὅπερ οὖν καὶ συνέβη ἡμῖν· θαυμαστὸν γάρ τινα ὦ Κρίτων ἀνὴρ κατήρχε λόγον. Observa Platonem primum θαυμάσιος, deinde θαυμαστός dicentem; haec formarum varietas non videtur significationis varietatem parere, id quod demonstrant formae generis feminini (Symp. p. 216 C. Gorg. 469 D.) et comparativi (Menex. p. 235 B. Symp. 215 B. 220 A. Parm. 135 B.¹). cf. Wohlrab ad Theaet. p. 210 C. et p. 151 A. A re haec exempla non videntur absona esse: Gorg. p. 518 C. ὅτι οὗτοι θαυμάσιοι γεγονῶσι σωμάτων θεραπευταί, ὁ μὲν ἄρτους θαυμαστὸς παρασκευάζων, ὁ δὲ ὄψον, ὁ δὲ οἶνον. Ibid. p. 457 A. δυνατός μὲν γὰρ πρὸς ἅπαντάς ἐστιν ὁ ῥήτωρ καὶ περὶ παντός λέγειν. Politic. p. 292 E. ἂν τ' ἄρχῃ καὶ ἐάν μῃ. Rep. III 414 D. οὐκ οἶδα ὁποία τόλμῃ ἢ ποίοις λόγοις χρώμενος ἐρῶ. Politic. 293 E. ἐπὶ τὰ καλλίω — ἐπὶ τὰ αἰσχίονα p. 297 C. ἐπὶ τὰ καλλίονα, ἐπὶ τὰ αἰσχίω cf. Hertl. ad Xen. Cyrop. VI. 3. 17 VIII 3. 40. Breitenbach ad Xen. Mem. 1. 1. 12.

p. 283 C. καὶ ὁ Διονυσόδωρος, Σχόπει μὴν ἔφη ὦ Σώκρατες ὅπως μὴ ἔξαρνος ἔσει ἃ νῦν λέγεις. Ἔσχεμμαι, ἣν δ' ἐγώ· οὐ γὰρ μὴ ποτ' ἔξαρνος γένωμαι. Τί οὖν; ἔφη· φατέ βούλεσθαι αὐτὸν σοφὸν γενέσθαι. Πάνυ μὲν οὖν. Non aptum esse videtur τί οὖν. Cum sophista ex iis quae Socrates dixit, aliquid miri concludere velit, ne is insidias effugiat, ex eo iterum quaerere debet, num *revera* hoc sentiat. Proinde scribamus ἢ οὖν ἔφη φατέ κ. τ. λ. Saepe τι et ἢ permutari inter omnes constat cf. Cobet. V. L. p. 378 N. L. p. 368.

p. 284 C. ὥστε κατὰ τὸν σὸν λόγον οὐδεὶς ψευδῇ λέγει, ἀλλ' εἴπερ λέγει Διονυσόδωρος, τἀληθῇ τε καὶ τὰ ὄντα λέγει. Omittunt λόγον Clark. Vat. Stallb.: *huius ellipsis alterum exemplum novimus nullum.* Vere iu-

¹) In vocativo tamen Plato formam θαυμάσιος usurpasse videtur cf. Comm. Plat. p. 111.

dicavit Stallbaumius; sed videndum est ne potius quam λόγον inferclamus, nobis scribendum sit κατὰ τὸ σόν. Quamquam enim Plato alias dicit κατὰ τὸν σόν λόγον (cf. infr. p. 286 D., Men. 75 C., 78 B., 92 A., Alcib. I 127 A., Gorg. 471 A., 490 A., 488 E., cll. Prot. p. 468 E. κατὰ τὴν σὴν ὁμολογίαν. Gorg. 499 C. κατὰ τὸν παλαιὸν λόγον), tamen illa locutio non repugnat usui linguae, cum τὸ σόν, τὸ ἐμὸν queant poni pro ὁ ἐμός, ὁ σός λόγος cuius rei documento etiam est formula τὸ σόν δὴ τοῦτο usurpata pro τὸ λεγόμενον δὴ τοῦτο cf. Symp. p. 221 B. ἔπειτα ἔμοιγε ἐδόκει ὡς Ἀριστόφανες τὸ σόν δὴ τοῦτο διαπορεύεσθαι — βρενθυόμενος καὶ τῷ φθαλμῷ παραβάλλων (Stallb. ad Soph. p. 233 B.) Utile erit Naegelsbachii adnotationem ad Hom. Il. 1. 526 perlegere, qui Soph. Aj. 99 τεθνήσκον ἄνδρες, ὡς τὸ σόν ξυνῆχ' ἐγὼ comparavit. — Res simillima extat in Soph. p. 239 B. ubi Stallb. dedit κατὰ τὸν ὀρθὸν λόγον, alii cum tribus optimis libris κατὰ τὸ ὀρθόν. Et quamquam apud Platonem alias semper κατὰ τὸν ὀρθὸν λόγον reperitur (cf. Phileb. 43 E. Phaedo. 94 A.) tamen recte interpolatio exclusa est, cum cur Plato sic non potuerit loqui, videat nemo. Etiam aliis locis λόγος librarii interpolaverunt veluti Phaedr. p. 242 B., Rep. III p. 389 A.

p. 287 B. εἴτ' ἔφη ὡς Σώκρατες ἔ Διονυσόδωρος ὑπολαβών, οὕτως εἰ Κρόνος ὥστε ἃ τὸ πρῶτον εἶπομεν, νῦν ἀναμνησθεῖ καὶ εἴ τι πέρυσιν εἶπον, νῦν ἀναμνησθήσεται, τοῖς δ' ἐν τῷ παρόντι λεγομένοις οὐχ ἔξεις ὅτι χρῆ; Pro Κρόνος optimi libri habent κενός quod suo iure reposuit Winkelmannus. Nam si Κρόνος ad priorem partem sententiae pertinet, κενός spectat ad posteriorem. Sophista leviter perstringit Socratis recordationem rerum praeteritarum, premit eius inopiam res praesentes tractandi. Nihil igitur video, quod excludat bonorum librorum lectionem κενός. Sed alia huius loci egent emendatione. Nam primum nescio, quomodo νῦν ἀναμνησθεῖ et νῦν ἀναμνησθήσεται inter se possint iungi putoque interpolationem statuendam esse. Deinde λεγομένοις corruptum est, cum verba insequantur: καὶ γὰρ ἔφην ἐγὼ χαλεποί εἰσι, πάνυ εἰχότως. Eos sequor qui λόγοις pro λεγομένοις scripserunt comparatis his locis: Politic. p. 310 C. τὴν ἐν τῷ παραχρῆμα ῥαπτώνην. Menex. p. 240 D. τὴν ἐν τῷ παρόντι σωτηρίαν.

p. 288 C. ἕως ἂν ἡμῖν ἐκφανῆτον ἐφ' ὧς αὐτῷ σπουδάζετον. Badhamus dedit ἐκφανῆ τὰ ἐφ' ὧς κ. τ. λ. In Add. p. 82 etiam pro ἐφ' ὧς αὐτῷ coniecit ἐφ' ὅτῳ. Pessime; B. videtur ignorare constructionem, qualem habent haec exempla: Xen. Cyrop. 3. 3. 24 ἀλλὰ δῆλοι ὧμεν ὅτι οὐχ ἄχοντες μαχοῦμεθα ibid. 5. 2. 10 ἀποθνήσκουσι πρότερον πρὶν δῆλοι

γίγνεσθαι οἷοι ᾖσαν. Rep. VI p. 497 C. δῆλος δὲ οὖν εἴ ὅτι μετὰ τοῦτο ἐρῇσει. Prot. 342 B. ἵνα μὴ κατάδηλοι ὦσιν ὅτι σοφία τῶν Ἑλλήνων περίεστιν. Ibid. εἰ γνωσθεῖεν ὥς περίεστι. Gorg. 448 E. δῆλος γάρ μοι Πῶλος καὶ ἐξ ὧν εἴρηκεν ὅτι τὴν καλουμένην ῥητορικὴν μᾶλλον μεμελέτηκεν ἢ διαλέγεσθαι. Arist. Plut. 333 δῆλος δ' ἐστὶν ὅτι τοῦ πράγματος ἀκήκοέν τι. Phaedo 64 B. οἱ φιλοσοφοῦντες θανατῶσι καὶ σφᾶς γε οὐ λελήθασι ὅτι ἄξιοί εἰσι τοῦτο πάσχειν. Dem. d. f. leg. § 22 οὐ λελήθαθ' ἡμᾶς ἐφ' οἷς πεποίησθε τὴν εἰρήνην πρὸς Φίλιππον. Symp. p. 187 A. μουσικὴ δὲ καὶ παντὶ κατὰδηλος τῷ καὶ σμικρὸν προσέχοντι τὸν νοῦν ὅτι κατὰ ταῦτα ἔχει τούτοις. Symp. p. 221 B. δῆλος ὧν παντὶ καὶ πάνυ πόρρωθεν ὅτι εἴ τις ἄψεται τούτου τοῦ ἀνδρός, μάλα ἐρρωμένως ἀμυνεῖται. Rep. I p. 348 E. νῦν δὲ δῆλος εἴ ὅτι φήσεις. De usu pronominis αὐτῷ cf. Kr. § 51, 1, 8.

p. 288 C. ἐγὼ οὖν μοι δοκῶ καὶ αὐτὸς πάλιν ὑφηγήσασθαι. Heind. Hirsch. Badh. ὑφηγήσεσθαι. Incertum; nam cum in Clarkiano ut in aliis libris persaepe καὶ et καὶν permittuntur, poteris etiam suspicari καὶν αὐτὸς — ὑφηγήσασθαι cf. Cobet N. L. p. 246: *Ut in ceteris fere omnibus sic in hac quoque dictione Graeci substituant aoristum cum particula ἄν.*

p. 288 CD. ὅθεν γὰρ τὸ πρότερον ἀπέλιπον, τὸ ἐξῆς τούτοις πειράσομαι ὅπως ἂν δύνωμαι διελθεῖν, ἐάν πως ἐκχαλέσωμαι καὶ ἐλεήσαντε με καὶ οἰκτεῖραντε συντεταμένον καὶ σπουδάζοντα καὶ αὐτῷ σπουδάσητον. Clark. Vat. διελθεῖν πᾶν ὅπως. Nisi putas critici esse elegantes lectiones captare, recipies quae boni libri tibi praebent. Neque enim adversatur aut sententia aut grammatica. Conl. aor. prim. hodie non iam habet offensionem, Xen. Cyrop. 7. 5. 82 φημι χρῆναι νῦν ἐπιταθῆναι ἡμᾶς εἰς ἀνδραγαθίαν ὅπως τῶν τε ἀγαθῶν ἢ ἄριστον καὶ ἡδιστον ἀπολαύσωμεν καὶ ὅπως τοῦ πάντων χαλεπωτάτου ἄπειροι γενώμεθα. Plat. Symp. p. 174 E. εἰς καλὸν ἦκεις ὅπως συνδειπνήσης. Symp. p. 222 D. παρασκευάζου ὅπως ἐμὲ καὶ σὲ μηδεὶς διαβάλη. Lys. 206 B. σκόπει δὲ ὅπως μὴ πᾶσι τούτοις ἔνοχον σαυτὸν ποιήσης διὰ τὴν ποίησιν. ibid. 211 B. ἀλλὰ ὅρα ὅπως ἐπικουρίσης μοι cf. Hermann Praef. ad Lysin p. VII, Froberger Lys. 13, 93 p. 172, Nitzsch ad Jon. p. 24 sub fin. Kr. 54. 8. 5. Ad locutionem confirmandam confer haec exempla: Prot. 339 B. ἢ πᾶν σοι διεξέλθω. Phaedo 58 D. ἀλλὰ πειρῶ ὥς ἂν δύνῃ ἀκριβέστατα διελθεῖν πάντα.

p. 288 E. ἀλλὰ τὸ πρότερον ἦν δ' ἐγὼ τοῦτό γ' ἐξηλέγξαμεν ὅτι οὐδὲν πλεον, οὐδ' εἰ ἄνευ πραγμάτων καὶ τοῦ ὁρύττειν τὴν γῆν τὸ πᾶν ἡμῖν χρυσίον γένοιτο ὥστε οὐδ' εἰ τὰς πέτρας χρυσᾶς ἐπισταίμεθα ποιεῖν, οὐδενὸς ἂν ἀξία ἢ ἐπιτμήμη εἶη· εἰ γὰρ μὴ καὶ χρῆσθαι ἐπιστησόμεθα τῷ

χρυσίῳ, οὐδὲν ὄφελος αὐτὸ ἐφάνη ὄν. Badh. ἐπιστησοίμεθα. Non novit vir sagacissimus praeceptum grammaticae Kr. 53, 7, 10: „Der Opt. des Fut. findet sich in der Regel nur in der obliquen Rede nach einem hist. Tempus, wiewohl auch hier der Indicativ sehr gewöhnlich ist.“

p. 289 E. Socrates artem orationes fabricandi his laudibus extollit: καὶ γάρ μοι οἷ τε ἄνδρες αὐτοὶ οἱ λογοποιοί, ὅταν συγγένωμαι αὐτοῖς, ὑπέρσοφοι ὥς Κλεινία δοκοῦσιν εἶναι καὶ αὐτὴ ἡ τέχνη αὐτῶν θεοπεία τις καὶ ὑψηλή· καὶ μέντοι οὐδὲν θαυμαστόν· ἔστι γάρ τῆς τῶν ἐπωδῶν τέχνης μύριον σμικρῶ τε ἐκείνης ὑποδεστέρα· ἡ μὲν γάρ τῶν ἐπωδῶν ἔχειν τε καὶ φαλαγγίων καὶ σκορπίων καὶ τῶν ἄλλων θηρίων τε καὶ νόσων κήλησις ἐστίν, ἡ δὲ δικαστῶν τε καὶ ἐκκλησιαστῶν καὶ τῶν ἄλλων ὄχλων κήλησις τε καὶ παραμυθία τυγχάνει οὕσα. Ni fallor, in vocabulo μύριον vitium latet. Nam habemus duas artes, quarum finis est τὸ κηλεῖν; una κηλεῖ bestias (cf. Hertlein Ann. Fleckeisen 1867 p. 482), altera homines, illa κηλεῖ ἐπωδαῖς, haec λόγοις. Inde vides duas artes componi, non subici alteram alteri. Pro μύριον legendum esse videtur ὁμορος, quod adiectivum genetivum adsumit cf. Kr. 48, 13, 12.

p. 290 B. Οὐδεμία ἔφη τῆς θηρευτικῆς αὐτῆς ἐπὶ πλεόν ἐστὶν ἢ ὅσον θηρεῦσαι καὶ χειρώσασθαι. Pro αὐτῆς Hd. coni. δύναμις, Astius duce Heindorfio ἀπάσης, Orellius ἄσχησις. Badh. putat supplendum esse χρεῖα vel ὠφέλεια. Thompsonus contra ad Phaedr. p. 128 pro οὐδεμία coniecit οὐδὲν vertitque „Of the art of hunting nothing comes except . . .“ Ego sto ab iis, qui αὐτῆς corruptum esse arbitrantur. Quodsi pro hoc pronomine substantivum αὔξη in textum receptum erit, et sensui et rationi palaeographicae satisfactum erit. De forma αὔξη disputavit Stallb. ad Legg. VII. 789 A. et in adn. crit. ad Rep. VI 509 B.

p. 291 A. ἀλλὰ μὲν τόγε εὖ οἶδα. Sic cum optimis plerisque libris scribendum. cf. Kr. 50. 1. 21 Matthiae § 286 p. 576. Nam apud Platonem saepius quam apud alios scriptores articulus demonstrativi pronominis munere fungitur. Praeter nostrum exemplum conf. p. 271 C. πάνσοφοι ἀτεχνῶς τώγε οὐδ' ἔδη πρὸ τοῦ ὅτι εἶεν οἱ παγκρατιασταί. p. 303 C. ἐν δὲ τοῖς καὶ τοῦτο μεγαλοπρεπέστατον (quocum comparabis Soph. Philoctet. 1243 ξύμπας Ἀχαιῶν λαός· ἐν δὲ τοῖς ἐγώ.) Legg. III 701 E. οὔτε τοῖς οὔτε τοῖς. Theaet. 179 D. τῷ τοι ὥς φίλε Θεόδωρε μᾶλλον σχεπτέον. Huc pertinet denique articuli usus ante enuntiationes relativas (Prot. 320 D. τῶν ὅσα πρὶ καὶ γῇ κεράννυται. Complura exempla vide apud James Riddel, Digest of Idioms App. ad Apol. p. 127 § 30).

p. 291 A. ἀλλ' ὦ δαιμόνιε Κρίτων μή τις τῶν κρείττωνων παρῶν αὐτὰ ἐφθέξατο; Articulum τῶν cum Clark. Ven. non habeant, haud scio an recipiendum sit μή τις κρείττων. cf. Mätzner Lyc. p. 233.

p. 291 B. ἀνεφάνημεν τοῦ ἴσου ὅσουπερ ὅτε τὸ πρῶτον ἐζητοῦμεν. Velim observes structuram τοῦ ἴσου ὅσουπερ. Post ἴσος, ὅμοιος potest dici prout sensus postulat aut οἷόσπερ aut ὅσοσπερ. Fallitur igitur Hirschigius cum Dem. de f. leg. § 29 τῶν ἴσων αἴτιος ἦν ἂν κακῶν ὅσωνπερ καὶ οὗτος scripsit οἷωνπερ pro ὅσωνπερ (Philol. V. p. 331) cf. Parm. 154 B. ἀνίοις ἴσα προστιθέμενα χρόνῳ τε καὶ ἄλλῳ ὁπωρὺν ἴσῳ ποιεῖ διαφέρειν αἰεὶ ὅσωνπερ ἂν τὸ πρῶτον διενέγκῃ. Kr. 51, 13, 16.

p. 291 D. φέρε, πάντων ἀρχουσα ἢ βασιλικὴ τέχνη τί ἡμῖν ἀπεργάζεται ἔργον ἢ οὐδέν; Sunt qui τί (pron. interrog.) ponant ut Steph. Beck, Ast, W. At Badh. duce Heindorfio scrips. τέχνη ἔργον τι. Offensi igitur sunt pronominis indefiniti collocatione, quam tamen haec exempla tuentur: Symp. 194 D. εἰ δὲ ἄλλοις ἐντύχοις σοφοῖς, τάχ' ἂν αἰσχύνοιο αὐτούς, εἴ τι ἴσως οἷοιο αἰσχρὸν ποιεῖν Prot. p. 329 A. ἀλλ' ἐάν τις καὶ σμικρὸν ἐπερωτήσῃ τι τῶν ῥηθέντων. Symp. p. 174 E. καί τι ἔφη αὐτόθι γελοῖον παθεῖν. Phaedo 91 C. Simili modo non raro τί ab adverbiiis σχεδὸν et πάνυ diremtum est cf. Stallb. ad Phaed. 63 E.

p. 293 B. ἐπίδειξον τοίνον νῦν Δί' ἔφην ἐγὼ ἔχοντα. Interpretes quidam contra optimos libros interposuerunt με post τοίνον; eos in errore versari demonstravi in Spec. critic. p. 19—22. Exemplis ibi allatis nunc addo talia tantum, quae pronomem primae vel secundae personae omissum habent: Pseudoplat. Theag. 129 C. τὸ τρίτον, βουλόμενός με λαθεῖν, ἀνέστη οὐκέτι εἰπὼν μοι οὐδέν, ἀλλὰ λαθὼν ἐπιτηρήσας ἄλλοσε τὸν νοῦν ἔχοντα scit. ἐμέ. Xen. Cyrop. 1. 5. 14 πολλὰ γάρ μοι συνόντες ἐπίστασθε οὐ μόνον τὰ μεγάλα ἀλλὰ καὶ τὰ μικρὰ πειρώμενον αἰεὶ ὑπὸ θεῶν ὁρμασθαι. Ad πειρώμενον supplendum με. Dem. 54. 32 εἰ μὴ ταῦθ' ἐώρων πεπονθота. Xen. Anab. 7. 6. 16 ἀλλ' εἵποιτε ἂν ὅτι ἔξεστι καὶ τὰ ὑμέτερα ἔχοντα scit. ἐμέ. Legg. IX. 860 C. ἐν τοῖς ἔμπροσθεν λόγοις οἶμαι διαρρήδην ἐμὲ εἰρηχέναι πως, εἰ δ' οὖν μὴ πρότερον, ἀλλὰ νῦν ὥς λέγοντα τίθετε ubi Schneider recte με post λέγοντα delovit. Non raro Clarkianus pronomina interpolata redarguit; veluti Theaet. 165 A. habet χάριν γε μέντοι ἔξομεν pro μέντοι σοι. Alcib. I. 121 B. εἰ δὲ καὶ τοὺς προγόνους δέοι καὶ τὴν πατρίδα Εὐρυσάχους ἐπιδείξαι Σαλαμίνα κ. τ. λ. pro προγόνους σε δέοι. Apol. 32 B. τότε ἐγὼ μόνος τῶν πρυτάνεων ἡναντιώθην μηδὲν ποιεῖν παρὰ τοὺς νόμους pro ἡναντιώθην ὑμῖν¹⁾.

¹⁾ Miror quod Riddel hunc dativum servavit.

p. 293 E. apud Badhamum legitur οὐ οὐ πέπονθας ταῦτό τοῦτο πάθος; pro οὐ οὐ πέπονθας τοῦτο τὸ αὐτὸ πάθος; Sane apud Platonem ὁ αὐτὸς ante οὗτος poni solet veluti ταῦτὰ ταῦτα Prot. 318 AC., 331 B., 344 D., Men. 85 CE., 87 E., Apol. 19 B., 21 E., 41 E., Theaet. 178 A., 198 D., Politic. p. 278 AD., Parm. 129 B., Phileb. 31 E., 35 D., Phaedr. 258 C., Charm. 154 D., Gorg. 518 A., 526 C., ταῦτόν τοῦτο Lys. 217 D., Prot. 334 C., Phaedr. 238 B., Theaet. 205 A., Soph. p. 243 C., 249 B., 251 A., 257 D., Politic. p. 271 D., 279 C., Phaedo 68 E., 109 D., Phileb. 13 E., 42 A., Symp. 178 E., 215 C., Charm. 169 C., 171 D., Gorg. 470 B., 482 D.; τὰ αὐτὰ ταῦτα Prot. 321 A., Meno 90 E., Theaet. 152 A., τὸ αὐτὸ τοῦτο Politic. 308 B., Parm. 136 A., Charm. 167 C.; ὁ αὐτὸς οὗτος Prot. 339 B., Apol. 33 A., Phaedo 68 B. (τὸν αὐτὸν τοῦτον Phaedo 97 D., Prot. 345 C.). Idem fit si pronomibus substantivum adiungitur veluti Soph. p. 243 C. ταῦτό τοῦτο πάθος. Prot. p. 320 A. ὁ αὐτὸς οὗτος ἀνὴρ Phaed. 68 A. τὴν αὐτὴν ταύτην ἐλπίδα 87 D. τὴν αὐτὴν δὲ ταύτην εἰκόνα Phileb. 14 E. τὸν αὐτὸν τοῦτον λόγον Alcib. I. 105 B. ὁ αὐτὸς οὗτος θεός Cratyl. 420 A. ὁ αὐτὸς οὗτος πόθος. Sed collocatio pronominum quae nostro loco extat habet defensionem ex his duobus exemplis: Theaet. 151 A. τοῦτο ταῦτόν. Euthyd. 274 E. ταύτης μὲν οὖν ἔφη τῆς αὐτῆς (scil. τέχνης).

p. 294 B. δῆλοι γὰρ μοί ἐστιν ἤδη ὅτι σπουδάζετον καὶ μόλις ὑμᾶς προὔκαλεσάμην σπουδάζειν. De sententia non potest dubitari. Socrates dicit: seria vos agitis et ut vos seria ageretur ego aegre effeci. Sed potestne προὔκαλεσάμην ὑμᾶς σπουδάζειν significare „ego effeci ut seria ageretur?“ Equidem nego; nam προκαλεῖσθαι invitare, impellere, adhortari est; neque puto si verbum praegnanter usurpatum esse dicas e difficultate te emersurum esse. Quare fallor aut προὔκαλεσάμην corruptum est, pro quo quale verbum sit substituendum, me fateor nescire, cum nullum invenerim quod ad vestigia traditi verbi prope accedat.

p. 294 D. ὥστ' ἔγωγε καὶ αὐτός ὦ Κρίτων ὑπ' ἀπιστίας ἤναγκάσθην τελευτῶν ἐρέσθαι [τὸν Εὐθύδημον], εἰ καὶ ὀρχεῖσθαι ἐπίσταιτο ὁ Διονυσόδωρος. Ὁ δέ, Πάνυ γ' ἔφη. Οὐ δῆπου ἦν δ' ἐγὼ καὶ ἐς μαχαίρας γε κυβιστᾶν καὶ ἐπὶ τροχοῦ δινεῖσθαι τηλικούτος ὢν· οὕτω πόρρω σοφίας ἦχαι. Οὐδέν ἔφη ὅτι οὐ. Interrogatio οὕτω πόρρω σοφίας ἦχαι negativa esse debet; negatio autem οὐ δῆπου quin vim habere possit in hanc interrogationem, valde dubito; nam enuntiationes non sunt coniunctae inter se. Quodsi Winckelmannus interpunctione post ὢν remota unam enuntiationem efficit, horribili constructione offendor. Inserere οὕτω ante οὕτω, iam locus

recte se habebit. Apparet quam facile hoc verbum intercidere potuerit; cf. Lys. 13, 78 λέγων ὅτι οὕτω διαχέονται ubi item οὕτω ante οὕτω intercidit Frohberger. Vol. I. p. 287. App.

Socrates continuat orationem hoc modo: πότερον δέ ἢν δ' ἐγὼ πάντα νῦν μόνον ἐπίστασθον ἢ καὶ αἰεὶ; Καὶ αἰεὶ ἔφη. Καὶ ὅτε παῖδιά ἦσθην καὶ εὐθύς γενόμενοι ἠπίστασθε; Πάντα ἐφάτην ἅμα ἀμφοτέρω. Hirschig. Badham. ἠπίστασθε πάντα; Ἐφάτην ἅμα ἀμφοτέρω. Mutationis causam probo; nam primum responsum πάντα ἐφάτην non quadrat in interrogationem, deinde non agitur de scientia ipsa, sed de scientia omnium rerum. De ratione vero locum emendandi potest ambigi; equidem malim scribere: ἠπίστασθε πάντα; Πάντα ἐφάτην ἅμα ἀμφοτέρω.

p. 295 D. ὥρῃην δεῖν ὑπείκειν, μή με σκαιὸν ἡγησάμενος φοιτητὴν μὴ προσδέχοιτο. Structura enuntiationis memoratu digna; scriptor vult ἡγεῖσθαι negari, προσδέχεσθαι affirmari, ita ut potuerit etiam dicere: ἵνα μὴ ἡγοῖτο σκαιὸν καὶ ἵνα προσδέχοιτό με φοιτητὴν. Sed cum scriptor negaverit participium ἡγησάμενος, negationem, ut προσδέχοιτο ponatur, ante hoc verbum repetere debet. Germanice structuræ vim explicabis si verteris μὴ prius „damit nicht der Fall eintrete, dass“ cf. Naegelsbach ad Hom. Il. A. 28.

p. 297 C. πολὺ γάρ πού εἰμι φαυλότερος τοῦ Ἡρακλέους ὅς οὐχ οἷός τε ἦν τῇ τε ὕδρᾳ διαμάχεσθαι σοφιστρίᾳ οὕσῃ — καὶ καρκίνῳ τινὶ ἐτέρῳ σοφιστῇ. Porson = Dobree adn. ad Arist. Plut. 971. „Vox συκοφαντρία videtur esse ab Aristophane ficta ut σοφίστρια a Platone Euthyd. p. 297 C.“ Non raro verba σοφιστής, σόφισμα aliaque cognata lusus causa adhibentur cf. Lach. 183 D. τὸ δὲ σόφισμα τὸ τοῦ δρεπάνου τοῦ πρὸς τῇ λόγχῃ οἷον ἀπέβη. Symp. p. 214 A. πρὸς μὲν Σωκράτῃ ὡς ἄνδρες τὸ σόφισμά μοι οὐδέν· ὅπόσον γὰρ ἂν κελεύῃ τις, τοσοῦτον ἐκπιὼν οὐδέν μᾶλλον μήποτε μεθυσθῇ. Cratyl. 403 E. οὕτω καλούς τινας ἐπίσταται λόγους λέγειν ὁ Αἰδης καὶ ἔστιν ὁ θεὸς οὗτος τέλεος σοφιστής τε καὶ μέγας εὐεργέτης παρ' αὐτῷ. Euthyd. p. 288 C. ἀλλὰ τὸν Ἡρωτέα μιμεῖσθον τὸν Αἰγύπτιον σοφιστήν. Xen. Cyrop. 6. 1. 42 νῦν τοῦτο πεφιλοσόφηκα μετὰ τοῦ ἀδίκου σοφιστοῦ τοῦ ἔρωτος. Plat. Symp. p. 203 D. ἔρως vocatur δεινὸς γόης καὶ φαρμακεὺς καὶ σοφιστής. Simili modo Gotheus noster in XIII. Eleg. rom. de Amore dicit: Also sprach der Sophist.

p. 297 D. οὐ γὰρ μὴ ἀνῆς ἐρωτῶν (σχεδὸν τι ἐγὼ τοῦτ' εὖ οἶδα), φθονῶν καὶ διακωλύων, ἵνα μὴ διδάξῃ με ὁ Εὐθύδημος ἐκεῖνο τὸ σοφόν. Falso interpunxerunt ante Routhium: οὐ γὰρ μὴ ἀνῆς ἐρωτῶν, σχεδὸν τι

(ἐγὼ τοῦτ' εὖ οἶδα) φθονῶν καὶ διαχωλῶν. Recte comparavit vir Britannus Hipp. mai. 288 C. ἐρεῖ τοίνυν μετὰ τοῦτ' ἐκεῖνος, σχεδόν τι εὖ οἶδα ἐκ τοῦ τρόπου τεχμαιρόμενος, cui loco potest addi: Phileb. 31 A. σχεδόν ἐπεικῶς ἡμῖν τὰ νῦν δεδήλωται. Aliis locis Plato σχεδόν solo restringit verba sciendi cf. Phaed. 63 E. σχεδόν μὲν τι ἤδη. Lach. 188 B. ἀλλὰ καὶ πάλαι σχεδόν τι ἠπιστάμην. ibid. 192 C. σχεδόν τι οἶδα. Alcib. 103 B. σχεδόν οὖν κατανεόηκα. ibid. p. 106 E. σχεδόν τι καὶ ἐγὼ οἶδα. Crito 53 B. σχεδόν τι δῆλον. Politic. p. 288 D. καὶ τοῦτο σχεδόν μανθάνω. Alcib. 111 C. σχεδόν γάρ τι μανθάνω. Soph. p. 245 E. δηλοῖ σχεδόν καὶ τὰ νῦν ὑποφαίνοντα. Legg. VI. 769 B. σχεδόν ἐννοῶ. Lysias 13. 33 σχεδόν τι οἶμαι ὑμᾶς ἐπίστασθαι cf. Froberg. ad 13. 43.

p. 297 E. οὐ γὰρ Πατροκλῆς ἦν αὐτῷ πατήρ, ὁ ἐμὸς ἀδελφός, ἀλλὰ παραπλήσιον μὲν τοῦνομα Ἰφικλῆς, ὁ Ἡρακλέους ἀδελφός. Heindorfius verborum difficultatem sensit; adnotavit enim: *Haec fuit quum sic corrigenda viderentur, ἀλλὰ παραπλήσιος μὲν τοῦνομα, Ἰφικλῆς δὲ ὁ Ἡρακλ., nunc vulgatam scripturam teneo. Nam ut dicitur ἀνὴρ ὄνομα Ἰφικλῆς, quidni itidem dicatur ἀνὴρ παραπλήσιον τοῦνομα Ἰφικλῆς? Nego hoc posse dici; Plato dicere debuit aut παραπλήσιον ὄνομα aut τὸ παραπλήσιον ὄνομα* (cf. Theaet. p. 144 D. Θεαίτητος — τό γε ὄνομα). Quodsi nolis scribere, ἀλλὰ παραπλήσιος μὲν τοῦνομα, Ἰφικλῆς κ. τ. λ., propono tibi ἀλλὰ παραπλήσιον μέντοι ὄνομα Ἰφικλῆς κ. τ. λ. cf. Arist. Ach. 709 (ὅς) οὐδ' ἂν αὐτὴν τὴν Ἀχαίαν ῥαδίως ἠγέσχετ' ἂν, ἀλλὰ κατεπάλαισε μεντᾶν πρῶτον Εὐάθλους δέκα.

p. 299 D. τί οὖν; ἀγαθὰ οὐ δοκεῖ σοι χρήματα αἰετ' ἔχειν καὶ πανταχοῦ; Badh. pro χρήματα quod ineptum esse putat scripsit χρῆναι. Sed Badhami coniectura inepta vocanda est; nam χρήματα iungendum est cum ἀγαθὰ (cf. Theaet. 209 E. ἤδὲ χρῆμα), δοκεῖ autem significat „aptum videtur“ (gutdünken). cf. Kr. 55, 3, 15, Hertlein ad Xen. Cyrop. 5. 5. 43. 6, 1. 10. Inde vides verba qualia sunt tradita eum sensum praebere quem correctione Badhamus restituere vult. Ni fallor, idem usus verbi δοκεῖν nobis occurrit Symp. p. 185 E. δοκεῖ τοίνυν μοι ἀναγκαῖον εἶναι, ἐπειδὴ Πausanίας ὁρμήσας ἐπὶ τὸν λόγον καλῶς οὐχὶ καλῶς ἀπετέλεσε δεῖν ἐμὲ πειρᾶσθαι τέλος ἐπιθεῖναι τῷ λόγῳ. Nemo, ut ait Hirschigius Misc. phil. p. 73, sanae mentis potest δεῖν ἐμὲ post ἀναγκαῖον εἶναι ferre. Delevit igitur δεῖν ἐμὲ alii quo eum secuti sunt. Sed cum interpolatio non possit explicari, Platonem suspicor sic scripsisse: δοκεῖ τοίνυν μοι, ἐπειδὴ Πausanίας ὁρμήσας ἐπὶ τὸν λόγον καλῶς οὐχὶ καλῶς ἀπετέλεσε, πειρᾶσθαι τέλος ἐπιθεῖναι τῷ λόγῳ. Librarii hunc usum verbi δοκεῖν nescientes alii interpolaverunt ἀναγκαῖον εἶναι, alii δεῖν ἐμέ.

p. 302 A. καὶ γὰρ, ἤδη γὰρ ὅτι ἐξ αὐτῶν καλὸν τι ἀνακύψοι [τὸ τῶν ἐρωτημάτων] καὶ ἅμα βουλόμενος ὅτι τάχιστ' ἀκούσαι, Πάνυ μὲν οὖν, ἔφην, οὕτως ἔχει. Collocationem enuntiationis causalis post pronomen personale illustrant haec exempla Platonica: Prot. p. 317 C. καὶ ἐγώ — ὑπώπτουσα γὰρ βούλεσθαι αὐτὸν τῷ τε Προδίκῳ καὶ τῷ Ἰππία ἐνδείξασθαι καὶ καλλωπίσασθαι ὅτι ἐρασταὶ αὐτοῦ ἀφιγμένοι εἶημεν — Τί οὖν, ἔφην ἐγώ, οὐ καὶ Πρόδικον καὶ Ἰππίαν ἐκαλέσαμεν; ibid. p. 335 A. καὶ ἐγώ — ἔγνω γὰρ ὅτι οὐκ ἤρεσεν αὐτὸς αὐτῷ ταῖς ἀποκρίσεσι ταῖς ἔμπροσθεν καὶ ὅτι οὐκ ἐθελήσοι ἐκὼν εἶναι ἀποκρινόμενος διαλέγεσθαι — ἡγησάμενος οὐκέτι ἐμὸν ἔργον εἶναι παρῆναι ἐν ταῖς συνουσίαις, Ἀλλὰ τοι ἔφην ὦ Πρωταγόρα οὐδ' ἐγὼ λιπαρῶς ἔχω. Riv. 135 D. καὶ γὰρ αὐτοῦ ἡμφεγνόνουν τὸν λόγον ὅτι ἐβούλετο Ἄρ' ἐννοῶ ἔφην οἷον λέγεις τὸν φιλόσοφον ἄνδρα. Charm. p. 157 C. ἐγὼ οὖν — ὥμοσα γὰρ αὐτῷ καὶ μοι ἀνάγκη πείθεσθαι — πείσομαι οὖν. ibid. p. 169 B. σὺ οὖν, ὦ παῖ Καλλαίσχρου — τίθεσαι γὰρ σωφροσύνην τοῦτ' εἶναι ἐπιστήμην ἐπιστήμης καὶ δὴ καὶ ἀνεπιστημοσύνης — πρῶτον μὲν τοῦτο ἐνδείξει κ. τ. λ.

p. 302 C. εἴτα τοῖς ἄλλοις ἔφη Ἀθηναίοις οὐκ ἔστι Ζεὺς ὁ πατρῷος. Kr. 50, 7, 10 hoc praeceptum proposuit: „Wenn mit dem Namen eines Gottes ein Beinamen desselben verbunden wird, so pflegt der Artikel bei beiden zu stehen oder bei beiden zu fehlen: Ζεὺς σωτήρ, ὁ Ζεὺς ὁ σωτήρ.“ cf. Maetzner ad Lycurg. p. 308. Quamquam interdum hoc praeceptum violatur, tamen quin Plato id violaverit summopere dubito, id quod ex his exemplis elucet: Rep. IX. 583 B. τῷ Ὀλυμπίῳ Διὶ. ibid. VIII. 565 D. τοῦ Διὸς τοῦ Λυχαίου. Phaedr. 275 B. (Theag. 121 A. τοῦ Διὸς τοῦ ἑλευθερίου). Iis adducor ut nostro loco scribam οὐκ ἔστιν (sic, Clark.) ο Ζεὺς ὁ πατρῷος.

p. 302 E. θῦσαι θεῷ ὅτῳ ἂν βούλῃ. Hirschigius et Badhamus θεῶν. At Cratyl. p. 432 A. ὅστις βούλει ἄλλος ἀριθμός. De locutione cf. Kratz ad Gorg. p. 517 B.

p. 303 B. ἐνταῦθα δὲ ὀλίγου καὶ οἱ χίονες οἱ ἐν τῷ Λυχαίῳ ἐθορύβησαν τ' ἐπὶ τοῖν ἀνδρῶν καὶ ἤσθησαν. Schaarschmidtus hac prosopopoeia offensus est. Sed similia exempla ubique reperiuntur cf. Cic. in Pis. 9. 21 templa gemunt, tecta lugent. ibid. 22, 52 moenia, tecta, templa laetantur cf. Nauck Stud. Euripid. II. 24. Acerba irrisio inest in Socratis verbis.

p. 303. E. ταῦτα οὕτως ἔχει ὑμῖν καὶ τεχνικῶς ἐξέρηται. Verba οὕτως ἔχει ὑμῖν non habent sanam interpretationem; Badhamus igitur εὖ ante ἔχει inseruit. Sed fortasse praesiat ἔχει in εὖ mutare.

p. 303 E. ὥστε πάνυ ὀλίγῳ χρόνῳ ὄντινούν ἂν μαθεῖν ἀνθρώπων. Nullum exemplum huius solitarii dativi apud Platonem novi; semper

ἐν additum est dativo. Exemplis ab Heindorfio congestis addere poteris: ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ Lach. 192 B., Gorg. 455 A.; ἐν γε ὀλίγῳ χρόνῳ Rep. X. 608 C.; ἐν πολλῷ χρόνῳ Apol. 19 A., Phaedr. 228 A., Phaedo 58 B., Rep. 3. 409 B. Nihil obstat quominus ἐν post ὥστε inseramus et cum Heindorfio scribamus ὥστ' ἐν; hoc enim loco praepositio facillime intercidere potuit. Exempla nota Apol. 19 A. ἐν οὕτως ὀλίγῳ χρόνῳ 24 A. ἐν οὕτως ὀλίγῳ χρόνῳ quibus Vermehren p. 34 addidit Theag. p. 128 C. ἐν πάνυ ὀλίγῳ χρόνῳ, tuentur collocationem adverbii οὕτως. Recte igitur iam Krügerus II., 48, 2, 9 (4) Heindorfii coniecturam assensu suo comprobavit. Praepositionem ἐν etiam aliis locis intercidisse demonstrant Hertlein, Conjecturen zu griech. Pros. Wertheim 1862 p. 15, Kr. ad Anab. 1, 8, 23.

p. 303 E. τὸ δὲ δὴ μέγιστον, ὅτι ταῦτα οὕτως εὖ ὑμῖν καὶ τεχνικῶς ἐξεύρηται, ὥστ' ἐν πάνυ ὀλίγῳ χρόνῳ ὄντινόν ἂν μαθεῖν ἀνθρώπων, ἔγνω ἔγωγε καὶ τῷ Κτησίππῳ τὸν νοῦν προσέχων, ὡς ταχὺ ὑμᾶς ἐκ τοῦ παραχρῆμα μιμῆσθαι οἷός τ' ἦν. Non satisfacit mihi Heindorfius defendens καὶ hoc modo: καὶ ferri potest, si explices: *cognovi hoc tum aliunde tum ex eo quod attente Ctesippum animadverti*. Malim pro τῷ scribere αὐτός. Hoc in τῷ depravato aliud vitium natum est, cum librarii προσέχων in προσέχω mutarunt. Inde videmus, quomodo vitium vitium pariat. ἔγωγε καὶ αὐτός non raro in dialogo nostro deprehenditur: p. 292 E. ἔγωγε οὖν καὶ αὐτός πᾶσαν ἤδη φωνὴν ἱφίειν. 294 D. ὥστ' ἔγωγε καὶ αὐτός ὡς Κρίτων ὑπὲρ ἀπιστίας ἠναγκάσθην. 303 B. ἔγωγε μὲν οὖν καὶ αὐτός οὕτω διετέθην. Gorg. 452 B. cum Kratzii adnot.

p. 304 C. ἡδέως ἂν τι μανθάνοιμι. Opt. praes. μανθάνοιμι pro μάθοιμι recte restituit Winckelm. e Cl. Vat. Quamquam non negari potest opt. aorist. in hac locutione multo frequenticrem esse. cf. Lys. 204 B., Lach. 182 D., Rep. V. 470 A., Phaedo. 108 D., 70 B., Rep. X. 608 D., Cratyl. 397 A. ἡδέως ἀκούσαιμ' ἂν; Symp. 216 C., Alcib. II. 181 B. ἡδέως ἂν ἴδοιμι; Prot. 347 C. ἡδέως ἂν ἐπὶ τέλος ἔλθοιμι; Cratyl. 411 A. ἡδέως ἂν θασαίμην; Phaed. 110 B. ἡδέως ἂν ἀκούσαιμεν; Theaet. 143 E., Rep. I. 328 E., Soph. p. 216 D., Crat. 399 C., Rep. VI. 491 C. ἡδέως ἂν πυθοίμην; Cratyl. p. 384 A. ἡδέως ἂν ἀκούσαιμι — ἔτι ἂν ἡδιον πυθοίμην; Meno 86 C. ἡδιστα ἂν — καὶ σχεφαίμην καὶ ἀκούσαιμι; 84 B. ζητήσκειν ἂν ἡδέως; Phaedo 99 B. ἡδιστ' ἂν γενοίμην; Alcib. I. 114 B. οὐκέτ' ἂν ἡδέως τοῦ αὐτοῦ γεύσαιτο λόγου. Sed. opt. praes. his locis defenditur: Crito 53 D. ἴσως ἂν ἡδέως σου ἀκούοιεν. Rep. VI. 487 D. ἡδέως ἂν ἀκούοιμι. Prot. 361 D. ἡδιστα ἂν ταῦτα διασκοποίην. Lys. 204 A. ἡδέως ἂν σοι μεταδιδοίμεν. Gorg. 458 A. ἡδέως ἂν σε διερωτώην. Lach. 188 E. ἡδιστ' ἂν ἐξεταзоίμην. Soph. p. 216 D.

ἤδέως ἂν πυνθανοίμην. Theaet. 143 B. οὐκ ἂν ἀηδῶς ἀναπαυοίμην. Euthyd. 279 E. μετὰ ποτέρου ἂν ἤδέως κινδυνεύοις;

p. 304 E. καὶ μὴν ἔφη ἄξιόν γ' ἦν ἀκοῦσαι. Τί δέ, ἦν δ' ἐγώ. Ἵνα ἤκουσας ἀνδρῶν διαλεγομένων, οἳ νῦν σοφώτατοί εἰσι τῶν περὶ τοὺς τοιούτους λόγους. Κἀγὼ εἶπον, Τί οὖν ἐφαίνοντό σοι; Τί δὲ ἄλλο ἢ δ' ὅς ἢ οἰάπερ ἀσὶ ἂν τις τῶν τοιούτων ἀκούσαι ληρούντων καὶ περὶ οὐδενὸς ἀξίων ἀνάξιαν σπουδὴν ποιουμένων; Heindorfius ad enuntiationem τί οὖν ἐφαίνοντό σοι hanc adnotationem adscripsit: *A qua interrogatione paululum deflectit responsio subsequens Τί δὲ ἄλλο ἢ οἰάπερ, ita conformata quasi Crito interrogasset Τί οὖν ἐφαίνετό σοι ἃ οὗτοι ἔλεγον. Monui ne quis post ἐφαίνοντο infinitivum λέγειν vel huiusmodi aliquem desideret. Simili modo Stallbaumius; Badhamus pro τί ἐφαίνοντο scripsit τί ἀπεφαίνοντο. Non recte locum interpretati sunt. Ad τί ἐφαίνοντο subiectum supplendum est οἱ τοιοῦτοι λόγοι ex oratione antecedenti. Cum hac autem interrogatione aptissime congruit responsum. Idem quod nos sensisse videtur Krügerus; nam § 61, 8, 1 exemplum e Platone profert τί ἐφαίνοντό σοι οἱ λόγοι quod nullum aliud quam nostrum esse potest. Constructionem τί ἐφαίνοντο οἱ λόγοι in qua non cum Sauppio (Prot. 352 B.) infinitivum deesse dixerim, illustrant haec exempla: Charm. 154 D. τί σοι φαίνεται ὁ νεανίας; Phaedr. p. 234 C. τί σοι φαίνεται ὧ Σώκρατες ὁ λόγος; Rep. I. 328 E. τί σοι φαίνεται τοῦτο; cf. Stallb. ad Phaedr. p. 234 C., Rep. 328 E. Recta est Krügeri explicatio l. c.*

p. 305 A. οὕτως ἦν ἄτοπος, ἐθέλων ἑαυτὸν παρέχειν ἀνθρώποις, οἷς οὐδὲν μέλει ὅτι ἂν λέγωσι, παντὸς δὲ ῥήματος ἀντέχονται. Clark. Vatic. pro ῥήματος nobis tradiderunt χρήματος, quod cum effundat bonum sensum, restituendum est; scriptor enim universe dicit: adgrediuntur rem quamlibet.

p. 306 A. οὐ γὰρ ῥάδιον αὐτοὺς πείσαι ὅτι καὶ ἄνθρωποι καὶ τἄλλα πάντα ὅσα μεταξὺ τινῶν δυοῖν ἐστὶ καὶ ἀμφοτέροις τυγχάνει μετέχοντα, ὅσα μὲν ἐκ κακοῦ καὶ ἀγαθοῦ, τοῦ μὲν βελτίω, τοῦ δὲ χείρω γίνεται ὅσα δὲ ἐκ δυεῖν ἀγαθοῖν μὴ πρὸς ταῦτόν, ἀμφοῖν χείρω, πρὸς ὃ ἂν ἐκάτερον ἢ χρηστὸν ἐκείνων ἐξ ὧν συνετέθη. Heindorf. „πρὸς ταῦτόν sc. ὄντοιν quod additum vellem, quemadmodum hoc statim post additur in verbis, ὅσα δὲ ἐκ δυοῖν κακοῖν συνετέθητα μὴ πρὸς τὸ αὐτὸ ὄντοιν. Nunc in his aliqua inest sermonis ambiguitas. Sed his exemplis vetamur Heindorfium sequi: Dem. 54, 26. γράφοντες μαρτυρίας οὐδὲν πρὸς τὸ πρᾶγμα. Arist. Ran. 730 τοῖς δὲ χαλκοῖς καὶ ξένοις καὶ πυρρῖαις καὶ πονηροῖς καὶ πονηρῶν εἰς ἅπαντα χρώμεθα.

p. 306 D. ἐγὼ μὲν οὖν ὅταν σοὶ ἐγγένωμαι, οὕτω διατίθεμαι, ὥστε μοι δοκεῖν μανίαν εἶναι τὸ ἔνεκα τῶν παίδων ἄλλων μὲν πολλῶν σπουδὴν τοιαύτην ἐσχηκέναι κ. τ. λ. Vulg. δοκεῖν; sed omnes praeter unum libri δοκεῖ, quod Winckelmann, Stallb. recep. Duo ad lectionem librorum tutandam monstranda esse videntur, primum accusativum cum infinitivo cum δοκεῖν, *videri* posse coniungi deinde οὕτω διατίθεμαι ὥστε cum indicativo posse construi. Illud iam Winckelmannus demonstravit hoc exemplo alato Legg. IV. 721 D. ἵνα μὴ δακῇ τὴν μοναλίαν οἱ κέρδος καὶ ῥασαίτην φέρειν, cui addidit Matthiae § 537 cum alia tum e Platone Legg. I. 636 E. (cf. Kr. 55, 4, 2)¹⁾. Hoc dubitat quidem Aken (Tempus u. Moduslehre 177 b p. 127), sed quominus ei assentiamur, exemplum ab ipso prolatum prohibet: Dem. 49, 41. οὕτω διέθεσαν ὑμᾶς κατηγοροῦντες ὥστε Ἀντίμαχον μὲν ἀπεκτείνετε cui addo Lys. 25, 27. ὑμεῖς δὲ οὕτως διετέθητε ὥστε τοὺς μὲν φεύγοντας κατεδέξασθε, τοὺς δ' ἀτίμους ἐπιτίμους ἐποιήσατε, τοῖς δ' ἄλλοις περὶ ὁμονοίας ὅρκους ἔμνυτε. Ac cum in enuntiatione δοκεῖ μοι summa vis insit, non est quod indicativum turbemus. Pro ὥστε μοι cum Cl. Vat. scribendum ὥς τ' ἐμαί.

p. 307 B. ἀλλ' ἐάσας χαίρειν τοὺς ἐπιτηδεύοντας φιλοσοφίαν εἴτε χρηστοὶ εἰσιν εἴτε πονηροί, αὐτὸ τὸ πρᾶγμα βάσανίς τις καλῶς τε καὶ εὖ, ἐὰν μὲν σοὶ φαίνεται φαῦλον ὄν, πάντ' ἄνδρα ἀπώτρει, μὴ μόνον τοὺς υἱεῖς. ἐὰν δὲ φαίνεται οἷον οἷμαι αὐτὸ ἐγὼ εἶναι, θαρρῶν δύνω καὶ ἄσχει τὸ λεγόμενον δὴ τοῦτο αὐτὸς τε καὶ τὰ παῖδια. Rei, non hominis rationem haberi etiam aliis locis Plato iubet cf. Phaedo 91 C. ὑμεῖς μέντοι ἂν ἐμοὶ πείθησθε, σμικρὸν φροντίσαντες Σωκράτους, τῆς δὲ ἀληθείας πολὺ μᾶλλον, ἐὰν μὲν τι ὑμῖν δοκῶ ἀληθὲς λέγειν, ξυνομολογήσατε. Gorg. 453 C. (ἐρήσομαι) οὐ σοῦ ἔνεκα, ἀλλὰ τοῦ λόγου, ἵνα οὕτω προῖη ὥς μάλιστα ἂν ἡμῖν καταφανὲς ποιοῖ περὶ οὗτου λέγεται; 454 C. τοῦ ἐξῆς ἔνεκα περαινέσθαι τὸν λόγον ἐρωτῶ, οὐ σοῦ ἔνεκα. 457 E. φοβοῦμαι οὖν διελέγχειν σε, μή με ὑπολάβης οὐ πρὸς τὸ πρᾶγμα φιλονεικοῦντα, λέγειν τοῦ καταφανὲς γενέσθαι, ἀλλὰ πρὸς σέ. Charm. 161 C. πάντως γὰρ οὐ τοῦτο σκοπεῖον ὅστις αὐτὸ εἶπεν, ἀλλὰ πότερον ἀληθὲς λέγεται ἢ οὐ. — Copulatio καλῶς (τε) καὶ εὖ rarior est quam copulatio εὖ (τε) καὶ καλῶς. nam illa reperitur praeterea Euthyd. 276 C., Prot. 319 E., Parm. 128 B., haec Gorg. 507 C., Legg. IX. 876 C., Phaedr. 259 E., Lach. 188 A., Symp. 184 A., Hipp. mai. 304 A., Rep. VI. 503 D. Causa cur haec sit frequentior quam illa plana est, sonui collocatio εὖ (τε) καὶ καλῶς

¹⁾ Iniuria Madvigius § 161 Not. δοκεῖ μοι (τινι) unpersönlich mit einem Acc. mit dem Inf. ist ungewöhnlich ausser in einem hinzugefügten zweiten Gliede.

gratior est quam collocatio καλῶς (τε) καὶ εὖ. cf. locutiones germanicas Ort und Stelle, Leib und Leben, lieb und theuer, Grund und Boden¹⁾. Eodem modo copulat Plato εὖ καὶ ἀνδρείως semper, si Cratyl. 440 D. exceperis, et εὖ καὶ γενναίως. Non alienum videtur hoc loco alia e Platone exempla duorum adiectivorum copulatorum colligere: Gorg. 493 C. ἱκανῶς καὶ ἐξαρχούντως. Legg. II. 659 B. μηδὲ προσηκόντως μηδὲ ὀρθῶς (cf. Dem. de f. leg. § 245 ὀρθῶς καὶ προσηκόντως.) Phaedr. 258 D. αἰσχροῦς τε καὶ κακῶς. 272 A. καλῶς τε καὶ τελέως. Lys. 212 A. ταχύ καὶ ῥαδίως. Legg. IV. 710 D., Politic. p. 286 D. ῥᾱστά τε καὶ τάχιστα. Theaet. 175 E. τορῶς τε καὶ ὀξέως. Legg. VIII. 828 A. εὖ τε καὶ ἀκριβῶς. Phaedo 86 C. καλῶς καὶ μετρίως. Symp. 199 A. καλῶς καὶ μεγαλοπρεπῶς. Phaedo 92 E. ἱκανῶς τε καὶ ὀρθῶς. Rep. II. 362 C. ἱκανῶς καὶ μεγαλοπρεπῶς. Prot. p. 339 D. καλῶς τε καὶ ὀρθῶς. Alcib. I. 134 B. ὀρθῶς καὶ καλῶς. Symp. 177 E. ἱκανῶς καὶ καλῶς. Hipp. min. 366 E. γενναίως καὶ μεγαλοπρεπῶς. Rep. I. 336 D. σαφῶς καὶ ἀκριβῶς, V. 473 D. γνησίως τε καὶ ἱκανῶς. Symp. 182 A. κοσμίως γε καὶ νομίμως. Men. 96 E., 97 A. ὀρθῶς τε καὶ εὖ. Legg. VII. 788 C. κάλλιστα καὶ ἄριστα. Rep. VI. 486 E. ἱκανῶς τε καὶ τελέως. Verbum φαίνεται ante οἶον Hirsch. Badh. incluserunt. Sed multi obstant loci apud Platonem, quorum unum hic adscribo Prot. p. 325 B. τὰ μὲν ποίει, τὰ δὲ μὴ ποίει cf. Kroschel Stud. Plat. Fleckeis. Annal. Vol. 87 (1863) p. 837 Not. 26. Immo vero hic propter enuntiationem relativam φαίνεται vix deesse potest.

§ 21.

Symp. p. 207 C. εἰ τοίνυν ἔφη πιστεύεις ἐκείνου εἶναι φύσει τὸν ἔρωτα οὐ πολλάκις ὡμολογήκαμεν, μὴ θαύμαζε. ἐνταῦθα γὰρ τὸν αὐτὸν ἐκείνῳ λόγον ἢ θνητὴ φύσις ζητεῖ κατὰ τὸ δυνατόν αἰεὶ τε εἶναι καὶ ἀθάνατος. Clark. αἰεὶ τὸ εἶναι ἀθάνατος. Quare velim scribatur τὸ αἰεὶ εἶναι [ἀθάνατός].

Phaedr. p. 232 E. καὶ μὲν δὴ τῶν μὲν ἐρώντων πολλοὶ πρότερον τοῦ σώματος ἐπεθύμησαν ἢ τὸν τρόπον ἔγνωσαν καὶ τῶν ἄλλων οἰκείων ἔμπειροι ἐγένοντο ὥστε ἄδηλον [αὐτοῖς] εἰ ἔτι τότε βουλήσονται φίλοι εἶναι, ἐπειδὴ τῆς ἐπαθυμίας παύσονται. Vocabulum τότε deest in Clarkiano; delebis igitur id cum sit minime necessarium quam celerrime.

¹⁾ Sic dicimus hiatus vitandi causa Schiller und Göthe cf. Berthold Auerbach Ges. Schriften Vol. 19 p. 176 Not. 1.

Alcib. I. 119 C. ἀγανακτῶ ὑπὲρ τε σοῦ καὶ τοῦ ἐμοῦ ἔρωτος. Hermannus: „ἐμοῦ O (id est. Clarkianus) et V.“ Vidi Clark. et Tub. habere ἐμαυτοῦ, quod restituendum est.

Alcib. I. p. 128 B. Σω. Τί δέ ὦ Ἀλκιβιάδῃ; ὀρθῶς ἐπιμελεῖσθαι καλεῖς τι ὅτουοῦν πράγματος; Αλ. Ἐγωγε. Σω. ἄρ' οὖν ὅταν τίς τι βέλτιον ποιῇ, τότε ὀρθῶν λέγεις ἐπιμέλειαν. Stallb. (in ed. Goth.) Bekk. Taric. τι ante ὅτουοῦν deesse in libris bonis perperam contendunt; Clark. et Tub. definite habent τί δ' ὦ Ἀλκιβιάδῃ; ὀρθῶς ἐπιμελεῖσθαι καλεῖς τί ὅτου οὖν πράγματος, sed omiserunt τι ante βέλτιον; et hic potest abesse cf. Soph. p. 247 E. ἀλλ' ἐπεὶ περ αὐτοί γε οὐκ ἔχουσιν ἐν τῷ παρόντι τούτου βέλτιον λέγειν, δέχονται τοῦτο. Cobetum de hoc usu dubitantem (Nov. Lect. p. 368) optime refellit Francke Lect. Aeschin. p. 436. Auctoribus huius praecepti ibi laudatis poteris addere: Kr. 43, 4, 10; Schneid. Is. 1, 27. 4, 4, Sauppe Prot. p. 340 D. Stallb. ad Euthyd. 286 D. Symp. 175 B., Krüger ad Thucyd. 1, 65, 1.

Theaet. 169 C. οὐδὲν ἔτι ἀντιλέγω, ἀλλὰ λέγε ὅπῃ ἐθέλεις: πάντως τὴν περὶ ταῦτα εἰμαρμένην ἣν ἂν σὺ ἐπικλώσῃς, δεῖ ἀνατλήναι ἐλεγχόμενον. Particula ἂν omissa est in Clarkiano. Cum is liber saepe in enuntiationibus secundariis τις pro eis ponat, haud scio an legendum sit ἣν αὐ ἐπικλώσεις.

Ibid. p. 143 A. ἀλλ' ἐγραψάμην μὲν τότε εὐθὺς οἷχαδ' ἐλθῶν ὑπομνήματα, ὥστερον δὲ κατὰ σχολὴν ἀναμνησκόμενος ἔγραψον. Cl. Vat. Δ. Ven. II. ἐγραψάμην sine μὲν. Malim potius quam inseram μὲν scribere ἔγραφα μὲν. (cf. p. 168 B. ubi ex προσηρξάμην Corais effinxit προσήρξεσα μὲν).

Soph. p. 223 A. ἄρα οὐ τοῦτο τὸ γένος ἑτέρῳ προσεῖπεν ἄξιον ὀνόματι; Clark. Vat. Ven. II γεγονός, pro quo substituerim τοῦτο τό γε γένος.

Theaet. 183 E. Παρμενίδης δέ μοι φαίνεται, τὸ τοῦ Ὀμήρου, αἰδοῖός τέ μοι ἅμα δευρός τε. Herm. „nec p. 183 E. εἶναι cum paucis codd. post αἰδοῖός τέ μοι adjectum toleravi“. Wohlrab. „μοι εἶναι ἅμα Δα Πα Βz Z V Tur.“ His libris accedit Clarkianus id quod vellem observasset Campbell. Serva vocabulum optimis libris firmatum.

Praeceptum Madvigii § 10 (der Genitiv eines demonstrativen oder reflexiven Pronomens steht in der Mitte oder folgt mit wiederholtem Artikel) secutus Symp. p. 215 E., ubi Clark. Vat. tradunt ὅταν γὰρ ἀκούω, πολὺ μοι μᾶλλον ἢ τῶν κορυβαντιώντων ἢ τε καρδία πηδᾷ καὶ δάκρυα ἔκχεται ὑπὸ τῶν λόγων τούτου malim scribere ὑπὸ τῶν τούτου λόγων quam τῶν ante τούτου inserere.

Gorg. p. 451 A. ἡ ῥητορικὴ τυγχάνει μὲν οὕσα τούτων τις τῶν τὸ πολὺ λόγῳ χρωμένων. Bekkerus falso: ἡ om. ΓΦ E F et pr. B; etiam Clarkianus articulum omisit, quem plerumque nominibus artium deesse cum alii tam Baumeleinius demonstravit Philol. Vol. XVI. p. 122, cf. 454 A οὐκ ἄρα ῥητορικὴ μόνη παιδοῦς ἐστὶν (sic. Cl.) δημιουργός. p. 500 A. ῥητορικὴν ἀσχοῦσαν. Articulum cur interpretes p. 463 E. ἀλλ' ἐγὼ πειράσομαι φράσαι ὃ γέ μοι φαίνεται εἶναι ἡ ῥητορικὴ item servaverint contra Clarkianum, non intellego.

p. 467 C. οἷον οἱ τὰ φάρμακα πίνοντες παρὰ τῶν ἱατρῶν πότερόν σοι δοκοῦσιν (sic. Cl.) τοῦτο βούλεσθαι, ὅπερ ποιοῦσιν (sic. Cl.) πίνειν τὸ φάρμακον καὶ ἀλγεῖν, ἢ ἑκαῖνο, τὸ ὑγιαίνειν οὐ ἕνεκα πίνουσιν. ΠΩΛ. Δῆλον ὅτι τὸ ὑγιαίνειν οὐ ἕνεκα πίνουσιν. Interpretes quidam ultima verba οὐ ἕνεκα πίνουσιν incluserunt. At Kratzius: In der Wiederholung aller auch der nicht gerade nothwendigen Worte könnte Spott liegen; daher muss man doch Bedenken tragen, die Worte zu entfernen, obgleich man sie nicht vermissen wird, und die Entstehung des Einschlebsels sich leicht erklären liesse. Kratzii dubitationem removebit res gravissima, quod optimus Platonis liber Clarkianus verba non habet. Nostrum igitur est, verba uncis inclusa in marginem reicere.

p. 470 B. σχεφώμεθα δὲ καὶ τόδε. ἄλλο τι ἢ ὁμολογοῦμεν κ. τ. λ. Hermannus: ἄλλο τι ἢ Vat. non repugnante Oxoniensi, ubi est ἀλλ' ὅτι ἢ: ut mirer Stallb. Tur. qui particulam a Bekk. internecino odio extrusam alibi restituerunt, hic ἄλλο τι retinuisse cf. Stallb. ad Euthyphr. p. 104 Sed Clarkianus hic non ἀλλ' ὅτι ἢ sed ἀλλ' ὅτι omisso ἢ habet; quare ἢ delendum cf. p. 471 D. καὶ νῦν ἄλλο τι οὗτός ἐστιν ὁ λόγος ὃς με καὶ ἂν παῖς ἐξελέγξει.

p. 453 C. τοῦ οὖν ἕνεκα δὴ αὐτὸς ὑποπτεύων σὲ ἐρήσομαι, ἀλλ' οὐκ αὐτὸς λέγω; Bekkerus Comm. cr. p. 173, 16, 20 οὖν om. ΓΦ EFW. Adde Clarkianum. Quod ut deleamus, monent nos loci consimiles p. 457 D. τοῦ δὴ ἕνεκα λέγω ταῦτα; Prot. p. 343 B. τοῦ δὴ ἕνεκα ταῦτα λέγω; Men. 97 E. πόθεν δὴ τεκμαιρόμενος λέγω;

p. 479 C. εἰ δὲ ἡμεῖς ἀληθῆ ὁμολογήχαμεν, ὦ Πῶλε, ἄρ' αἰσθάνει τὰ συμβαίνοντα ἐκ τοῦ λόγου; ἢ βούλει συλλογισώμεθα αὐτά; Πωλ. εἰ μὴ σοί γε ἄλλως δοκεῖ. Bekkerus et Stallbaumius in Commentariis criticis testantur μὴ in permultis codicibus deesse, in his Clarkianus non numeratur. Cum autem is quoque liber καὶ omiserit, sine dubio scribendum est εἰ σοί γε [ἄλλως] δοκεῖ. Vocab. ἄλλως simili modo interpolatum habes Hipp. II. 367 D. quem locum Vermehren Plat. Stud. p. 9 non recte tractavit.

p. 494 E. ὁρα ὦ Καλλίχλεις, τί ἀποκρίνεται ἐάν τις σε τὰ ἐχόμενα τούτοις ἐφεξῆς ἅπαντα ἐρωτᾷ. Interpretes nos docent τούτοις cum ἐφεξῆς esse iungendum, non docent quid sibi velit ἐχόμενα. Plato aut dicit τὰ ἐχόμενα τούτων aut τὰ ἐξῆς τούτοις [vel τούτων cf. Rep. III 389 E.]. Sed nunquam ni fallor dicit Plato τὰ ἐχόμενα τούτοις ἐφεξῆς. Expelle ἐχόμενα, locus erit sanus, (cf. Francken Comm. Lys. 165.)

Meno 76 A. Τί δ'; ἐπίπεδον καλεῖς τι καὶ ἑτερόν αὖ ὁτιοῦν διόν ταῦτα τὰ ἐν γεωμετρίας. Herm. „ἐν γεωμετρίας V, S. ἐν ταῖς γεωμ. BT cum Flor. x. cui tamen soli hanc auctoritatem non tribuo.“ Hermannus si scivisset ταῖς Clarkianum tueri, non deleturum eum fuisse puto articulum.

Charm. 164 A. Οὐκοῦν τὰ δέοντα πράττει ὃ γε ταῦτα πράττων; Ναί. Ὁ δὲ δέοντα πράττων οὐ σωφρονεῖ; Clarkianus habet τὰ ἀντε δέοντα, non habet δέ. Turicenses et Hermannus Bekkeri notam (p. 87, 324, 2) male intellexisse videntur. Reducendum quod Bekk. dedit ὃ τὰ δέοντα πράττων οὐ σωφρονεῖ;

ibid. p. 167 B. ἄλλο τι οὖν ἦν δ' ἐγὼ πάντα ταῦτ' ἂν εἶη, εἰ ἔστιν ὅπερ σὺ νῦν δὴ ἔλεγες; Cl. ὃ σὺ pro ὅπερ σὺ. Accedit ut e testimonio Bekkeri Vat. περ omittat et Coislinianus post σὺ ponat. Scribendum igitur ὃ σὺ νῦν δὴ ἔλεγες quod non magis offendit quam ὃ οὖν καὶ ἐγένετο p. 155 B. pro ὅπερ οὖν καὶ ἐγένετο.

ibid. 153 C. δεῦρο δὴ ἔφη καθεζόμενος ἡμῖν διήγησαι· οὐ γὰρ τί πω πάντα σαφῶς πεπύσμεθα. Cl. οὐ γὰρ τοι quod recipiatur.

Lys. 207 B. ἰδὼν οὖν αὐτὸν ὁ Λύσις ἔσπετο καὶ συμπαραθέζετο μετὰ τοῦ Μενεξένου. Bekk. dicit εἶπετο in Vaticano esse; equidem addo Cl. a Vaticano non discrepare. Imperfectum retinendum.

§ 22.

Crasis qualem apud Platonem habeat usum non alienum videtur disquirere, cum scriptorem orationis genere quod colit coactum suas quemque leges observare notum sit. Huius autem disquisitionis fundamentum esse debet optimus Platonius liber, Clarkianus, quem secuti Platonicas crases omnes explicabimus:

1. τῶ + ᾱ = τᾶ Lach. 189 A. τανδρί (Cl. τ' ἀνδρί) — Lys. 216 D. τᾶγαθῶ (ταγ. ras supr.).
2. τῶ + ὀ = τῷ Euthyd. p. 299 E. τῷφθαλμῶ (τῷφθαλμῷ).
3. τῶ + ἑ = τῷ Hipparch 228 E. τῷπιγράμματα (τῷπιγράμματα.)
4. τῶ + ὀ = τῷ Symp. 221 B. τῷφθαλμῶ (τῷφθαλμῷ).

5. $\tau\omicron\upsilon + \acute{\alpha} = \tau\acute{\alpha}$. Crasis τάνδρός. Lach. 181 A. (τανδρός ras. supr. α) p. 179 E. (τανδρός) p. 183 D. (τανδρός). Phileb. 36 D. (τάνδρός). Soph. p. 221 D. (τανδρός). 241 C. (τανδρός) — τᾶγα-θοῦ. Theaet. 177 D. Phileb. 20 C. (ταγαθοῦ). p. 60 B. (ταγαθοῦ). Lys. 220 D. (ταγ. ras. supr.)
6. $\tau\omicron\upsilon + \acute{\epsilon} = \tau\acute{\omicron}\acute{\epsilon}$. Crasis τοῦμοῦ reperitur: Lach. 179 A. (του-μοῦ) Euthyd. p. 298 A. p. 298 B. (τοῦ μοῦ).
7. $\tau\omicron\upsilon + \omicron\upsilon = \tau\omicron\upsilon$. Phaedr. 249 A. τοῦρανοῦ (τουρανοῦ).
8. $\tau\omicron + \acute{\iota} = \theta\omicron\acute{\iota}$. Phaedo 87 B. θυμάτιον. cf. Kr. 6, 7, 2.

His exemplis adposuimus lectionem Clarkiani, ut inde eluceret quantaе offensionі fuisset crasis librariis. Exemplorum multitudo vetat nos in exemplis insequentibus ubique Clarkiani scriptiones adscribere.

9. $\tau\omicron + \acute{\omicron} = \tau\omicron\acute{\omicron}$. Cr. τοῦνομα extat: Apol. 34 E. Parm. 147 D. 147 E. Politic. 260 E. 271 C. 275 E. 276 C. 291 D. 292 A. 296 B (bis). 302 D. 305 D. 306 E. Phaedr. 244 C. Prot. 312 C. Lach. 197 E. Lys. 204 C. 204 D. 204 E (bis). Charm. 156 A. 163 D. 175 B. Soph. 218 C. 221 A. 221 B. 221 C. 229 C. 237 C. 244 D (bis). 250 D. 268 C. Theaet. 144 B. Cratyl. 395 C. 395 D. 409 C. 415 C. 415 D. 416 A. 417 B. 417 C. 418 B. 426 C (bis). 429 C. Hipp. 229 D. At Cratyl. 416 B Cl. pro τοῦνομα habet τὸ ὄνομα. — Cr. τοῦπίσω reperitur Phaedr. 254 C. — τοῦπισθεν Soph. 261 B.
10. $\tau\omicron + \acute{\epsilon} = \tau\omicron\acute{\epsilon}$. Cr. τοῦναντίον Hipp. 228 A. Theag. 130 C. Symp. 181 B. 214 D. Phaedo 62 E. 78 E. 94 B. 94 C. 102 E. Cratyl. 430 C. Apol. 25 B. Gorg. 479 E. 480 C. 491 B. 495 E. 504 E. 507 A. 510 E. 515 E. Parm. 148 B. 160 C (bis). Politic. 270 E. 281 A. 284 E. 285 A. 289 D. 310 D. Phaedr. 245 B. 262 B. 268 C. Men. 88 C. Prot. 332 A. 332 B. 359 E. 360 B. 361 B. Theaet. 162 D. Lach. 192 D. Lys. 220 E. Phileb. 12 A. 24 D. 26 C. 29 C. 35 C. 36 D. 37 E. 39 E. 40 B. 41 A. 42 B. 43 B. 46 E (bis). 48 C. 48 D. 52 C. 55 A. 65 C. Soph. 225 E. 228 C. 239 D. 244 B. 255 A. 258 E. 267 C. Theaet. 153 C. 155 B. 158 A. 190 B. Cratyl. 399 B. 415 C. 418 B. 418 E. 428 B. 433 E. 435 C. At Ephr. 10 B. τὸ ἐν. — τοῦμόν Phaed. 115 E., Alcib. 137 D. — τοῦντεῦθεν Riv. 134 E. Prot. 321 B. Theaet. 197 E. — τοῦνταῦθα Politic. 282 B. — τοῦλαττον Politic. p. 283 D. 284 A. — τοῦπὶ Soph. p. 264 E. — τοῦργον. Soph. 221 B.

11. $\tau\acute{o} + \acute{\alpha} = \tau\acute{\alpha}$. Cr. $\tau\acute{\alpha}\lambda\eta\theta\acute{\epsilon}\sigma\tau\alpha\tau\omicron\nu$ *Politic.* 266 D. At *Phaedo* 65 E. Cl. $\tau\acute{o}\ \acute{\alpha}\lambda\eta\theta\acute{\epsilon}\sigma\tau\alpha\tau\omicron\nu$. — $\tau\acute{\alpha}\lambda\eta\theta\acute{\epsilon}\varsigma$ *Phaedr.* 245 C. 260 D. 265 A. *Soph.* 246 D. *Theaet.* 176 D. 194 C. *Phaedo* 66 D. — $\tau\acute{\alpha}\gamma\alpha\theta\acute{o}\nu$ *Lys.* 220 D. 216 D (bis). 222 C. *Phileb.* 13 B. (13 E. Cl. $\acute{\alpha}\gamma\alpha\theta\acute{o}\nu$) 14 B. 20 B. 20 D. 20 E. 22 B. 22 C (bis). 60 A. 61 A. 61 B. 66 D. 67 A. *Cratyl.* 419 A. (Acc. *Cratyl.* 412 C.) At *Phaedo* 99 C. Cl. $\tau\acute{o}\ \acute{\alpha}\gamma\alpha\theta\acute{o}\nu$. — $\tau\acute{\alpha}\nu\theta\rho\acute{\omega}\pi\iota\nu\omicron\nu$ *Politic.* 262 C. 266 C. 266 E. — $\tau\acute{\alpha}\kappa\rho\iota\beta\acute{\epsilon}\varsigma$ *Politic.* 284 D. *Phileb.* 58 C. — $\tau\acute{\alpha}\rho\gamma\acute{\upsilon}\rho\iota\omicron\nu$ *Crito* 45 A. — $\tau\acute{\alpha}\lambda\eta\theta\iota\nu\acute{o}\nu$ *Soph.* 240 A.
12. $\tau\acute{\alpha} + \acute{\epsilon} = \tau\acute{\alpha}$. Cr. $\tau\acute{\alpha}\nu\alpha\nu\tau\acute{\iota}\alpha$ *Phileb.* 25 E. 28 D. 39 A. 46 C. 47 C. 50 B. *Theaet.* 165 D. 166 E. 168 A (bis). 171 B. 180 D. 181 A. 194 E. *Cratyl.* 394 E. 417 A. 418 B. *Soph.* 259 D. 240 E. 241 A. 248 D. *Phaedr.* 241 E. 261 D. *Men.* 71 B. 82 A. *Prot.* 323 D. 323 E. 361 A. *Alcib.* 114 D. 117 A. *Phaedo* 104 B. *Gorg.* 467 E. 496 B. 471 E. 499 D. *Parm.* 129 C. *Lach.* 188 E. *Politic.* 269 C. 270 B. 271 B. 273 E. 283 C. 307 A. 307 B. At $\tau\acute{\alpha}\ \acute{\epsilon}\nu\alpha\nu\tau\acute{\iota}\alpha$ *Alcib.* II. 141 A. 146 C. *Politic.* 310 A. (*Soph.* 241 E. $\tau\acute{\alpha}\ \acute{\epsilon}\nu\alpha\nu\tau\acute{\iota}\alpha$. Cl. $\tau\acute{\alpha}\ \mu\acute{\epsilon}\nu\alpha\nu\tau\acute{\iota}\alpha$) — $\tau\acute{\alpha}\mu\acute{\alpha}$ *Crit.* 45 B. *Politic.* 258 B. — $\tau\acute{\alpha}\nu\theta\acute{\alpha}\delta\varsigma$ *Alcib.* 122 D. — $\tau\acute{\alpha}\rho\gamma\alpha$ *Politic.* 284 A. ($\tau\alpha\rho\gamma\alpha$) — $\tau\acute{\alpha}\kappa\epsilon\acute{\iota}$ *Phaedr.* 250 A. — $\tau\acute{\alpha}\nu$ *Soph.* 222 A (bis). — $\tau\acute{\alpha}\kappa\tau\acute{o}\varsigma$ *Soph.* 227 A.
13. $\tau\acute{\alpha} + \acute{\alpha} = \tau\acute{\alpha}$. Cr. $\tau\acute{\alpha}\lambda\lambda\alpha$ *Alcib.* 122 B. 145 D. 149 A. 151 B. *Hipp.* 230 B. *Riv.* 136 D. *Theag.* 121 C. 130 B. *Symp.* 176 A. 190 A. 190 E. 199 C. 208 B. 215 B. *Phaedo* 62 A. 72 C. 75 B. 77 A. 82 A. 105 C. *Crito* 47 C. 51 E. *Apol.* 22 C. 22 D. 31 B. *Gorg.* 460 B. 467 E. 468 A. 474 E. 477 D. 484 C. 499 E. 500 A. 509 C. 512 C. 519 C. 522 E. 524 C. *Euthyd.* 279 A. 306 A. *Parm.* 129 A. 132 A. 132 C. 133 A. 134 C. 136 C. 147 C (bis). 147 D. 147 E. 148 A. 149 E. 151 D. 153 B. 153 C (bis). 154 A (ter). 154 C. 154 D. 155 B. 157 B (bis). 157 C. 157 E (bis). 158 B. 159 B (bis). 159 C (ter). 159 D. 161 C. 164 A. 164 D. 165 C. 165 E (ter). 166 A. 166 B. 166 C. *Politic.* 274 A. 308 D. *Phaedr.* 238 B. 247 E. 250 D. 264 B. 269 D. *Meno* 80 A. 81 D. 88 D. 90 C. 94 B. *Prot.* 312 D. 319 C. 321 A. 331 D. 361 E. 353 B. 353 E. *Lach.* 180 B. 180 D. 183 C. 192 B. *Lys.* 215 D. 215 E. 210 A. 221 A. *Charm.* 157 D. 158 B. 162 A. 168 B. 168 C. 174 E. *Phileb.* 36 B. 54 E. 63 C. 67 B. *Soph.* 224 C. 233 E. 257 A. 258 A. 259 B.

- 262 B. 266 B. 266 D. 239 D. 251 B. Theaet. 153 A. 156 E.
 169 A. 182 B. 185 D. 193 B. 201 E. 209 C. Cratyl. 387 B.
 394 A. 411 A (bis). 418 D. 427 B. 427 C. 430 C. 436 C.
 Accedunt hi loci, ubi Cl. pro τὰ ἄλλα habet τᾶλλα Parm. 149 E.
 160 B. (166 B. ἄλλα pro τᾶλλα). Theaet. 205 C. Cratyl. 389 D.
 At τὰ ἄλλα pro τᾶλλα habet Cl. Hipp. 228 E. Riv. 134 D.
 Apol. 30 B. Gorg. 506 D. Parm. 149 C. 153 B. 154 E.
 161 D. Politic. 289 E. Soph. 233 E. Cratyl. 423 C. — τὰ γὰρ ἄ
 Hipparch. 227 C. 232 A. Symp. 188 D. 201 C. 205 A. Gorg. 468 A.
 496 B. 497 D. 500 A. Euthyd. 280 E. 284 D. Politic. p. 279 D.
 Meno 78 C (bis). 79 B. 98 A. Prot. 355 B. 355 D. 352 C.
 Lach. 199 E. Gorg. 498 D. Accedunt Hipparch. 227 B. Charm.
 163 E. ubi Cl. eandem crasin praebet. — τὰ ληθῆ Alcib. 110 A.
 Symp. 176 C. 198 D. 199 B. 214 E. 217 B. Phaedo 60 D.
 84 D. Apol. 17 B. 18 A. 22 B. 24 A. 31 E. Gorg. 462 B.
 481 E. 486 E. 521 A. Euthyd. 284 A. 284 D. 307 A.
 Politic. 277 E. Phaedr. 247 D. Meno 75 C. 75 D. Prot.
 323 B. 339 E. Phileb. 49 B. Cratyl. 400 D. 438 D. — τὰ
 ληθέστατα Phileb. 61 E. Soph. 268 D. — τὰ προδίσια
 Phileb. 65 C. — τὰ νθρώπεια Phaedr. 89 E. Crito 46 E. —
 τὰ νθρώπινα Theaet. 170 B. — τὰ ριστεῖα Symp. 220 D.
 220 E (bis). — τὰ ἄλλότρια Phileb. 29 A. Restituendum e Clar-
 kiano Politic. p. 295 D τὰρχαῖα (ταρχαῖα) ibid. 305 C τὰ ἄλλήλων.
 14. καὶ + εἰ = καὶ. Cr. καὶ τα: Gorg. 457 B. (κατὰ): Lach. 179 E.
 (κατ'), Lys. 223 A. (κατὰ).
 15. καὶ + εἰ = καὶ. Cr. καγώ: Alcib. 105 E. 127 E. 151 C.
 Riv. 132 B. 133 E. 134 D. 135 A. 135 D. Symp. 172 A. 172 C.
 173 A. 174 B. 202 C. 219 A. Phaedo 87 B. 89 B. Euthyd.
 279 D. 282 D. 283 B. 295 D. 297 B. 300 A. 300 E.
 301 A. 304 C. 304 E. Parm. 137 A. Phaedr. 242 A. Lach. 181 B.
 200 C. Charm. 154 D. 156 D. 169 D. Theaet. 144 D. 190 A.
 201 D. Soph. 218 C. 221 B. 252 D. At καὶ ἐγὼ Cl. Phaedo
 61 D. Theaet. 143 B. — καὶ πεῖτα Hipparch. 228 D. Theag. 122 C.
 Phaedo 90 B. 117 E. Apol. 21 C. 23 C. Gorg. 527 D. Lys.
 218 C. Phileb. 14 A. Cratyl. 411 B. — καὶ καὶ Phaedo 69 E.
 Politic. 280 A. Prot. 351 A. At Phaed. 58 E καὶ ἐκείνος pro
 καὶ καὶ et ibid. 114 B καὶ ἐκείθεν pro καὶ καὶ. — καὶ καὶ Riv.
 133 D. 133 E. 134 C. Phaedo 88 E. Charm. 169 C.
 καὶ καὶ Apol. 25 A. Theaet. 172 D. At Politic. 303 D καὶ

ἐξεῖναι — καὶ ἐξεῖναι Cratyl. 430 B. Gorg. 480 E. Prot. 339 C. Phileb. 39 A. Politic. 264 C. At Cratyl. 436 A. Cl. καὶ ἐξεῖναι pro καὶ ἐξεῖναι. — καὶ ἐξεῖναι Politic. 284 D. — καὶ ἐξεῖναι Politic. 306 B. Euthyd. 284 A. — καὶ ἐξεῖναι Men. 93 C. Prot. 309 C. Soph. 231 C. Politic. 275 B. — καὶ ἐξεῖναι Apol. 21 E. Soph. 235 C. Theaet. 165 E. — καὶ ἐξεῖναι Riv. 132 C. Politic. 284 C. — καὶ ἐξεῖναι Euthyd. 293 D. — καὶ ἐξεῖναι (sic. Cl.) Phileb. 25 D. — καὶ ἐξεῖναι Alcib. 110 D. — καὶ ἐξεῖναι Symp. 217 E. Euthyd. 304 B. Lach. 195 A. Charm. 169 C. Soph. 237 B. — καὶ ἐξεῖναι Phileb. 48 A. — At Gorg. 484 E Cl. καὶ ἐπὶ habet pro καὶ ἐπὶ.

16. καὶ + ᾶ = καὶ ᾶ. Cr. καὶ ᾶ Alcib. 123 E. 141 B. Hipp. 230 E. Theag. 121 A. 128 E. 130 D. Symp. 185 A. 196 E. (Cl. καὶ ᾶ). 210 A. 212 E. 215 D. Phaedo 63 D. 71 A. 71 B. 79 A (ter). 106 A. 107 B. 115 B. Crito 48 D. Apol. 36 A. 37 D. Gorg. 458 D. 460 E. 469 D. 469 E (bis). 470 C. 485 D. 499 B. Euthyd. 279 D. Parm. 138 A. 145 A. 164 D. Politic. 261 E. 296 D (bis). 301 B. Phaedr. 238 D. 248 C. 253 A. 258 E. 269 B. Men. 72 C. 75 B. 76 B. 78 D. 98 D. Prot. 318 B. 318 C. 319 C. 328 A. 331 E. 347 D. 348 A. Lach. 179 B. 180 C. 182 D. 184 D. 190 C. 196 B. Lys. 205 C. 208 B. 209 E. 210 A. Charm. 156 A. 159 A. 166 C. Phileb. 38 E. 55 B. 58 C. 58 C. Soph. 224 D. 244 A. 247 E. 256 B. 262 B. 267 D. Theaet. 162 B. 188 C. 206 C. Cratyl. 393 C. 394 D. 421 D. 433 A. Gorg. 514 D (bis). At καὶ ἐὰν reperitur Symp. 210 B. καὶ ᾶ Apol. 22 A. Theaet. 180 A. (I. m.) Loci corrupti: Riv. 134 B καὶ γὰρ pro καὶ ᾶ. Lach. 183 B οὐ καὶ ᾶ pro οὐ καὶ ᾶ. ibid. 200 D ἐπεὶ ᾶ pro ἐπεὶ καὶ ᾶ. Cratyl. 417 A. καὶ pro καὶ quae confusio in libris frequens. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Gorg. 527 D. Prot. 348 E. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Lys. 207 A. Gorg. 515 A. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Apol. 24 D. Gorg. 484 D. 511 B. 518 C. Parm. 127 B. Symp. 204 A. Prot. 345 E. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Prot. 315 E. Lach. 186 C. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Gorg. 515 E. 518 A. 526 A. Prot. 347 D. Men. 92 E. 93 A. 95 A. 96 B. 96 B. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Euthyd. 284 D. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Alcib. 125 A. Apol. 25 A. Men. 93 C. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Lach. 187 A. καὶ ᾶ καὶ ᾶ Men. 92 E. 93 A. Theag. 122 E. 127 A. — καὶ ᾶ καὶ ᾶ Gorg. 514 A. Accedit Politic. 310 E. ubi pro καὶ καὶ ᾶ Cl. nobis praebet καὶ καὶ ᾶ. Crasis autem in

Clarkiano neglecta est his locis ubi apud Hermannum retenta est: Alcib. 124 E. καλοὶ καὶ ἀγαθοί. Symp 222 A. καλῶ καὶ ἀγαθῶ. Hipparch. 228 C. καλός τε καὶ ἀγαθός. Apol. 20 A. καλῶ τε καὶ ἀγαθῶ. Gorg. 470 E. καλὸν καὶ ἀγαθόν. Euthyd. 284 D. τοὺς δὲ καλοὺς τε καὶ ἀγαθοὺς. Theaet. 185 E. καλός τε καὶ ἀγαθός. — καὶ ἀγαθά Euthyd. 279 A. Crasin adhuc spretam servavit liber Platonius aureus Riv. 138 C. ubi nunc haec verba leguntur: πό-τερον οὖν καὶ οὗτος δικαιοσύνη εὖ ἂν τὴν οἰκίαν διοικοῖ ἢ ἄλλη τινὶ τέχνῃ; Cl. pro ἄλλῃ praebet καὶ ἄλλῃ. Vat. Θ Ven. II dicuntur habere κάλλῃ. Inde manifestum est crasin κάλλῃ reducendam esse. De καὶ post ἤ cf. Kr. 69, 32, 13.

17. $\omega + \alpha = \omega$. Cr. ὠγαθέ Alcib. 104 E. 114 B. 120 A. Theag. 128 D. Phaedo 95 B. Apol. 24 D. Gorg. 471 D. 490 C. 491 C. 507 A. 511 B. 519 E. Euthyd. 287 D. 297 B. Phaedr. 242 B. 243 B. Prot. 314 D. Phileb. 23 D. Soph. 259 D. 261 C. Cratyl. 393 A. 398 E. 401 B. 401 E. At ὦ ἀγαθέ Apol. 25 D. Crito 48 D. Gorg. 506 C. Phaedr. 260 D. quibus locis forma plena restituenda est ex auctoritate Clarkiani. — ὦριστε Men. 77 C.
18. $\tau\omicron\iota + \alpha\upsilon = \tau\alpha\upsilon$. Phaedo 76 B. βουλοίμην μὲν τᾶν (Cl. τᾶν). Euthyd. p. 285 E. σὺ τᾶν (τᾶν). Parm. 129 E. πολὺ μὲντ᾽ ἂν (μὲν τᾶν). Soph. p. 233 A. μακάριον μὲντ᾽ ἂν (μὲν τᾶν) p. 233 B. σχολῇ μὲντ᾽ ἂν (σχολῇ μὲν τᾶν) p. 239 BC. πολλή μὲντ᾽ ἂν (μὲν τᾶν) p. 249 A. δεινὸν μὲντ᾽ ἂν λόγον συγχωροῖμεν (μὲντᾶν) p. 249 D. βαβαὶ μὲντ᾽ ἂν (μὲντ᾽ ἂν). Lach. 182 B. οὐτᾶν — πάθοι (ὅτ᾽ ἂν). Apol. 30 D. μὲντ᾽ ἂν. Apol. 37 C. πολλή μὲντ᾽ ἂν. Gorg. 452 B. θαυμάζοιμι τᾶν. ibid. 461 E. δεινὰ μὲντ᾽ ἂν πάθοις. Politic. p. 292 E. ῥάστη μὲντ᾽ ἂν (μὲν τᾶν).
19. $\omega + \omicron\iota = \omega$. Cr. ἐγῶμαι: Alcib. 106 B. Phaedo 91 C. 93 A. 98 E. 106 D. 107 B. Crito 46 D. Apol. 37 A. Gorg. 452 BC. Euthyd. 288 D. 295 C. Prot. 315 E. 330 D. 336 D. 338 C. 349 B. 354 A. 354 B. 354 C. Lys. 209 A. 209 B (bis). 214 A. Charm. 167 C. 167 E. 175 C. Phileb. 21 E. Soph. p. 217 A. 223 A. 251 C. 253 E. Theaet. 187 A. 201 D. Cratyl. 406 E. 431 B. Phaedr. 264 E. Lach. 192 C. 193 E. At ἐγὼ οἶμαι pro ἐγῶμαι habet Cl. Apol. 28 C. Crito 45 B.
20. Non ad veram crasin pertinere videntur haec exempla: Theag. 130 C. προύλιπεν. Symp. 198 E. προυρρήθη. 217 B. προυκαλούμην. 219 E. προυγεγόνει. 220 C. προυχώρει (προχώρει). Phaedo 69 D. προυθυ-

μήτην (his). 88 D. προδέδοκτο. 89 A. προύτρεφεν. Euthyd. 294 B. προυχαλασάμην. Politic. 283 A. προυθέμεθα. Prot. 328 D. προύτρεφας. p. 348 C. προυτράπτω (παιτράπετο). Lach. 180 C. προυξένησε. 189 D. προυθέμεθα. Charm. 162 B. προύβαλεν. 169 D. προυχαλούμην. Phileb. 22 A. προυτάθησαν. 36 E. et Soph. 221 A. προυθέμεθα. Soph. 224 D. προυτάξατο. Theaet. 143 B. προύπαμψα. 183 D. προύθεσθε. Phaedr. 241 E. προύβαλε. Cratyl. 428 A. Alcib. 149 E. προύργου. (Phileb. 57 C. προεληλύθαμεν. ibid. 41 C. προερρήθη. Cratyl. 395 D. προεθυμείτω).

Coronidis igitur signum ubique Clarkianus omisit (Cratyl. 428 A. rec. man. posuit) et omittendum esse puta cum Wohlrabio (Proleg. p. 40).

21. $\tilde{\alpha} + \epsilon = \tilde{\alpha}$. Vestigia huius crasis uno loco servavit Cl. Phileb. 14 B. ὅπως ἄγω τίθεμαι, ταῦτ' ἔσται τὰ νικῶντα. Pro ἄγω scribendum est ἄγώ¹⁾.

22. $\tilde{\alpha} + \tilde{\alpha}\nu = \tilde{\alpha}\nu$. Haec crasis apud Platonem dubia. Gorg. 486 E. εὖ οἶδ' ὅτι ἂν μοι σὺ ὁμολογήσῃς περὶ ὧν ἡ ἐμὴ φύξις δοξάζει, ταῦτ' ἤδη ἔστιν αὐτὰ τᾶληθῆ. Pro ἂν Cl. ἂν quod nuper defendit Cronius (Beiträge p. 139); Cratyl. 395 A. κινδυνεύει γὰρ τοιοῦτός τις εἶναι ὁ Ἀγαμέμνων οἷος ᾧ δοξάσειν αὐτῷ διαπνεῖσθαι καὶ καρτερεῖν, τέλος ἐπιτιθεῖς τοῦς δόξασι δι' ἀρετῆν. Pro ᾧ quod scripsit Herm. Cl. ἂν quod alii in ἂν mutarunt. Prot. 352 C. ἡ ᾧ ἂν ἡ ἐπιστήμη καλεῖται. Cl. ἂν om. Saupp. scr. in ed. I. ἡ ἂν ἐπ. (cf. Schneider ad Rep. X. 606 C. Vol. III. p. 239).

Hoc loco etiam crases, quas ἕτερος cum articulo inire solet, tangendae sunt; sed hac in re nolumus esse longi. (cf. Kr. 6, 7, 4. Kühner § 51, 5 b. N. 2 p. 177): ὁ ἕτερος = ἄτερος Soph. 221 E., ubi Cl. ἄτερος suppeditat. Saepissime reperitur θάτερον pro τὸ ἕτερον: Soph. 243 E., 250 E., 252 B. Phaed. 114 E. al. Praecipue locutio δυοῖν θάτερον observatione digna est: Crito 52 A. 40 C. Gorg. 475 C. Sed Phaedo 102 E. δυοῖν τὸ ἕτερον et Phaed. 76 A. δυοῖν τὰ ἕτερα Cl. Tub. I. m. Charm. 160 B. δυοῖν τὰ ἕτερα quod in offensionem hominum doctorum incurrit; sed cum αἰσχρά ἐστι, ἐπιχειρητέα ἐστι dicatur, hic quoque pluralis numerus θάτερα vel τὰ ἕτερα nullam offensionem habet cf. Kr. 44, 4, 2 et 3. Crasin θάτερα habes Prot. 314 E. Phileb. 15 E. Theaet. 167 A., 187 B. Cr. θατέρου Soph. 255 E. τῆς ἰδέας τῆς θατέρου, 248 D., 257 D., 258 A. Hae for-

¹⁾ Ahrens de Crasi et Aphaeresi p. 4 „Relativum et pronomēn ἐγώ apud solos Atticos crasin faciunt.

mae tam frequentatae sunt, ut crasis oblivione obrueretur et articulus accederet: Soph. 255 C. τὸ θάτερον 254 E. τό τε ταῦτόν καὶ θάτερον.

Formas ταῦτόν, ταῦτοῦ etc. non necessarium duximus supra proferre; notae enim sunt omnes. Sed necessarium nobis videtur e Cl. aliquot lectiones ab Hermanni editione discrepantes proponere. Formae solutae, ubi apud Herm. contractae extant, reperiuntur Apol. 19 B. τὰ αὐτά. Parm. 146 D. ἐν τῷ αὐτῷ. Politic. 271 A. τὰ αὐτά. Euthyphr. 8 B. τὰ αὐτά. Symp. 221 E. τὰ αὐτά. Prot. 340 C. praeb. pro ταῦτόν Cl. τὸ αὐτόν. Hic non scripserim τὸ αὐτό sed ταῦτόν quod librarius quidam male dissolvit. At formae contractae in Cl. leguntur his locis: Parm. 146 A. ἐν ταυτῷ ibid. 147 D. ταυτὸ (ὄνομα) ταυτό (καί). Politic 299 A. ταυτα.

Crasis illius quae solo spiritu indicatur (άνήρ, άνθρωπος), si recte observaverim, nihil vestigii in Clarkiano superest. Sed ut in oratione vineta metrum (cf. Cobet N. L. p. 324), ita in oratione soluta casus obliqui librariorum incuriam redarguunt. Nam si scriptor τοῦ άνδρός, τῷ άνδρί, τὸν άνδρα dicit, de eodem homine non potest adhibere nominativum άνήρ. Itaque in talibus substantivis spiritum mutabimus, ubicunque sensus vel grammatica postulaverit; cf. quae hoc de usu disputavit Stallb. in Exc. ad Phaedr. p. 267 A. Engelhardt ad Menex p. 281. Kr. 50, 3, 6. Stallb. ad Phaed. p. 58 E. Iniuria Hermannus Phaedo 58 E. crasi abiecta scripsit εὐδαίμων γάρ μοι άνήρ ἐφαίνετο, ubi άνήρ solum verum est; nam de homine certo, de Socrate sermo est, qui articulo definito designandus est; cf. 58 C. τίνες οἱ παραγερόμενοι τῶν ἐπιτηδείων τῷ άνδρί 57 A. τί δὴ οὖν δὴ ἐστὶν ἅττα εἶπεν ὁ άνήρ πρὸ τοῦ θανάτου [Theaet. 168 C. πάνυ γὰρ νεανικῶς τῷ άνδρί βεβοήθηκας. Prot. 311 E. σοφιστὴν δὴ τοι ὀνομάζουσί γε τὸν άνδρα εἶναι ubi etiam de viris certis sermo institutus est]. Herm. non debuit Phaed. 98 B. asserre: προϊὼν καὶ ἀναγιγνώσκων ὁρῶ άνδρα τῷ μὲν νῦν οὐδὲν χροῖμενον. Nam quamquam Socrates hic Anaxagoram tangit, tamen rationem indefinite loquendi elegit, aequae ac nos dicimus, ich sehe einen Mann, si nolumus hominem nominare. Non raro Jahnus aliorum exemplum secutus hanc crasin in Symposion induxit; p. 189 C. scripsit ἐμοὶ δοχοῦσιν ἄνθρωποι παντάπασιν τὴν τοῦ ἔρωτος δύναμιν οὐκ ἡσθῆσθαι. Grammatica cum nos nequaquam cogat, ἄνθρωποι scribere (cf. Kr. 50, 3, 6), Bekkerus ἄνθρωποι quod optimi libri praebent, hanc ob causam in ἄνθρωποι mutasse putandus est, quod libri deterius familiae οἱ ἄνθρωποι habent. Occasionem eam legem, quae tamen an vera sit dubito, sequendi nobis praebet Cratyl. 403 B. πολλαχῇ ἐμοιγε δοχοῦσιν οἱ ἄνθρω-

ποι δημαρτηχέναι; οί om. ΓΑΠΣΥΓ quibus adde Cl.; aliquot libros οί habere e silentio Bekkeri concludendum. Magis mihi arridet crasis ἀδελφός quam Cobetus (NI. p. 326, falso Jahnus 320) Symp. 199 E. reduxit, cum in antecedentibus ὁ πατήρ et ἡ μήτηρ eodem sensu usurpata sint, vellemque hanc crasin Jahnus admisisset. p. 206 C. Jahnus cum Sauppio πάντες ἄνθρωποι pro πάντες ἄνθρωποι recepit; sed nullam necessitatem sic scribendi video. cf. Kr. 50, 11, 9. Recte autem Cobetus et Mehlerus crasin restituerunt p. 220 C., cum hic ἄνθρωποι non universe usurpaverit scriptor. Etiam 221 D. cum Sauppio malim scribere οἷος δὲ οὔτοσι γέγονε τὴν ἀτοπίαν ἄνθρωπος (pro ἄνθρ.) quam Krügeri praeceptum (§ 50, 11, 22) hoc loco adhibitum putare. Eodem modo corrigo Alcib. II. p. 150 E. ὅστις ποτ' ἐστὶν ἀνὴρ ubi ὁ ἀνὴρ scribunt; sed cum articulum Cl. et Tub. omiserint, crasis praeferenda est¹⁾. Symp. p. 206 A. legimus apud Jahnum ὥς οὐδέν γε ἄλλο ἐστὶν οὐ ἐρωσιν ἄνθρωποι ἢ τοῦ ἀγαθοῦ. Ἄρ' οὖν ἢ δ' ἢ, οὕτως ἀπλοῦν ἐστὶ λέγειν, ὅτι ἄνθρωποι τοῦ ἀγαθοῦ ἐρωσιν. Prius ἄνθρωποι, pro quo libri optimi ἄνθρωποι, libri deteriores οἱ ἄνθρωποι habent, rest. Bekk. alterum ἄνθρωποι pro οἱ ἄνθρωποι scripsit Sauppius. Sed cur crasin hic induxerit Sauppius, cum οἱ ἄνθρωποι antecedit, non intellego. Recte tractabis locum, si, cum οἱ ἄνθρ. antecedit et subsequatur, illud quod in medio est ἄνθρωποι in ἄνθρωποι mutabis; nam Platoni opinor licuit modo solutam modo contractam formam eligere.

Iam supra vidimus non semel crasin librarlis offensionis fuisse; ratio constans scribendi omnino non reperitur in libris; quod ut eluceat, Clarkiani morem vocabula crasi copulata scribendi aliquot exemplis demonstrabo. Pro καὶν vetus manus Clarkiani plerumque posuit κάιν; ubique fere reperies scriptum τούνομα, altera scriptio τοῦνομα manibus recentibus debetur. Persaepe παναντία in Clarkiano habetur; sed τὰ παντία Phileb. 39 A. Alcib. 114 D. Soph. 241 A., 259 D. Phaedr. 261 D. (Men. 71 B. τ'αναντία). In voc. τᾶλλα (quam scriptionem solam veram esse iudico) Cl. inter has scriptiones fluctuat: τᾶλλα, quod longe frequentissimum est, τ'ᾶλλα, τ'αλλα (haec praecipue in Gorgia et Menone deprehenduntur), τάλλα. Crasis ἐγῶμαι in Clarkiano duobus modis picta est vel ἐγῶμαι vel ἐγ'ῶμαι; haec scriptio reperitur Gorg. 452 B. C. Enthyd. 288 D., 295 C. et semper in Protagora; reliquis ἐγῶμαι (a prima manu). Pro καγώ creberrime nobis legentibus occurrit καγώ; sed illud m. rec. correxit Riv. 123 E.,

¹⁾ At Alcib. 123 D., ubi Cl. ὁ ante ἀνὴρ omisit, rasura nos monet, ut cum Tubingensi articulum seriemus.

135 A. Symp. 172 A. Charm. 154 D., 169 D. Theaet. 144 D., 190 A. καλός (τε) καγαθός librarius Cl. scripsit vel καλός καγαθός (veluti Gorg. 515 A. et E. 518 A. 526 A. 527 D. Lys. 207 A. Meno 92 E. 93 A. 93 C. 96 B. Euthyd. 284 D. vel καλός καγαθός (veluti Prot. 315 E. 347 D. 345 E. Lach. 186 C. 187 A. Gorg. 484 D. 511 B. Symp. 204 A. Politic. 310 E. Alcib. 125 A.) vel καγαθός (Apol. 25 A. Euthyd. 279 A.); ταληθῇ ubique fere a. I. m.; m. rec. correxit τἀληθῇ Phaedo 60 D. Apol. 18 A. 24 A. 31 E. Cratyl. 438 D.; τἀλ. Meno 75 C. et D. Gorg. 521 A.; nullam discrepantiam adnotavi Phaedo 84 D. Apol. 17 B. 22 B. Cratyl. 400 D. Euthyd. 284 A. De crasi ὦγαθέ confirmare possum omnibus locis Clarkianum scriptorem ὦγαθέ habere, si exceperis hos: Cratyl. 398 E. 401 B. 401 E. Gorg. 491 C; sed hic dubito an scriptio ὦ γαθέ antiqua sit; Cratyl. 398 E. quidem et 401 B. apostrophum recentem esse mihi plane persuasi. De hac crasi Gronius Praef. Apol. p. XV. animadvertit: „Der Zusammenziehung in ein Wort habe ich auch in der Schreibung ὦγαθέ statt ὦ γαθέ den Vorzug gegeben, weil die Auffassung als Aphaeresis und die Bezeichnung derselben doch wohl keinen Halt in der Aussprache hatte. Vielleicht wäre es am richtigsten gewesen mit Cl. 24 D. ὦγαθέ zu schreiben, wie ja auch μέντ' αὖ schon einige Geltung gefunden hat. Wäre nur in dieser Hinsicht die diplomatische Grundlage umfassender und zuverlässiger! Recte recepit Gronius ὦγαθέ pro ὦ γαθέ quod Herm. dedit; sed quae disputavit prorsus falsa sunt, neque enim fieri potest, ut, cum crasi duo vocabula in unum coalescant, novum verbum duos accentus accipiat; persuasit mihi (et cui non persuadebit?) H. L. Ahrens (De Crasi et Aphaeresi Stolbergae 1845) statuens p. 3, cum crasi duorum vocabulorum vocales in unam syllabam coeant, haec: *Una syllaba non potest nisi uni accentui parere, unde necessario colligitur, ipsas voces per crasin copulatas communi accentu regi.* Causa autem scriptiōnis ὦγαθέ haec statuenda esse videtur; ὦ et ἀγαθέ arctissime cohaerent; crasi igitur copulari possunt (cf. Sorof, de augmento in trimetris tragicis abiecto, praemissa de crasi, elisione, aphaeresi quaestione p. 4 Not. 3); ubi autem id poterit fieri, crasis, non aphaeresis inducenda erit; nam me consentientem habet Ahrens disputans l. c. p. 28 hoc modo: „Satis ex iis quae de aphaeresis historia disputavimus, elucet ut crasin elisione, ita aphaeresin crasi paulo violentiorem esse. Itaque hanc legem statuimus, ut *crasis aphaeresi praeferatur, ubicumque utraque fieri posse videatur.*“ Ut Herm. Meno 77 C. ὦριστε scripsit, sic etiam debuit scribere ὦγαθέ. Eadem inconstantia Herm. scripsit τᾶν, sed μέντ' αὖ. Elisio hic non admitti potest, cum e scrip-

toribus nullum exemplum possis proferre, ubi ante alia verba τοι elisum sit. Itaque nemo est, qui non sibi persuadeat, τοι habere impetum cum ἄν (et ἄρα) coalescendi¹⁾ vel potius ἄν (et ἄρα) habere impetum cum τοι coalescendi. (cf. Ahrens p. 5.)

Protag. 330 C. tradidit nobis pro καὶ ἐμοί Cl. καὶ μοι, in cuius locum H. Sauppe substituit καὶ μοί. Scire velim, nam ubique pro καὶ μοι, καὶ με Sauppe formas contractas reponendas censeat. Vereor ne multitudo exemplorum nos vetet legem observare, cuius vix satis idoneam causam cogitare queas cf. Apol. 25 A. καὶ μοι ἀπόκριναι. ibid. 21 E. Theaet. 144 D. καὶ μοι χέλευε. Lys. 204 E. καὶ μοι ἴθι ἐπίδειξαι. Phileb. 25 B. καὶ μοι δοξῇ. Politic. 277 A. καὶ μοι. Lys. 203 B. καὶ με. 204 E. καὶ μοι. Soph. 237 B. καὶ μοι λέγε. cll. 235 B. Accedit Phileb. 18 A. ubi Cl. καὶ μοι pro καὶ ἐμοί habet. Comparari potest καὶ ἄν (= καὶ ἐάν) quod cave contrahas in καὶ ἄν. cf. Cratyl. 384 D. καὶ ἄν αὐθίς γε ἕτερον μεταθῆται, ἐκεῖνο δὲ μηκέτι καλῇ, οὐδὲν ἥττον τὸ ὕστερον ὀρθῶς ἔχειν τοῦ προτέρου. ibid. p. 425 B. καὶ ἄν σμικρὸν τι αὐτῶν αἰοί τῶμεν κατὰ δὲ. Theaet. 181 A. καὶ ἄν μὴ πῃ ἀμυνόμενοι διαφύγωμεν. Phaedo. 80 D. καὶ ἄν σαπῇ. Phaedo 71 A. ἄν τι χειρόν γίγνηται, οὐκ ἐξ ἀμείνωνος, καὶ ἄν δικαιότερον, ἐξ ἀδικωτέρου. Haec exempla tuebuntur quod Cl. habet Symp. 209 B. καὶ ἄν ἐντύχη pro καὶ ἐάν ἐντύχη.

Cobetius negat (N. L. p. 603) καλὸς καὶ ἀγαθός hac Photii glossa nissus: καλὸς καὶ ἀγαθός λέγεται κατὰ συναλειφήν, οὐχὶ καλὸς καὶ ἀγαθός. Res incredibilis; nam praeter exempla supra allata etiam haec tibi propono: Alcib. 123 C. καλοὺς καὶ ἀγαθοὺς. Lys. 205 E. καλῶν τε καὶ ἀγαθῶν. Charm. 154 E. καλὸς καὶ ἀγαθός. Theaet. 142 B. καλόν τε καὶ ἀγαθόν. Euthyd. 271 B. καλὸς καὶ ἀγαθός. Cl. etiam alteram respuit

1) Sors huius rei hanc interpretationem attulit l. c. p. 7. Quodsi τοι aliis cum vocibus vix ista ratione coniuncta invenietur, causam huius rei afferri oportet eamque vi et notione illarum particularum contineri puto. Nam cum τοι ita tantum dicatur, ut ex toto sententiarum nexu rem quandam propter alteram necessario fieri appareat, τοι ad praegressum potius verbum respicit neque cum sequenti ita potest contingi, ut tanquam huius solius sit proprium. Quamobrem iis tantum cum vocibus unum efficit vocabulum, quae eandem fere notionem praebentes non nisi ad consecutionem illam amplius significandam inserviant; cuiusmodi est ἄρα quod hac de re saepissime pro τοι collocatur, ita cum eo etiam coalescere possit. Et quia ea re quae ex illa oriatur, hanc ipsam esse debere comprobatur, τοι causam quoque indicare potest, quapropter vel cum γάρ unam efficit vocem. Ἄν vero quom non minus cohaerentiam quandam sententiarum indicet, ita ut altera sine altera constare nequeat, hoc in nexu non minus frequenter poni debere consentaneum est, unde τὰν et μετὰν ortum est. (?)

legem quam Cobetus sibi effinxit; N. L. p. 747 enim dicit: ὅσατε, inquit, Attici solebant dicere ut ὅσημέραι et ὅσωραι: sed divisim ὅσοι μῆνες. At Cl. Charm. 176 D. nobis praebet ὅσαι ἡμέραι (sic.).

Praeceptum quod Kr. II. § 14, 2, 1 proposuit „der Artikel gehört nicht nothwendig zu dem Worte, mit dem er eine Krasis bildet“, confirmatum videmus Politic. 305 C. ubi o Cl. restituimus τᾱλλήλων ἐγκλήματα et Soph. 222 A. τᾱν τούτοις ζῶα, τᾱν τούτοις θρέμματα.

καὶ et καὶ in libris persaepe mutantur cf. p. 95. Sic Cratyl. 417 A. legimus καὶ pro καὶ; item Symp. 196 E. pr. m. καὶ pro καὶ habet. Inde loci multi corrigendi sunt; veluti Prot. p. 327 C. Sauppius ὧου καὶ pro αἰου καὶ proposuit cf. supra p. 78. Eodem modo nobis hi loci emendandi esse videntur: Lys. 208 E. ἀλλὰ καὶ τυπτοίμην ᾗν εἰ τυπτοίμην ᾗν om. Cl. Particula non potest deesse; scribendum igitur καὶ pro καί. Alcib. II. 151 C. δοκῶ δέ μοι οὐκ ἐν ἐλάττονι κλύδωνι τοῦ Κρέοντος εἶναι καὶ βουλοίμην ᾗν καλλίνικος γενέσθαι τῶν σῶν ἐραστῶν. P. ᾗν om. Cl. Tab. Scribe καὶ.

Sed satis de crasi; usum eius Platonium exempla a me collecta possunt demonstrare; in quibus colligendis si me forte hic illic locus fugerit (verbis Benseleri libro de hiatu praemissis uter), imbecillitati humanae id condona. Nunc aptum esset, de aphaeresi, de elisione, de hiatu denique apud Platonem disputare, nisi has res mihi in aliud tempus reservassem. Hic duas observationes proferre libet: Post consonantem ubique fere Plato ἐθέλειν adhibuit, Cl. hos locos solos discrepantes habet: Apol. 41 A. πολλάκις θέλω. Phaedr. 249 B. ὃν ᾗν θέλη; etiam post vocalem Plato multo saepius ἐθέλειν (si o Clark. concludere licet) adhibuit quam θέλειν: Cl. his locis brevior forma usus est: Phaedo 77 C. εἰ θέλετε ibid. 115 B. μὴ θέλητε. Symp. 190 D. μὴ θέλωσιν. Crito 45 A. ὃ θέλουσι. Res est dubia his locis: Phaedr. 230 D. οὐδὲν μεθέλει. Symp. 192 E. ἐπιθυμεῖτε, θέλω. Charm. 165 B. δὲ θέλω. Notae Meieri legi (Op. I p. 171) adversantur haec exempla: Theaet. 151 D. εἰ θεός ἐθέλη. Phaedo 69 D., 80 D. Alcib. 127 E. — Hiatus in Clarkiano multo saepius admissus est quam in nostris editionibus quae res in recensione futura non omittenda erit, quod uno exemplo demonstrabo: Gorg. 461 C. nunc scribunt τοῦτο ὃ; pro quibus Cl. tradidit τοῦτο. Luce clarius est scribendum esse τοῦτο ὃ, Idem vitium Men. 74 D.; ibi τοῦτο ὃ repraesentant, cur aliter agunt in Gorgia? Eodem modo intercudit ᾗ post τᾱλλα Lys. 220 E.

§ 24.

Crito 44 D. εἰ γὰρ ὄφελον, ὡς Κρίτων οἰοί τε εἶναι οἱ πολλοὶ τὰ μέγιστα κακὰ ἐξεργάζεσθαι, ἵνα οἰοί τε ἦσαν αὐτὸ καὶ ἀγαθὰ τὰ μέγιστα, καὶ καλῶς ἂν εἶχε· νῦν δὲ οὐδέτερά οἰοί τε. Clark. Tub. ἐργάζεσθαι pro ἐξεργάζεσθαι; ac quamquam antecessit ἐξεργάζεσθαι, tamen verbum simplex hoc loco ex his duobus libris restituendum; nam saepissime fit apud Platonem, ut verbum simplex verbo composito, verbum compositum verbo simplici excipiat. cf. Rep. I 336 E. εἰ γὰρ ἐξαμαρτάνομεν ἐν τῇ τῶν λόγων σχέσει ἐγὼ τε καὶ ὄδης, εὖ ἴσθι ὅτι ἄκοντες ἁμαρτάνοιμεν. Gorg. 473 E. ἄλλο αὐτοῦτο εἶδος ἐλέγχου ἐστίν, ἐπειδὴν τίς τι εἴπῃ, καταγελαῦν, ἐλέγχειν δὲ μή; — Οὐκ οἶμαι ἐξεληλέγχθαι. Prot. p. 328 E. δῆλον ὅτι Πρωταγόρας ῥαδίως ἐπεκδιδάξει, ἐπειδὴ καὶ τὰ πολλὰ ταῦτα ἐξεδίδαξε. Crat. 399 A. πολλάκις ἐπεμβάλλομεν γράμματα. B τοῦναντίον ἐμβάλλομεν γράμματα. 414 C. ἐμβεβλήσθαι — D. ἐπεμβάλλοντες. Theaet. 157 D. ἕως ἂν εἰς φῶς τὸ σὸν δόγμα ξυνεξαγάγω· ἐξαχθέντος δὲ τότε ἤδη σέψομαι. Euthyd. 281 C. ἐξαμαρτάνοι — ἁμαρτάνων. Alia exempla attulit Hermann praef. Vol. I p. VIII, Deinde om. Cl. Tubing. αὐτὸ, quod velim deleatur, cum καὶ prorsus satisfaciatur. Tum verba καὶ καλῶς ἂν εἶχε cum Cobeto suspecta habeo (V. L. p. 104); sed adversor ei τὰγαθὰ pro ἀγαθὰ scribenti.

E. Cl. Tub. ordine verborum mutato recipe 48 D. πάντα ταῦτα. 53 A. καὶ ἡμεῖς οἱ νόμοι. 54 B. πάντα ταῦτα. Euthyph. 14 A. πάντα ταῦτα.

Apol. 30 D. ἀλλὰ ταῦτα οὗτος ἴσως οἶεται καὶ ἄλλος τίς που μεγάλη κακὰ, ἐγὼ δ' οὐκ οἶομαι. Stallb. Bekk. οὗτος μὲν. Turicenses omis. μὲν, fortasse, quod putabant μὲν optimos libros non tueri; nam Bekk. adnotavit: μὲν add. E CDST et re. B.; Gaisfordius tacet. Sed Clark. vidi habere μὲν post οὗτος mirorque quod Riddel nihil adnotavit. Non potest esse dubium, quia μὲν reducendum sit.

Ibid. p. 19 D. καὶ ἐκ τούτου γνώσεσθε ὅτι τοιαῦτ' ἐστὶ καὶ τὰλλα περὶ ἐμοῦ· ὃ οἱ πολλοὶ λέγουσιν. Stallb. dedit ἐκ τούτων quod cum Clarkianus tucatur, id quod ignorasse videntur editores, verum esse censeo.

Ibid. p. 27 B. ἔσθ' ὅστις ἵππους μὲν οὐ νομίζει εἶναι, ἵππικὰ δὲ πράγματα; ἢ αὐλητὰς μὲν οὐ νομίζει, αὐλητικὰ δὲ πράγματα; Clark. εἶναι post οὐ νομίζει om. in interrogatione priori, sed add. post οὐ νομίζει in interrogatione altera. Scribendum igitur: ἔσθ' ὅστις ἵππους μὲν οὐ νομίζει, ἵππικὰ δὲ πράγματα; ἢ αὐλητὰς μὲν οὐ νομίζει εἶναι, αὐλητικὰ δὲ πράγματα;

Euthyphro 10 D. τί δὴ οὖν λέγομεν περὶ τοῦ ὁσίου, ὦ Εὐθύφρων; ἄλλο τι φιλεῖται ὑπὸ τῶν θεῶν πάντων ὡς ὁ σὸς λόγος; Hermann Praef. p. VII: ὑπὸ τῶν θεῶν Clark. et Vulg. ὑπὸ θεῶν Bekk. Stallb. Turic. Errat vir clarissimus; iam Gaisford adnotavit τῶν hoc loco abesse a Clarkiano, id quod ego confirmare possum. Accedit ut τῶν etiam in Tubingensi, ut et ipse vidl, desit. Ac cum articulum posse deesse grammatici nos doceant (cf. Kr. 50, 11, 9) et Plato ipse infra 11 A. φιλεῖσθαι ὑπὸ πάντων θεῶν dixerit, nostrum est, articulum ab Hermanno interpolatum iterum eicere.

Ibid. 10 C. ἄρα κατάδηλον ὦ Εὐθύφρων ὅτι βούλομαι λέγειν; βούλομαι δὲ τόδε ὅτι εἴ τι γίγνεται ἢ τι πάσχει τι, οὐχ ὅτι γιγνόμενόν ἐστι, γίγνεται, ἀλλ' ὅτι γίγνεται, γιγνόμενόν ἐστιν· οὐδ' ὅτι πάσχον ἐστί, πάσχει, ἀλλ' ὅτι πάσχει, πάσχον ἐστίν· ἢ οὐ ἐυγχωρεῖς οὕτως; Ab una interpolatione liberavit locum Herm. cum secutus auctoritatem Clarkiani εἴ ante ἢ extrusit; alteram nobis reliquit extrudendam; Cl. enim et Tubingensis omittunt τι post πάσχει; quare scribendum censeo εἴ τι γίγνεται ἢ τι πάσχει; οὐχ κ. τ. λ.

Ibid. 15 B. μέμνησαι γάρ που ὅτι ἐν τῷ ἔμπροσθεν τό τε ὅσιον καὶ τὸ θεοφιλὲς οὐ ταῦτόν ἡμῖν ἐφάνη, ἀλλ' ἕτερα ἀλλήλων· ἢ οὐδὲ μέμνησαι; Frustra conantur οὐδὲ hic explicare. Ut alii libri, etiam Cl. Tubingensis οὐ praebent quod solum verum habendum est. cf. 6 D. ἢ οὐ μνημονεύεις; Euthyd. 289 A. ἢ οὐ μέμνησαι;

Ibid. 12 A. καὶ μὴν νεώτερος γέ μου εἴ οὐκ ἔλαττον ἢ ὅσω σοφώτερος. Cl. et Tub. pro ἔλαττον habent ἐλάττονι quod nulla est causa cur respuamus.

Ibid. 4 B. ἔστι δὲ τῶν οἰκείων τις ὁ τεθνεὺς ὑπὸ τοῦ σοῦ πατρός· ἢ δῆλα δὴ· οὐ γάρ ἂν ποῦ γε ὑπὲρ ἀλλοτρίου ἐπεξήρισθα φόνου αὐτῷ. Hermann ἔστι δὲ Vulg. et Clark., ἔστι δὲ δὴ Bekk. Stallb. Turic.; at δὴ sequenti demum membro convenit. Falso; primum Clark. (et Tubingensem addere potes) δὲ δὴ tuetur; deinde non video, cur huic membro non conveniat δὴ; cf. 3 E. ubi Socrates incipit his verbis: ἔστι δὲ δὴ τοι ὦ Εὐθύφρων, τίς ἡ δίκη; φεύγεις αὐτὴν ἢ διώκεις;

Ibid. 6 D. ΣΩ. οὐ γάρ με ὦ ἑταῖρα τὸ πρότερον ἱκανῶς ἐδίδαξας ἐρωτήσαντά το ὅσιον εἴ ποτ' εἶη, ἀλλὰ μοι εἶπες, ὅτι τεῦτό τυγχάνει ὅσιον ὤν, ὅ σὺ νῦν ποιεῖς, φόνου ἐπεξιὼν τῷ πατρί. ΕΥΘ. Καὶ ἀληθῆ γε ἔλεγον ὦ Σόκρατες. ΣΩ. ἴσως. ἀλλὰ γάρ ὦ Εὐθύφρων καὶ ἄλλα πολλὰ φῆς εἶναι ὅσια. ΕΥΘ. Καὶ γάρ ἐσιν ὅσια.

Clark. om. ὅσα post εἶναι; add. post. ἐστίν. Cum ὅσα post εἶναι nullo modo deesse possit, transpones ὅσα quod Cl. post ἐστίν habet, in hunc locum, ita ut haec lectio evadat: ἀλλὰ γὰρ ὡς Εὐθύφρων καὶ ἄλλα πολλὰ φησὶ εἶναι ὅσα: Καὶ γὰρ ἐστίν.

§ 23.

Gaisfordius quod in *Lectionibus Platoniciis* e Clarkiano libro excerptis hunc librum non descripsit, cum accurata descriptio ei qui libro recte uti velit maxime necessaria sit, omnes qui in Platonis dialogos laborem atque operam impendunt valde doluisse certo scio. Quod omisit anno 1820 Gaisfordius, id ego qui post eum anno 1870 iterum totum codicem excuserim, supplere mecum statui. Sed antequam rem adgrediamur, qualia fata habuerit liber ille singularis, Clarkium celeberrimum eius inventorem secuti (*Travels in various countries of Europe, Asia and Africa by Edward Daniel Clarke ed II 1813*) exponamus. Ac primum quidem secundum Clarkium illustremus, quae eum causa impulerit ut Patmon peteret. Refert autem l. c. Vol. II Sect. I p. 210 haec:

A poor little shopkeeper in Cos was described by the French Consul as possessor of several old books. We therefore went to visit him and were surprised to find him in the midst of his wares with a red night-cap on his head, reading the *Odyssey* of Homer in manuscript. This was fairly written upon paper with interlineary criticisms and a commentary in the margin. He had other manuscript volumes containing works upon rhetoric, poetry, history and theology. Nothing could induce him to part with any of these books. The account he gave was that some of them were copies of originals in the library at Patmos (among these I observed the *Apocalypse* with a Commentary); and that his father had brought them to Cos. They were intended, he said, for his son, who was to be educated in the Patmos monastery.

His pauperis hominis verbis permotus Clarkius consilium cepit insulam Patmon adire, si forte ibi libros manuscriptos reperiret illucque advenit cum sociis Oct. 1801. Ad hanc insulam qui appellant, eos tria advertant, primum antrum illud nobile, in quo Joannes apostolus vixisse fertur (antrum ἀποκαλύψεως vocatum), deinde monasterium quod in summo monte situm castelli instar insulae imminet, denique schola supra antrum sita cui monachi praesunt (cf. de his rebus disserentem Guérin, *la description de l'île de Patmos et de l'île de Samos*. Paris 1856 p. 50, 55, 47.).

Clarkius eiusque comites statim monasterium adierunt atque petierunt a Superiore ut sibi ostenderet bibliothecam. Is morem gessit petentibus. Sed potius Clarkium audiamus rem hoc modo narrantem (p. 40):

We entered a small oblong chamber having a vaulted stone roof and found it

to be nearly filled with books of all sizes in a most neglected state; some lying upon the floor a prey to the damp and to worms; others standing upon shelves, but without any kind of order. The books upon the shelves were all printed volumes; for these being more modern were regarded as the more valuable and had a better station assigned them than the rest, many of which were considered only as so much rubbish.

Omissis his quae non ad rem pertinere videntur Clarkii verba inde a p. 42 exscribamus:

At the extremity of this chamber which is opposite to the window, a considerable number of old volumes of parchment, some with covers and some without, were heaped upon the floor in the utmost disorder; and there were evident proofs that these had been cast aside and condemned to answer any purpose for which the parchment might be required. When we asked the Superior what they were, he replied turning up his nose with an expression of indifference and contempt. Χειρόγραφα. It was indeed a moment in which a literary traveller might be supposed to doubt the evidence of his senses; for the whole of this condemned heap consisted entirely of Greek Manuscripts and some of them were of the highest antiquity.

The author (narrare pergit Clarkius) continued to inspect the heap; and had soon selected the fairest specimen of Grecian calligraphy, which has descended to modern times. It was a copy of the twenty-four first Dialogues of Plato written throughout upon vellum in the same exquisite character; concluding with a date and the name of the calligraphist. The whole of this could not be ascertained at the instant. It was a single volume in folio, bound in wood. The cover was full of worms and falling to pieces; a paper label appeared at the back inscribed in a modern hand Διαλογοὶ Σωκράτους: but the letters of Plato's name separated by stars appeared very distinctly as a head-piece to the first page of the Manuscript.

Clarkius cum librum pretiosum detexisset, nihil antiquius habuit, quam ut cum aliosque libros manu scriptos emeret a monachis qua in re eius operam maxime sublevavit Riley, natione Britannus. Quomodo autem libri empti in possessionem Clarkii venerint, ipse his verbis narrat:

The whole of Sunday October the eleventh was passed in great anxiety, being the day on which the Superior of the Monastery had engaged to send the remaining Manuscripts purchased by the author from the library. Mr. Riley had left Patmos for Constantinople; and we began to fear, as the evening approached, that his absence might become the pretext for a breach of contract on the part of the monks. Towards sunset being upon the deck of our calque and looking towards the mountain we discerned a person coming down the steep descent from the Monastery towards the port: presently as he drew near, we perceived that he had a large basket upon his head and that he was coming towards the quay opposite to the spot where our vessel was at anchor. Upon his arrival we saw him making signs for a boat: and we sent to him the little skiff belonging to our calque. As he came alongside, he said aloud, that he had brought the bread ordered for us in consequence of our letter from the Capudan Pascha; but coming upon deck he gave a significant wink and told us the Superior desired that we would empty the

basket ourselves and count the loaves to see that all was right. We took the hint and hurried with the precious charge into our birth, where having turned the basket bottom upwards we found the Manuscript of Plato, the Poems of Gregory, the work of Phile with the other Tracts, the two volumes containing the Greek Musical Notes and the volume of Miscellanies containing the Lexicon of St. Cyrill: these we instantly concealed beneath a mattress in one of our cots; and making a grand display of the loaves returned with the basket upon deck giving a handsome present to the porter and desiring he would inform the Superior with our most grateful acknowledgments that all was perfectly right. Having set him again on shore we gave orders to our Captain to have every thing ready for sailing the next morning and to stand out of the port as soon as after sunrise as possible, intending to leave Patmos.

Die igitur XI mensis Oct. a 1801 liber pretiosus barbarorum manibus ereptus est. Is quomodo in insulam Patmon translatus sit, nescimus; hoc unum exploratum habemus saeculo XVI iam in monasterio insulae Patmi eum fuisse. Codex enim Vaticanus 1205 saec. XVI exhibet fol. 82 r. πίνακα τῶν ἐν τῇ σεβασμίᾳ μονῇ τῆς Νήσου Πάτμου ἀξιολογωτέρων εὐρισκομένων βιβλίων (Guil. Studemundus eum cum hominibus doctis communicavit Philol. vol. XXVI. p. 168) in quo Nro. νς' indicantur: Λόγοι Σωκράτους ὧν ἡ ἀρχὴ, Εὐθύφρων ἡ περὶ ὁσίου, „τί νεώτερον ὦ Σώκρατες“, ἄρι (pro ἄχρι) τοῦ μένων ἡ περὶ ἀρετῆς „ἔχεις μοι εἰπεῖν“.

A Clarkio liber Platonius traditus est Porsono philologo nobilissimo in eiusque manibus mansit usque ad d. XXV. Sept. 1808, quo die virum doctissimum e vita excessisse notum est (cf. Clarke l. c. p. 46 Not. 1). Porsoniani usus aeterna vestigia libro impressa sunt, de qua re infra dicemus.

Anno 1809 liber Clarkianus transmigravit Oxonium in bibliothecam Bodlejanam, ubi nunc sedem habet firmam fixamque. Eo enim anno codices quos Clarkius ex itinere per varios Europae, Asiaeque tractus instituto redux secum advexerat, pecuniis Academicis coempti (1000 LL) in bibliotheca Bodlejana repositi sunt (cf. *Macray, Annals of the Bodleian Library* p. 215). Codicum graecorum et latinorum catalogum confecit T. Gaisford (*Catalogus sive Notitia Manuscriptorum qui a Cel. E. D. Clarke comparati in bibliotheca Bodlejana adservantur. Pars prior. Interuntur scholia quaedam inedita in Platonem et in Carmina Gregorii Nazianzeni. Oxonii 1812*); partem posteriorem, manuscriptos Orientales complectentem, composuit Alexander Nicoll 1815. In catalogo Gaisfordii liber Clarkianus Nr. 39 habet quem numerum hodie gerit.

Codicem primus contulit Thomas Gaisford; ipso manu eleganti in interiore latere tegumenti inscripsit: *Totum hunc codicem ad edit. H.*

*Stephani diligenter contuli T. G. 31. Aug. 1813. Primo varietatem lectionis mensium aliquot labore a se excerptam in Catalogo librorum Clarkianorum cum hominibus doctis communicare volebat; sed re diu perpensa collationem istam in maius quoddam opus aliquando proditurum reservare decrevit. Prodiit igitur collatio codicis Clarkiani in libello peculiari, qui hoc modo inscriptus est: *Lectioes Platonicae. E membranis Bodleianis eruit Thomas Gaisford. Accedunt Ricardi Porsoni Annotata ad Pausaniam. Oxonii 1820.* Quam rationem Gaisford in conferendo libro secutus sit, ipse his verbis (Praef. III) describit: *Sumpto in manus Stephanicae editionis exemplo varietates qualescunque, etiam levissimas enotavi, certe enotare volui, spirituum, accentuum, librarii notarum, diligenti observatione facta. Neque tamen inficias iverim minulias quasdam me nonnunquam omisisse: v. g. per aliquot dialogos finalis v additionem vel detractionem memorasse contentus, in ceteris fere semper praetermisi; interpunctionem non nisi raro attingi; sed accentus et spiritus propterea curiosius persecutus sum, quod eorum absentia corruptelae suspicionem plerumque innuit. Sed in re altera quoque eaque graviori Gaisford minus diligens fuit, de qua Wohlrab Proleg. Theaet. p. 38 haec scribit: Clarkianum, inquit, a nonnullis correctum et auctum esse e Gaisfordii lectionibus satis apparet neque tamen quisquam quot sint manus corrigentium distinxit. Quod sane magnopere dolendum est, cum ita quid singulis manibustribuendum sit iudicari nequeat. Neque melius de scholiis nos G. edocuit; quae erant tum inedita, ea descripsit in Catalogo (p. 70 — 93); in Lectionibus dedit collationem scholiorum cum editione Ruhnkenii. Sed cum vir doctus omiserit adnotare, quae scholia edita in codice extent, illa scholia in quibus nulla varietas lectionis adnotata est, plane nescimus utrum codex habeat necne, illorum vero scholiorum, quae lectionis discrepantiam habent nescimus quantum habeat Cl. Gaisfordius ipse hanc suam incuriam sensit: „Non esset, inquit, inutile, si ubique monuissem de singulis scholiis editis extent in codice nostro necne: hoc in prioribus quibusdam dialogis feci, in reliquis vero minus diligens fui.“ Accedit, ut G. nusquam fere quidquam adnotaverit de aetate et manu eorum qui scholia scripserunt; id quod etiam valde dolendum est.**

Post Gaisfordium diu neglectus iacuit codex; recentiori demum aetate aliquot dialogi denuo explorati sunt. Veluti Benjamin Jowett in usum Ottonis Jahni Symposium contulit, qua collatione nos multo accuratiorem dedimus supra. Eum insecuti sunt Campbell et Riddell; ille profitetur se Theaetetum, (Praef. ad *The Theaetetus of Plato* Oxford 1861 p. VII) et

Sophistam Politicumque (The Sophistes and Politicus of Plato Oxf. 1867 Praef. p. 8 „the MS. has been consulted afresh“) contulisse; sed mihi persuasi (cum hominibus quibusdam doctis Britannis) id quod etiam verba exscripta indicare videntur, Campbellium hos dialogos non accurate contulisse sed potius hic illic inspexisse¹⁾. Aliquanto melius rem gessit James Riddell in Apologia, (The Apology of Plato Oxf. 1867); hic saepius res quas dicunt leves adnotatas reperies, sed nequaquam omnes quas desideres²⁾. Campbell igitur et Riddell eligendi lectiones libidini magis quam studio eas fideliter describendi indulgebant. A quibus multum discēssit J. Bywater homo magnae diligentiae, magni ingenii, cum Phaedonem in usum Guilelmi Wagneri conferret, qui lectiones enotatas adiecit suae editioni Phaedonis (Plato's Phaedo by Wilhelm Wagner Cambridge 1870)³⁾. Haec collatio laudabili industria atque diligentia confecta est; et si vitii non caret, causa inde petenda est, quod Bywater antea nullum librum manu scriptum contulerat. Itaque cum ad hunc dialogum postquam omnes perscrutatus sum, accesserim, non nulla inveni a Bywater vel omissa vel minus accurate enotata. In ceteris editionibus Anglicis Platonis dialogorum nulla ratio habita est libri Clarkiani; ne Poste quidem, quamquam Oxonii vivebat; antequam ederet Philebum (The Philebus of Plato by Edward Poste Oxford 1860) Clarkianum librum inspexit; quam ob rem maxima sane vituperatione est dignus.

Vitia indicata eorum qui ante me in conferendo libro Clarkiano versati sunt ut vitarem, ego cum denuo eum excuterem, haec quinque mihi observanda esse duxi:

- 1) Omnis discrepantiae vel levissimae rationem habebam.
- 2) Diligentissime observabam, quid a manu I profectum esset, quid manus aliae vel novassent vel supplerent.
- 3) Has manus vel corrigentes vel supplentes accurate distinguere studebam.
- 4) Scholiae quae haberet Cl., sedulo exemplari meo adscribebam.
- 5) Etiam in scholiis ubicunque fieri potuit manus et aetates librariorum discernere conabar.

¹⁾ Et si forte Theaetetum totum perlegit, non omnia adnotata in editione huius dialogi exscripsisse iudicandus est.

²⁾ Etiam Critonem, Phaedonem Symposion Riddell comparasse Edwin Palmer qui post eius mortem Apologiam indicatam edidit, nos docet (l. c. p. XXXIV); hae vero collationes non sunt editae in lucem.

³⁾ Vellem W. Wagnerus in scriniis retinisset librum, dum accepisset illas lectiones; potuit tum textum quem vocant lectionum Clarkianarum ope constituere.

Haec sunt fata Clarkiani; superest ut librum quam accuratissime describamus.

Platonis dialogis folia duo aliquanto minora praemissa sunt, quae quando inserta sint, nescio. Ea manu multo recentiori atque inelegantiori scripta sunt. Haec duo folia pertinent ad Aristotelis librum περὶ φυσικῶν ἀκροάσεων; prius incipit a verbis μένειν ὅτι μὲν οὖν et exit in ταύτων δέ. (I. c. 6. 7 p. 13 v. 5 — p. 15, v. 5 Bekker); alterum incipit a διαλῦσαι et exit in ἀμφοτέροι γάρ (I. c. 2. 3, p. 2, v. 2 infr. — p. 5, v. 1 Bekker). Margini eorum scholia adscripta sunt. Haec duo folia cum Bekkeri editione comparavimus infraque lectionis varietatem adscribendam curavimus:

Folium prius.

p. 13 v. 5 μέγαν.
 7 πῶς ἢ πυκν.
 8 π post ποιῶν deest.
 8 αὐτῇ.
 10 τί.
 14 ὑποθήσει.
 15 οὐδενός.
 15 ταναντα.
 16 λέγεσθαι τινός.
 18/19 φάμεν perforatum.
 19 οὐσία infra foram.
 20 μή. (η ex corr.)
 22 μέλλοι.
 23 τί.
 23 ὡς πέρ.
 24 pro ἢ πῶρ MS. ἢ γῆν.
 25 καὶ γῆ desunt.
 26 μετ' μ in ras ex corr.
 26 ἐστί.
 26 καὶ deest.
 27 Inter ἀλόγως et ποιῶσιν foramen, ut o et lineola literae π desit.

p. 14 v. 2 τοῖς in corr.
 4 ἔλλον. η̄ intercidit.
 6 ab ἀρχαὶ incipit fol. 4 b.
 8 τῶν δέ.
 8 ὕστερον τινός.
 14 ἐκατέροις.
 15 γενναν.
 15 δύο οὔσαι desunt.
 19 ἐν deest.
 20 ἐστὶ.
 20 τε | δέ.
 22 δύο.
 24 ἡμεῖς γε.
 26 ἴδια.
 26 γάρ τε.
 27 ἐξ ante ἐτέρου deest.
 29 τὸ ante γίνεσθαι.
 p. 15 v. 3 γίνεται.
 4 γίνεται.
 4 γινόμενον.
 5 γίνεσθαι.
 5 ante μουσικὸν ἀνθρώπων add. MS. ἢ μουσικὸν ἢ. Post τούτων δέ folii finis est.

Folium alterum.

Bekk. p. 2 v. 2 infr. διαλῦσαι.
 p. 3 v. 2 αὐτούς.
 3 δ'οἶκ.
 6 τὰ πάντα | ἅπαντα.
 6/7 μίαν δέ πάντα.

7 οἶον | ἢ.
 8 τῶν. v foram.
 8 τί.
 9 τί.
 10 καὶ deest ante οὐσία.

p. 3 v. 10/11 καὶ ποῖόν καὶ
ποσόν.

11 εἶτα.

12 ἀπάντα.

12 εἶτα.

14 οὐδέν.

p. 3 v. 15 γάρ | δι.

15 λέγεται τῆς οὐσίας.

16 φησίν.

16 ἀρά τι.

17 ἀπειρον ἢ πάθος εἶναι

ἢ ποιότητα, οὐκ.

19 ἄτα.

20 οὐκ. x foramen.

23/4 λέγεται deest.

24 καὶ αὐτὸ τὸ ὄν.

24/5 ἐν εἶναι.

26 τι.

Post μέθυ incipit fol. 2b

27/8 ἀπειρα.

p. 4 v. 5 αὐτοῖς.

5 οὐδέν.

7 φησίν.

10 ταυτὸν.

11 εἶναι non post κακῶ, sed post
μη ἀγαθῶ positum.

12 ταυτὸ.

14 τοιῷδι.

15 ταυτόν.

15 ὕστερον.

Post ὕστερον insequuntur verba

καθάπερ καὶ οἱ ἀρχαῖοι μὴ ποτε

συμβαίνειν αὐτοῖς ἀμα τὸ αὐτὸ ἐν

καὶ πολλά.

18 ὁ deest.

19 λελευκισμένος.

19 ἵνα μὴ τὸ ἔστι.

25 τὸ αὐτὸ.

25 ἐν καὶ.

26 τὰ ἀντικείμενα.

26 ἐν | ὄν.

p. 5 v. 1 ἀποδεικνύουσι.

Post ἀμφότεροι γάρ finis folii II.

Insequuntur folia, quibus Platonis dialogi XXIV (= sex tetralogiae) continentur; librarius codicis dialogos distinxit numeris in sinistra marginis parte positis, tetralogias numeris supra titulum dialogi a quo tetralogia incipit pictis. Id iam Porsonus hac nota in interiore latere tegumenti elegantissime inscripta observavit: *Idem scriba qui totum codicem exaravit, tetralogias et dialogos numeravit.* Tetralogiarum numeri omnes servati sunt; at dialogorum numeri complures evanuerunt aut interciderunt veluti α (Enthyphro), γ (Crito). Indicem et dialogorum et plagularum confecit idem Porsonus; ambo extant in folio insertis foliis antecedenti.

Indicem dialogorum quamquam is in Gaisfordii catalogo extat, tamen cum hic catalogus vix sit in multorum manibus, hic libet repetere scilicet correctum et auctum.

I. (α) Tetralogia.

α. fol. 1a. Π*Λ*Α*Τ*Ω*Ν*Ο*Σ.¹⁾ εὐθύφρων ἢ περὶ ὁσίου. παι-
ρασιχός; fol. 7b post finem dialogi adscripta sunt εὐθύφρων ἢ περὶ

¹⁾ Atramentum in hoc vocabulo plane evanuit; incisiones literarum solae supersunt.

Haec sunt fata Clarkiani; superest ut librum quam accuratissime describamus.

Platonis dialogis folia duo aliquanto minora praemissa sunt, quae quando inserta sint, nescio. Ea manu multo recentiori atque inelegantiori scripta sunt. Haec duo folia pertinent ad Aristotelis librum περὶ φυσικῶν ἀκροάσεων; prius incipit a verbis μένειν ὅτι μὲν οὖν et exit in τούτων δέ. (I. c. 6. 7 p. 13 v. 5 — p. 15, v. 5 Bekker); alterum incipit a διαλῦσαι et exit in ἀμφοτέρω γάρ (I. c. 2. 3, p. 2, v. 2 infr. — p. 5, v. 1 Bekker). Margini eorum scholia adscripta sunt. Haec duo folia cum Bekkeri editione comparavimus infraque lectionis varietatem adscribendam curavimus:

Folium prius.

p. 13 v. 5 μένειν.

7. πῶς ἢ πυκν.

8 π post ποιῖν deest.

8 αὐτῇ.

10 τί.

14 ὑποθήσει.

15 οὐδενός.

15 ταναντα.

16 λέγεσθαι τινός.

18/19 φάμεν perforatum.

19 οὐσία infra foram.

20 μή. (η ex corr.)

22 μέλλοι.

23 τί.

23 ὡς πέρ.

24 pro ἡ πῶρ MS. ἡ γῆν.

25 καὶ γῆ desunt.

26 μετ. μ in ras ex corr.

26 ἐστί.

26 καὶ deest.

27 Inter ἀλόγως et ποιῶσιν foramen, ut α et lineola literae π desit.

p. 14 v. 2 τοῖς in corr.

4 ἀλλόν. η intercidit.

6 ab ἀρχαὶ incipit fol. 4 h.

8 τῶν δέ.

8 ὑστερον τινός.

14 ἑκατέροις.

15 γενναν.

15 δύο εἶσαι desunt.

19 ἐν deest.

20 ἐστ.

20 τε | δέ.

22 δύο.

24 ἡμεῖς γε.

26 ἴδια.

26 γάρ τε.

27 ἐξ ante ἐτέρου deest.

29 τὸ ante γίνεσθαι.

p. 15 v. 3 γίνεται.

4 γίνεται.

4 γινόμενον.

5 γίνεσθαι.

5 ante μουσικὸν ἀνθρώπον add.

MS. ἡ μουσικὸν ἢ. Post τούτων

δέ folii finis est.

Folium alterum.

Bekk. p. 2 v. 2 infr. διαλῦσαι.

p. 3 v. 2 αὐτοῦς.

3 δ'οἷα.

6 τὰ πάντα | ἀπαντα.

6/7 μίαν δέ πάντα.

7 οἷον | ἢ.

8 τῶν. v foram.

8 τί.

9 τί.

10 καὶ deest ante οὐσία.

p. 3 v. 10/11 καὶ ποῖόν καὶ
ποσόν.

11 εἴτα.

12 ἀπάντα.

12 εἴτα.

14 οὐδέν.

p. 3 v. 15 γὰρ | δὲ.

15 λέγεται τῆς φύσεως.

16 φησὶν.

16 ἀρὰ τε.

17 ἀπειρον ἢ πάθος εἶναι
ἢ ποιότητα, οὐκ.

19 αἶτα.

20 οὐκ. x foramen.

23/4 λέγεται deest.

24 καὶ αὐτὸ τὸ ὄν.

24/5 ἐν εἶναι.

26 τε.

Post μέθυ incipit fol. 2b

27/8 ἀπειρα.

p. 4 v. 5 κατὰ.

5 οὐδέν.

7 φησὶν.

10 ταυτὸν.

11 εἶναι non post κακῶ, sed post
μὴ ἀγαθῶ positum.

12 ταυτὸ.

14 τοιῷδε.

15 ταυτὸν.

15 ὕστερον.

Post ὕστερον insequuntur verba
καθάπερ καὶ οἱ ἀρχαῖοι μὴ ποτε
συμβαίνειν αὐτοῖς ἀμα τὸ αὐτὸ ἐν
καὶ πολλά.

18 ὁ deest.

19 λελευκωμένος.

19 ἵνα μὴ τὸ ἔστι.

25 τὸ αὐτὸ.

25 ἐν καὶ.

26 τὰ ἀντικείμενα.

26 ἐν | ὄν.

p. 5 v. 1 ἀποδεικνύουσι.

Post ἀμφότεροι γὰρ finis folii II.

Insequuntur folia, quibus Platonis dialogi XXIV (= sex tetralogiae) continentur; librarius codicis dialogos distinxit numeris in sinistra marginis parte positis, tetralogias numeris supra titulum dialogi a quo tetralogia incipit pictis. Id iam Porsonus hac nota in interiore latere tegumenti elegantissime inscripta observavit: *Idem scriba qui totum codicem exaravit, tetralogias et dialogos numeravit.* Tetralogiarum numeri omnes servati sunt; at dialogorum numeri complures evanuerunt aut interciderunt veluti α (Enthyphro), γ (Crito). Indicem et dialogorum et plagularum confecit idem Porsonus; ambo extant in folio insertis foliis antecedenti.

Indicem dialogorum quamquam is in Gaisfordii catalogo extat, tamen cum hic catalogus vix sit in multorum manibus, hic libet repetere scilicet correctum et auctum.

I. (α) Tetralogia.

α. fol. 1a. Π*Λ*Α*Τ*Ω*Ν*Ο*Σ.¹⁾ εὐθύφρων ἢ περὶ ὁσίου. παι-
ρασιχός; fol. 7b post finem dialogi adscripta sunt εὐθύφρων ἢ περὶ

¹⁾ Atramentum in hoc vocabulo plane evanuit; incisiones litterarum solae supersunt.

όσιου sine adiectivo; id cum etiam in ceteris dialogis fiat, non iam adnotabimus nisi quid aliud animum advertit.

β. fol. 8a ἀπολογία σωκράτους . ἠθικός. fin. fol. 20a.

γ. fol. 20b insequitur *Crito*; sed cum folium istud discissum sit, sola verba περὶ πρακτοῦ, ἠθικός supersunt; in fine f. 26a leguntur verba κρίτων ἢ περὶ πρακτοῦ.

δ. fol. 26a φαίδων ἢ περὶ ψυχῆς . ἠθικός. fin. f. 58a.

II. (β) Tetralogia.

ε. fol. 58a κρατύλος ἢ περὶ ὀνομάτων ὀρθότητος: λογικός. fin. 82b. in loco maculoso verba leguntur compendiis scripta: κρατύλος ἢ περὶ ὀνομάτων ὀρθότητος.

ς. fol. 83a θεαίτητος ἢ περὶ ἐπιστήμης; folio allito aliquot litterae insequentes obtectae sunt, ita ut nequeant legi; in fine 113a apparent eadem verba.

ζ. fol. 113a σοφιστής ἢ περὶ τοῦ ὄντος . λογικός; fin. fol. 136b.

η. fol. 136b πολιτικός ἢ περὶ βασιλείας . λογικός; fin. f. 154a.

III. (γ) Tetralogia.

θ. fol. 154a παρμενείδης ἢ περὶ ἰδεῶν . λογικός; fin. fol. 173a.

ι. fol. 173a φίληβος ἢ περὶ ἡδονῆς . ἠθικός; fin. fol. 198b.

ια. fol. 198b συμπόσιον ἢ περὶ ἔρωτος . ἠθικός. In mg. m. recentior adser. περὶ ἀγαθοῦ; fin. fol. 223b συμπόσιον ἢ περὶ ἔρωτος.

ιβ. fol. 224a φαῖδρος ἢ περὶ καλοῦ . ἠθικός; fin. fol. 248b.

IV. (δ) Tetralogia.

ιγ. fol. 248b ἀλκιβιάδης α ἢ περὶ φύσεως ἀνθρώπου . μαιευτικός; fin. fol. 263a ἀλκιβιάδης ἢ περὶ φύσεως ἀνθρ.

ιδ. fol. 263a ἀλκιβιάδης β ἢ περὶ προσευχῆς . μαιευτικός; fin.

p. 269b β ἀλκιβιάδης ἢ ^{επ}προσευχῆς (i. e. m. rec. corr. περὶ πρ.)

ια. fol. 269b ἱππαρχος ἢ φιλοχερδής . ἠθικός; fin. fol. 273a.

ιβ. fol. 273a ἐρασταί ἢ περὶ φιλοσοφίας . ἠθικός. In mg. m. recentior scr. ἀντερασταί. fin. fol. 277a ἐρασταί ἢ περὶ φιλοσοφίας.

V. (ε) Tetralogia.

- εζ. fol. 277a θεάγης ἡ περὶ σωφροσύνης . μαιευτικός. Pro σωφρο-
σύνης in mg. m. recentior vult φιλοσοφίας; fin. fol. 282a θεάγης
ἡ περὶ σωφροσύνης.
εη. fol. 282a χαρμίδης ἡ περὶ σωφροσύνης . πειραστικός; fin. fol.
294b.
εθ. fol. 295a λάχης ἡ περὶ ἀνδρίας . μαιευτικός. fin. fol. 307a.
εζ. fol. 307a λύσις ἡ περὶ φιλίας . μαιευτικός. fin. fol. 317a.

VI. (ς) Tetralogia.

- κα. fol. 317b εὐθύδημος ἡ ἐριστικός . ἀνατρεπτικός fin. fol. 336a.
κβ. fol. 336a πρωταγόρας ἡ σοφισταί . ἐνδεικτικός; fin. fol. 368b.
κγ. fol. 368b γοργίας ἡ περὶ ῥητορικῆς, ἀνατρεπτικός; fin. fol. 405a.
κδ. fol. 405a μένων ἡ περὶ ἀρετῆς . πειραστικός. fin. f. 418b πλάτω-
νος μένων ἡ περὶ ἀρετῆς.

(Literae punctis distinctae hic ut in subscriptione manu recentissima renovatae sunt).

Hi sunt dialogorum singulorum tituli; de quibus superest ut hoc unum moneamus, adiectiva in χός exeuntia, velut πειραστικός, ἠθικός manu ut videtur recentiore scripta esse, id quod iam atramentum prodit. Eadem manus ter margini alios illos titulos quos supra attulimus adscripsit.

Dialogum Menonem insequitur *subscriptio*, cuius verba haec sunt:

ἐγράφη χειρὶ ἰω καλλιγράφου
εὐτυχῶς ἀρέθαι διακόνωι πα
τρει· νομισμάτων βυζαντί
ων δέκα καὶ τριῶν μηνὶ νοεμ
βρίωι ἰνδικτιῶν^ο ἰδ ἔτει κόσμ^{ου}
ς^υδ βασιλείας λέοντος τοῦ φι
λογ^υ υἱοῦ βασιλείου τοῦ ἀειμνήστου.

Ad hanc subscriptionem illustrandam necessarium duximus haec ad-
notare:

Joannes calligraphus manu nitidissima scripsit totum librum; eius nomen addatur indici calligraphorum, quem Montefalconius in Palaeogr. gr. composuit.

Liber scriptus est in usum Arethae Patrensis qui tum erat diaconus. Duos alios codices novimus in eiusdem Arethae usum conscriptos. Unus,

quo Euclidis elementa continentur, fuit antea in bibliotheca Dorvillii († 14. Sept. 1751); nunc cum aliis codicibus huius nobilissimi philologi in Bodleiana sedem tenet¹⁾. Etiam is liber subscriptionem habet; est autem haec: ἐγράφη χειρὶ στεφάνου κληρικοῦ ἡ εἰσεμβρίῳ ^ΔIN ^Ζἔτει κ^ο ς ^Τ ^Ζ (= 889 p. Chr.). Tum haec verba insequuntur: ἐκτησάμην ἀρέθας πατρὺς τὴν παροῦσαν βίβλον ΝΝ... ^Δ²⁾. Alter codex Parisinus est habetque nunc Nr. 451 (antea 1169, 2271). Eius subscriptio haec est: ἐγράφη χειρὶ Βαάνου νοῦτου (= νοταρίου) Ἀρέθα ἀρχιεπισκόπῳ Καίσαρειας Καππαδοκίας ἔτει ςυκβ (= 914 p. Ch.). In hoc libro, quem iam Montefalconius³⁾ in Palaeographia Graeca (1708) descripsit p. 274, insunt libri quinque priores Evangelicae Praeparationis Eusebii, Protrep-ticus atque Paedagogus Clementis Alexandrini cum scholiis aliaque. cf. Dindorfii Praef. ad Clem. Alex. Oxford 1869 p. VI. Ut libris duobus Bodleianis, ita huic quoque libro Parisino quanti constiterit adscriptum fuisse videtur. cf. Dindorf l. c.

Cum Clarkianus anno mundi 6404 (= 6404 — 5508 = 896 p. Ch.) scriptus sit, ex subscriptionibus trium librorum de Arethae vita haec quatuor scimus: Anno 889 homo privatus fuisse videtur, 896 diaconus, 914 archiepiscopus Caesareensis fuit. Duae denique subscriptiones cum Patris natum esse demonstrant. Alia de hoc homine refert Oudinius Comm. de scriptoribus ecclesiasticis p. 427: Fabric. Bibl. gr. VII, 791. Dindorf Praef. ad Clem. Alex. p. XV. seq.

φιλοχῶ compendium est verbi φιλοχρίστου. Leo VI philosophus imperavit ab a. 886 usque ad 912, eius pater Basilius a 867 usque ad 886. cf. Finlay, History of the Byzantine Empire from 716 to 1057.

Subscriptiones forma similes nostrae congessit Montefalconius in Pal. gr. p. 43.

Subscriptionem nostram Porsonus cum librum Clarkianum possideret, cum Gaisfordio communicavit qui eam in catalogo manuscriptorum Dorvillianorum (App. p. 100) in lucem protraxit. (cf. Tracts and Miscellaneous Criticisms of Richard Porson by Thomas Kidd. London 1815 p. 269) Idem iterum eam edidit in Catal. Manuscriptorum Clarkianorum p. 69.

¹⁾ Amplo pretio (1025 LL) coempti sunt cf. Macray l. c. p. 207; catalogum confecit Gaisford. 1806.

²⁾ cf. Macray l. c. p. 207.

³⁾ Falso M. scripsit Ἀρέτας quod codex non habet.

Nostra denique memoria O. Jahnus eam in Symposio typis exprimendam curavit.

Subscriptionem excipiunt ornamenta quaedam; deinde sequuntur haec „ab eadem manu, sed paullo negligentius et dierum aliquot intervallo scripta“¹⁾ verba quibus librarius suam se mercedem accepisse dicit:

εδο^θ

υπογραφῆς ΝΝ ΙΓ²⁾ . ἀμήν

i. e. ἐδόθη ὑπογραφῆς νομίσματα ιγ. ἀμήν.

Adiecta sunt sex folia membranea quorum tria manibus inclegantissimis polluta sunt, in eorum secundo index dialogorum inscriptus est, in tertio deprehendimus glossam ad proverbium πολέμου καὶ μάχης χρὴ μεταλαγχάνειν quod in initio Gorgiae legitur.

Folia in quibus Platonis dialogi inscripti sunt si numeras sola, codex constat ex quinquaginta duobus quaternionibus et dimidio; singuli quaterniones numerati sunt; numerorum autem, qui singulorum quaternionum primae paginæ supra adpicti sunt, alii evanuerunt, alii perierunt. Porsonus indicem quaternionum confecit dialogisque praemisit; in eo, qui numeri quaternionibus desunt, eos scripsit nigro colore, eos qui servati sunt, rubro. Folia Gaisford non recte dixit esse 418; nam habemus primum fol. 111 et fol. 111*, deinde fol. 418 et 418*; haec igitur duo folia addenda sunt foliis 418. Foliis rubros numeros apponit manus elegantissima Porsoni; idem in dialogis Menone, Gorgia, Protagora, Lysi, Hipparcho, Parmenide, Euthyphrone, Apologia Aldinae paginas margini addidit.

Quaternionum is qui Politici verba inde a p. 289 D χρὴ usque ad p. 308 A. ἀνδρείαν (Hermann p. 470—98) continet, transpositus est inter quaterniones Protagorae. Politicum igitur comparans si fol. 151 absolveris, (extremum eius verbum est οὐχοῦν p. 289 D.), quaternionibus 25 omissis transcurres ad f. 352. Eodem modo Protagoram comparans a f. 351b, quod exit in verba ὡς δὴ τούτοις (Steph. p. 342 C. Herm. p. 175), transgredieris ad f. 359a quod incipit a verbo κρατοῦντας. Porsonus primo hunc transpositum quaternionem periisse putavit et suum dolorem expressit in fine indicis quaternionum; postea errorem detexit transpositionemque suo loco indicavit.

Codicis qui est membraneus pagina unaquæque habet v. 34. Lineae, quae cum sint stilo incisae etiam paginae alteri inserviunt, a sinistra ad

¹⁾ Verba sunt Gaisfordii in Catal. p. 70.

²⁾ Post ΙΓ literae ΙΗ insequi videntur.

dextram ductae marginem non attingunt. Sed unaquaeque pagina in sinistra parte duas habet lineas quae illas lineas secant et 2, 3, 4 vel 5 literas aliquanto reliquis maiores circumsepiunt. Literae e lineis pendent.

Joannis libraril scriptura elegantissima est facilisque lectu; legenti haec observanda sunt:

Librarius literarum ν, ε, τ, λ, κ binis utitur formis; β in textu est semper u. Literae ι et υ initium verbi facientes punctis . . distinguuntur, accentus vero et spiritus in iis fere omittuntur.

Literae quaedam habent impetum inter se coalescendi; veluti ε et τ inprimisque σ et π, σ et τ. His copulationibus offensa manus recentior in compluribus dialogis correctionem adhibebat; veluti ubi ὥσπερ offendebat, σ eradebat et c per π ducebat. Eadem manus haerebat, quod Joannes saepe οὐκ ita scripsit, ut οὐ in fine versus et κ in initio insequentis versus esset; eradebat igitur κ et addebat ad οὐ.

Tales correctiones praecipue dialogis Phaedoni, Theaeteto, Cratylo adhibebantur.

Verborum compendia in Clarkiano rara sunt; pauca quae nobis occurrunt sunt haec: fol. 2a (Euthyphro 4 C.) πῆρ = πατήρ; fol. 202a (Symp. p. 178 D) πρσ = πατρός; fol. 205b (Symp. 186 A.) et fol. 64a (Cratyl. 397 E.) ἄνων = ἀνθρώπων; fol. 1 (Euthyphro 3 D.) φιλανίας = φιλάνθρωπίας; fol. 71b (Cratyl. 414 D.) ἄνον^ω = ἄνθρωπον^ω; fol. 11a (Apol. 23a) θῷ = θεοῦ; fol. 144a (Politic. 273 C.) ουνῶι = οὐρανῶ. Saepius coniunctio καὶ compendio scribitur; sed hoc compendium ubique fere in fine versus extat: fol. 119a (Soph. 229 C. ante τούτῳ); fol. 119b (Soph. 230 D. ante σωφρονεστάτῃ); fol. 121b (Soph. p. 235 D. ante πρός); fol. 122a (Soph. 237 A. ante μετά); fol. 132b (Soph. 259 D. ante γάρ); fol. 141a (Politic. 267 C. ante μάλιστα); fol. 62b (Cratyl. 394 A. ante τᾷλλα); fol. 223b (Symp. 223 D. ante ὥσπερ εἰώθει); fol. 243a (Symp. 266 A. ante προτεινόμενος), aliis locis. In versu medio fol. 234b (Phaedr. 250 C. ante εὐδαίμονα).

Codex habet iota *adscriptum*, non *subscriptum*; deest raro atque adeo in verbis permultis servatum est, quibus postea periit; cf. hac de re Hermannii Useneri egregiam commentationem insertam Fleckeiseni annal. 1865 p. 236.

Nomina propria nullo signo notata sunt; verbi elementa si respicienda sunt, lineola supraponitur.

Spiritus habent has formas ˊ et ˋ; pro ˋ reperitur interdum etiam forma dimidiata ˊ. Accentus solet insequi spiritum; diphthongi igitur hoc modo spiritu et accentu instruuntur: εἶναι ˊ ;

Interpunctio puncto simplici vel duplicato (· vel :) efficitur; positio puncti simplicis videtur esse constans. Signum interrogationis ubi occurrit, recentior videtur esse; etiam coronis manu recenti saepe addita est.

Non raro ὕφέν reperimus: Protag. 343 C. φιλότιμος. Lach. 184 A. δορυδρέπανον; ibid. 188 C. φιλόλογος. ibid. 212 D. φίλιπποι, φίλοινοι, φιλόκυνες. Symp. 182 C. Ἀριστογείτονος. Cratyl. 384 B. πεντηκοντάδραχμον p. 394 D. θεοσεβοῦς.

Transpositio verborum literis α, β, γ indicatur. Literae vel verba ut delēantur, nos monent puncta supra posita. In margine hae notae adhibentur: 1) CH. i. e. σημειῶσαι. 2) CH. διὰ τὴν σύνταξιν. 3) CH. τὴν μεταβασιν τοῦ ἀριθμοῦ (semel) Crito 50 A. 4) CH. σχῆμα. 5) ὥραϊον. 6) ὥραϊον δι' ὅλου χωρίου (Theaet. 194 C.). 7) ὥραϊον δι' ὅλου, ὥραϊον ἄγαν τὸ χωρίον (Phaedr. 229 D.). 8) Virgulae in margine positae vitium versus ad quem pertinent indicare videntur; pleraeque margini dialogi Protagorae adscriptae sunt. 9) ἐν ἄλλῳ, ἐν ἑτέρῳ (Theaet. 164 C.), ἐν ἄλλοις (Theaet. 192 B.) et γρ. quibus significatur aliquid esse supplendum vel aliter legendum. 10) In dialogis aliquot (Symp. Cratyl. Theaet. Gorg.) literae margini adscriptae (ᾱ, β̄, γ̄ κτλ.) partitiones efficere videntur.

In Protagora licet videre lacunas complures manu recentissima suppletas; concludere igitur debes codicem e quo Clarkianus derivatus est hic non potuisse legi. Suppleta autem sunt p. 329 C. haec: ἐν τ[ῇ ψυχῇ]; [γὰρ ὅτι ὁ]; πέμ[ψεις]; καὶ [αὐ̄] (Post δικαιοσύνην spatium vacuum); p. 329 D. [ἕτερα τῶν]; [ἀλλήλων καὶ τοῦ]; με[γέθει].

Personae dialogorum a Joanne non significatae sunt; in Euthyphrone, Phaedone, Hipparcho, Theage librarius recentissimus personas adiunxit; in Cratylo infra titulum personas huius dialogi Hermogenem, Cratylum, Socratem compendiis manu recentissima pictas reperimus.

De corrigentium diversis manibus quae in Clarkiano extant, alio loco copiosius dicetur.

Codex perforatus est hisce locis:

fol. 2a. Euthyphr. 5 B. ἐ(κεί)νω, πρεσβ(υτέρ)ους, δι(δάσκ)οντα, f. 2b.

6 A. φή[σει]. 6 B. (εὔ εἰδó)τι (εὐγχωρεῖν).

fol. 236a. Phaedr. 252 E. τοιο(ῦτο)ς, τ(ότε) ἐπ(ι), (μετέρ)χονται.

fol. 236b. Phaedr. 253 E. με(τὰ χέντ)ρων — τ(ὸ ἐρωτικὸν ὄμμ)α — γαρ-
γαλ(ισμοῦ τε).

fol. 237a. Phaedr. 254 E. γνά(θους) ἐ(ρείσας) (ὁ πονηρ)ός.

fol. 237b. Phaedr. 255 E. παραπλη(σίως) · συγκατακεῖσ(θαι κα)ί. σ(υγ-
κο)ιμήσει.

Quae hoc modo perierunt, ea manus recentiores suppleverunt fol. 236b, 237a (partim), f. 2a.

Schedulae allitae sunt his foliis:

fol. 21b (Crito 45 B.); initium versuum octo suppletum.

fol. 35a. (Phaed. 73 E.) quae manu recentissima in schedula inscripta sunt, spectant ad v. viginti tres.

fol. 38a et b. (Phaedo 79 C. 80 C.) schedula alba immissa.

fol. 83a. pars tituli (παιραστικός) schedula superlita abscondita est.

fol. 178a. (Phileb. 21 E.). schedula allita abscondit literas extremas versuum septem, ita tamen ut folio contra lucem verso possint legi.

fol. 189a. Phileb. 45 E. literae singulae versuum novem obrutae sunt.

Detruncata sunt folia: 184, 185, 186, 187, 188, quae ad Philebum pertinent (p. 34—45). Inde uniuscuiusque paginae versus 13 corrupti sunt; sed fortuna secunda evenit ut versus uniuscuiusque literae 3 vel 4 tantum perierint. Manus recentissima supplevit quae interciderunt. Fol. 191, 192, 193, 194, 195, 196 (Phileb. 50—62) in superiore margine detruncata quidem sunt sed verba scriptoris inviolata manserunt. Fol. 224a ubi Phaedri est initium, ita scissum est, ut pars scholii interciderit. Fol. 157 et 159 marginibus carent.

Gravissimum damnum libro nostro e madore ortum est; is enim ita irrepsit in codicem, ut superiorem marginem et literas huic affines modo graviter modo leviter pollueret. Qua re effectum est, ut saepe literae unius paginae alterius literis oblinerentur. Quare tibi videris in locis ubi damnum levius fuit, in fine versuum rasuras vel correctiones conspicere. In foliis compluribus quae vehementius affectata sunt, librarius recentissimae aetatis syllabas oblitas atra manu hoc modo renovavit, quo legentium oculi maxime offendantur. Hoc factum fol. 4b et 5a, 6b et 7a, 8b et 9a, 9b, 10b, 11a, 12b, 13a, 16b, 17a. In aliis foliis literarum renovatio minus turpis. Inprimis Euthyphro, Apologia, Crito, Phaedo damnum fecerunt. In dialogis subsequentibus sola margo superior infecta est, ut damnum leve sit; praeterquam quod in Gorgia scholia complura, quae in margine superiori scripta extant, legi nequeunt.

§ 26.

Euthyphr. 9 E. ἀλλ' ἔγωγε φαίην ἄν τοῦτο εἶναι τὸ ὅσιον ὃ ἄν πάντες οἱ θεοὶ φιλῶσιν (sic Cl.) καὶ τὸ ἐναντίον ὃ ἄν πάντες οἱ θεοὶ μισῶσιν, ἀνόσιον, Cl. ὃ ἄν πάντες θεοὶ μισῶσιν. Reducendum videtur; nam quod antecessit πάντες οἱ θεοί, nihil impedit, quominus lectionem Cl. recipiamus cf. 9 D. πάντες αὐτὸ ἡγείσθωσαν θεοὶ ἄδικον καὶ πάντες μισούκτων et mox ὃ μὲν ἄν πάντες οἱ θεοὶ μισῶσιν.

Protag. 358 D. Τί οὖν; ἔφην ἐγώ, καλεῖτέ τι δέος καὶ φόβον; Kroschel: „Libri καλεῖτε δέος, sed τι de coniectura Heindorfi addunt editores post Bekkerum omnes.“ At Cratyl. 399 D. ψυχὴν γάρ που καὶ σῶμα καλοῦμεν τοῦ ἀνθρώπου, ubi Stallb. perperam τι invexit. Omnem dubitationem nobis eximit Alcib. II 145 A. καλεῖς γὰρ δήπου φρονίμους τε καὶ ἄφρονας;

Cratyl. 383 A. βούλει οὖν καὶ Σωκράτει τῷδε ἀνακοινώσομεν τὸν λόγον; Cl. habet ἀνακοινωσώμεθα, non ἀνακοινώσομεν quod interpretes quidam opinari videntur. Medium non est turbandum; nam ἀνακοινοῦσθαι τινί τι est consulere aliquem de aliqua re cf. Kr. 52, 8, 8. Lach. 180 A. ταῦτ' ἐστὶν ἃ ἐβουλόμεθα ὑμῖν ἀνακοινώσασθαι.

ibid. 387 A. ἐάν τι ἐπιχειρήσωμεν ἡμεῖς τῶν ὄντων τέμνειν, πότερον ἡμῖν τμητέον ἕκαστον ὥς ἄν ἡμεῖς βουλώμεθα καὶ ᾧ ἄν βουλευθῶμεν κ. τ. λ. Cl. τμητέον ἐστίν. Idem liber ἐστὶν interponit post adiectivum verbale p. 387 D. οὐκοῦν καὶ ὀνομαστέον ἐστὶν ἧ πέφυκε τὰ πράγματα ὀνομάζειν τε καὶ ὀνομάζεσθαι καὶ ᾧ κ. τ. λ. Quamquam verbum substantivum plerumque deest adiectivo verbali, tamen nulla necessitas eius omittendi est. cf. Gorg. 523 E.

ibid. 405 A. πρῶτον μὲν γὰρ ἡ κάθαρσις καὶ οἱ καθαρμοὶ καὶ κατὰ τὴν ἱατρικὴν καὶ κατὰ τὴν μαντικὴν καὶ αἱ τοῖς ἱατρικοῖς φαρμάκοις καὶ αἱ τοῖς μαντικοῖς περιθειώσεις τε καὶ λουτρά τὰ ἐν τοῖς τοιούτοις καὶ αἱ περιρράνσεις, πάντα ἐν τι δύναιτ' ἄν καθαρὸν παρέχειν τὸν ἄνθρωπον καὶ κατὰ τὸ σῶμα καὶ κατὰ τὴν ψυχὴν. ἢ οὐ. Hermannus: „τὰ ante λουτρά cum Oxoniensi et Stephano abiici.“ Falso. Cl. habet τὰ ante λουτρά. Revoca articulum.

Phileb. 57 D. respondet Socrates ὥς εἰσὶ δύο ἀριθμητικαὶ καὶ δύο μετρητικαὶ καὶ ταύταις ἄλλαι συνεπόμεναι συχναί, τὴν διδυμότητα ἔχουσαι ταύτην, ὀνόματος δὲ ἐνὸς κεκοινωμέναι. Hermannus: „τοιαῦται post ἄλλαι optimorum librorum fide non minus quam dudum δύο tollendum erat.“ Memorabilis est error Gaisfordi, qui dicit Clarkianum habere καὶ δύο μετρητικαὶ ταύταις ἄλλαι συνεπόμεναι, quamquam nulla dubitatio po-

test exoriri, quin in hoc libro scriptum sit καὶ δύο μετρητικαὶ ταύταις ἄλλαι τοιαῦται συνεπόμεναι. Vocabulum τοιαῦται igitur post ἄλλαι inserendum. cf. Gorg. 451 A.

ibid. 13 E. φρόνησίς τε καὶ ἐπιστήμη καὶ νοῦς καὶ πάνθ' ὅποσα δὴ κατ' ἀρχὰς ἐγὼ θέμενος εἶπον ἀγαθόν, διερωτώμενος ὅτι ποτε ἐστὶ τἀγαθόν, ἅρ' οὐ ταῦτόν πεύσονται τοῦτο ὕπερ ὃ σὺς λόγος; In Cl. repraesentata verba hoc modo vides: εἶπον ἀγαθὰ, διερωτώμενος ὃ τι ποτ' ἐστὶν ἀγαθόν. Nihil obstat quominus eum sequamur. cf. 11 B.

Theag. 124 B. de arte loquuntur, οὐδέ γε οἶμαι ἧ τῶν ποριζόντων καὶ τροπώντων καὶ ξεόντων καὶ τορνευόντων ξυμπάντων ἐπιστάμεθα ἄρχειν, οὐ ταύτην λέγεις· αὕτη γὰρ οὐ τεκτονική; Herm. „αὕτη γὰρ Cl. et Steph. αὕτη μὲν γὰρ Bekk. Stallb. Tur.; at nescio quomodo librarii μὲν post demonstrativa infercire solent.“ Noli fidem habere Hermanno vel potius Gaisfordio; quod Bekk. Stallb. Tur. dant, idem dat Cl. Eodem modo auctor dialogi 124 A. αὕτη μὲν γὰρ γεωργική, ἧ τούτων ἄρχομεν.

Iterum Gaisfordi silentium Hermannum ad errorem perduxit p. 126 A. ubi scripsit οὐ βία γε οὐδ' ὥσπερ οἱ τύραννοι, ἀλλ' ἐχόντων, ὥσπερ καὶ ἄλλοι οἱ ἐν τῇ πόλει ἐλλόγιμοι ἄνδρες. Sed cum Clarkiano scribendum est οἱ ἄλλοι.

Lys. 204 A. διδάσκει δὲ τίς αὐτόθι; Σὺς ἐταῖρός γε, ἧ δ' ὄς, καὶ ἐπαινέτης. Iterum Hermannus errat putans γε in Cl. extare. Scribe cum Cl. ἐταῖρός τε quod dederunt Bekk. Stallb. Tur.

Nullam causam video, qua impellimur ut contra Clarkiani auctoritatem Gorg. 473 A. γε servemus. Scribamus ὥς σὺ οἶσι, ὦ Πῶλε.

Soph. p. 232 D. τά γε μὴν περὶ πασῶν τε καὶ κατὰ μίαν ἐκάστην τέχνην, ἃ δεῖ πρὸς ἕκαστον αὐτόν τὸν δημιουργὸν ἀντειπεῖν, δεδημοσιωμένα που καταβέβληται γεγραμμένα τῷ βουλομένῳ μαθεῖν. Bekker. „που abest a Vat. Ven. II.“ Clarkianum si addideris, adnotatio recta erit. Sine dubio που eximendum est. Campbell etiam hic negligens est.

Politic. 303 E. Herm. se putat ex auctoritate Clarkiani δὴ post οὖν in verbis λέγεται γὰρ οὖν ταῦτα οὕτω γίνεσθαι delevisse, ubi tamen δὴ post οὖν is liber servat.

Theaet. 166 A. ὅταν τι τῶν ἐμῶν δι' ἐρωτήσεως σκοπῆς, ἐὰν μὲν ὁ ἐρωτηθεὶς οἶάπερ ἂν ἐγὼ ἀποκρινάμην ἀποκρινόμενος σφάλληται, ἐγὼ ἐλέγχομαι, εἰ δὲ ἄλλοῖα, αὐτὸς ὁ ἐρωτηθεὶς. Vana opera est Hermanni defendentis ἀποκρινόμενος. Ut Vat., Ven. II, ita etiam Cl. ἀποκρινάμενος.

Cratyl. 387 C. verba sic exarata in Cl. sunt: οὐχοῦν καὶ τὸ ὀνομάζειν πρᾶξις ἐστὶν, εἴπερ καὶ τὸ λέγειν πρᾶξις τις ἦν περὶ τὰ πράγματα;

Riv. 138 A, recte edunt τοὺς χρηστοὺς καὶ μοχθηροὺς ἀνθρώπους. Clarkianum secuti etiam 137 E. edemus τοὺς χρηστοὺς καὶ πονηροὺς ἱπ-
πους et τοὺς πονηροὺς καὶ χρηστοὺς *βοῦς* —

Phileb. 52 E. Ἰθι δὴ, περὶ πάντων ὅσα καθαρὰ γένη λέγομεν, οὕτως διανοηθῶμεν· προσελόμενοι πρῶτον ἔν τι διασκοπῶμεν. Gaisf. adnotavit quidem in Cl. exaratum esse ἐν τίσι σκοπῶμεν, tacet vero de αὐτῶν ante πρῶτον in Cl. addito. Hoc αὐτῶν reducendum est; tum malim scribere σκοπῶμεν quam διασκοπῶμεν.

§ 27.

De *scholiis Clarkianis*, ut iam supra p. 108 diximus, non satis edocti sumus, cum primum saepe nesciamus, num revera scholion aliquod in Cl. extet, deinde de manibus eorum, qui scholia scripserunt, plane incerti simus.

Hoc damnum ut resarciamus, Hermannianum exemplum secuti adnotemus quae scholia Cl. habeat et quarum manuum ea sint. Manuum autem accurate distinguemus eas quae ante s. XII. scripserunt ab iis quae post s. XII. scripserunt; illas nota A, has nota R significabimus; signis A et R rursus indices adiungemus, quibus diversae manus inter se distinguantur. A^a notat manum, quae pleraque scholia scripsit atque prope ut videtur ab aetate librarii abest; scriptura tamen compendiis multis usa a textu differt. in Euthyphrone Apol. Phaedone quorum folia madore corrupta sunt, multa scholia huius manus redintegrata sunt, quare cavendum ne aliam manum statuamus; notam a^a adponemus ubi atramentum et scriptura quamquam paululum diversa sunt, tamen dubitamus novam manum statuere; index b indicat manum rubram obliquam; c man. rubram minus elegantem, d, f manus hic illic obvias. Manus recentes his indicibus distinguemus: z significat manum quae secundum Gaisf. s. XIII. est; x manum viridem minutam s. XV, w fulvam inelegantem (saec. XV), u, v manus rarius occurrentes.

Euthyphro m. A^a 1), R^x. Scholia, quae Herm. nota O instruxit, omnia ad A^a referenda esse videntur; eorum quae Ruhnken edidit etiam in Clarkiano extant sch. ad 12 A. θ'έρξαντα] γρ. στέρξαντα quod fortasse ipsius Joannis est, sch. ad 3 A ἀφ'έστίας et ad 12 A. ἵνα περ] παροιμία ἐπὶ τῶν — Κυπρίων quae profecta sunt a R^x 2). Accuratius de scholio

1) Sed animadvertendum scholia hac nota indicata maximam partem renovata esse.

2) Ab eadem manu sch. ad 5 B, ὀρθῶς νομίζειν, ἐμὲ ἡγοῦ] ἐν ἄλλῳ καὶ ὀρθῶς νομίζειν καὶ ἐμὲ ἡγοῦ καὶ μή. Non omnem lectionum varietatem margini adscriptam Gaisf. dedit; fortasse alio loco eam supplebimus.

ad 3 A dicendum est; id incipit a παροιμία ἐπὶ et verbo ἄλλως continuat haec verba: ἀπὸ τῶν περὶ τὰ ἱερὰ δρωμένων μετενήνεχται· ἔθος γὰρ ἦν τῇ Ἑστίᾳ τὰς ἀπαρχὰς ποιῆσθαι; reliqua desunt¹⁾.

Apologia. A^{*}. R^{*}. R^{*}. Pro sch. ad 19 B. hoc in Cl. reperitur, quod cum Gaisf. sic. legi: ἀντωμοσία λέγεται ἡ τῶν ἐν δικαστηρίοις ἀμφοιβητούντων πρὸς ἀλλήλους ἀντέγκλησις καὶ ἀντιγραφὴ· λέγεται δὲ τοῦτο διὰ τὸ ὁμνῦναι τόν τε διώκοντα καὶ τὸν φεύγοντα· ἔνιοι δὲ ἀντωμοσίαν φασὶν τὴν ἐπὶ πράγμασιν ἀμαρτύροις καὶ ἀνεγγράφοις εἰς ὄρκον περισταμένην δίκην· ἄλλοι ὅτ' ἂν ἐπὶ δημοσίῳ ἀγῶνι σκηπτομένου τινὸς κάμνειν, ὃ ἀντίδικος ἀντομνύηται φάσκων προσποιῆσθαι αὐτὸν καὶ περὶ τούτου διαλαμβάνωσιν οἱ δικασταί (A^{*}). 27 C. ἀντιγραφὴ (ἐστὶν om.) ὅταν — κατηγοροῦσιν (R^{*})²⁾. Reliqua scholia (O) scripsit A^{*}3), si exceperis sch. ad 18 C. εἰς quod alia manus recens (R^{*}) depinxit⁴⁾.

Crito. A^{*}, A^{*}, R^{*}. Acced. schol. 51 E. γεννῆται — γράφεσθαι (R^{*}). Schol. 46 E. m. A^{*}; 50 A, 54 D m. A^{*}.

Phaedo. A^{*} A^{*} R^{*} R^{*}. Acced. 1) sch. 61 D. Πυθαγ. οὗτος — διάλογον. 2) 61 E. τὸ μὲν. 3) 61 E. ad μέχρ[ις] οὐ γὰρ ἐξῆν φονεῦεν ἐν ἡμέρᾳ ὥς καὶ τοῖς Πυθαγορείοις ἀπηγορεύετο τὸ — ἐνεργεῖν. 4) 62 A. τᾶλλα] ὥσπερ πλοῦτος — ἐστίν. 5) 62 A. ἐγέλασε — διαλέκτω⁵⁾. 6) 107 B. ἀπροσδόκητον — κατεσθίουσι. 7) 108 D. σημ. παροιμία ἐπὶ — Ἡρ. (1—6 m. R^{*}); 8) Sch. 57 A, 67 E. ἀντὶ τοῦ (m. A^{*}). 67 A. (sch. satis evanidum), 72 A., 75 D., 83 A.⁶⁾, 104 C., 107 E., 117 C. scr. A^{*}, 102 D., 103 B., 114 C. scr. A^{*}. Ad 101 D. (fol. 49b) ἑαυτοῦ σκιάν) παροιμία ἐπὶ τῶν σφόδρα δειλοτάτων m. R^{*}. Fol. 27 b (59 E) scholion G. indicavit quod nequit legi. Ut ait G., consentire videtur cum Polluce VIII 102. Exit in ἐπὶ θανάτῳ ἀπήγοντο. Fol. 36 b (p. 77 B.) Pors. redintegrasso videtur ὅρ· ἀντὶ ὅπ. (i. e. ὀριστικὸν ἀντὶ ὑποτακτικοῦ).

¹⁾ Collationem scholiorum hoc loco nolui dare; hoc unum mihi proposui, ut initium et finem scholiorum indicarem; ubi nihil adnotavi, totum scholion, quale extat apud Herm., in Cl. adest.

²⁾ Reliqua scholia R vel S non indicata desunt.

³⁾ Sed idem hic valet quod p. 121 not. 1 diximus. veluti 17 D, παρ. 19 C. 23 E.

⁴⁾ Gaisf.: f. 10a p. 21 E. σημειῶσαι διὰ σύνταξιν (m. A^{*}); sed haec nota etiam occurrit 12 A. p. 25 E. (ead. m.); aliis locis σημ. omittimus.

⁵⁾ ἐστὶν ἀντὶ τοῦ ἴστω etiam desunt.

⁶⁾ Hoc schol. repetiit m. R^{*} eadem quae personas dialogo affinxit.

Cratylus. A^a. A^{a*}. R^x. Acced. sch. 421 D. παροιμία, ἀγών (καὶ pro ἦτοι) — προφασ. καὶ (μέμνηται — δέχεσθαι des.) ἐν νόμων ἄ οὗτος· ἀλλὰ γὰρ ἀγῶνα φησι προφάσεις ἀποδέχεσθαι φησι Αἰσχύλος δὲ Γλαύκῳ Ποντισεῖ φησι — Θεσμοφοριαζούσαις. (R^x) — Fol. 65 b ad Crat. 401 B. sch. exhibet, quod simillimum est scholii ad Euthyphr. 3 A. παροιμία· ἀφ' ἐστίας· ἄρχειν ἐπεὶ ἔθος — θύειν· φέρεται δέ τις μῦθος περὶ αὐτῆς ὡς — ἀνθρώπων. (R^x) Sch. 391 C. 398 C. 403 E. scr. A^a 1); sch. 413 A. A^{a*} 2).

Theaetetus. A^a A^b R^x R^w. Multitudo scholiorum huic dialogo adscriptorum nos cogit hic alium ordinem tenere.

p. 237. Ads. sch. 142 C. σημ. 146 A. ἐν τῇ — νικῶντας scr. A^a; sch. 144 C. τόποι — καλούμενοι. scr. R^x. Alia des. 3).

p. 238. Adsunt sch. 151 B. σημ. 152 B. 152 C. ὅτι. 152 C. πρώτη. 153 B. ἡ σύνταξις, 153 C. δώδεκα — ἀναγκ. Schol. 152 C. ὅτι scr. R^w. Eadem m. scr. ad 152 C. καὶ τοῦτο] ὃ ἐγὼ λέγω, τὸ οἷα μὲν ἕκαστα ἔμοι φαίνεται 4).

p. 239. Adsunt sch. 153 D. δευτέρα. 153 E. 154 A. ἀντί, 154 A. ταῦτα. 154 A. ὧ — αἰσθητοῦ; tum insequuntur verba τὸ εὐθύς καὶ ἐφαπτόμενον λέγει· ἐφαπτόμενον δὲ τὸ αἰσθητήριον. 155 A. φάσματα. 155 B. ὃ. 155 E. τρίτη. 156 C. πρὸς τὰ πρότερα λέγει, πρὸς τὸ πάντων χρημάτων μέτρον ὃ ἄνθος καὶ τὰ τοιαῦτα. 156 C. ὅσον — ἅπτά. (omnia A^a)

p. 240. omnia scholia adsunt praeter 157 B. ἀντὶ τοῦ συντ. 159 A. ἤγουν — Πρωτ. 160 E. ἡμέρα — προσήκοντες 5) et ad A^a referenda sunt. Ad 160 B. verba textus ὅταν — γίγνομαι. αἰσθανόμενος γάρ — γίγνεσθαι in mg. reper. (A^a).

p. 241. Desunt 161 C. γυρίνος, 161 E., 162 A. μετ — δι., 162 B. εἰ, 162 B. παροιμ., 164 D., 164 E. reliqua adsunt scripta m. A^a. 6).

p. 242. sch. 165 A. πάλιν. 168 C. scr. m. A^b; 165 E., 166 C. ἐκ τῶν, 166 C. οἷον, 166 E. κατὰ τὴν Πρωτ., 167 B. πρὸς τι, 167 D. σφύ-

1) Eadem manus scr. fol. 64a (397) πόθεν ἐκλήθησαν θεοί.

2) Gaisf. fol. 67a quod semel tantum (p. 403 E.) σημ. διὰ τὴν συντ. adnotavit, miror. Multas varias lectiones man. rec. (R^x) margini adscr.

3) Ad 143 D. ἐπίδοξοι R^x ἐπιδόχμοι.

4) Schol. 152 B. ser. m. A^a (cuius sunt etiam scholia 151 B. ση. 153 B.) et corr. R^x.

5) ἀμφιδρόμια habet signum, sed nullum scholion. Schol. ad 157 B. χρῆσθαι αὐτῷ] verbis ἀντὶ τοῦ (pro ἤγουν) inducitur. In Schol. 156 D. m. rec. hic illis acc. posuit.

6) Schol. pr. 161 C. exit in ὑπ' αὐτοῦ πρωταγόρου καὶ τῶν ἑταίρων et sch. ad 161 εἰ ἐθέλοι] καὶ γάρ, exit in τὸ ἐλάχιστον ἐν τῇ παίσει.

ζεται γὰρ ὁ λόγος, 168 B., 168 D., 169 B., 169 C., 170 A. scr. m. A^a. Ad 165 B. συνεχόμενος m. A^a. scr. γρ. συσχόμενος. Desunt igitur 166 C. οἰκόν, 166 D. πόρρω, 169 A. μετά.¹⁾

p. 243. Scholia omnia adsunt in Cl. praeter 173 D. παρ. 174 A. γρ. οἶδεν. scr. A^a.²⁾ Ad 172 E. παραναγιγνωσκομένην Schol. ἀπὸ κοινοῦ τὸ ἔχων. Sch. ad 172E. ἀντωμοσίαν incipit a verbis, quae ad Apol. 19 B. legimus ἀντωμοσία — οἱ δικασταί³⁾. Ante τὸ ἐγκαλεῖν verba aliquot partim truncata extant quae quid sibi velint nequit dici.

p. 244. Omnia scholia adsunt. (scr. m. A^a) si exceperis 176 C.⁴⁾ 175 E. ἀπατηλ.

p. 245. Desunt scholii ad 178 A. verba γράφεται — λέγοιμεν, tota sch. 178 E., 179 D. ἐκ., 181 B. παρ. Reliqua scholia scr. m. A^a.⁵⁾

p. 246. Desunt sch. 182 A. ἐν. 183 B. ἀορ. 183 B. ῥγουν. 183 D. ἱππεῖς. Reliqua sch. scr. m. A^a.⁶⁾

p. 247. Nullum scholion huius paginae Clarkiano deest; ubique m. A^a nisi quod sch. ῥτοι — δυνάμεων quod spectat ad ποτέρων, m. R^u. scrips. m. A^a scr. — τὸ δεύτερον λῆμμα ad καὶ μὴν p. 188 A. (A^a).

p. 248. Desunt scholia 195 B. ὁ et 191 A. τῶν — ψευδοδοξίας. Omnia scholia quae haec pagina exhibet, scr. m. A^a. praeter sch. 194 E. quod scr. A^b. A^a scr. ad αἰσχυνοίμην] ὥς οἱ Πρωταγόρειοι.

p. 249. Adsunt sch. 196 D. τὸ τήν. 196 D. τὸ ἐν. 197 A. διὰ. 199 D. τοῦ. 204 A. ἀντί. scr. m. A^a.

Sophista A^a. In Cl. extant, 216 A. ὅτι — Σωκράτει, 216 A. αὐτῇ — νῆσοι, 216 A. τὸ μὲν — πολιτείας (om. Πλάτων) scr. m. A^a. In Fol. 114b, (ad p. 219 E.) schema eiusdem manus invenitur quod Clarkius in Cat. transscripsit.

Politicus. A^a. Hic dialogus habet sch. 260 C., 261 D. m. A^a.

¹⁾ Nota: 168 B. Cl. habet οἱ Θρασ. οἱ Καλλ. οἱ Διον. οἱ Εὐθ. Alia vide apud Gaisf.

²⁾ Sch. 170 B. incipit ab ἀρχοντας οἶον. Nota hic in Cl. scholiorum signa saepe ad alia verba spectare quam in R. Sch. 172 A. ἐντ. μέχρι separandum est ab antecedenti.

³⁾ Media verba quaedam tamen omissa sunt.

⁴⁾ 174 D. scholion inducitur verbis ἀντί τοῦ. In sch. 177 A. complura verba evanida.

⁵⁾ Sch. 179 C. alio loco (fol. 100a) Cl. exhibet; tum lib. habet εἰς τοὺς κατὰ Ἡράκλειτον ἐλέγχους.

⁶⁾ p. 182 A. ποιόν τι pro ποιῶντι corr. m. R^u. Ad 183 A. (fol. 101 B. dextr. p.) extat etiam τὸν τήν ἀντίφασιν συντρέχειν.

Parmenides. A^a A^d A^f. Ads. scholia 128 C. A^d(?). 130 D. ἐτάραξεν, ἠνώχλησεν, εἰς θυμὸν ἐκίνησεν, τὰς φρένας διέσειπεν. A^f. Fol. 161 a (141 D) legitur CH et ὁ λόγος αἰρεῖ. m. A^a.

Philebus. caret scholiis; lemma ὄρος λήθης habet fol. 183a p. 33 E. (A^a).

Symposion. A^a. Adsunt scholia 172 A.¹⁾ Aγ. 173 A.²⁾ 189 A. 202 A. 211 B. 218 A. 218 B. quae m. A^a scr. Adde 218 B. ὅτι καὶ ἐπὶ τοῦ ἔρωτος τοῦ πρὸς φιλοσοφίαν μανίαν ὀνομάζει. 210 E. περὶ τοῦ ὄντος καλοῦ, p. 215 ἐκείνου] μαρσίου. ibid. οὐκ αὐλητής] ἐν ᾗθει (m. A^a.)

Phaedrus. A^a R^z. Extant in Cl. sch. 227 B. Ἀττική (A^a). 228 C. ταχέως (A^a). 229 B. Ἀγραίας (R^z). 230 E. (R^z). 242 C. ἐδυσωπούμην] ἀντὶ ὀπώπτουον. Hic ὀπώπτ. A^a, ἀντὶ diversae manus est (A^f)³⁾.

Alcibiades I. A^a A^c. Extant in Cl. 103 A. τὸ — θεόν⁴⁾. 104 B. προσιπών (m. A^a); 107 E. λεληθότως, 108 A. ὄρα A^c; 110 D (A^a)⁵⁾; 112 E. ἰδοῦ. 112 E. ἀρχή (A^a); 115 A., 116 B. τὸ εὖ, 119 A. τὸ Ὅμ. — νοῦν (A^a); 124 D. ἀγνοεῖ. 124 E. τὸ ὀλικόν. 125 A. ἐπὶ (A^a); 126 C. οὐχ ὥς. (sch. evanidum; ultima verba probant nos habere hoc sch.) (A^a); 126 D. ὥς,] 127 A. τὸ κατὰ. 127 A. κατὰ γάρ. 129 A. ἀντί, 130 C. οἶδεν. 131 B. σωφρ. (A^a)⁶⁾.

Alcibiades II. R^w p. 145 E. (267 B.) adnotatiunculas adscripsit, quae tamen sine ullo pretio sunt.

Hipparchos. A^a. Ads. scholia 226 C. 229 C. (A^a).

Rivales. Adest sch. 138 E. (A^{a*}).

Theages. A^a R^z. Sch. 122 E. ἀντὶ τοῦ; 125 C. γρ. (R^z). 126 B. ἀττική. (A^a).

Charmides. A^a R^z. Sch. 153 A. πόλις. 154 B. παροιμία — τεχτονική. (R^z). 155 D. ἀπόλοιτο (A^a). 157 C. γρ. (R^z). 159 B. ἐπηρ.

¹⁾ Schol. evanidum; ei remedia chemica adhibita sunt.

²⁾ In verbis Ὅμηρος — ἔχεται atramentum paululum diversum.

³⁾ Hic dialogus saepe lectionum discrepantiam exhibet, veluti R^w ad 240 B. ἀναγκαῖον, ad 240 E. χαχυπόπτους in mg. scr. — p. 231 C. suppl. R^z καὶ ἔτοιμοί εἰσι.

⁴⁾ Sed a verbis ὅπερ novum scholion incipit.

⁵⁾ f. 252a schol. non lectum.

⁶⁾ Dubitare in dial. possis, utrum m. A^a an A^{a*} statuenda sit. dialog. in mg. saepe habet † (R^w).

166 C. ἀντί (A^a). R^a. scr.: 154 B. γρ. εἰσέρχεται (Cl. ἔρχεται). 157 C. γρ. καὶ ἀπάσαις (Cl. ἐπαῖσαι...); 157 E. γρ. καὶ οἰκία (Cl. οὐσία).

Laches. A^a R^a. Sch. 180 B. 187 B. ἐν τῷ — Κα. 192 C. 197 A. Ἀττικοί. 197 C. ἀντί — ἐσχώπτοντο; tum verba insequuntur ἔστι δὲ ἀπὸ εὐθείας αἰξωνεύς, οὕτως δὲ ἀπὸ δήμου τινὸς ἐλέγοντο Ἀθηναῖοί τινες ¹⁾. (A^a). 201 B. (R^a).

Lysis. A^a A^c. Sch. 206 D. ἐν. 206 E. ἀστρ. 206 E. παιδιά. 206 E. πλ. 208 A. τοῦ ἡμιονικοῦ al. om. 216 A. ἀντί (m. A^a). 209 B. (A^c). In extrema pag. (f. 317a) legimus ἀνακεφαλαίωσις ἐπιλογική (m. A^a).

Euthydemus habet unum sch. 271 B. οὕτως — σῶμα (A^a).

Protagoras. A^a. 309 A. τῆς. 309 D. 310 A. Ἀττικόν. 331 D. ἀντί.

Gorgias omnium dialogorum pleraque scholia habet; hic distinguimus m. A^a, A^{a*}, A^{a*}, (scriptura huius manus obliquior), R^a manum turpem viridem (s. XV).

p. 297. Ext. sch. 447 A. παροιμ. ἐπὶ — λεγομένη. πολέμου καὶ μάχης μεταλαγχάνεις. (A^{a*}); 447 A. verbis ἑλλ. — Πλάτωνι omissis λείπει τῇ — Γοργίας (A^{a*}); 447 A. κατὰ τά. 447 A. οὐ πάνυ (m. A^a); 447 A. ἀλλ' ἢ] ἀλλ' ἤ, ἀλλ' ἄρα (A^a). Scholion m. R^a scr. quod Gaisf. sic legit ἀνάγκη διττὴ ἢ μὲν ὕλική ἐὰν εἴπωσιν οἱ ἱατροὶ ἀνάγκην ἔχεις — reliqua legi nequeunt.

p. 298. Sch. 447 A. παροιμία καὶ αὐτὴ ἐπὶ τῶν ἐπὶ καλῶ τι πράγματι ἀπολιμπανομένων· κατόπιν ἐορτῆς ἦκει (A^{a*}); 447 A. ἢ ἀν. (A^{a*}); 447 B. B. B. C. (A^{a*}); 448 A. Ἀττικόν — χρόνον (A^{a*}); 448 B. ἄλλος — Πολιτεία (A^a); inseq. v. οὗτος — ἀδελφός. (A^{a*}); 448 B. Πολύγνωτος οὐ καὶ τὸ ἐν Δελφοῖς ἔργον ἐπιγράφει γράψε — ἀκρόπολιν (A^a). 448 C. φασί, 448 C. σκόπει, 448 D. οὐ γάρ (A^{a*}); 448 C. ἀντί (A^a).

p. 299. ads. omnia; 448 D. αὕτη; 449 A. τό, 449 D. ἡ, 449 E. ἀντί, 450 A. ἱατρ, B. χεῖρ., 450 B. ψεύδ. m. A^{a*}; 449 A. Ἀριστ. 449 D. δύο. 449 E. ὁ μὲν, 449 E. ἰστέον, 450 C. ἐπ. A^a. f. 370a sch. non lectum.

p. 300. ads. omnia. scr. m. A^a praeter 450 E. σκόπει et 451 A. τῶν, 451 B. ἐν quae scr. A^{a*}. Etiam extat schema f. 370a cf. Gaisf. 451 A. (Schol. 450 E. ἀντί τοῦ ἀποκρ. supra lin.)

p. 301. sch. 451 C. ὥς — ἀνάπαλιν (A^{a*}). τούς — ποσόν (A^a); 451 D. ὥσπερ (A^{a*}); 451 D. δεῖ (A^a); 451 E. τὸ — χρήσιμον ὃν A^{a*}. Desunt verba ἄλλως — καλεῖσθαι. Insequ. σκόλιον. Ἀθήνησιν — τοῦτο

¹⁾ Hoc schol. redintegravit hic illic R^a.

(A^a). Inseq. τὸ δὲ παρὸν Σιμωνίδου ἔστιν τοιοῦτο ὄν· ὑγιαίνει μὲν ἄριστον ἀνδρὶ θνητῷ· δεύτερον δὲ φῶς καλὸν γενέσθαι· τὸ δὲ τρίτον πλουτεῖν ἀδύλως. τέταρτον δὲ ἡβᾶν μετὰ τῶν φίλων. τινες δὲ οὐ Σιμωνίδου ἀλλ' Ἐπιχάρμου φασιν αὐτὸ εἶναι (A^a).

p. 302. 452 A. πρῶτόν (A^{a*}). 452 C. 452 D. διὰ (A^a). 452 D. πῶς (A^{a*}). 452 D. τό (A^a). 452 E. δύναμιν (A^{a*})¹).

p. 303. Ads. omnia. 453 D. 455 B. A^{a*}, reliqua A^a. (Schema m. A^{a*}). (In 453 D. καὶ ἀλλ. ἴσα des.)

p. 304. Ads. omnia. 455 E. διὰ — πεντήχοντα; (δέ ante vs. om.) 457 A. σύντομον — ἀπλῶς A^{a*}; reliqua et sch. 457 A. ἐπιρρ. — καθ. A^a (f. 372a sch. non lectum).

p. 305. omnia ads. praeter 459 C. εὐθέως; sch. 457 D. (in f. 373a), 458 B., 458 C., 458 E. ἐντ. 459 D. ὁ A^{a*}. reliqua scr. A^a. (Fol. 374a schol. non lectum)²).

p. 306. sch. omnia ads.; 460 A. ἔ. 461 B. πεπλ. 461 B. ὁ π. 461 D. τό. 462 B. ἀσαφ. 462 B. ἐκ. A^{a*}; rel. A^a. (Fol. 375 A. sch. non lectum. Schema).

p. 307. sch. omnia ads. 462 E. ἰστέον. 463 A. ὄρος. 464 B. 464 B. m. A^{a*}; rel. m. A^a. (Schema).

p. 308. sch. omnia ads. 465 A. 465 C. τά. 465 D. Ἄναξ. — Ἐμπεδ. m. A^a; rel. (Sch. 465 D. τοῦτο — Πῶλε) A^{a*}. (p. 376b sch. non lectum)³).

p. 309. sch. omnia ads. 466 C. τό τε. 466 E. ἐλ. 467 B. ὁ. m. A^{a*}. rel. A^a.

p. 310. Desunt 467 B. καί. 467 D. τόν.; sch. 468 A. ταῦτα. 469 A. σιώπα. 469 A. ἀζ. scr. m. A^{a*}. rel. A^a. Adde 467 E. ἡ μείζ' ^τπρο^δ ἐντεσ^ι κοσχευάζεται (m. A^a). (Complura schemata.)⁴).

p. 311. Sch. omnia adsunt; 469 D. ἐνεργ — παρελήφθη. 470 B. ἐντεσῦθεν — λόγος. 470 B. οὐχ. 470 C. κατ'. 470 C. φλ. E. μέγαν βασιλέα] τῶν Περσῶν φησίν. 470 E. παιδεία m. A^{a*}; rel. A^a. Scholia duo nequeunt certo legi. Lemma (471 A.) περὶ Ἀρχελάου τοῦ Μακεδονοῦ ἰστέον⁵). (A^{a*}).

¹) Ad 452 B. τί δὲ ἀν ἦι (Cl.) m. A^{a*} γρ. τι δὲ δὴ ἦ.

²) Ad p. 459 E. εἰ δὲ (Cl.) m. A^{a*} γρ. εἰ δὲ μὴ σύ.

³) Ad 466 B. τάχα m. R^a suppl. in mg. πρεσβύτης γενόμενος.

⁴) Sch. ultimum satis evanidum.

⁵) m. A^a ante ἐνέργεια 469 D. interposuit ἀντὶ τοῦ τεθνήσκει

p. 312. Deest 472 B. ταῖς; — sch. 471 E. οὐ; 472 A. τῶν; 473 D. ἀντί. 473 E. A^a; rel. A^{a*}. (Schema)¹⁾.

p. 313. Ads. omnia sch., ser. m. A^{a*}. si excipias scholii 473 E. verba ἐπιψ. — αἰτ. quae ser. A^a. (Fol. 380 b. 381 a schemata).

p. 314. Deest 483 A. ἀντί. Sch. ser. A^a vel A^{a*}. In sch. 485 A. τὸ — δοκεῖ om. (f. 386 a sch. non lectum.) (Schemata 382 a, 381 a).

p. 315. Desunt 486 C. ἐν. 486 C. γρ. 488 A. ἱκανῶς. 488 C. σημ. — Sch. 486 C. 486 E. 487 A. CCE A^a. rel. A^{a*}.²⁾ Adde lemma: σοφίας ἔνδεια, αἰσχύνης παρουσία, ἀπάτη.

p. 316. Desunt 489 D. ὅπ. D. περ.; omnia ser. A^{a*}.³⁾

p. 317. Desunt 492 E. ἐκ. 493 A. ἀμύητοι. 493 B. τό. 493 E. οἶνον; schol. omnia ser. A^{a*}.⁴⁾

p. 318. Desunt 493 E. οὐκ. 494 C. ἀντί⁵⁾. Ser. omnia sch. m. A^{a*}. (Schema amplum f. 391 a.)

p. 319. Ads. sch. 496 E. εἰ — συνεῖναι (A^{a*}); 497 A. τὸ — προ-
σποι. (A^{a*} evanidum); ἀκχίζειν — ἀφ. A^a 497 C. διττὰ — ἐξῆς⁶⁾.
497 A. ἀντὶ τοῦ ὅπ. 497 A. ἀντὶ τοῦ ἀνο. (A^a). Des. 497 C. οὕτως.
498 E. παρ. — λέγειν (Schemata f. 390 b et f. 391 a.)

p. 320. Adsunt omnia; ser. m. A^{a*}.

p. 321. Adsunt omnia sch. (A^{a*}). (Schema 392 A. Lemma 394 b
περὶ τῶν τεσσάρων ῥητόρων Θεμιστοκλέους, Κίμωνος, Μιλτιάδου, Περι-
κλέους (A^a)⁷⁾.

p. 322. Ads. omnia schol. ser. A^{a*}; (Schema legitur f. 395 a.)

p. 323. Deest 517 E. σχυτ. Ser. sch. m. A^{a*}. Schema rep. f.
395 b. Lemmata: f. 399 a ἀπόδειξις τῆς κακοπολιτείας τῶν τεσσάρων
ῥητόρων f. 400 b διαφορὰ αἰτίου καὶ συναιτίου f. 400 b. (580 B.) Θεαρίων
ὁ ἀρτοκόπος, Μίθαικος ὁ ὀφιοποιός. Σύραμβος ὁ κάπηλος⁸⁾.

p. 324. Trila schol. quae adsunt ser. A^a.⁹⁾

¹⁾ Ultimum sch. 473 E. satis evanidum.

²⁾ Sch. 487 A. satis evanidum.

³⁾ f. 389 a e literis evanidis scholii ad 491 E. ἐντ. vestigia mihi videbar conspicerere.

⁴⁾ Schol. ad παρρησιάζομενος 492 D. hoc est: ἀντὶ ὁμολογεῖ ἀπααραχάλυπτως (m. A^{a*}).

⁵⁾ Sch. 496 C. reperitur f. 391 a.

⁶⁾ Nunc parenthesis inseq.

⁷⁾ f. 393 vel 394 ὅτι ἡ κοσμιότης σωφροσύνη.

⁸⁾ f. 396 b (509) leg. ὁμηρος ὡς αἰεὶ τὸν ὁμοῖον ἄγει θεὸς ὡς τὸν ὁμοῖον.

⁹⁾ f. 402 b (p. 521) ἀρχὴ τοῦ μύθου.

Meno A^a A^c. Ads. in Cl. 71 B. scr. A^c (saec. XII); f. 407 b (p. 74) ὅτι γοργίας ὁ λεοντίνος ἀκροατῆς γέγονεν Ἐμπεδοκλέους τοῦ ἀκραγαντίνου (A^a)⁵).

§. 28.

Iam ad *Phaedonem* transeamus, dialogum difficillimum tractatu. Cuius difficultates priusquam adgrediamur, prolusionis causa locos complures tentabimus, ubi quid sit verum e libris optimis Cl. et Tubingensi nullo negotio effici potest.

Transponimus igitur cum Cl. T. 62 C. τὴν νῦν ἡμῖν παροῦσαν. — 64 E. δοκεῖ σοι. — 65 C. ὅταν αὐτὴν τούτων μηδὲν παραλυπῇ. — 71 A. ἔστιν οὕτω ἔφη. — 76 E. ὑπερφυῶς ὦ Σώκρατες ἔφη ὁ Σιμμίας. — 80 B. τῷ δ' (Cl. δὲ) ἀνθρωπίνῳ καὶ θνητῷ καὶ πολυειδεῖ καὶ ἀνοήτῳ κ. τ. λ. — 103 C. ἄρα μή που ὦ Κέβης ἔφη. — 108 D. ἡδέως οὖν ἂν ἀκούσαιοι. cf. 57 A. ἡδέως γὰρ ἂν ἐγὼ ἀκούσαιοι.

Addimus his locis: 58 B. πρὶν ἂν εἰς Δῆλον ἀφίκηται τὸ πλοῖον καὶ πάλιν. Inscere te post Δῆλον quod cum Δ Π etiam habent Cl. et Tub. Error ortus e silentio Gaisfordii. — 89 C. ὁ ante Ἡρακλῆς praeter Δ Π etiam add. Cl. Tub. Quod Cl. supra verba has literas habet: πρὸς

^β δύο λέγεται οὐδ' ὁ [■] Ἡρακλῆς οἷός τε εἶναι, noli transponere, nam in Tub. extat item: πρὸς δύο λέγεται οὐδ' ὁ Ἡρακλῆς. — 69 C. εἰσὶ γὰρ δὴ, φασὶν οἱ περὶ τὰς τελετάς, ναρθηχοφόροι μὲν πολλοί, βάκχοι δὲ τε παῦροι. Ante φασὶν interp. ὥς Δ Π, quibus addendi sunt Cl. Tub. cf. 58 A. ὥς φασὶν Ἀθηναῖοι. p. 80 D. ὥς φασιν οἱ πολλοὶ ἄνθρωποι. — 99 C. dedi Herm. τοιαύτης αἰτίας. Scribe cum Cl. et Tub. τῆς τοιαύτης αἰτίας, quod etiam praebet Δ. Etiam hic silentium Gaisfordii videtur fuisse causa erroris.

Delemus: 67 D. (ψυχὴν) ἐκλυομένην ὥσπερ ἐκ δεσμῶν ἐκ τοῦ σώματος. Praep. ἐκ post ὥσπερ om. Cl. Tub. Vat. Δ. Cobet scr. (V. L. p. 165) ὥσπερ ἐκ δεσμῶν τοῦ σώματος. Transposuit igitur praepositionem. Sed etiam ὥσπερ δεσμῶν ἐκ τοῦ σώματος posse dici probat Tim. 79 A. ubi Turic. recte dederunt ὥσπερ αὐλῶνος διὰ τοῦ σώματος. cf. Bywater ad nostrum l. — 69 C. ἡ σωφροσύνη καὶ ἡ δικαιοσύνη καὶ ἡ ἀνδρεία καὶ αὐτὴ ἡ φρόνησις. Artic. ἡ om. Cl. in Tub. scrips. man. rec. supra lin. Articulum deesse posse demonstrant Phileb. 21 A. τοῦ φρο-

⁵) Lemma f. 412b (p. 85) περὶ τῆς τοῦ Δ εἰς τὸν Ο ἐντάσεως.

ναῖν καὶ τοῦ νοεῖν καὶ λογίζεσθαι τὰ δέοντα. Theag. 124 A. τῶν θεριζόντων — καὶ τρυγόντων καὶ τῶν φυτευόντων καὶ σπειρόντων καὶ ἀλωόντων cf. Riddell Digest of Idioms § 237 F. — 176 C. εἰ μὴ ἄρα ἅμα γιγνόμενοι λαμβάνομεν ταύτας τὰς ἐπιστήμας. Cl. Tub. II pr. om. ἅμα. Interpolatum hic aequè ac 77 B., ubi supra lineam participio ἀποθνήσκοντος additum est. — 77 D. ἐκ θανάτου καὶ ἐκ τοῦ τεθνάναι. Praep. ἐκ ante τοῦ om. Cl. et Tub. Praepositiones saepe interpolatas esse supra p. 60 demonstravi. Silentio Gaisfordii perducti sunt in errorem. — 91 B. εἰ μὲν τυγχάνει ἀληθῆ ὄντα ἃ ἐγὼ λέγω. Mirum in modum errant interpretes de voc. ἐγώ. Quamquam Gaisf. definite dicit ἐγὼ deesse in Clariano, tamen Bekk. eum his libris adnumerat qui ἐγὼ tuentur. Bekkeri adnotationem falsam secuti sunt Tur. Herm.. St. omisit quidem ἐγώ, sed falso addidit e Cl. nihil discrepantiae notatum esse. Confirmare possum nec Cl. nec Tub. pronomen servare mirorque quod Bywater de Cl. hoc non testatus est. — 100 B. ἐλπίζω σοι ἐκ τούτων τὴν τε αἰτίαν ἐπιδείξειν καὶ ἀνευρήσειν ὡς ἀθάνατον ἢ ψυχῇ. Voculam τε om. Cl. Tub.; igitur debuerunt eam omittere. — 118 A. ἰδὼν δὲ ὁ Κρίτων ξυνέλαβε τὸ στόμα τε καὶ τοὺς ὀφθαλμούς. Cl. Tub. quibus accedit II. omittunt τε. Non tuebimur.

Restituimus: 58 D. ἀλλὰ πειρῶ ὡς ἂν δύνῃ ἀκριβέστατα διελθεῖν πάντα. Non solum Δ, sed etiam Cl. Tub. διεξελθεῖν, quod nihil insoliti habet. cf. Prot. 342 A. πειράσομαι ὑμῖν διεξελθεῖν. — 77 A. καὶ ἔμοιγε ἱκανῶς ἀποδέδεικται. Cl. καὶ ἐμοὶ ἐδόκει ἱκανῶς ἀποδέδεικται. In mg. καὶ ἔμοιγε ἱκανῶς. Tub. καὶ ἐμοὶ δοκεῖ ἱκανῶς ἀποδέδεικται. Interpolatio vix statuenda est; immo scribendum καὶ ἐμοὶ δοκεῖ ἱκανῶς ἀποδέδεικται cf. Menex. 236 B. ὅτε μοι δοκεῖ συνετίθει τὸν ἐπιτάφιον λόγον. — Simili modo 108 D. scribe cum Cl. Tub. ἅμα δέ, εἰ καὶ ὑπιστάμην, ὁ βίος μοι δοκεῖ ὁ ἐμός ὡς Σιμμία τῷ μήκει τοῦ λόγου οὐκ ἐξαρκεῖ. Locutio diversa, cogitatio eadem. — 108 C. αὐτὴ (ἢ ψυχῇ) δὲ πλανᾶται ἐν πάσῃ ἐχομένη ἀπορία, ἕως ἂν δὴ τινες χρόνοι γένωνται, ὧν ἐξελθόντων ὑπ' ἀνάγκης φέρεται εἰς τὴν αὐτῇ πρέπουσαν οἴκησιν. Pro ἐξελθόντων quod Bekk. in Ξ solo reperit, Cl. Tub. ἐλθόντων. Hic significat γίνεσθαι *praeterire* cf. Sauppe ad Prot. 320 B. Pro γίνεσθαι autem orationis variandae causa positum est ἔρχεσθαι, quod eodem modo quo γίνεσθαι potuisse adhiberi nemo non concedet cf. τὰ χρήματα ἤλθεν, divitiae abierunt. Recte Kroschel ad Prot. p. 320 A. „Usitatus esset διαγεγονέναι, sed saepius apud Platonem aliosque Atticos verba simplicia inveniuntur, ubi expectes composita; ut p. 310 C. ἤλθον pro ἐπανήλθον, p. 321 C. ἔρχεται pro ἐπέρχεται“. Librariis haec verba simplicia offensioni sunt; po-

nunt igitur composita veluti 68 A. πολλοὶ δὲ ἐκόντες ἡθέλησαν εἰς Ἄιδου
ἐλθεῖν; M. a in mg. Cl. μετελθεῖν.

§ 29.

In Phaedone Clarkianus duas recensiones inter se coniunctas habet; nam et in margine et supra versum multae lectiones adscriptae sunt ¹⁾, quarum maior pars etiam in aliis libris extat. Editores igitur hanc crisin Phaedoni adhibuerunt, ut ex secundariis lectionibus quae iis videbantur esse aptae, eligerent, reliquas spernerent; omnes nemo recepit, nemo recipiet. Hac autem re inter se differunt interpretes quod alii paene ubique lectiones secundae manus praeferebant, alii hic illic primae manus scripturas restituebant. Omnium saepissime Hermannus ausus est a recensione secundaria recedere. Unde factum est, ut alii aliter Phaedonem repraesentarent, cum alii aliter illa altera recensione usi essent. Hoc nemo cogitavit fortasse recensionem secundam plane esse spernendam aequae ac secundam recensionem Demosthenis. Quod mirum videtur, nam librum habemus, in quo secundaria recensio desit, optimum librum dico Tubingensem. Is liber ¹⁾, de cuius pretio Hermannus (Praef. Vol. I p. V) iusto perversius iudicavit, mirum quantum vel in rebus minutissimis cum prima manu Clarkiani consentit. Omnibus lectionibus, quae ex secunda recensione fluxerunt, exploratis mihi persuasi *Tubingensem et Clark. I. m. nobis in Phaedone exhibendo solos duces esse debere*. Hoc ut etiam aliis persuadeam, omnes lectiones secundarias hic iterum examinabo.

Verbum subst. saepissime interpolatur id quod hi loci evincunt: 107 C. εἴπερ ἡ ψυχὴ ἀθάνατος, ἐπιμελείας δὲ δεῖται οὐχ ὑπὲρ τοῦ χρόνου τούτου μόνον, ἐν ᾧ καλοῦμεν τὸ ζῆν, ἀλλ' ὑπὲρ τοῦ παντός. Vetus manus in mg. Clarkiani pos. ἐστίν. Cum T. om. Turic. Stallb.; retin. Bekk. Hoc vocab. non admittendum est, nam conclusio brevis esse solet. cf. Euthyphr. 12 C. Theaet. 145 E. ἢ οὐχ ἅπερ ἐπιστήμονες, ταῦτα (legendum ταῦτά cf. verba insequentia) καὶ σοφοί; Alio loco interpolationem simillimam deteximus: Theaet. 205 B. Τί δ'; εἰ μὴ τὰ στοιχεῖα συλλαβῆς μέρη ἐστίν, ἔχεις ἀλλ' ἅττα εἰπεῖν, ἃ μέρη μὲν ἐστὶ συλλαβῆς, οὐ

¹⁾ Plerasque manus satis antiqua scripsit quae num ubique eadem sit, haud facile est diiudicatu, cum omnia paene folia madore corrupta sint (m. a adponemus); recentes lectiones quae diversis manibus debentur, signo communi (m. rec.) significabimus.

²⁾ Librum Bray Comite nobilissimo intercedente liberalitate supremi magistratus Wirtembergensis Wirzburgum transmissum ipse cum cura excussi.

μέντοι στοιχεῖά γ' ἐκείνης; ἔχεις om. Cl. man. saec. X supra lineam posuit ἔχης. Hic interpolator redargui potest; cum enim legeret ἔστιν, nihil habuit, quo referret εἰπεῖν. Sed luce clarius est scribendum nobis esse τί δ' εἰ μὴ τὰ στοιχεῖα συλλαβῆς μέρη, ἔστιν ἄλλ' ἅττα εἰπεῖν κ. τ. λ. Vides accentum mutatum librarium ad errorem perduxisse. — Cum enuntiationes secundariae εἶναι non tam facile abiciant quam primariae, librarii haerebant in tali omissione; sed innumerabilia eius exempla in Platonis dialogis extant; quare ne hoc quidem loco copulam inseri sinam: 62 A. θαυμαστόν ἴσως σοι φαίνεται, εἰ τούτοις τοῖς ἀνθρώποις μὴ ὄσιόν ἐστιν αὐτοὺς ἑαυτοὺς ποιεῖν. Verbum ἔστιν Cl. supr. lin.; om. Tub. — 58 E. εὐδαίμων γάρ μοι ἀνὴρ ἐφαίνετο. Corrector in Cl. compendium verbi εἶναι supra ἐφαίνετο posuit; Bekk. St. Tur. Hr. om. cum Tub. Nemo opinor revocabit cf. Theaet. 148 B. πάλιν αὖ φαίνεται ψευδὴς ὁ Θεόδωρος. Prot. 328 A. ἵνα μεγαλοπρεπέστεροι καὶ εὐσχημονέστεροι ἡμῖν φαίνωνται. — 68 E. de iis, qui non vere temperantes sunt, loquitur philosophus; ἀκολασία τινὶ σώφρονές εἰσι; καίτοι Ἰφαιμέν γε πού ἀδύνατον εἶναι, ἀλλ' ὅμως αὐτοῖς συμβαίνει τούτῳ ὅμοιον εἶναι τὸ πάθος τὸ περὶ ταύτην τὴν εὐήθη σωφροσύνην. Verbi εἶναι compendium extat supra scriptum; om. Tub., serv. B. Tur. St. Hr. Cum Heind. omittemus; nam συμβαίνει ita construi potest cf. Gorg. 479 C. συμβαίνει μέγιστον κακὸν ἢ ἀδικία. Construe igitur τὸ πάθος τὸ περὶ ταύτην τὴν εὐήθη σωφροσύνην τούτοις συμβαίνει ὅμοιον τούτῳ. Dat. τούτοις ad συμβαίνει accessit, ut quorsum τὸ πάθος pertineret apertum esset; simplicius potuit scriptor dicere τὸ τούτων πάθος. — 78 C. οὐκοῦν ἅπερ αἰεὶ κατὰ ταῦτα καὶ ὡσαύτως ἔχει, ταῦτα μάλιστα εἰκὸς εἶναι τὰ ἀξύνθετα, τὰ δὲ ἄλλοτ' ἄλλως καὶ μηδέποτε κατὰ ταῦτά, ταῦτα δὲ εἶναι τὰ ξύνθετα. In Cl. εἶναι τὰ ante ξύνθετα supra lin.; a Tubing. nihil praesidii; nam τὰ δὲ — ξύνθετα in mg. habet m. rec. suppleta, ibi autem εἶναι ξύνθετα. Verbum εἶναι non esse necessarium locus ipse nobis persuadet, nam vel ἔχοντα in secunda enuntiatione supplere debemus; quanto vero facilius est ut εἰκός, etiam εἶναι supplere! Nunc autem quaeritur, num articulo τὰ carere possimus. Aio; nam Plato in periodis conformandis hoc potissimum cavet, ne membrorum aequabilitatem accuratam efficiat; enuntiatio ipsa hoc comprobatur, neque enim relativam structuram in parte periodi altera adhibuit, neque μὲν — μὲν in priore parte posuit. Exemplorum quae ubique in dialogis reperiuntur, hoc unum tibi suppedito ex Euthyd. p. 287 D. πότερον οὖν ψυχὴν ἔχοντα νοεῖ τὰ νοοῦντα ἢ καὶ τὰ ἄψυχα; Τὰ ψυχὴν ἔχοντα. — 68 D. οἶσθα ὅτι τὸν θάνατον ἡγοῦνται πάντες οἱ ἄλλοι τῶν μεγάλων κακῶν εἶναι. Cl. Tub. om. in textu εἶναι;

man. a. posuit in mg. Cl. τῶν μεγίστων κακῶν εἶναι. B. St. Tur. Hr. spreverunt superlativum, non spreverunt verbum substantivum, id quod aegre fero; nam graeco potest dici ἡγοῦμαι τὸν θάνατον τῶν μεγάλων κακῶν cf. Kr. § 47, 9, 3 Σόλων τῶν ἑπτὰ σοφιστῶν ἐκλήθη Ἴς. Ἐμὲ θὲς τῶν πεπεισμένων. Hl. (Rep. 4. 424 C.) Comparabis etiam Kr. 47, 6, 11. Οὐκ ἐλευθέρου φέρειν νενόμικα κοινωνοῦσαν ἡδονὴν ὕβρει. Μέ. Τὸ τὰ αἰσχροῦ εἰδύτα εὐλαβεῖσθαι σοφοῦ τε καὶ σώφρονος ἔκρινεν Ξε. Interpolatio eiusdem generis ab Hermanno remota est Euthyphr. 4 AB. οὐ γὰρ οἶμαί γε τοῦ ἐπιτυχόντος εἶναι ὀρθῶς αὐτὸ πράξει. Verb. εἶναι om. Cl. Tub. omis. igitur recte Hr.; sed falso adnotavit: Supple ἔστι. Nihil est supplendum. — 78 E. ubi unitati idearum rerum corporearum multitudo et qualitates, quarum participes fieri possunt, opponuntur, legimus: ἄρα κατὰ ταῦτά ἔχει ἢ πᾶν τούναντίον ἐκείνοις οὔτε αὐτὰ αὐτοῖς οὔτε ἀλλήλοις οὐδέποτε ὥς ἔπος εἰπεῖν οὐδαμῶς κατὰ ταῦτά ἐστιν; Οὕτως αὖ ἔφη ταῦτα ὁ Κέβης· οὐδέποτε ὡσαύτως ἔχει. Locus gravissime interpolatus. In Cl. extat καὶ supra ἐκείνοις, πω supra οὐδέποτε, ἐστιν supra κατὰ ταῦτά; αὖ supra οὕτως; ταῦτα denique in mg. reperitur. Haec omnia om. optimus liber Tub. isque, qui Phaedonem edet, e textu expellet; neque enim haec verba sunt Platonis, ἐστιν hic prorsus supervacaneum, cum ἔχει etiam in altero membro sit supplendum. cf. supra p. 78 C., 78 D., ubi ἔχειν quod hac in re verbum proprium esse videtur (cf. responsum) item legenti supplendum est; οὐδεπώποτε prorsus alienum est a loco, id quod responsum ipsum probat; οὕτως ἔφη Plato Rep. V. 472 C. pariter adhibuit; ταῦτα maxime inopportunum esse bene sensit Heindorf. καὶ intrusum ante οὔτε neque defendit neque defendet quisquam. — 75 D. ὥστε ἀναγκαῖον ἡμῖν εἶναι τούτων ἀπάντων τὰς ἐπιστήμας πρὸ τοῦ γενέσθαι εἰληφέναι. In Cl. compendium verbi εἶναι supra scriptum; a Tub. abest. Jam Bywater vidit hoc verbum esse omittendum.

Pronomina a librariis saepissime invecta esse cum alio loco demonstraverim tum hic demonstrabo locis compluribus e Phaedone collectis: 60 D. εἰ οὖν τί σοι μέλει τοῦ ἔχειν ἐμὲ Εὐθύφῳ ἀποκρίνασθαι, ὅταν με αὐθις ἔρωτᾷ, εἰπέ τί χρὴ με λέγειν. In Cl. m. a. supra scr. με. om. Tub. Iure Heind. pronomen non admisit; nam de subiecto dubitatio non potest nasci, ac Graeci in hac locutione pronomen suppleri malunt quam poni cf. 117 A. σὺ γὰρ τούτων (Socrates loquitur) ἐπιστήμων, τί χρὴ ποιεῖν. Euthyd. 306 D. καὶ μὴν καὶ αὐτὸς περὶ τῶν υἱέων ἐν ἀπορίᾳ εἰμί, τί δεῖ αὐτοῖς χρήσασθαι. Euthyphro 4 D. ὁ πατήρ πέμπει δεῦρο ἄνδρα πεισόμενον τοῦ ἐξηγητοῦ ὅτι χρὴ ποιεῖν. — 66 C. καὶ γὰρ πολέμους καὶ στάσεις καὶ μάχας οὐδὲν ἄλλο παρέχει ἢ τὸ σῶμα καὶ αἱ τούτου ἐπιθυμίαι· διὰ γὰρ τὴν τῶν

χρημάτων κτῆσιν πάντες οἱ πόλεμοι ἡμῖν γίνονται, τὰ δὲ χρήματα ἀναγκασόμεθα κτᾶσθαι διὰ τὸ σῶμα, δουλεύοντες τῇ τούτου θεραπείᾳ. In Cl. ἡμῖν supr. lin. Tub. om. Nihil nos cogit pronomen inserere; etiam supra posuit scriptor παρέχει sine ἡμῖν — 67 A. καθαρεύωμεν ἀπ' αὐτοῦ (sc. τοῦ σώματος) ἕως ἂν ὁ θεὸς αὐτὸς ἀπολύσῃ ἡμᾶς. Manus recentissima ultra mg. scr. αὐτός. Vides; exaggerat sententiam librarius; αὐτός igitur expellendum est. — 88 C. (timendum erat) μὴ οὐδενὸς ἄξιοι εἶμεν κριταὶ ἢ καὶ τὰ πράγματα αὐτὰ ἄπιστα ἦ. Homo et res, ἡμεῖς et τὰ πράγματα inter se opponuntur; αὐτὰ igitur prorsus supervacaneum (cf. 66 E. αὐτὰ τὰ πράγματα ubi αὐτὰ recte se habet) et B. St. Tur. Hr. omittere debuerunt aequae ac 76 D. εἰ μὲν ἐστὶν ἃ θρυλοῦμεν ἀσί, καλὸν τε καὶ ἀγαθὸν καὶ πᾶσα ἢ τοιαύτη οὐσία καὶ ἐπὶ ταύτην τὰ ἐκ τῶν αἰσθήσεων πάντα ἀναφέροντες omiserunt αὐτῶν quod ultra marginem literis minoribus adscriptum extat. cf. 75 B. εἰ ἐμέλλομεν τὰ ἐκ τῶν αἰσθήσεων ἴσα ἐκείσε ἀνοίσειν. Sed iterum locus interpolatus est; m. rec. in Cl. τι supra τε posuit quod non habet Tub. Recte adversatur Heind. his verbis: *non quaeritur h. l. sitne omnino pulchrum aliquid s. pulchra quaedam res, sed an sit καλὸν καὶ ἀγαθόν i. e. αὐτὸ τὸ καλὸν ut mox § seq. τὸ πάντα τὰ τοιαῦτα εἶναι ὡς οἶόν τε μάλιστα, καλὸν τε καὶ ἀγαθόν.* — 70 C. παλαιὸς μὲν οὖν ἔστι τις λόγος, οὗ μεμνήμεθα. In mg. Cl. m. rec. adscripsit: ἔστι τις ὁ λόγος οὗτος οὗ μεμνήμεθα. Neque ὁ neque οὗτος recipiendum nec Tur. St. Hr. receperunt¹⁾. — 87 D. τὴν αὐτὴν δὲ ταύτην οἶμαι εἰκόνα δέξαιτ' ἂν ψυχὴ πρὸς σῶμα. Cl. in mg. (m. a.) ταύτην. Tub. om. Sufficit τὴν αὐτὴν sine ταύτην. — 89 B. Socrates ad Phaedonem dicit αὐριον δὴ ὧ Φαίδων τὰς καλὰς ταύτας κόμας ἀποκερεῖ. Cl. in mg. ταύτας (m. a.); Om. Tub. Tuos crines tondebis, dicit Socrates. — 74 A. φαμέν πού τι εἶναι ἴσον, οὐ ξύλον λέγω ξύλῳ οὐδὲ λίθον λίθῳ οὐδ' ἄλλο²⁾ τῶν τοιούτων οὐδέν. Hr. e dittographia hoc τι ortum esse putat, „cum alii fortasse sequens οὐδέν omisissent“: Utcumque est, τι ab hoc loco abesse potest. Expelle voculam cum Hd. Bekk. Hr. — 116 B. καὶ οὐ πόλλ' ἄττα μετὰ ταῦτα διαλέχθη. Cl. ἄττα m. a. supra lin. om. Tub. eumque sequitur St. ἄττα est interpolatum hoc loco aequae ac 115 E. ὡς δεῖνὰ ἄττα πάσχοντος ubi ἄττα plerique optimique libri non habent et Euthyd. 304 B. ταῦτα ὧ Κρίτων καὶ ἄλλ' ἄττα ἔτι βραχέα διαλεχθέντες ἀπῆμεν ubi cum Cl. (cum Cl. autem consentit Vat. Δ Rühllo auctore.) Hr. dedit ἄλλα βραχέα διαλ. ἀπ. — 69 C. καὶ κινδυνεύουσι καὶ οἱ τὰς

¹⁾ Tub. etiam τις omittit; sed causa omissionis facilis explicatu; τι enim antecedit.

τελετάς ἡμῖν οὗτοι καταστήσαντες οὐ φαῦλοί τινες εἶναι. In Cl. τινες supr. lineam (m. a.) om. Tub. Elegantiā capiat interpolator. — 96 D. ὥμην γὰρ ἱκανῶς μοι δοχεῖν. In Cl. ἔγωγε suprascriptum extat quod tenent B. Tur. St. om. Tub. cf. verba quae modo antecesserunt οὕτω τότε ὥμην. Delebimus igitur cum Herm. — 96 C. ὥστε ἀπέμαθον καὶ ταῦτα ᾧ πρὸ τοῦ ὥμην εἰδέναι. Cl. ὥστε ἄποτ' ἔμαθον καὶ ᾧ. Tub. ὥστε ἄποτ' ἔμαθον (m. rec. ἀπ. corr.) καὶ ᾧ. In mg. Clarkiani legimus: ἐν ἄλλω: ὥστε ἀπέμαθον καὶ ταῦτα ᾧ πρὸ τοῦ ὥμην εἰδέναι et οὕτω δεῖ. Recipiemus ἀπέμαθον, non item ταῦτα quod, cum praesertim ᾧ καὶ πρότερον σαφῶς ἡπιστάμην antecesserit, nihil est causae cur inseramus. — 107 A. in Cl. supra lin. ad Συμρίας additum ὅδε reperimus, quod abest a Tub. et abesse potest. — 118 A. καὶ ἐπανιῶν οὕτως ἡμῖν αὐτοῖς ἐπεδείκνυτο ὅτι ψύχαιτό τε καὶ πήγνυτο. Herm.: primus ex Oxon. aliisque post οὕτως ἡμῖν adieci αὐτοῖς cuius non exigua vis est: nostris nos oculis inspicere iussit. Sed Cl. hab. in textu ἡμῖν sine αὐτοῖς; sola mgo. scripsit καὶ ἐπανιῶν ἡμῖν αὐτοῖς ἐπεδείκνυτο. Pronomen αὐτοῖς hoc loco maxime inopportunum; quod vult. Hr., pron. minime significare potest. Delendum est cum Tub.

Non raro reperimus perperam additum a librariis articulum in Phaedone; 62 C. ἴσως τοίνυν ταύτῃ οὐκ ἄλογον, μὴ πρότερον αὐτὸν ἀποκτινύναι δεῖν, πρὶν ἀνάγκην τινὰ θεὸς ἐπιπέμψῃ. Cl. supr. lin. ὅ. Tub. om. et Hr.; articulum tuentur B. Tur. St. Si universe de deo sermo est, articulus omitti vel poni potest cf. Kr. 50, 3, 6. Herm. igitur recte articulum removit. — 63 D. φησὶ γὰρ θερμαίνεσθαι μᾶλλον διαλεγομένους. In Cl. m. a. supr. lin. τοὺς. om. Tub. servant B. Tur. St. Recte Hr. verbum expulit hoc loco comparato: Cratyl. 387 C. οὐκοῦν τοῦ λέγειν μῶριον τὸ ἀνομάζειν. ὀνομάζοντες γὰρ πού λεγούσι τοὺς λόγους. Interpolator interposuit articulum, quod infra legit τοὺς τι τοιοῦτον ποιῶντας. — 66 B. ἕως ἂν τὸ σῶμα ἔχωμεν καὶ συμπεφυρμένη ἢ ἡμῶν ἢ ψυχὴ μετὰ τοῦ τοιούτου κακοῦ, οὐ μὴ ποτε κτησώμεθα ἱκανῶς οὐ ἐπιθυμοῦμεν. Man. recentissima supraposuit artic. τοῦ quem tenent B. T. St. Hr.; om. Tub. τοιοῦτος pro ὅ τοιοῦτος poni potest, non ὅ τοιοῦτος pro τοιοῦτος. — 83 C. οὐκοῦν ἐν τούτῳ τῷ πάθει μάλιστα καταδεῖται ψυχὴ ὑπὸ σώματος. Man. a. in Cl. suprap. τοῦ quod Tub. secuti B. T. St. Hr. non invexerunt. ψυχὴ redarguit interpolatoris operam. — 97 D. ἐκ δὲ δὴ τοῦ λόγου τούτου οὐδὲν ἄλλο σκοπεῖν προσήκειν ἀνθρώπῳ καὶ περὶ αὐτοῦ ἐκείνου καὶ περὶ τῶν ἄλλων ἀλλ' ἢ τὸ ἄριστον καὶ τὸ βέλτιστον. Manus recentissima compendium articuli τῶν suprap. om. Tub. Servant B. St. Tur. Hr. Contrarium si accurate indagaveris, reperiēs scriptorem non reliquos homines, sed alios opponere. Alio quoque loco sententiam exaggerabant librarii eodem

modo: 116 B. dicit ὁ τῶν ἔνδεκα ὑπὸνέτης Socrati: ὦ Σώκρατες οὐ καταγνώσμαι σου ὅπερ ἄλλων καταγιγνώσκω; ante ἄλλων interpolaverunt libri aliquot τῶν. At Hermannus recte contra dixit: „ταῦν iis debetur, qui Socratis laudes cum quoquam alio communicari nollent.“ Cur Hermannus quod hic fecit, alibi neglexit? — 108 D. περὶ γάρ τοι τῆς γῆς καὶ αὐτὸς πολλὰ δὴ ἀκήχοα. M. a. in Cl. τῆς margini adscripsit. om. Tub. Servant art. B. Tur. St. Hr. Vellem cogitassent de verbis antecedentibus εἰσὶ δὲ πολλοὶ καὶ θαυμαστοὶ τῆς γῆς τόποι καὶ αὐτὴ οὔτε οἶα οὔτε ὅση δοξάζεται ὑπὸ τῶν περὶ γῆς εἰωθότων λέγειν. Plato modo γῆ modo ἡ γῆ dicit cf. 111 D. ὑπὸ γῆν et mox ὑπὸ τὴν γῆν. Kr. 50, 3, 15. — 110 E. ἃ καὶ λίθοις καὶ γῆ καὶ τοῖς ἄλλοις ζώοις τε καὶ φυτοῖς αἴσχη τε καὶ νόσους παρέχει. Duabus interpolationibus locum inquinaverunt; nam ad λίθοις in mg. Cl. adscriptum (m. a.) τοῖς; supra γῆ est art. τῆ. Neuter articulus necessarius; neque B. T. Hr. St. admiserunt.

Temporibus offensi sunt librarii his locis: 60 A. εἰσιόντες οὖν καταλαμβάνομεν τὸν μὲν Σωκράτη. Tub. εἰσελθόντες. Idem Cl. renovato loco. Etiam Π habet hanc formam. Restituemus; nam vere Graecus usus est. Phaedr. 228 B. ἰδὼν ἧσθη. Lys. 206 E. εἰσελθόντες δὲ καταλάβομεν αὐτόθι τεθυκότας τοὺς παῖδας. — 60 D. ὅταν με αὐθις ἐρωτᾷ. Cl. in mg. ἔρηται quod B. Tur. St. rec. Hr. cum Tub. ἐρωτᾷ. Librarium offendit ἐρωτᾷ propter insequens ἐρήσεται. — 70 A. ἀπιστίαν παρέχει τοῖς ἀνθρώποις, μὲν (ἡ ψυχὴ) ἐκείνη τῇ ἡμέρᾳ διαφθείρηται τε καὶ ἀπολλύηται

H

ἡ ἂν ὁ ἄνθρωπος ἀποθάνῃ Cl. ἀποθνήσκει. in mg. ἀποθάνῃ; Tub. ἀπο-
θνήσκη. Praes. et Aor. possunt hic adhiberi; quare dabimus quod prima manus in utroque codice nobis praebet. — 74 E. ἀναγκαῖόν που τὸν τοῦτο ἐννοοῦντα τυχεῖν προειδότα. Nemo recepit quod mg. Cl. suppeditat τυγχάνειν cf. 75 B. τυχεῖν ἔδει εἰληφότας. — 84 C. τί, ἔφη, ὑμῖν τὰ λεχθέντα μῶν μὴ δοκεῖ ἔνδεως λέγεσθαι; Cl. in mg. λελέχθαι quod recep. B. Tur. St. At Tub. λέγεσθαι. Interpolator nesciebat λέγεσθαι hic imperfecti infinitivum esse cf. Kr. 53, 2, 9. — 87 A. ὥς δὲ καὶ ἀποθανόντων ἡμῶν ἔτι που ἔσται, οὗ μοι δοκεῖ τῇδε. Nescio quis (m. a) in mg. scriptum vult ἔστιν, cogitans ut videtur de 87 E. ἐπαιδὰν ἀποθάνωμεν, ἔτι που ἡμῶν ἡ ψυχὴ ἔστιν. — 87 B. θοιμάτιον ὃ ἡμπείχετο. Cl. suprascr. habet ισ. Tub. ex corr. ἡμπέσχετο: B. Tur. Hr. St. ἡμπείχετο recep. — 89 C. εἰ οὐ εἶην καὶ με διαφεύγοι ὁ λόγος. M. rec. in Cl. supra εὐ scr. u quod Tub. non agnoscit. Nulla est necessitas sic scribendi. — 93 C. τῶν οὖν θεμένων ψυχὴν ἀρμονίαν εἶναι τί τις φήσει ταῦτα ὄντα εἶναι ἐν ταῖς ψυχαῖς, τὴν

τε ἀρετὴν καὶ τὴν κακίαν; θεμένων I m. Cl. τι supra lin. θεμένων quod etiam Tub. habet verum est recteque comparavit Wagner insequens ὑποθέμενος. — 95 B. τὸν λόγον τὸν μέλλοντα [λέγεσθαι]. Pro λέγεσθαι exhibetur a Cl. I et Tub. ἔσεσθαι. In mg. Cl. extat λέγεσθαι. Voc. ἔσεσθαι languidum. Wagner igitur in ῥηθίσεσθαι mutavit. Sed magis mihi arri-det Hermannii opinio interpolationem statuentis; cf. Protag. 324 B. τοῦ μέλλοντος (ἀδικήματος) χάριν. Ratio igitur postulat ut sic exhibeamus: τὸν μέλλοντα [ἔσεσθαι]. — 115 D. ἐγγυήσασθε οὖν με πρὸς Κρίτωνα τὴν ἐναντίαν ἐγγύην ἢ ἣν οὗτος πρὸς τοὺς δικαστὰς ἡγγυᾶτο. Nescio quis in Cl. mg. adpos. ἡγγυήσατο, e studio ut videtur aequandi. — 117 A. τὸν μέλλοντα διδόναι. In mg. Cl. (m. a.) δώσειν. Quod Bekk. retinuisse doleo. Eodem vitio Bekk. scr. 77 C. εἰ μέλλει τέλος ἢ ἀπόδειξις ἔξεν, ubi opti-mi libri ἔχειν habent. Interpolator meminerat p. 64 D. ὁ μέλλων σοὶ δώσειν τὸ φάρμακον.

Praepositionibus inserendis hos locos vexarunt librarii: 82 C. ἀλλὰ τούτων ἕνεκα οἱ ὀρθῶς φιλοσοφοῦντες ἀπέχονται τῶν κατὰ τὸ σῶμα ἐπιθυμιῶν ἀπασῶν καὶ καρτεροῦσι καὶ οὐ παραδιδόασιν αὐταῖς αὐτοὺς, οὐ τι οἰχοφθορίαν τε καὶ πενίαν φοβούμενοι ὥσπερ οἱ πολλοὶ καὶ φιλοχρήματοι· οὐδὲ αὖ ἀτιμίαν τε καὶ ἀδοξίαν μοχθηρίας δεδιότες ὥσπερ οἱ φίλαρχοί τε καὶ φιλότιμοι ἔπειτα ἀπέχονται αὐτῶν. Cl. (m. I.) habet φιλοσοφοῦντες ἔχονται ἀπ add. m. rec. Tub. ἔχονται in textu, ἢ ἀπ in mg. Vide ne ἔχονται sufficiat. Nam cum dicatur ἔχει τοὺς πολεμίους τῆς εἰς τὸ πρόσθεν προόδου (Xen. Cyr. 7, 1, 36, Kr. 47, 13), non intellego, cur non debeat dici οἱ πολέμοι τῆς εἰς τὸ πρόσθεν προόδου ἔχονται cf. Herod. 6, 85 οἱ Αἰγινῆται ἔσχοντο τῆς τιμωρίας. Noli haerere, quod subsequitur ἀπέχονται; nam p. 107 de hoc usu disputavimus cf. in nostro dial. 108 D E. ubi post ἐξαρχεῖ dictum est ἀρχεῖ, 60 B. ubi post ἐξέτριψε—τρίβων. — 87 A. Ὅπερ ἐν τοῖς ἔμπροσθεν ἐλέγομεν· ἐμ in fine versus in Cl. additum. om Tub. Sed ἐν τοῖς πρόσθεν aequè usitatum. In ipso nostro dialogo

legitur; 94 C. enim habet Cl. ὁμολογήσαμεν τοῖς πρόσθεν, ἐν suprascrip-tum ante τοῖς ponendum est, nam Tub. praebet ἐν τοῖς πρόσθεν. — 60 B. ὁ δὲ Σωκράτης ἀνακαθίζόμενος εἰς τὴν κλίνην συνέκαμψέ τε τὸ σκέλος καὶ

ἐξέτριψε τῇ χειρὶ. Cl. εἰς. Tub. εἰς quod. rec. Fischer. Hr. Verbum ἀνακαθίζεσθαι εἰς τι posse dici nemo negat. cf. Prot. 310 A. καθίζόμενος ἐνταυθί. Sed negant interpretes quidam hic hanc constructionem esse ap-tam, quod Socrates in lectulo iacuerit et se ibi crexerit. Sed huic opinioni etiam ἐπὶ videtur adversari, melius statuemus Socratem non

semper in lecto fuisse, sed etiam ambulasse ac postquam mulier eius discessit, iterum in eo consedissee. — 103 C. καὶ ἄμα βλέψας πρὸς τὸν Κέβητα ἔφη. Ad πρὸς Cl. in mg. habet εἰς; at Tub. πρὸς. B. Tur. St. εἰς sine insta causa. cf. Prot. 328 D. βλέψας πρὸς τὸν Ἰπποκράτη. Librarius structuram in mg. adnotavit quae extat 60 A. βλέψας εἰς τὸν Κρίτωνα.

Cobetius locos interpolatos tractans scripsit in N. L. p. 102: Similium vitiorum, inquit, magna est apud omnes copia, quoniam magistri elegantem et nitidam veterum compositionem discipulis dormitantibus et aliud agentibus ostendentes quod illi venuste omiserant de suo inficite supplebant aut quod semel erat positum et praemisum putide repetebant. Quam vere dixerit philologus nobilissimus, demonstrabunt haec exempla: 58 A. ἔτυχε γὰρ τῇ προτεραίᾳ τῆς δίκης ἣ πρόμνα ἐστεμμένη τοῦ πλοίου ὃ εἰς Δῆλον Ἀθηναῖοι πέμπουσιν Cl. in mg. κατ' ἔτος. Ex proximis adscivit librarius. — 59 B. καὶ ὁ Κριτόβουλος καὶ ὁ πατήρ αὐτοῦ [Κρίτων] Cl. in mg. Κρίτων. om Tub. Nominibus inserendis saepissime librarii peccant. — 60 C. ἐπειδὴ ὑπὸ τοῦ δεσμοῦ ἦν ἐν τῷ σκέλει [πρότερον] τὸ ἀλγεινόν, ἦκειν δὲ φαίνεται ἐπακολουθοῦν τὸ ἡδύ. Propter insequens ἦκειν ἐπακολουθοῦν inopportunist πρότερον. — 61 A. ἀσφαλέστερον γὰρ εἶναι μὴ ἀπιέναι πρὶν ἀφοσιώσασθαι ποιήσαντα ποιήματα καὶ πειθόμενον τῷ ἐνύπνιῳ. In Cl. m. a. suprascripsit ἐνόμιζον. Memorabile glossema, quod nemo recepit. Interpolator scilicet orationem indirectam interpretatur. Deinde πρότερον suprascriptum fortasse propter 89 C. et 114 B. Omnia cum Tub. delebimus — 62 B. ἐν τινι φρουρᾷ ἐσμέν οἱ ἄνθρωποι. M. a. in Cl. mgni adscr. πάντες quod neque Tub. agnoscit neque nos agnosceamus. — 63 C. τί οὖν, ἔφη ὁ Σιμμίας, ὦ Σώκρατες; αὐτὸς ἔχων τὴν διάνοιαν ταύτην ἐν νῷ ἔχεις ἀπιέναι ἢ καὶ ἡμῖν μεταδοίης; In Cl. m. a. suprascr. πρότερον, quod abest a Tub. Etiam sine πρότερον interrogationem posse formari nemo nescit. Recte om. Hr. St. — 80 C. ἐννοεῖς οὖν ἔφη ὅτι, ἐπειδὴν ἀποθάνῃ ὁ ἄνθρωπος, τὸ μὲν ὁρατὸν αὐτοῦ τὸ σῶμα καὶ ἐν ὁρατῷ κείμενον, ὃ δὲ νεκρὸν καλοῦμεν, ὃ πρυσήκει διαλύεσθαι καὶ διαπίπτειν [καὶ διαπνέισθαι], οὐκ εὐθὺς τούτων οὐδὲν πέπονθεν, ἀλλ' ἐπεικῶς συχνὸν ἐπιμένει χρόνον. In Cl. et Tub. ὅτι suprascr. Deesse potest. nam notum est locutionem ὁρᾶς, pro qua variationis causa hic ponitur ἐννοεῖς, et cum ὡς vel ὅτι et sine ὡς vel ὅτι adhibitam esse cf. Prot. p. 336 B. ἀλλ' ὁρᾶς ἔφη ὦ Σώκρατες· δίκαια δοκεῖ λέγειν Πρωταγόρας cum adnotatione Saupplii. Unde petierit interpolator verba καὶ δ. quae absunt a Tub. nescio. Neque enim Plato alibi usurpavit verbum διαπν. — 90 D. οἰκτρὸν ἂν εἴη τὸ πάθος, εἰ — μὴ ἑαυτὸν τις αἰτιῶτο μηδὲ τὴν ἑαυτοῦ ἀτεχνίαν, ἀλλὰ τελευτῶν διὰ τὸ ἀλγεῖν ἄσμενος ἐπὶ τοὺς λόγους

ἀφ' ἑαυτοῦ τὴν αἰτίαν ἀπώσαιο καὶ ἤδη τὸν λοιπὸν βίον μισῶν τε καὶ λιδορῶν [τοὺς λόγους] διατελοῖ, τῶν δὲ ὄντων τῆς ἀληθείας τε καὶ ἐπιστήμης στερηθεῖη. Cl. τοὺς λόγους in mg., verba desunt in Tub. Facile suppleri possunt ex antecedentibus. — 95 C. τὸ δὲ ἀποφαίνειν ὅτι ἰσχυρόν τι ἐστὶν ἡ ψυχὴ καὶ θεοειδὲς καὶ ἦν ἔτι πρότερον πρὶν ἡμᾶς ἀνθρώπους γενέσθαι. M. a. in Cl. supra ἦν ὅτι; cum Tub. om. Bekk. Hr. uncis incl. St. tuentur Tur. Minime necessarium cf. verba insequentia ὅτι δὲ πολυχρόνιον κ. τ. λ. — 99 D. μὴ πάθοιμι ὅπερ οἱ τὸν ἥλιον ἐκλείποντα θεωροῦντες καὶ σκοπούμενοι. In Cl. m. a. mgni. adscr. πάσχουσι quod om. Tub. Discipulo supplendum est, non Platoni cf. Gorg. 513 A. ὅπως μὴ πεισόμεθα ὅπερ φασὶ τὰς τὴν σελήνην καθαιρούσας, τὰς Θετταλίδας. — 100 C. φαίνεται γάρ μοι, εἴ τί ἐστιν ἄλλο καλὸν [πλὴν αὐτὸ τὸ καλόν, Cl. in mg. m. a. Tub. supra] οὐδὲ δι' ἐν ἄλλο καλὸν εἶναι ἢ διότι μετέχει ἐκείνου τοῦ καλοῦ. Cum antecesserit ὑποθέμενος εἶναι τι καλὸν αὐτὸ καθ' αὐτὸ καὶ ἀγαθὸν καὶ μέγα καὶ τᾶλλα πάντα, cui opponatur ἄλλο, nequit esse incertum, cum praesertim insequatur ἐκείνου τοῦ καλοῦ. — 100 C. ἀλλ' ἐάν τις μοι λέγῃ δι' ὅτι καλὸν ἐστὶν ὅτιον ἢ χρῶμα εὐανθὲς ἔχον ἢ σχῆμα ἢ ἄλλο ὅτιον τῶν τοιούτων. ὅτι supra χρῶμα in Cl. (m. a.) om. cum Tub. Hr. Qui ὅτι servant, coguntur ἐστὶ ad ἔχον supplere (a clumsy resource Geddes). Sed ἔχον hic est positum pro ὅτι ἔχει quod non intellexit interpolator cf. Hr. — 100 D. τῷ καλῷ πάντα τὰ καλὰ γίνεσθαι καλά. Quamquam πάντα sola manus recentissima in Cl. margini adposuit, tamen servant editores. Sed etiam in insequentibus τῷ καλῷ τὰ καλὰ γίνεσθαι. Deest igitur hic πάντα, sed interpolatum est γίνεσθαι; nam hoc verbum in Cl. supra lineam scriptum est; in Tub. qui in textu habet τῷ καλῷ τὰ καλὰ mg. habet γίνονται καλά. Scribe ὅτι τῷ καλῷ τὰ καλὰ καλά et compara Theaet. 145 D. σοφία σοφοὶ οἱ σοφοί. — 112 B. ὅταν τε οὖν [ὀρμησαν] ὑποχωρήσῃ τὸ ὕδωρ εἰς τὸν τόπον τὸν δὴ κάτω καλούμενον. Cl. ὀρμησαν in mg. (m. a.) om. Tub. Fischer: „Sane abesse potest, salva sententia, non item orationis elegantia“. Sed estne nostrum elegantiam scriptori obtrudere? Ex praegressis repetivit interpolator. — 113 E. οἳ δ' ἂν δόξωσιν ἀνιάτως ἔχειν διὰ τὰ μεγέθη τῶν ἁμαρτημάτων ἢ ἱεροσυλίας πολλὰς καὶ μεγάλας ἢ φόνους ἀδίκους καὶ παρανόμους πολλοὺς ἐξειργασμένοι ἢ ἄλλα ὅσα τοιαῦτα τυγχάνει ὄντα, τούτους δὲ ἢ προσήκουσα μοῖρα ρίπτει εἰς τὸν Τάρταρον, ὅθεν οὔποτε ἐκβαίνουσιν. In Cl. ἢ supra ἰscr. (m. a.); in Tub. om. Quis est qui hoc necessarium esse putet?

Asyndeta vehementissimo odio librarii persecuti sunt, id quod demonstrant hi loci Phaedonis: 63 D. πρῶτον δὲ Κρίτωνα τόνδε σχεψώμεθα, τι ἐστὶν ὃ βούλεσθαι μοι δοκεῖ. Τί δέ ῥ' Σώκρατες ἔφη ὁ Κρίτων ἄλλο γε

ἡ πάλαι μοι λέγει ὁ μέλλων σοι δώσειν τὸ φάρμακον ὅτι χρή σοι φράζειν ὥς ἐλάχιστα διαλέγεσθαι; δὲ posterius Cl. in mg. om. Tub. Voculam eiciendam esse probat Euthyd. 287 D. τί οὖν ἄρτι ἤρου ὃ τί μοι νοοῖ τὸ ῥῆμα; Τί ἄλλο γε, ἦν δ' ἐγώ, ἡ ἐξήμαρτον διὰ τὴν βλαχείαν. — 71 B. cf. quae diximus supra p. 64. — 74 C. διαφέρει δέ γε ἡ δ' ὅς οὐδέν· ἕως ἂν ἄλλο ἰδὼν ἀπὸ ταύτης τῆς ὄψεως ἄλλο ἐννοήσης, εἴτε ὅμοιον εἴτε ἀνόμοιον, ἀναγκαῖον ἔφη αὐτὸ ἀνάμνησιν γεγονέναι. In Cl. et in Tub. conjunctio γάρ suprascripta est, qua nos posse carere docuit multis exemplis Stallb. — 91 B. λογίζομαι γάρ ὡς φίλε ἑταῖρε· θέασαι ὥς πλεονεκτικῶς· εἰ μὲν τυγχάνει ἀληθῆ ὄντα ἃ λέγω, καλῶς δὴ ἔχει τὸ πεισθῆναι. Supr. θέασαι in Cl. καί quod deest in Tub. supra μὲν — γάρ quod item abest a Tub. καὶ copulativum de quo interpolator cogitasse videtur hic absonum est, quod verbis parenthesis continetur; καὶ cum vi excitandi non necessarium. Expellemus igitur; neque magis admittemus γάρ, cum idem hic valeat quod p. 74 C. — 91 B. παρσκευασμένος δὴ ἔφη οὕτως ἐρχομαι ἐπὶ τὸν λόγον. Verb. μὲν quod m. a. in Cl. suprascripsit om. Tub. Vat. Δ et pr. II. Visne contra hos omnes pugnare? — 108 A. ἡ μὲν οὖν κοσμία τε καὶ φρόνιμος ψυχὴ ἐπεται τε καὶ οὐκ ἄγνοεῖ τὰ παρόντα. Mira inconstantia servant St. Hr. οὖν quod m. a. in Cl. suprascr. om. Tub. Vellem in memoriam 87 A. revocassent. cf. nos supra p. 63.

Etiam alias particulis inserendis vel mutandis turbant textum librarii cf. 61 C. οὐ μέντοι γ' ἴσως βιάσεται αὐτόν. In Cl. γε suprascr. in Tub. om. — 64 B. οἶμαι γάρ ἂν δὴ τοὺς πολλοὺς αὐτὸ τοῦτο ἀκούσαντας δοκεῖν εὖ πάνυ εἰρησθαι· δὴ om. in Tub. in Cl. suprascr. — 64 D. respondet Simmias ἥκιστα γε· γε quod om. Tub. suprascr. m. a. in Cl. cf. Soph. Trach. 318 οὐδ' ὄνομα πρὸς τοῦ τῶν ξυνεμπόρων ἔχεις; ἥκιστα. σιγῇ τοῦ μὸν ἔργον ἦνυτον. — 79 E. πᾶς ἂν ἔμοιγε δοκεῖ ξυγχωρῆσαι. Cl. I m.

et Tub. πᾶς ἂν μοι δοκεῖ ξ. Cl. II m. πᾶς ἂν ἔμοι^{γ'} ξ. St. qui manum II nimio amore amplectitur, hic manum I restituit. — 73 D. ὥπερ γε καὶ Συμμίαν τις ἰδὼν πολλάκις Κέβητος ἀνεμνήσθη. In Cl. γε supr. lin. (m. a.); in Tub. deest. — 83 B. ταύτῃ οὖν τῇ λύσει. In mg. Cl. ad οὖν adnotatum δέ. Cod. Φ δ' οὖν. Sine dubio cum Tub. spernendum. — 87 A. ἐπειδὴ γε ὁρᾷς· γε in Tub. omissum in Cl. supra lineam scriptum est. — Non raro δὲ pro δὲ in Cl. suprascriptum reperimus. Quod Tub. non agnovit nec nos agnoscemus: 102 D. λέγω δὲ τοῦδ' ἔνεκα, βουλόμενος δούξαι σοὶ ὅπερ ἐμοί. — 104 A. σκόπει δὲ περὶ τῆς τριάδος. — 105 B. λέγω δέ. — 105 A. τὰ πέντε τὴν τοῦ ἀρτίου (sc. ἰδέαν) οὐ δέξεται, οὐδὲ τὰ δέκα τὴν τοῦ περιττοῦ, τὸ διπλάσιον· τοῦτο μὲν οὖν καὶ αὐτὸ ἄλλω ἐναντίον, ὅμως δὲ

τὴν τοῦ περιττοῦ οὐ δέξεται· οὐδὲ δὴ τὸ ἡμόλιον οὐδὲ τὰλλα τὰ τοιαῦτα, τὸ ἥμισυ, τὴν τοῦ ὅλου καὶ τριτημόριον αὐτὴ καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα. Ad οὐδὲ in mg. Cl. δὴ est, quod in Tub. non conspicitur. Vellem editores necessitatem huius vocabuli demonstrassent.

Coniunctionibus καὶ et τε inserendis saepissime peccant librarii; sexcenta exempla e Platone colligi possunt; in Phaedone haec occurrunt: 82 A. τὴν δημοτικὴν τε καὶ πολιτικὴν ἀρστήν· m. rec. in Cl. τε suprapos. om. Tub. cumque sequitur St.; servant voculam B. Tur. Hr. cf. Kr. 69, 32, 3. — 83 E. οἱ δικαίως φιλομαθεῖς κόσμοι εἰσι καὶ ἄνδρες· τε supra κόσμοι in Cl. m. a. om. Tub. τ' εἰσι B. St. Tur. expulit Hr. — 86 B. τὰ ξύλα καὶ τὰς χορδὰς. τε supr. lin. in Cl. om. Tub. B. Tur. Hr. servat St. — 96 C. τὰ περὶ τὸν οὐρανὸν τε καὶ τὴν γῆν πάθη. In Cl. τε supra l. om. Tub. St. ret. B. T. Hr. — 110 E. χρυσῷ τε καὶ ἀργύρῳ. V. τε supr. lin. in Cl. m. a.; om. Tub. serv. B. Tur. Hr. eiicit St. Ex his exemplis vides quam interpretes non sibi constant; modo omittunt modo ponunt τε non ratione adducti, sed libidine. Nullo loco τε necessarium est; interpolatoris igitur esse putamus. His locis B. Tur. St. Hr. interpolatorem non secuti sunt: 100 B. ἅπερ αἰεὶ καὶ ἄλλοτε καὶ ἐν τῷ παρεληλυθότι λόγῳ οὐδὲν πέπαυμαι λέγων. In mg. Cl. τε m. a. pro καὶ post αἰεὶ positum vult. Sed cum hic toti partes subiungantur, καί — καὶ solum aptum est. — 109 A. cur terra immota sit, Pl. hanc causam profert: ἰκανὴν εἶναι αὐτὴν ἴσχειν (sc. τὴν γῆν) τὴν ὁμοιότητα τοῦ οὐρανοῦ αὐτοῦ ἐαυτῷ πάντα καὶ τῆς γῆς αὐτῆς τὴν ἰσορροπίαν. In Cl. m. a. supra ἰκανὴν posuit γε et τε supra αὐτὴν. Particulam γε iam Heind. prorsus inutilem esse dixit; sed p. τε prope necessariam esse putat recepitque τε post ἰκαν. Sed hoc certe loco non potest tolerari, neque omnino necessitas ulla extat voculam inserendi post αὐτὴν cum correctore.

καὶ interpolatum est his locis: 64 C. σκέψαι, ἐὰν ἄρα καὶ σοὶ ξυνδοκῇ ἅπερ καὶ ἐμοί. In Cl. m. a. καὶ suprascr. om. Tub. tuentur B. T. Hr. St. Graeci quidem saepius dicunt vel: ἐὰν καὶ σοὶ ξυνδοκῇ, ἅπερ καὶ ἐμοί vel ἐὰν σοὶ ξυνδοκῇ, ἅπερ καὶ ἐμοί. Sed Platonem etiam aliter locutum esse demonstrant hi loci: 100 C. ἐὰν σοὶ ξυνδοκῇ ὥσπερ ἐμοί. 102 D. βουλόμενος δοῦναι σοὶ ὅπερ ἐμοί. Cratyl. 386 A. ἀπορῶν καὶ ἐνταῦθα ἐξηγέσθην, εἰς ἅπερ Πρωταγόρας λέγει. ibid. 399 D. πειρώμεθα δὴ καὶ ταῦτα διελεῖν, ὥσπερ τὰ ἐμπροσθεν. — 69 B. Plato dicit τὸ ὀρθὸν νόμισμα ἀνθ' οὗ δεῖ ἅπαντα καταλλάττεσθαι εἶναι τὴν φρόνησιν neque veram virtutem sine sapientia excogitare potest. Huic opponitur adumbrata virtus his verbis: χωριζόμενα (i. e. ἡδοναί, φόβοι καὶ τὰλλα πάντα) δὲ φρονήσεως καὶ ἀλλαττόμενα ἀντὶ ἀλλήλων μὴ σχιαγραφία τις ἢ τῇ τοιαύτῃ

ἀρετή κ. τ. λ. Verb. καὶ suppletum est. in Tub. suprascriptum. Perperam hanc interpolationem admiserunt interpretes, nam in lingua graeca participium participio subiungi potest. Ut hic χωριζόμενα participio ἀλλοτριζόμενα subiectum est, sic Euthyd. initio part. βουλόμενος participio προσελθών cf. Symp. 181 D., Kr 56, 15.

Saepe interpolabant vel adnotabant librarii, ut legentibus demonstrarent etiam sic scriptorem loqui potuisse vel ut ostenderent quid a scriptore dictum mallent: 58 C. τί δὲ δὴ τὰ περὶ αὐτὸν τὸν θάνατον ὦ Φαίδων; τί ἦν τὰ λεχθέντα καὶ πραχθέντα. Supra καὶ in Cl. ἦ, quod nullus liber habet. — 58 D. καὶ γὰρ τὸ μεμνησθαι Σωκράτους καὶ αὐτὸν λέγοντα καὶ ἄλλου ἀκούοντα ἔμοιγε ἀεὶ πάντων ἥδιον. Cl. in mg. ἡδιον quod nusquam reperitur. — 63 C. αὐτὸς ἔχων τὴν διάνοιαν ταύτην ἐν νῷ ἔχεις ἀπιέναι ἢ καὶ ἡμῖν μεταδοίης; Ad αὐτόν mg. Cl. οὕτως quod fortasse coniectura pro αὐτός est et mgni adscriptum tum falso in libros complures

II

irrepsit. — 66 C. Cl. ἐπιχειροῖ (m. rec.) Librarius stultus videtur coniunctivum velle. — 68 A. pro ἐλθεῖν in Cl. mg. (m. a.) leg. μετελθεῖν. Est librorum, composita pro simplicibus ponere. cf. supr. p. 131 — 68 D. καίτοι ἄτοπόν γε δέει τινὰ καὶ δειλίαν ἀνδρείον εἶναι. Cl. in textu ἄλογον, in mg. ἄτοπον. A Tub. hic destituti sumus, nam verba habet suppleta in mg. (in iis tamen ἄτοπον). Jamb. Stob. ἄλογόν. Etiam Ven. b qui e testimonio Stallbaumii (cf. Proleg. ad Phaed. p. 70) idem liber est qui II ap. Bekk. apud Stallb. dicitur habere ἄλογόν γε. Fischerus ἄλογον glossema esse putat; ego contra ἄτοπον; nam id verbum modo antecessit et frequentius est quam ἄλογος. Nec tamen abstinuit ubique hoc verbo Plato cf. 62 C. οὐκ ἄλογον 68 B. πολλὴ ἀλογία. — p. 71 A. postquam Socrates effecit ὅτι πάντα οὕτω γίγνεται ἐξ ἐναντίων τὰ ἐναντία πράγματα, quaesivit Τί δ' αὖ; ἔστι τι καὶ τοιόνδε ἐν αὐτοῖς οἷον μεταξὺ ἀμφοτέρων πάντων τῶν ἐναντίων δυοῖν ὄντων δύο γενέσεις ἀπὸ μὲν τοῦ ἐτέρου ἐπὶ τὸ ἕτερον, ἀπὸ δ' αὖ τοῦ ἐτέρου πάλιν ἐπὶ τὸ ἕτερον; M. recentissima in Cl. mgni adscr. ἔστιν ἔτι scilicet collocatione pronominis τι offensus. Sed cf. locutionem εἴπερ τις καὶ ἄλλος. — 72 B. Οὐδὲν χαλεπὸν ἢ δ' ὅς, ἐννοῆσαι ὃ λέγω. Cl. Tub. ἐννοήσασιν. Cl. in mg. ἐννοῆσαι. Vide, ne quod Cl. T. in contextu habent, restituendum sit; verba enim sic struenda esse puto: ὃ λέγω οὐδὲν χαλεπὸν ἐννοήσασιν i. e. quod dico, nihil difficultatis parit iis qui id reputaverint. De significatione adiectivi χαλεπός cf. Soph. 237 A. Comparari potest ὡς ξυνελόντι εἰπεῖν. — 74 D. βούλεται μὲν τοῦτο ὃ νῦν ἐγὼ ὀρώ, εἶναι οἷον ἄλλο τι τῶν ὄντων, ἐνδεὶ δὲ καὶ οὐ δύναται τοιοῦτον εἶναι [ἴσον] οἷον ἐκεῖνο, ἀλλ' ἔστι φαυλότερον. In mg. Cl. a m. a. ex-

tant verba ἀλλ' ἄλλό ἐστιν quae nullus liber confirmat. cf. 75 B. ἔστι δὲ αὐτοῦ φαυλότερα. — 75 B. οὐχοῦν γενομένοι εὐθὺς ἐρωπῶμέν τε καὶ ἡκούομεν καὶ τὰς ἄλλας αἰσθήσεις εἶχομεν; Πάνυ γε. Ἔδει δέ γε, φαμέν, πρὸ τούτων τὴν τοῦ ἴσου ἐπιστήμην εἰληφέναι. „πρὸ τούτων sc. πρὸ τοῦ ὄραν καὶ ἀκούειν καὶ τῶν ἄλλων αἰσθήσεων. It is necessary to observe this in order to understand the inadmissibility of the reading τούτου which is found in some mss. and also added by a corr. in the Bodl.“ Wagner. — Ad 75 E. ad πάντως δῆπου ἔφη ὦ Σ. in mg. Cl. adnotatam reperimus παντελῶς. Sed si Astio fidem habere licet, dicitur tantum vel παντελῶς γε vel παντελῶς μὲν οὖν. — 76 D. extat in Cl. ἡ ἐν τούτῳ (τῷ χρόνῳ) ἀπόλλυμεν (τὰς ἐπιστήμας) ἐν ὧ^{αν}περ καὶ λαμβάνομεν^ω Tub. reicit correctionem. Saepius hoc modo novarunt librarii cf. 85 C. Crito 50 B. — 78 D. μή interrogativo offensus librarius mgni adser. ἡ. — 79 A. θῶμεν οὖν βούλει ἔφη δύο εἶδη τῶν ὄντων τὸ μὲν ὁρατόν, τὸ δὲ ἀειδές; Θῶμεν ἔφη. Supra οὖν in Cl. εἰ quod om. Tub. Heind. non probat scripturam Tubingensis; „in ea, inquit, aut abesse debebat hoc βούλει aut scribi βούλει οὖν θῶμεν. Nam isto modo collocatum verbum nusquam reperies.“ At cf. Kr. 54, 2, 3 θῶ βούλεσθε δωδεκάτην ὑμᾶς εἰσοίσειν; Δη. — 79 C. τοῦτο γὰρ ἐστὶ τὸ διὰ σώματος, τὸ δὲ αἰσθήσεως σκοπεῖν. Tub. et I. Cl. αἰσθήσεων; In Cl. m. II. suprascripsit σ. Mira inconstantia est Hermannī, qui quamquam hic sententia postulat pluralem (cf. verba antecessa) et m. I in Cl. eum praebet, tamen ad correctionem confugiat. — 79 D. γένηται. In mg. Cl. γίγνηται scilicet ob antecessum γίγνεται. — 79 D. καλῶς καὶ ἀληθῆ λέγεις. In mg. Cl. ἀληθῆ (m. rec.) Exemplā quae attulit Stallb. refutant correctorem. — 81 D. περὶ τὰ τοιαῦτα ἀναγκάζονται πλανᾶσθαι δίκην τίνουσαι τῆς προτέρας τροφῆς κακῆς οὔσης. In Cl. supra τροφῆς scriptum ὤ. Interpolator corrigebat propter insequens κακῆς. — 82 C D. οὐ γὰρ ἂν πρόποι ἔφη ὦ Σώκρατες ὁ Κέβης. Οὐ μέντοι μὰ Δία ἡ δ' ὅς. τοιγάρτοι τούτοις μὲν ἅπαν, ἔφη, ὦ Κέβης κ. τ. λ. Vel Stallb. homo anxius ἔφη quod in Cl. mgni adscriptum, in Tub. omissum est, utpote otiosum deleuit. Herm. vero verbum interpolatum mire servavit. — 84 A. ἐγκαταδεῖν Cl. in mg. ἐπικαταδεῖν. — 84 C. καὶ ἡμῶν οἱ πλείστοι. In mg. Cl. m. rec. ὡς. — 89 B. ἐπὶ πολὺ ὑψηλοτέρου χαιμαζήλου. Cl. in mg. (m. recentissima) ἁλῶ i. e. πολλῶ. — 85 D. νῦν οὐκ εἶπον ἃ ἐμοὶ δοκεῖ. Libr. in mg. Cl. fortasse propter εἶπον adser. ἃ μοι ἐδόκει. — 89 E. εἰ γὰρ που μετὰ τέχνης ἐχρήτο, ὥσπερ ἔχει, οὕτως ἂν ἡγήσατο. Cl. ἡγήσατο^{αι} falso. — 90 C. οὔτε τῶν πραγμάτων οὐδενός οὐδὲν ὑγιές οὐδὲ βέβαιον οὔτε τῶν λόγων. Ad τῶν λόγων m. a. mire adnot. οὐδὲν

τῶν ὄντων. — 90 D. postquam verba οἰκτρὸν ἂν εἶη τὸ πάθος antecesserunt, respondetur: νῆ τὸν Δία ἣν δ' ἐγώ, οἰκτρὸν δῆτα. In Cl. supra οἰκτρὸν scriptum est (m. a.) ὥς quod quamvis hic absoum sit, tamen Hd. loco movere dubitavit. ὥς aequè interpolatum ac Crit. 44 B. in verbis ὥς ἄτοπον τὸ ἐνύπνιον, ubi ὥς quod suprascriptum est, velim deleatur. 90 D. ad εὐλαβηθῶμεν glossa in mg. Cl. est εὐλαβητέον. — 91 C. παντὶ λόγῳ ἀντιτείνετε, εὐλαβούμενοι, ὅπως μὴ ἐγὼ ὑπὸ προθυμίας ἅμα ἑμαυτόν (sic Cl. Tub.) τε καὶ ὑμᾶς ἐξαπατήσας ὥσπερ μέλιττα τὸ κέντρον ἐγκαταλιπὼν οἰχήσομαι. Cl. et Tub. εὐλαβούμενοι in mg. Librarius vult constructionem ὅπως μὴ explicare, quae tamen recta est cf. Gorg. 420 E.

Sine dubio εὐλαβούμενοι expellendum. — 92 B. εἰδός γε καὶ σῶμα. De correctionis veritate dubito memor locutionis γενναίως γε καὶ φιλοδώρως (Theaet. 146 D.) similiumque. — 93 C. τῶν οὖν θεμένων ψυχὴν ἀρμονίαν εἶναι τί τις φήσει ταῦτα ὄντα εἶναι ἐν ταῖς ψυχαῖς, τὴν τε ἀρετὴν καὶ τὴν καχίαν; πότερον ἀρμονίαν αὐτὴν αἴτιαν καὶ ἀναρμοστίαν; καὶ τὴν μὲν ἡρμόσθαι, τὴν ἀγαθὴν, καὶ ἔχειν ἐν αὐτῇ ἀρμονίᾳ οὐσιν ἄλλην ἀρμονίαν, τὴν δὲ ἀναρμοστον αὐτὴν τε εἶναι καὶ οὐκ ἔχειν ἐν αὐτῇ ἄλλην; Ad αὐτὴν αἴτιαν imperite m. a. in mg. Cl. ser. καλήν. i. e. pro ἄλλην. — 94 D. ser. Bekk. Hr. ὑπὸ τῶν τοῦ σώματος παθῶν; Cl. in mg. παθημάτων. — 96 E. supra προσθεῖναι corr. pos. (m. rec.) σεῖ, i. e. προσεῖναι id quod non magis recipiendum quam correctio ἵππῳ pro ἵππου in antecedentibus.

Imperite 97 A. corr. ἡ ξύνοδος τοῦ (m. rec.) πλησίον ἀλλήλων τεθῆναι. — 99 D. τὸν δεύτερον πλοῦν ἐπὶ τὴν τῆς αἰτίας ζήτησιν ἣ πεπραγμάτευμαι, βούλει σοι ἔφη ἐπιδείξιν ποιήσωμαι ὥς Κέβης; Constructionem ἐπιδείξιν ποιήσωμαι ἣ τὸν δεύτερον πλοῦν — πεπραγμάτευμαι non intelligens supra ἣ quod Cl. habet, nescio quis scripsit γ. Sed error notatus est his verbis quae item in mg. extant: ἐν ἄλλῳ ἣ (sic etiam Tub.) πεπραγμάτευμαι — 99 E. ἴσως μὲν οὖν ὥς εἰσάξω τρόπον τινὰ οὐκ ἔοικεν. Cl. Tub. ὥς εἰς. in Cl. mg. ὥς. Sed vide ne ὥς servandum sit, cum ἴσος etiam cum οἶος, ὅσος possit iungi. — 103 C. αὐτὰ δ' ἐκεῖνα οὐκ ἂν ποτέ φαμεν ἐθελησθαι γένεσιν

ἀλλήλων δέξασθαι. Pro φαμεν quod est in Tub. extat in Cl. φαμεν et in mg. ση. ὀριστικὸν ἀντὶ ὑποτακτικοῦ. Haud sane perspiciebant ἂν ad ἐθελησθαι esse referendum. — 105 A. mg. Cl. inepte pro ὅτι — ὅτῳ. — 106 D. σχολῇ γὰρ ἂν τι ἄλλο φθορὰν μὴ δέχοιτο, εἴ γε τὸ ἀθάνατον αἰδιδιον ὃν φθορὰν δέξεται. In mg. εἰ τόγῃ (m. a.) quod recepit B. St. Notum est discrimen, illic γε ad universam sententiam, hic ad voc. ἀθάνατον pertinet (cf. Kr. § 69, 15, 3). Utrumque aptum est, itaque dabi-

imus, quod prima manus Cl. et Tub. servant. — 107 A. ὑπὸ μέντοι τοῦ μεγέθους περὶ ὧν οἱ λόγοι εἰσὶ, καὶ τὴν ἀνθρωπίνην ἀσθένειαν ἀτιμάζων ἀναγκάζομαι ἀπιστίαν ἔτι ἔχειν παρ' ἑμαυτῷ περὶ τῶν εἰρημένων. Cl. in mg. οὐκ ἀτιμάζων. Sed recta Wyttenbachii haec interpretatio loci est: humanam imbecillitatem tantae rationum magnitudini perspicendae imparem existimans. — 110 A. τὸ ἀληθῶς φῶς. Scioli est adnotatio in mg. Cl. (m. a.) ἀληθινόν. Tub. ἀληθῶς. — 110 B. εἰ γὰρ δεῖ καὶ μῦθον λέγειν [καλόν], ἄξιον ἀκοῦσαι, οἷα τυγχάνει τὰ ἐπὶ τῆς γῆς ὑπὸ τῷ οὐρανῷ ὄντα. καλόν contextus Cl. non habet; sola mg. praebet καλόν καί. Error inde ortus est, quod cum καλόν adscriptum esset, ad καλόν cum ἄξιον copulandum (stultus enim librarius ἄξιον ad μῦθον trahebat) καὶ necessarium fuit adscribi. Ut interpretes καὶ removerunt, ita debuerunt etiam καλόν eicere. — 110 D. ἄνθη. In mg. Cl. glossa (m. a.) ἄλση. — 111 C. ὁρᾶσθαι. In mg. Cl. glossa (m. a.) θεωρεῖσθαι. — 111 D. πολὺ μὲν ὕδωρ ῥεῖν ἐξ ἀλλήλων εἰς ἀλλήλους ὥσπερ εἰς κρατῆρας — πολὺ δὲ πῦρ καὶ πυρὸς μεγάλους ποταμούς, πολλοὺς δὲ ὕγρου πηλοῦ κ. τ. λ. Pro δὲ ante ὕγρου in mg. Cl. legitur τε. Sed in hac anaphora particulae μὲν — δὲ legitimae sunt. — 112 E. τυγχάνει δ' ἄρα ὄντα ἐν τούτοις τοῖς πολλοῖς τέτταρ' ἄττα ῥεύματα. Pro ἄττα Cl. in mg. ὄντα quod non intellego. — 115 A. δοκεῖ γὰρ δὴ βέλτιον εἶναι λουσάμενον πιεῖν τὸ φάρμακον καὶ μὴ πράγματα ταῖς γυναιξὶ παρέχειν νεκρὸν λούειν. Pro δὴ m. a. ἡ suprascripto corrigebat ἡδὴ quod Hd. utpote incommode inculcatum eiecit. Sed si δὴ pro ἡδὴ reposueris, nihil incommodi habebis cf. 63 D. — 115 C. γελάσας δὲ ἅμα ἡσύχῃ καὶ πρὸς ἡμᾶς ἀποβλέψας εἶπεν, Οὐ πείθω ἔφη ὧ ἄνδρες Κρίτωνά. Cl. ἔφη α' supra lin. hab. Tub. om. Stallb. „Post εἶπεν quod subiectum est ἔφη, id etsi in codd. quibusdam deest, tamen attrectare noli. Infra p. 118 A. εἶπεν ὧ Κρίτων ἔφη. Et sic Graeci non raro.“ Haec argumentatio mihi non probatur. Nam quod hoc vel illud potest dici, quis est, qui nos cogat id recipere, etiamsi manu secunda traditum est? Immo rectum est constanter quod manus prima libri nostri praebet, repraesentare, nisi id grammaticae vel sententiae adversatur. Itaque ἔφη removebimus, ὧ autem cum facillime post πείθω intercidere potuerit, servabimus. Eadem medela adhibenda videtur esse 61 C. οὐ φιλόσοφος Εὐηνός; Ἔμοιγε δοκεῖ ἔφη ὁ Συμμίας. Ἐθελήσει τοίνυν ἔφη καὶ Εὐηνός καὶ πᾶς ὅτῳ ἀξίως τούτου τοῦ πράγματος μέτεστιν. — Καὶ ἅμα λέγων ταῦτα καθῆκε τὰ σκέλη. M. recentiss. ἔφη suprascripsit; om. Tub. quo carere nos posse demonstrant cum alii loci Phaedonis tum statim insequens responsum Socratis Τί δέ; οὐκ ἀχρηχόατε κ. τ. λ. Nostro loco propter verba καὶ — καθῆκε cuius verba ἐθελήσει κ. τ. λ. sint

nulla dubitatio nasci potest. — 117 B. librarius ἀποσπεῖσαι interpretatur in mg. vocabulo ἀποχέαι. Hic non secuti sunt editores, aliis locis sequuntur.

Multae interpolationes inde natae sunt, quod ii qui diligenter legabant, locutiones vel locos similes margini adscribebant, unde in textum irrepserunt. 60 E. ἀφοσιούμενος, εἰ ἄρα πολλάκις ταύτην τὴν μουσικὴν μοι ἐπιτάττοι ποιεῖν. Cl. supra lin. ἄρα (m. a.) om. Tub. Sane quidem ἄρα huic locutioni adiungitur; sed id etiam posse omitti Heindorfius demonstravit exemplis duobus ex Aristophane sumtis. Interpolatori obversabatur 61 A. εἰ ἄρα πολλάκις μοι προστάττοι τὸ ἐνύπνιον ταύτην τὴν δημῳδὴν μουσικὴν ποιεῖν. — 71 B. πάνυ μὲν οὖν ἢ δ' ὅς. Sic Herm. cum Tub. Cl. (I. m.) Π. At Bekk. Tur. St. cum manu recenti marginis Cl. πάνυ γε ἢ δ' ὅς. Antea Plato saepius dixerat πάνυ γε. — 76 A. δυοῖν θάτερον. In Cl. Tub. τὰ ἕτερα. In mg. Cl. θάτερον, in Tub. supra lin. ἕτερον. Corrector Clarkiani cogitavit de locis, ubi haec crasis frequentissima extat, corrector Tub. de 102 A. cf. supra p. 97. — 84 D. μηδὲν ἀποκνήσητε καὶ αὐτοὶ εἰπεῖν καὶ διελθεῖν. In Cl. supra ἐξ, fortasse quod 58 D. scriptum est διεξελεῖν. Sed utrumque aptum cf. 88 E. πάντα ἡμῖν δέλεθε. — In dialogo saepissime ἅμα cum participio copulatur; cuius rei memor librarius etiam p. 77 B. ἅμα cum ἀποθνήσχοντος copulatum vult.

Jam videamus, quomodo in *formis* novaverint interpolatores. 61 B. καὶ αὐτὸς οὐκ ἢ μυθολογικός. Et in Cl. et in Tub. ν suprascriptum legimus. Non sequemur interpolatores; haec enim forma, ut definite testatur Porphyrius (cf. Cob. N. L. p. 187), Platonis propria. — 98 B. οἷός τ' ἦν. Etiam hic pr. m. in Cl. Tub. ἦ; ν m. rec. add. in Tub. suprascr. in Cl. Non sibi constant Tur. et Herm. qui supra ἦ, hic ἦν scripserint. — 64 D. σίτων τε καὶ ποτῶν (Tub. τε om.). In utroque libro supra σίτων scr. ι. Utraque forma in hac oppositione usitata; cf. Hd. ad h. l. ita ut nesciam cur B. Tur. formam σιτίων elegerint. — 67 C. ἤγε ἀποδημία ἢ νῦν μοι προστεταγμένη. ἐμοί Cl. μοι Tub. Hr. Stallb., ἐμοί Bekk. Tur. — p. 114 D. Cl. Tub. non habent ἐμοὶ δοχεῖ, sed μοι δοχεῖ quod iniuria spretum est. — 71 E. τοῖν γενοσέοιν τοῖν περὶ ταῦτα. Tub. nullam correctionem habet; in Cl. manus recentes supra utrumque τοῖν pos. αἱ. Sequiores, ut ait Cobet (N. L. p. 695), sinxerunt τὰ et ταῖν, ταῦτα et ταύταιν, αὐτὰ et αὐταῖν, ἀλλήλα et ἀλλήλαιν cet. eaque omnia impudenter admodum antiquis scriptoribus affricant. — 77 A. τὸ πάντα τὰ τοιαῦτα εἶναι Cl. πάντα. Tub. πάντα. Quidni forma simplex sit genuina? — 84 B. διαπτο-

μένη. Cl. διαπτομένη. Tub. διαπτ (m. rec. corr. in τι) ομένη. Audi Cobetum (V. L. p. 305): Attici dicunt πέτομαι, πτήσομαι (semel et iterum πετήσομαι), tum ἐπτόμην, πτέσθαι, πτόμενος. Tragici ex Homero assumserunt ἔπτην, πταίην, πτῆναι, πτάς et ἐπτάμην, πτάσθαι, πτάμενος quorum nihil in quotidiano sermone in usu fuit extra iocum aut παρωδίαν. — 86 D. m. a. in Cl. ad διαβλέψας margini adscripsit διαβλεψάμενος. Quam formam nemo

Platoni obtrudet. — 90 A. Cl. habet ^σμικρόν, Tub. μικρόν, quod amplexus est St. — 92 D. Cl. ἐρρήθη. Tub. ἐρρήθη in cuius locum numquam substitue-

mus ἐρρέθη. — 96 D. extat ^{οῖς}ὀστέοις in Cl. ὀστέοις in Tub. 98 C. ὀστέων in utroque libro; hae formae fortasse servandae sunt. cf. Kühn. § 113 Nr. 3

p. 315 (Cl. Tub. tamen 96 D. ὀστᾶ). — 96 C. ^{ξεται}αὐξάνεται Cl. (m. rec.); αὐξά-

νεται Tub. Utraque forma Platoni usitata. — 96 E. Cl. ^απλέονα, Tub. πλέονα cf. Soph. 245 D. Cl. πλέον ^α pro πλέονα. Ibi Hr. dedit πλέονα, hic nescio cur interpolatorem sequatur; cf. etiam Kühner § 156 p. 439, 3. — 103 B. Cl. ἀπομνημόνευχας sed ο in ras. et supra m. rec. με. Tub. nobis ostendit quid antea fuerit; habet enim ἀπεμνημόνευχας sine corr. quod solum verum est cf. Legg. II. 672 D. Kühner p. 508, 2, 4. — 111 D. καθαρωτέρου καὶ βορβορωδεστέρου. M. vetus (ante saec. XI) in mg. Cl. καθαρωδεστέρου aequandi causa, sed barbare. — Falso supraposuit

corrector Cl. 92 B. ἀποδέξει ^η(Tub. ἀποδέξη). 92 C. αἰρεῖ ^Η(Tub. αἰρή).

96 A. χρήσει ^η(Tub. χρήση). 89 B. ἀποχερεῖ ^η(Tub. ἀποχερή). — 101 C. τὰς ἄλλας τὰς τοιαύτας κομψείας ἐοίης ἂν χαίρειν, παρὲς ἀποκρίνασθαι

τοῖς σεαυτοῦ σοφωτέροις Cl. ^σἐαυτοῦ. In Tub. σαυτοῦ, sed σ natum superiore parte literae e erasa. Lege proinde τοῖς ἐαυτοῦ ut statim legimus τὴν ἐαυτοῦ σχιάν, ubi in Cl. item σ supraser. — 104 A. πεμπτάς. In mg. Cl. πέντας. Etiam in Tub. corr. πεντάς. — 115 A. ἐπι-

στέλλεις. Cl. ἐπιτέλλει (m. r.); in Tub. I m. ἐπιτάλει ut videtur; ex ei corr. η. — 95 C. Cl. ^ρθάρσος (m. recentiss.); Tub. θάρσος; ^ηθαρρήσει (m.

1) Sed 73 E. ubi Cl. τοιοῦτο^ν lit. γ Joannes ipse addidisse videtur; id quod etiam Tub. probat qui habet τοιοῦτον.

rec.); Tub. θαρρήσει. θάρρος et θάρσος a Platone adhibentur; cf. Prot. 351 A. θάρσος; multo frequentius tamen θάρρος.

Interdum man. II. in Cl. talia praebet, quae Platonis esse non possumus negare. Sed de his lectionibus potest dici quod Cobetus de librorum deteriorum Platoniorum lectionibus dicit (Mnem. Vol. IX (1860) p. 337) „Si quid ex iis hic illic profertur boni in iis locis, ubi meliores titubant aut hallucinantur, debetur vera lectio non fidelioribus libris antiquis olim perditis, unde illi manaverunt, sed sollerti coniecturae et felici emendationi, quales semper acutior aliquis inter legendum excogitare et reperire solet.“ Falluntur igitur, qui quod hic illic manus II vera praebet, inde concludant ei multum esse tribuendum. Immo bene rem geremus, si ubique lectiones Clarkiani (I m.) et Tubingensis servaverimus, nisi forte eae aut grammaticae aut sententiae adversantur. In aliis autem locis ad coniecturam confugiemus nostramque potiore habere quam librarii coniecturam nulla re prohibemur. Sed indicemus locos, ubi vera coniectasse librarium sibi persuaserunt editores: 60 B. In Cl. supra τὸ scriptum est ὦ i. e. τὰ — 60 E. ἐνοπνίων τινῶν ἀποπειρώμενός τί λέγει. Cl. Tub. λέγειν. Cl. in mg. τί λέγει, haec est faciliior coniectura quam λέγοι quod rec. B. cf. Apol. 21 B. — 63 A. corr. m. II. in Tub. et in Cl. ex ἀπολιπῶν praes. ἀπολείπων quod solum verum est. Vitium ex itacismo natum facile potuit detegi. — 63 D. recte mg. Cl. φράζειν pro φροντίζειν. Etiam in Tub. correctum. — 65 E. ἐκεῖνος ἂν ποιήσεις. Cl. ποιήσῃ suprascr. σεῖς (Tub. ποιήσῃ). — 69 B. recte in Cl. (mg.) et Tub. pro ἄλλων correctum ἀλλήλων.

— 69 E. supra ἑτέροις scriptum αἰ. — 73 B. recte Cl. μὲν ἄν. — 74 A. ἑτερόν τι, αὐτὸ τὸ ἴσον. Cl. Tub. αὐτό τε ἴσον. In mg. Cl. τό. — 75 E. pro αὐτὰ quod Cl. Tub. habet, m. II in mg. Cl. recte scr. ταῦτα; nam τὰ ἐνθάδε intelligi vult scriptor. — 79 C. ἔταν μὲν — τότε μὲν. Cl. et Tub.

τό. — 80 A. κατὰ ταῦτα. Cl. κατὰ ταῦτά. Tub. κατὰ ταῦτά. Eodem modo Cl.

78 D. κα ταυτά. Etiam Tub. corr. — 81 E. τοὺς μεμελητηκότας καὶ μὴ διευ-

λαβημένους. Cl. διευλαβουμένους (m. recentiss.). — 82 A. ποῖ ἂν ἄλλοσέ

φαιμεν — ἵεναι Cl. εἶναι (m. rec.) — 82 A. οἱ ἂν ἕκαστα ἴοι Cl. ἦι (m. rec.). ἦ Tub. — 82 D. dubium an ἄλλὰ μὴ σώματα πλάττοντες

ζῶσι ubi Cl. σώματι praebet, sequendam sit; nam Fischerum secuti Tur. scr.

σῶμά τι. — 83 C. τοῦτο πάσχει Cl. πάσχοι (m. r.) ibid. περὶ ὃ ἂν πάσχη

Cl. πάσχει^η (m. rec.) — 88 E. οὐ πώποτε μάλλον ἡγάσθην ἢ τότε παρα-
γερόμενος. Cl. ἢ ποτε. m. II corr. ἢ^{τό} ποτε. Etiam in Tub. correct. —
88 C. μὴ ἄξιοι εἶμεν. Cl. ἡμεν.^{εἴη} — 89 B. ἐάνπερ — μὴ δυνώμεθα αὐτὸν
ἀναβιώσασθαι. Cl. δυναμεθα^ω (m. rec.) — 90 B. σοῦ νῦν δὲ προάγοντος
ἐγὼ ἐφροσύμην. In Cl. et Tub. I m. ἐφροσύμην, in Tub. codice correc-
tum oi in ω; Cl. habet in mg. σπο. — 90 C. πάντα ἔντα Cl. (m. a.). τὰ^{τα}
om. Tub. — 91 A. ὅπως — δόξει, προθυμηθήσομαι. In Cl. δόξει^{ει} (m. rec.)
Tub. δόξει^η. — 91 B. ἡ δὲ ἄγνοιά μοι αὕτη οὐ ξυνδιατελεῖ, ἀλλ' ὀλίγον
ὕστερον ἀπολεῖται. Cl. Tub. διάνοια. In mg. Cl. ἄγνοια. Verum est
ἄγνοια. „nam loquitur Socrates de eo quod nesciat neque perceptum ha-
beat, anima immortalis sit necne et refertur ad verba ὅτι ἡμεῖς οὕτω
ὕγιως ἔχομεν“ Fischer. Sed ut iam Fischerus sensit, potius scribendum
est (ἡ δὲ) δὴ ἄγνοια. — 91 E. ἔφαμεν — ἀναγκαίως ἔχειν ἄλλοθί^{θι} που
πρότερον ἡμῶν εἶναι τὴν ψυχὴν. Cl. ἄλλό^{θι} τι. Tub. ἄλλο τι. Sufficit
ἄλλοθι sine που. — 92 B. οὐ γὰρ δὴ ἀρμονία γέ σοι τοιοῦτόν ἐστιν, ὥ^ω
ἀπεικάσεις. Cl. Tub. in Cl. ὥ^ω supraser. — 92 C. recte in Cl. α^α supraser.
m. rec. ut ex ξυνέσεται evaderet ξυνάσεται. — 93 B. ἡ οὖν ἐστὶ τοῦτο περὶ
ψυχὴν. Cl. Tub. εἰ; in Cl. supraser. (m. rec.) ἡ. — 94 C. οὐκοῦν αὖ ὡμο-
λογήσαμεν — μήποτ' ἂν αὐτήν, ἀρμονίαν γε οὖσαν ἐναντία. ἄδειν οἷς ἐπι-
τείναιτο καὶ χαλῶτο καὶ πάλλοιοτο κ. τ. λ. Pro μήποτ' ἂν αὐτήν Cl. Tub.
μήποτε ταύτην. In mg. Cl. μήποτ' ἂν αὐτήν. — 96 D. ἐπειδὴν ἐκ τῶν
σιτίων ταῖς μὲν σαρκὶ σάρκες προσγένωνται. Cl. et Tub. I προσγεννῶνται.
Mg. Cl. et corr. Tub. προσγένωνται. — 96 E. in Cl. et Tub. pro ἡμῖς^{αί}
correctum ἡμίσει. — 98 C. αἰωρουμένων Cl. ἐωρουμένων Tub. αἰωρ. —
99 C. τὴν δὲ τοῦ ὡς οἷόν τε βέλτιστα αὐτὰ τεθῆναι δύναμιν οὕτω νῦν
κεῖσθαι. Cl. βέλτιστον^β αὐτὰ^α τεθῆναι^α i. e. m. rec. vult αὐτὰ βέλτιστα^γ
τεθῆναι. Tub. βέλτιστον αὐτὰ τεθῆναι. M. II. vult αὐτοῦ. — 104 D.
ἃ^α quod Cl. I. Tub. om., in Cl. tamen supra versum extat, rec. editores. —
105 B. Cl. ὁρῶ^ν (m. rec.) Tub. ὁρῶ. — 106 C. πρὸς τῷ (praeterquam
quod) εἶναι. Cl. I. m. hab. τὸ ut Tub., m. II corr. τῷ. in mg. rursum το.
Solum verum τῷ. — 108 C. ξυνεμπόρων καὶ ἡγεμόνων θεῶν τυχοῦσα
(Kr. 57, 3, 1). Pro θεῶν reperitur in Cl. Tub. ὄσων quod in mg. Cl.

correctum. Nota hanc permutationem; etiam frequentius θεῖος et ὁσῖος inter se permutantur cf. Cob. V. L. 117, 357. — 110 A. ἡδε ἡ γῆ. Cl.

ἡδη. Tub. ἡδη. — 110 B. εἴ τις ἄνωθεν θεῶτο. Et in Cl. et in Tub. ex ἡ τις corr. εἴ τις (in Cl. supr. lin.). — 110 D. παρέχεσθαι. Cl. Tub. παρέχεται; in mg. tamen Cl. παρέχεσθαι quod oratio indirecta postulat. Ibi-

dem Cl. ^{ός}χρώματ — 114 B. ἀποβαίνουσι Cl. T. corrector Cl. suprascr. ἐκ. Sententiae ἀποβαίνουσι adversatur, sed fortasse etiam aliud remedium potest adhiberi. — 116 D. χαῖρέ τε καὶ πειρῶ ὡς ῥᾶστα φέρειν τὰ ἀναγκαῖα. Cl. ἄριστα; in mg. (m. a.) ῥᾶστα; Tub. I. m. ἄριστα, quod corr. m. II. Non raro haec permutantur.

Interdum corruptio causa erat cur locus interpolaretur; 94 B. τῶν ἐν ἀνθρώπῳ πάντων ἔσθ' ὅτι ἄλλα λέγεις ἄρχειν ἢ ψυχὴν, ἄλλως τε καὶ φρόνιμον; Οὐκ ἔγωγε. Πότερον συγχωροῦσαν τοῖς κατὰ τὸ σῶμα παθήμασιν ἢ καὶ ἐναντιουμένην. In Cl. et Tub. verba sic exarata sunt:

ἢ καὶ
 πότερον συγχωροῦσαν τοῖς κατὰ τὸ σῶμα πάθεσιν ἐναντιουμένην παθήμασι. Quare legendum: πότερον [συγχωροῦσαν] τοῖς κατὰ τὸ σῶμα πάθεσιν ἐναντιουμένην [παθήμασιν sic Tub.]; nam hic agitur de animae imperio, quod in eo cernitur, quod ea libidinibus corporis adversatur. Librarium fefellit quod πότερον sine altero membro usurpatum est. Sed is usus nihil habet insoliti: cf. Theaet. 207 D. πότερον ἡγούμενος ἐπιστήμονα εἶναι ὄντιν οὔν ὄτου οὔν κ. τ. λ. Soph. 228 A. πότερον ἄλλο τι στάσιν ἡγούμενος ἢ τὴν τοῦ φύσει ξυγγενοῦς ἔκ τινος διαφορᾶς διαφθοράν. — Tum verba insequuntur: λέγω δὲ τὸ ταῖόνδε, οἷον καύματος ἐνότος καὶ δίψους ἐπὶ τοῦναντίον ἔλκειν, τὸ μὴ πίνειν, καὶ πείνης ἐνούσης ἐπὶ τὸ μὴ ἐσθίειν, καὶ ἄλλα μυρία που ὁρῶμεν ἐναντιουμένην τὴν ψυχὴν τοῖς κατὰ τὸ σῶμα. Cl. pro οἷον in contextu ὡς εἰ et in una mg. ὡς καύματος, in altera ὡσεῖ. Libri complures habent οἷον quod e correctione natum esse adparet. Verum vidit is corrector qui mgni adscripsit ὡς καύματος; nam ut sic legamus, suadet Phileb. 44 D. οἶμαι γὰρ ταῖόνδε τι λέγειν αὐτοὺς ἀρχομένους ποθὲν ἄνωθεν, ὡς. — 83 B. ἡ τοῦ ὡς ἀληθῶς φιλοσόφου ψυχὴ οὕτως ἀπέχεται τῶν ἡδονῶν τε καὶ ἐπιθυμιῶν καὶ λυπῶν καὶ φόβων καθ' ὅσον δύναται, λογισμένη ὅτι, ἐπειδὴν τις σφόδρα ἡσθῇ ἢ φοβηθῇ ἢ λυπηθῇ ἢ ἐπιθυμήσῃ, οὐδὲν τοσοῦτον κακὸν ἔπαθεν ἀπ' αὐτῶν ὅσον ἂν τις οἰηθείη οἷον ἢ νοσήσας ἢ τι ἀναλώσας διὰ τὰς ἐπιθυμίας, ἀλλ' ὁ πάντων μέγιστόν τε κακὸν καὶ ἔσχατόν ἐστι, τοῦτο πάσχει καὶ οὐ λογίζεται αὐτό. Cl. Tub. ἢ λυπηθῇ in mg. Quamquam facile fieri potuit, ut haec verba interciderent,

tamen etiam hoc cogitari potest καὶ λυπῶν supra interpolatum eamque interpolationem alteram esse insecutam cf. 69 B. καὶ προσγιγνομένων καὶ ἀπογιγνομένων καὶ ἡδονῶν καὶ φόβων καὶ τῶν ἄλλων πάντων τῶν τοιούτων.

Tubingensis quam mire cum I manu Clarkiani consentiret, supra vidimus; nam in omnibus locis nullam habuimus discrepantiam; restant pauci loci, ubi Cl. et Tub. non inter se consentiunt: 84 A. οὕτω λογίσσασθαι ἂν ψυχὴ ἀνδρὸς φιλοσόφου καὶ οὐκ ἂν οἰηθείη τὴν μὲν φιλοσοφίαν χρῆναι ἑαυτὴν λύσειν, λύουσης δὲ ἐκείνης αὐτὴν παραδιδόναι ταῖς ἡδοναῖς καὶ λύπαις ἑαυτὴν πάλιν αὖ ἐγκαταδεῖν καὶ ἀνήνυτον ἔργον πράττειν Πηνελόπης τινὰ ἐναντίως ἱστὸν μεταχειριζομένην¹⁾, ἀλλὰ γαλήνην τούτων παρασκευάζουσα, ἐπομένη τῷ λογισμῷ καὶ ἀεὶ ἐν τούτῳ οὔσα, τὸ ἀληθές καὶ τὸ θεῖον καὶ τὸ ἀδόξαστον θεωμένη καὶ ὑπ' ἐκείνου τρεφομένη ζῆν τε οἶεται οὕτω δεῖν. Tub. γαλήνην τούτου. Cl. τούτων. Res difficilis diiudicatu; qui τούτων scripserunt, ἡδονῶν καὶ λυπῶν intellegi volunt; sed cum Heindorfio puto pronomen ad universam antegressam enuntiationem spectare praeferoque lectionem Tubingensis τούτου. Hoc pronomen plane sententiae conveniens est; nam nunc iterum cogitatur, animam non debere se libidinibus tradere atque Penelopae more philosophiae opus irritum facere. — 96 B. ἄρ' ἐπειδὴν τὸ θερμὸν καὶ τὸ ψυχρὸν σηπεδύνα τινὰ λάβῃ, τότε δὴ τὰ ζῶα ξυντρέφεται. Art. τὸ ante ψυχρὸν m. a. in Cl. supplevit supra versum. Tub. τὸ θερμόν· τὸ ψυχρόν. Legendum τὸ θερμόν καὶ ψυχρόν cf. p. 121. cf. infra p. 163.

Pauci loci supersunt, quos cum supra ob aliquam causam reposuérimus vel obliti simus, nunc tractaturi sumus: 58 E. εὐδαίμων γάρ μοι ἀνὴρ ἐφαίνετο καὶ τοῦ τρόπου καὶ τῶν λόγων. Beatus vir esse videbatur ob ea quae ante mortem fecit et dixit. in Cl. Tub. extat (I. m.) τοῦ λόγου. Vitium assimilationis. — 67 D. οὐκ οὖν τοῦτό γε θάνατος ὀνομάζεται, λύσις καὶ χωρισμὸς ψυχῆς ἀπὸ σώματος. Tub. Cl. ψυχῆς in mg. Non deesse potest. Habemus igitur hic vitium eius codicis, unde Cl. et Tubing. derivati sunt. — 68 B. σφόδρα γὰρ αὐτῷ ταῦτα δόξει, μηδαμοῦ ἄλλοθι καθαρῶς ἐντυξέσθαι φρονήσει ἀλλ' ἢ ἐκεῖ. In mg. Cl. manus fortasse prima: γρ. ἄλλοθι δυνατόν εἶναι καθαρῶς. Nullus liber hanc varietatem confirmat interpolationis simillimam. — 74 B. ἡ καὶ ἐπιστάμεθα αὐτὸ ὃ ἔστιν. Supr. ἔστιν in Cl. ἴσον. om. Tub. Verbum minime necessarium est; nam antecedit φαμέν πού τι εἶναι ἴσον, οὐ ξύλον λέγω ξύλῳ οὐδὲ λίθον λίθῳ. οὐδ' ἄλλο τῶν τοιούτων οὐδέν, ἀλλὰ παρὰ ταῦτα

¹⁾ Sic legendum.

πάντα ἕτερόν τι, αὐτὸ τὸ ἴσον· φῶμέν τι εἶναι ἢ μηδέν; Φῶμεν μέντοι νῆ Δί' ἔφη ὁ Συμμίας θαυμαστῶς γε. — Plato ut probet αὐτὸ τὸ ἴσον et τὰ ἴσα inter se differre, dicit 74 B. αὐτὸ τὸ ἴσον numquam variare, τὰ ἴσα variare: ἄρ' οὐ λίθοι μὲν ἴσοι καὶ ξύλα ἐνίοτε ταῦτά ὄντα τῷ μὲν ἴσα φαίνεται, τῷ δ' οὐ. B. Tur. St. ediderunt totè μὲν, totè δ' quod e corr. in

Cl. natum; nam is liber praebet ^{γρ. τότε} τῷ μὲν — τότε δ' quod e τῷ δ' correctum esse verisimile est. Tub. τῷ μὲν — τῷ δ'. Ipse linguae usus postulat, ut correctionem totè μὲν — totè δέ respuamus; nam ἐνίοτε — totè μὲν — totè δέ vix defendi potest. Sed etiam sententia quae ex lectione τῷ μὲν — τῷ δέ nascitur accuratius consideranti nihil molesti habere videtur. — 74 D. ἢ πάσχομέν τι τοιοῦτον περὶ τὰ ἐν τοῖς ξύλοις τε καὶ οἷς νῦν δὴ ἐλέγομεν τοῖς ἴσοις· ἄρα φαίνεται ἡμῖν οὕτως ἴσα εἶναι ὥσπερ αὐτὸ ὃ ἔστιν ἴσον ἢ ἐνδεῖ τι ἐκείνου τὸ μὴ τοιοῦτον εἶναι οἷον τὸ ἴσον ἢ οὐδέν; Cl. αὐτό ἔστιν ἢ (pr. m. ἢ) ἐνδεῖ τῷ ἐκείνου τῷ τοιοῦτον εἶναι οἷον κ. τ. λ. Ad ἔστιν in mg. ἴσον (m. rec.). In Tub. αὐτὸ... ὃ ^{ras.} ^{ἴσον} ἔστιν ἢ ἐνδεῖ τι.... (antea τῷ) ἐκείνου τῷ τοιοῦτον εἶναι οἷον κ. τ. λ.

In loco constituendo duo vocabula omittenda esse videntur, primum ἴσον, deinde μή. Voc. ἴσον iam Turicenses incluserunt nec video cur Hermannus uncus iterum removerit; μή omisso legendum est cum Heindorfio ἢ ἐνδεῖ τι ἐκεῖνα τοῦ τοιοῦτον εἶναι οἷον. — 79 A. ἄλλο τι ἡμῶν αὐτῶν τὸ μὲν σῶμά ἐστι, τὸ δέ ψυχή; Οὐδέν ἄλλο. Astius et Schmidtus responsum οὐδέν ἄλλο urgentes, ἢ quod Cl. in mg. habet post ἡμῶν αὐτῶν interpositum volunt. Sed non raro fit, ut responsum non accurate congruat cum interrogatione cf. Phileb 54 B. τί οὖν οὐκ αὐτὸς ἀπεκρίνω σαυτῷ ὦ Σώκρατες; Οὐδέν ὅτι οὐ. — 80 B. ἔχομέν τι παρὰ ταῦτα ἄλλο λέγειν ὦ φίλε Κέβης, ὡς οὐχ οὕτως ἔχει; Οὐκ ἔχομεν. In Cl. ext. ἢ, in mg. ἢ ὥς; Tub. ἢ. Fortasse legendum ἢ οὐχ οὕτως ἔχει. — 80 C. in Cl. μὲν post finem versus additum¹⁾; recte; nam etiam Tub. in contextu habet μέν. — 80 E. de anima dicitur: μηδέν τοῦ σώματος ξυνεφέλκουσα, ἅτε οὐδέν κοινωνοῦσα αὐτῷ ἐν τῷ βίῳ ἐκοῦσα εἶναι ἀλλὰ φεύγουσα αὐτὸ καὶ συνηθροισμένη αὐτῇ εἰς αὐτήν, ἅτε μελετῶσα ἀσὶ τοῦτο Cl. in mg. αὐτῇ εἰς αὐτήν. Quamquam saepe anima αὐτῇ εἰς αὐτήν, αὐτῇ καθ' αὐτήν ἀθροίζεσθαι, ἀγείρεσθαι in Phaedone dicitur, tamen haud scio an sufficiat συναθροίζεσθαι, cum res participiis cumulatis satis clare expressa sit. — 99 D. μὴ πάθοιμι ὕπερ οἱ τὸν ἥλιον ἐκλείποντα θεωροῦντες καὶ σχο-

¹⁾ In hoc enim folio schedula sub finem allita est.

πούμενοι· διαφθείρονται γάρ που ἔνιοι τὰ ὄμματα, ἐὰν μὴ ἐν ὕδατι ἢ τινι τοιούτῳ σκοπῶνται τὴν εἰκόνα αὐτοῦ. Ad ἔνιοι in Cl. mg. adnotatum ἐνίοτε. In Vat. Δ ἐνίοτε omissio τὰ. Nescio num idem velit corr. Cl. Articulus τὰ ante ὄμματα non deesse potest; neque igitur unquam assentimur legenti ἔνιοι ὄμματα. Ac ne ἐνίοτε quidem cum articulo feremus propter enuntiationem insequentem ἐὰν μὴ quae illud ἐνίοτε supervacaneum reddit. — 102 E. ἐκεῖνο δὲ οὐ τετόλμηκε μέγα ὄν σμικρὸν εἶναι. Cl. ἐκεῖνος δὲ τετόλμηκεν; in mg. ἐκεῖνο δὲ οὐ τετόλμηκεν. Tub. ἐκεῖνο οὐ δὲ τετόλμηκε. Verum est quod in mg. Cl. legimus. — 108 A. ἐκεῖνος μὲν γάρ ἀπλὴν οἰμόν φησιν εἰς Ἀἰδοῦ φέρειν, ἢ δ' οὔτε ἀπλὴ οὔτε μία φαίνεται μοι εἶναι· οὐδὲ γάρ ἂν ἡγεμόνων ἔδει. Οὐ γάρ πού τις ἂν διαμάρτοι οὐδαμῶς μιᾶς ὁδοῦ οὔσης. In Cl. οὐ γάρ που. Vitium apertum. Tub. δὲ non agnoscit. — 112 E. Ἀχέρων δι' ἐρήμων τε τόπων ῥεῖ ἄλλων καὶ δὴ καὶ ὑπὸ γῆν ῥέων εἰς τὴν λίμνην ἀφικνεῖται. Om. Tub. καὶ ante ὑπό. Cl. in mgine. Non audeo καὶ loco movere.

Fortasse quaerat quispiam, quae ratio libris Cl. (I m.) et Tubingensi cum Vat. Δ Ven. II quos omnes eiusdem familiae esse inter omnes constat, in Phaedone intercedat. Quod ut possimus explorare, Bekkeri et Bastii collationes adeundae sunt, quae tamen nequaquam ita sunt comparatae, ut ex iis certas conclusiones clicere queas. Quid dicamus de Bekkero, qui etsi Gaisfordius aliquid supra lineam esse adscriptum adnotavit, tamen simpliciter hoc Clarkiano ipsi tribuerit? Quomodo certa efficere poteris, si eandem rationem in Ven. II et Vat. Δ secutus est? Quare cum cautione haec accepta velim:

- 1) *Et Vat. Δ et Ven. II secundariis lectionibus interpolati sunt.* cf. 60 C. ubi ex testim. Bekkeri et Bastii Vat. Δ Ven. II praebent ἐν τῷ σκέλει πρότερον (Cl. πρότερον in mg. Tub. om.) — 60 D. ὅταν με αὐθις ἐρωτᾷ. Cl. in mg. ἔρηται quod in textu Vat. Δ Ven. II. habere Bastius et Bekk. testantur. — 61 C. ἔφη iidem dicunt adesse in Vat. Δ Ven. II. — 62 A. ἐστὶν in duobus libris repererunt Bekk. Bast. — 63 C. Bekk. Bast. οὕτως post αὐτός in Δ II interpositum. — 63 D. Bekk. Bast. Δ II τοὺς ante διαλεγόμενους. — 64 D. Bekk. Bast. Δ II δὴ (suprascriptum in Cl.) post ἂν¹). — 115 D. ἡγγυᾶτο Cl. in mg. ἡγγυήσατο. Vat. Δ

¹) Cum Bastius varias manus non distinguere videatur, eius testimonium de interpolatis verbis mancum.

(Bekk.) ἡγγυήσατο (Bast. ἐγγυήσατο). — 114 B. in Cl. ἀποβαίνουσι.
 Vat. Δ ἐκβαίνουσι (Bekk. Bast.). — 111 C. Cl. ὁρᾶσθαι in mg.
 θεωρεῖσθαι, quod in Vat. Δ esse Bekk. Bast. adnot. — 110 D. Cl.
 ἄνθη. in mg. ἄλση. Vat. Δ Bekk. Bast. ἄλση. — 99 D. Cl. ἔνιοι.
 In mg. ἐνιότε. Vat. Δ ἐνιότε Bekk. Bast. — 79 D. καλῶς καὶ
 ἀληθῇ λέγεις. Supra ἀληθῇ in Cl. ως. ἀληθῶς in ΔΠ extare
 testatur Bekk. — 75 E. πάντως δήπου ἔφη Cl. in mg. παντελῶς
 quod Δ repraesentat (Bekk. Bast.) — 60 B. εἰς τὴν κλίνην. ΔΠ ex
 auctoritate Bekkeri et Bastii habent ἐπὶ πῇν κλίνην.

- 2) *Liber Vat. Δ magis interpolatus est quam Ven. Π., inprimis I m.*
 Id probant hae lectiones e Bekkeri comm. cr. excerptae: 67 B. αὐτός
 om. pr. Π. 68 D. εἶναι om. pr. Π. 68 E. που om. Π. 68 E.
 εἶναι om. pr. Π. 69 C. τινες om. pr. Π. 71 B. πάνυ μὲν οὖν Π
 praebet pro πάνυ γε. 75 D. εἶναι om. Π. 77 B. ἄμα om. Π. 80 C.
 ὅτι om. pr. Π. 80 C. καὶ διαπνεῖσθαι om. pr. Π. 89 B. ταύτας
 om. pr. Π. 90 D. τοὺς λόγους om. pr. Π. 91 C. εὐλαβούμενοι om.
 pr. Π. 93 C. θεμένων pr. Π. 95 C. καὶ ἦν om. pr. Π. 99 D.
 πάσχουσιν om. pr. Π. 100 C. πλὴν αὐτὸ τὸ καλόν om. pr. Π.
 100 C. ὅτι om. Π. 108 A. οὖν om. pr. Π. 116 D. ἄριστα Π.
 Ac fortasse nova collatione libri Veneti Π complures loci re-
 perientur, ubi pr. m. Ven. Π et pr. m. Cl. inter se congruant. Sed
 iam e prolatis lectionibus efficitur Venetum I. m. proxime abesse
 a. Cl. (I. m.) et Tubingensi. Si vera sunt ea, quae exposuimus,
 consequitur:

- 3) *ut Vat. Δ (et Ven. Π) in Phaedone alium fontem secuti sint quam
 Cl, quocumque arcitissima necessitate in aliis dialogis coniuncti sunt.*

Sed satis de lectionibus secundariis Phaedonis; de iis igitur hoc sta-
 tuimus:

*Secundas lectiones, ubicumque poterit fieri, omitemus; si iis loci cor-
 rupti emendantur, possumus eas aut probare aut iis meliores proferre. si
 iis lacunae suppleantur, haud gravate suppleta recipiemus, si ex homoeote-
 leuto vitium ortum est.*

Disputationem nostram ita finiamus, ut locos complures illustremus.

59 F. scr. Hr. καὶ ἤκομεν καὶ ἡμῖν ἐξελθὼν ὁ θυρωρός, ὅσπερ
 εἰώθει ὑπακούειν, εἶπεν ἐπιμένειν καὶ μὴ πρότερον παριέναι, ἕως ἂν αὐτὸς
 κελεύσῃ. Cl. Tub. περιμένειν quod rec. B. Tur. St. Locum tractavit Rid-

dell, Idioms § 127 p. 165 „ἐπιμένειν is to stop in the course of a progress from one point to another until somebody comes or something happens. The ἐπί as in ἐπιστῆναι is local and it also presumes that the progress is to be resumed. It answers to the Latin praestolari. περιμένειν is to defer any intended proceeding, to remain in statu quo, until a certain future moment. The περί has reference simply to the lapse of the interval of time. Hence περιμένειν here is to wait a certain time, which is specified in the next words, ἐπιμένειν would be unsuitable as the admission of the visitors into the prison could hardly be regarded as a continuation of their walk to the prison.“ cf. 80 C. ἐπειδὴν ἀποθάνῃ ὁ ἄνθρωπος, τὸ μὲν ὁρατὸν αὐτοῦ, τὸ σῶμα — οὐκ εὐθὺς τούτων οὐδὲν πέπονθεν, ἀλλ’ ἐπισικῶς συχνὸν ἐπιμένει χρόνον.

57 A. scribit Stallb. ἡδέως γὰρ ἂν ἀκούσαιμι expulso ἐγὼ quod Cl. Tub. Vat. ante ἀκούσαιμι interponunt, adnotans: *nescio quomodo molestum ac paene inurbanum videtur*. At in eodem dialogo legimus 70 B. ἔγωγ’ οὖν ἡδέως ἂν ἀκούσαιμι. cf. Cratyl. 411 A. ἔγωγε ἡδέως ἂν θεασαίμην.

58 C. τίνα ἦν τὰ λεχθέντα καὶ πραχθέντα; Solum τί hic verum est; nam Tub. qui habet τί, probat etiam in Cl. ante rasuram τί fuisse. Optimis libris autem obtemperandum est, cum usus linguae non adversetur cf. Kr. 61, 8, 2. Phaedo 57 A.

72 E. τοῦτο δὲ ἀδύνατον, εἰ μὴ ἦν που ἡμῶν ἡ ψυχὴ, πρὶν ἐν τῷδε τῷ ἀνθρωπίνῳ εἶδει γενέσθαι. Cl. Tub. ἡμῖν quod summa iniuria rececerunt interpretes; eodem modo paullo ante dixit Plato ἡμῖν ἡ μάθησις et 60 C. αὐτοῖς τὰς κορυφάς cf. Soph. 216 D. τοῦ ξένου ἡμῖν cf. Riddell, Idioms § 28 p. 126 qui et ipse ἡμῖν postulat: —

113 E. καὶ ἐκεῖ οἰκοῦσί τε καὶ καθαιρόμενοι τοῖν ἀδικημάτων διδόντες δίκας ἀπολύονται, εἴ τίς τι ἡδίκηκε. Stallb. „V. ἡδίκησε adversantibus codd. longe plurimis atque optimis“. Gaisf. adn. „ἡδίκηκεν. Bywater ἡδίκησεν.“ Ne quis huic maiorem fidem habeat quam Gaisfordio, animadverto in Cl. ἡδίκηκεν ita esse exaratum, ut nequeas dubitare. At in Tub. ipse vidi extare ἡδίκησεν. Malim Cl. sequi. — Neque magis potest dubitari, quin 81 D. Cl. habeat οὐτί γε (in Tub. οὐτι γε supr. οὐ ras.) —

60 E. ᾗδεν γὰρ ὡς ὅτι οὐ ῥάδιον εἶη Cl. Tub. ὡς puto esse finem adverbil, cuius initium periit. Suspisor σαφῶς id fuisse.

§ 30.

In formis multa erunt novanda in futura editione; id ut demonstrum, e Phaedone quaedam tractabo:

Uterque liber (Cl. et Tub.) haec verba a σ incipientia nobis praebet:

1) 58 A. συνέβη. 2) 59 A. συγκεκραμένη. 3) 59 D. συλλεγόμενοι. 4) 59 D. συνελέγημεν. 5) 60 B. συνέκαμψε. 6) 60 B. συνημμένω. 7) 60 D. συνθεῖναι. 8) 60 C. συνῆψεν. 9) 61 D. συγγεγονότες. 10) 65 B. συμπαραλαμβάνη. 11) 67 C. συναγείρεσθαι. 12) 68 E. συμβαίνει. 13) 70 A. συνηθροισμένη, 14) 71 C. συζυγίαν. 15) 72 C. συγκρίνοιτο. 16) 73 B. συνδόξη. 17) 74 A. συμβαίνει. 18) 77 C. συνθεῖναι. 19) 79 D. συγγενής (in Tub. suppl.). 20) 80 E. συνηθροισμένη. 21) 83 E. συνουσίας. 22) 88 A. συγχωροῖ. 23) 88 C. συγγνώμην. 24) 88 D. συναποθνήσκει. 25) 93 A. συνέφη. 26) 111 D. συντετρῆσθαι. 27) 112 A. συρρέουσι.

In utroque libro haec verba a ξ incipiunt: 1) 64 B. ξυμφάναι. 2) 64 C. ξυνδοκῇ. 3) 66 A. ξύμπαντος. 4) 67 C. ξυμβαίνει. 5) 69 B. ξυλλήβδην. 6) 70 D. idem. 7) 75 C. ξύμπαντα. 8) 77 B. ξυνίστασθαι. 9) 78 C. ἀξύνθετον, 10) ἀξύνθετα. 11) 79 B. ξυγγενέστερον. 12) 79 E. ξυγγενέστερον. 13) 80 A. ξυμβαίνει. 14) 80 E. ξυνεφέλκουσα. 15) 81 B. ξυνοῦσα. 16) 81 C. ξύμφυτον. 17) 81 C. ξυνεῖναι. 18) 81 E. ξυνεπακολουθοῦντος. 19) 83 A. ξυλλήπτωρ. 20) 83 A. ξυλλέγεσθαι. 21) 86 A. ξύνθετα. 22) 86 A. ξυγγενῇ. 23) 86 B. ξυγγενῇ. 24) 91 B. ξυνδιατελεῖ. 25) 92 C. ξυνίσταται. 26) 92 C. ξυνάσσεται. 27) 92 C. ξυνωδῶ. 28) 92 C. ξυνωδός. 29) 92 D. ξύνοιδα. 30) 97 A. ξύνοδος. 31) 98 D. ξυμβολαῖς. 32) 99 C. ξυνδεῖν. 33) 102 D. ξυγγραφικῶς. 34) 108 B. ξυνέμπορος. 35) 108 C. ξυνεμπόρων. 36) 109 B. ξυνερρηχέναι. 37) 109 C. ξυρρεῖν. 38) 112 B. ξυνέπεται. 39) ξυναιωρούμενον. 40) 116 A. ξυμφορᾶς. 41) 116 E. ξυγγενομένους. 42) 100 C. ξυνδοκῇ.

His locis Cl. ξ in rasura, Tub. σ habet, quod restituendum est: 1) 66 B. συμπεφυρμένη. 2) 68 A. συνόντος. 3) 68 A. συνέσεσθαι. 4) 69 A. συμβαίνει. 5) 78 C. συντεθέντι. 6) 78 C. συνθέτω. 7) 78 C. συνετέθη. 8) 79 E. συγχωρῆσαι. 9) 84 D. συμπαραλαβεῖν. 10) 84 D. συμφοράν. 11) 84 E. συμφοράν. 12) 86 B. συνεχομένου. 13) 86 E. συγχωρεῖν. 14) 87 A. συγχωρῶ. 15) 88 A. συγχωρήσεις. 16) 89 A. συνσκοπεῖν (ν eras). 17) 89 B. συμπίεσας. 18) 91 D. σύγχωρεῖν. 19) 91 E. συνωμολογεῖτην. 20) 92 A. σύνθετον. 21) 92 A. συγκεῖσθαι. 22) 92 B. συγκειμένη. 23) 92 B. συντεθῆναι. 24) 92 B. συμβαίνει. 25) 92 B. συγκειμένην. 26) 92 E. συνθέσει. 27) 92 E. συγκέηται. 28) 93 A. συντεθῇ. 29) 93 A. συνεδόκει. 30) 94 B. συγχωροῦσαν. 31) 96 B. συντρέφεται. 32) 97 B. συνήγεται. 33) 98 C. σύγκειται. 34) 98 D. συνέχει. 35) 98 D. συντείνοντα. 36) 98 D. συγκαμφθεῖς. 37) 99 C. συν-

έχοντα. 38) 99 C. συνέχειν. 39) 99 E. συγχωρῶ. 40) 100 A. συμφωνεῖν. 41) 100 B. συγχωρεῖς. 42) 100 C. συγχωρεῖς. 43) 100 C. συγχωρῶ. 44) 101 D. συμφωνεῖ. 45) 102 A. συνεχωρήθη. 46) 102 D. συνέφη. 47) 103 C. συνωμολογήκαμεν. 48) 103 C. συνομολογήσεις. 49) 104 B. συγχωρεῖς. 50) 105 B. συνδοχεῖ. 51) 105 B. συνδοχεῖ. 52) 107 D. συλλεγέντας. 53) 110 C. συγχειμένην. 54) 110 D. συνεχές. 55) 111 B. συνουσίας. 56) 113 B. συμμιγνύμενος. 57) 118 A. συνέλαβε. Discrepant inter se duo boni libri 80 C., ubi Cl. συμπεσόν, Tub. συμπεσόν habet. Ubi in uno codice verbum suppletum vel renovatum est, alterum codicem sequemur velut 81 C. Tub. συνουσία; in Cl. ξυνουσία renovatum. 78 C. Cl. ξύνθετα (post εἶναι) ξ in ras. in Tub. in mg. suppletum; scribendum σύνθετα. 74 A. συμβαίνει Tub. ξυμβ. in Cl. renovatum. 110 E. Cl. ξυνερρυηκότων. Tub. ἐξερρυηκότων.

Inde vides in Phaedone verborum cum σὺν compositorum litteram initialem saepius σ esse quam ξ; itaque summopere vereor ne Kühner gr. p. 687 Platonem multo frequentius ξ quam σ hic adhibuisse falso statuerit.

Sed discrepant inter se ambo libri, quod Clark. multo saepius ν finale servavit quam Tub. Huc in re igitur Clarkianus sequendus esse videtur et ν etiam iis locis (ac plurimi sunt) restituemus, ubi manus secunda ν erasit¹⁾. Locos exscripsimus, ubi Cl. discrepans ab editione Hermann. ν additum vel erasum habet: 57 B. εἶχεν. 58 A. ἔτοχε (ν er.). 58 A*. πέμπουσι (ν er.). 58 A. ἐστιν (ν er.). 59 B. εἶχε (ν er.). 59 E. εἶπε (ν er.). 59 E. ἦχε (ν er.). 62 A. ἐστὶ (ν er.) καί. 62 D. ἔοικε (ν er.) 62 D. εἶσι (ν er.) 64 B. εἶσιν τοῦτο. 64 B. λέληθε (ν er.). 64 B. εἶσιν θαν. 65 B. εἶσι (ν er.) μ. 66 E. ζῶσι (ν er.). 66 E. ἐστι (ν er.). 66 E. τελευτήσασι (ν er.). 67 D. ἐστι (ν er.). 68 D. ὀλιγορουῖσι (ν er.) 68 E. εἶσι (ν er.). 69 C. εἶσι (ν er.). 69 D. εἶσι (ν er.). 71 C. ἐστὶ (ν er.) καί. 72 C*. ἀποδείξειεν. 72 D. ἔστιν γάρ. 73 A. λέγουσι (ν er.). 73 D. ἔλαβεν (ν er.). 73 D. ἴδωσι (ν er.). 74 E. ἔστι (ν er.) φ. 75 B. ἔστι (ν er.) δέ. 75 D. ἐστί (ν er.) λάβ. 77 A. ἐστὶ (ν er.) πρ. 78 B. ἐστι (ν er.) καί. 78 D. ἐστι (ν er.) τέ. 79 C*. ἐστι (ν er.) τῷ. 79 C. ἐστι (ν er.) 80 A. ἔοικαν (ν er.). 84 D. ἐγέλασέ (ν er.). 84 D*. φησὶν. 87 B. ἔοικε (ν er.) 87 B. ἀπόλωλεν, καί. 87 C. ἀπόλωλεν τέ. 87 C. ἀπόλωλε (ν er.) π. 88 A. συγχωρήσεις (ν er.) 88 A. γενέσσει (ν er.) 88 D*. καταπέπτωκεν (in Tub. ν er.). 89 A. προύτρψε. 91 A. παροῦσι (ν er.) τ. 92 A*. δόξειεν (ν er.). 92 D*. ἀλαζόσιν. 95 A. γέγονε (ν ut vid. er.). 95 C*. ἐστιν (ψυχή). 95 C. ἔπραττεν. 102 A. ἔδοξε (ν er.) 102 E. τετόλμηκεν. 103 D,

¹⁾ Locis asterisco notatis etiam Tub. ν habet.

τολήσει (v er.) 104 B. ἔστι (v er.) δέ. 106 D*. ἐστὶ (v er.). 106 E*. ἐστι, ἄλλο (v additum). 107 A. εἰσι (v er.) καί. 108 C. ὤκησεν. 108 C. εἰσι (v er.) δέ. 110 A. ἐστὶ (v er.) καί. 110 B. χρώμασιν. 111 B. ἀφέστηκεν. 112 A. ἐχρέουσιν. 112 B. ἐστὶ (v er.) τοῦ. 112 D. παντάπασι (v er.). 112 E. ἐστὶν τούτου. 113 B. ὀνομάζουσιν. 113 C. λέγουσι (v er.). 113 D. οἰκοῦσί (. . ras.). 113 D. ἡδίκηκεν (Tub. ἡδίκησεν). 116 A. ἐχέλευε (v er.). 116 B. ἦκε (ras.). 116 E. ὄρεσι (v er.). 117 C*. ἐξέπειν.

Cum in Tubingensi prima m. i subscriptum vel adscriptum omiserit, c Clarkiano disquirendum est, ubi id restituendum sit. In Phaedone his verbis restituemus: 58 D. μεμνησθαι. 73 B. ἀναμνησθῆναι. 73 C. ἀναμνησθήσεται. 73 D. ἀνεμνήσθη (bis). 74 A. ἀναμνησκήσεται. 74 A. ἀνεμνήσθη. 75 E. 76 B. ἀναμνησκέσθαι. 76 C. ἀναμνησκονται. 105 A. ἀναμνησκού. — 61 A. ἀποθνήσκειν. 61 D. ἀποθνήσκοντι. 62 D. ἀποθνήσκειν. 62 E. ἀποθνήσκοντας. 64 A. 67 E. ἀποθνήσκειν. 68 A.

II

ἀποθνήσκων. 70 A. pro ἀποθάνη Cl. ἀποθνήσκει. 71 E. ἀποθνήσκειν (bis). 72 C. ἀποθνήσκει. 72 D. θνήσκει. 77 B. ἀποθνήσκοντος. 77 E. ἀποθνήσκων. 88 D. συναποθνήσκει. 106 E. ἀποθνήσκει. — 70 D. ζῶων. 96 B. ζῶα. 110 E. ζῶοις. 111 A. ζῶα. — 65 E. ὧδε. 80 E. ὧδ'. 100 B. ὧδε. 106 B. ὧδε. — 60 D. πρῶην.

§ 31.

Postquam vidimus quam liber pretiosus esset *Tubingensis*, haud alienum videtur de libro accuratius disserrere eaque quae Ier. Dav. Reussius apud Fischerum (Platonis *Euthyphro* Apol. *Crito* *Phaedo* p. VII Not. 15) dixit longius persequi.

Ut liber Bodleianus a Clarkio ab interitu ereptus est, ita liber *Tubingensis* a Martino Crusio; ut igitur ille Clarkianus, hic Crusianus dici debebat. In interiore latere tegumenti haec inscripta legimus:

M. Μαρτίνου Κρουσίου·

α φ ε

ἐν τυβίγγη

is· Ιανουαρίου

A Wolf Conrado Schweickero coparavi:

intercedens, fortuito accessu, ne

ad compingendos libros hoc

volumen conscinderet

valde antiquum¹⁾.

¹⁾ Haec verba (valde antiquum) postea addita sunt.

Infra hanc notam folium allitum videmus, quod duas imagines exhibet secundum ligneam formam repraesentatas, quarum una hominem monstrat manu librum tenentem cum his verbis in orbem literis maiusculis scriptis: Μαρτῖνος Κρούσιος ἐν Τυβίγγῃ διδάσκει ἔτει ᾠλκ· νβ'. 1578.

In f. ultimo r. extant haec verba Crusii: „Huius operis folia scripta sunt CLXXX. et in f. ult. v. Scholia in Genesin, et partem Exodi, Graeca, ex Bibliotheca | Basiliensi, in Octob. et Novemb. 1576 ego M. Mar|tinus Crusius Tybingae Professor, perlegi: liber in 4^a. | forma. 266. foliorum: cuius scriptura, scripturae huius platonis assimilis erat.

Codex qui est membraneus formae quadratae „saeculo circiter undecimo vel duodecimo scriptus“¹⁾ constat ex quaternionibus 22 et dimidio. Post finem textus manus inelegantissima ac recentissima haec scripsit, ab alia manu in pagina insequenti repetita: τετράδια ἅπερ ἔχει ἡ παρούσα βίβλος εἴκοσι καὶ τρία. Quaterniones numeravit ut videtur idem scriba qui totum codicem scripsit; numeros infimae margini paginae primae adposuit; hi autem numeri interciderunt: $\bar{\alpha}$, $\bar{\beta}$, $\bar{\gamma}$, $\bar{\alpha\gamma}$. Folia igitur sunt 180. paginae 360²⁾.

Codice continentur hi dialogi:

1. *Euthyphro*. p. 1 — p. 21.
2. *Crito*. p. 21 — p. 38.
3. *Phaedo*. p. 38. p. — 130.
4. *Parmenides*. p. 130 — p. 180.
5. *Alcibiades I.* p. 189 — p. 232.
6. *Alcibiades II.* p. 232 — p. 250.
7. *Timaeus*. p. 251 — p. 360.

Vides nullam tetralogiam totam in libro inesse, sed dialogos septem ex quattuor tetralogiis electos.

In folio primo extat horum dialogorum index litteris satis evanidis.

Initium uniuscuiusque dialogi ornamentis rubri coloris praepositis et litera initiali rubra indicatum est.

Euthyphronis, Phaedonis, Parmenidis, Alcibiadis I., Alcibiadis II. titulos man. rec. non supra initium dialogi, sed in superiore mar-

¹⁾ Fischer p. VIII.

²⁾ Eae hoc modo signatae sunt 1, 3, 5, omissa 2, 4 etc.

gine folii inscripsit hac ratione: εὐθύφρων ἡ περὶ ὁσίου, φαίδων ἡ περὶ ψυχῆς, ἀλκιβιάδης πρῶτος, ἡ περὶ φύσεως ἀνδρῶν, ἀλκιβιάδης δεύτερος ἡ περὶ προσευχῆς. Idem factum in Critone et Timaeo, sed in illo dialogo titulum rubro colore antiqua manus scripsit hoc modo: λ' B· κρίτων ἡ περὶ πρακτοῦ. in hoc dialogo habemus duos titulos; cum enim titulus esset evanidus atque mutilus, manus recens rubro colore hunc scripsit: ^{III} τίμεος ἡ περὶ φύσεως.

Pagina unaquaeque complectitur 25 versus.

Memorabile in hoc codice est, quod loquentium vices lineolis in margine indicatae sunt; si nomina loquentium in textu hic illic (velut in Timaeo, Phaedone) reperiuntur, recentiori manu addita sunt.

Quattuor folia (p. 5—12)¹⁾ quae ad Euthyphronem pertinent, manu recenti ac turpi scripta sunt. In his foliis nomina loquentium compendiis scripta textui addita sunt.

Compendia in libro frequentia sunt, praecipue in fine versuum.

Accentus habent has formas ∟, ∟; neque iota adscriptum neque iota subscriptum manus I. scripsit; interdum m. recentes iota subscripserunt; pro β plerumque legitur u.

Correctiones vel variae lectiones saepe vel supra versum vel in margine manibus recentioribus adscriptae sunt; eae plerumque inducuntur vocabulo ἤ (in Tim. γρ.).

Omissa in Tub. suppleverunt manus recentes in mg.

Scholia perrara; aliquot schemata; frequentissima nota CH in Timaeo.

§ 32.

Etiam in aliis dialogis correctiones II manus plerumque spernendas esse his exemplis demonstramus:

Ap. p. 24 B. περὶ μὲν οὖν ὧν οἱ πρῶτοί μου κατήγοροι κατηγοροῦν αὕτη ἔστω ἱκανὴ ἀπολογία πρὸς ὑμᾶς. Cl. ἔστιν. M. recentiss. supra scripsit ω. Quidni Socrates dicat ἱκανὴ ἔστιν aequae ac nos dicimus „das ist genug“? Restitue praesens tempus. cf. 28 A. οὐ πολλῆς μοι δοκεῖ εἶναι ἀπολογίας, ἀλλὰ ἱκανὰ καὶ ταῦτα.

¹⁾ Ea complectuntur verba 5 A. τοιαῦτα πάντα ἀκριβῶς usque ad 10 B. διὰ τοῦτο ἀγόμενον οὐδέ.

p. 25 D. ἀπόκριναι ω ἡ γὰρ. Cl. ἀποκρίνου. M. rec. correxit ἀπύκριναι. Sed vellem editores causam attulissent qua impulsī scripserunt ἀπόκριναι. Equidem nullam invenire possum; nam ἀποκρίνου apud Platonem frequentissime legitur, id quod exempla evincunt quae Ast Lex. Vol. I p. 239 conguessit. An editores manum secundam pluris faciunt quam primam?

28 C. de Thetide et Achille sermo est; ἐπειδὴ εἶπεν ἡ μήτηρ αὐτῷ προθυμουμένῳ Ἑκτορα ἀποκτείνειν, θεὸς οὔσα, οὕτωσί πως, ὥς ἐγώ μαι· ὦ παῖ, εἰ τιμωρήσεις Πατρόκλῳ τῷ ἐταίρῳ τὸν φόνον καὶ Ἑκτορα ἀποκτενεῖς, αὐτὸς ἀποθανεῖ· αὐτίκα γάρ τοι, φησί, μεθ' Ἑκτορα πότμος ἔτιμος. ὦ παῖ m. rec. in mg. Cl. supplevit, om. pr. II. Vocativus interpolatoris esse videtur. Itaque velim in margine maneat.

29 A. recte Cronius cum scripsit δεινὸν τᾶν εἴη suppletum μὲν manu recentissima in mg. Cl. reiecit. In II item μὲν deest.

40 B. ἐμοὶ δὲ οὔτε ἐξιόντι ἔωθεν οἰκοθεν ἡναντιώθη τὸ τοῦ θεοῦ σημεῖον οὔτε ἡνίκα ἀνέβαινον ἐνταυθοῖ ἐπὶ τὸ δικαστήριον οὔτε ἐν τῷ λόγῳ οὐδαμοῦ μέλλοντί τι ἐρεῖν. In Cl. μέλλοντί τι sic scriptum: μέλλοντί St. adnotavit etiam in Ven. II. desiderari τι post μέλλοντι. Riddell putat accentum syllabae finalis in μέλλοντί primae manus esse. Vereor ut id possit confirmari, praesertim cum τι suprascriptum manus satis antiquae sit; τι puto interpolatum aequae ac ὥς ante ἀληθῶς 40 D. Iis interpretibus, qui hoc ὥς non admiserunt, suaserim ut etiam τι suprascriptum abiciant. cf. 28 B. ubi sunt qui ex uno Paris S. τι post ὅταν πράττῃ adsciscant; Crito 54 D. ἐὰν λέγῃς παρὰ ταῦτα ubi Cronius cum Cl. pr. II recte τι expulit.

41 C. τά τε γὰρ ἄλλα εὐδαιμονέστεροί εἰσιν οἱ ἐκεῖ τῶν ἐνθάδε καὶ ἤδη τὸν λοιπὸν χρόνον ἀθάνατοί εἰσιν, εἴπερ γε τὰ λεγόμενα ἀληθῆ ἔσιν. Addidit ἔστιν m. rec. post finem versus. Copulam igitur ciciemus. cf. Crito 44 A. εἰ ταύτῃ τοῖς θεοῖς φίλον.

42 A. ἄδηλον παντὶ πλὴν ἢ τῷ θεῷ. In Cl. m. recentissima ἢ. m. I ut videtur εἰ, quod tuentur etiam H S T. Vel ut locutio πλὴν ἢ nullam habeat offensionem (cf. Kock ad Arist. Nub. 361), hi libri nos cogunt scribere πλὴν εἰ quod Atticum esse constat. cf. etiam Bait. ad h. l.

Crito 54 D. ἀλλὰ ἴσθι, ὅσα γε τὰ νῦν ἐμοὶ δοκοῦντα, ἐὰν λέγῃς παρὰ ταῦτα, μάτην ἐρεῖς iure suo ὥς etsi manu satis antiqua supra ἐὰν scriptum est tamen in textum non receperunt. Vellem etiam his locis interpolationes manus secundae exclusissent: 54 A. ἀλλὰ δὴ τῶν παίδων ἕνεκα βούλει ζῆν, ἵνα αὐτοὺς ἐκθρέψῃς καὶ παιδεύῃς; τί δέ; εἰς Θετταλίαν αὐτοὺς

ἀγαγὼν θρέψει; τε καὶ παιδεύσεις, ξένους ποιήσας, ἵνα καὶ τοῦτό σου ἀπο-
λαύσωσιν. Pronomen σου m. a. in mg. Cl. scripsit. om. Tub. Quo cum facile
carere possimus, interpolatoris esse putamus. — 53 D. γέρων ἀνὴρ σμικροῦ
χρόνου τῷ βίῳ λοιποῦ ὄντος ὡς τὸ εἶχός, ἐτόλμησας οὕτω γλίσχρως ἐπι-
θυμεῖν ζῆν. Cl. οὕτως αἰσχρῶς, in mg. γλίσχρως; item οὕτως αἰσχρῶς
Ven. II. Stallb. „*Meliorē lectionem Bodl. in margine servavit.*“ Sed
non id agitur, ut meliorem lectionem, sed ut veram restituamus. Nemo
autem est qui probare possit αἰσχρῶς hic non esse aptum. — 47 A. σκό-
πει· δὴ· οὐχὶ καλῶς δοκεῖ σοι λέγεσθαι, ὅτι οὐ πάσας χρὴ τὰς δούξας τῶν
ἀνθρώπων τιμᾶν, ἀλλὰ τὰς μὲν, τὰς δ' οὐ; [οὐδὲ πάντων, ἀλλὰ τῶν μὲν,
τῶν δ' οὐ;] τί φῆς; ταῦτα οὐχὶ καλῶς λέγεται; Verba uncis inclusa om.
ΠΨDS, in mg. habent Cl. (m. a.) Tub. (m. rec.). Ea tam jejuna ac superva-
canea sunt, ut etiamsi omnes libri ea tuerentur, putarem ea delenda. Nunc
autem cum libri boni ea spreverint, eo facilius eiciemus. — 44 B. ὡς
ἄτοπον τὸ ἐνύπνιον ὃ Σώκρατες. ὡς om. Tub. ΨD S et pr. II, supra vers.
posuit Cl. (m. a.). Nihil postulat hoc verbum. cf. supra p. 144.

49 E. cum I m. Cl. προσθε scribendum cf. Kühn. gr. p. 229 et Gorg
504 B.

Sed non solum quae manus antiquiores suppleverunt, ea fideliter re-
ceperunt editores, sed etiam talia, quae manibus recentissimis deberi mihi
persuasi; veluti Crit. 52 B. verba ὅτι μὴ ἄπαξ εἰς Ἰσθμόν. Cl. habet
ea suppleta in infima mg. manu recentissima; etiam in Tub. supplevit
ea m. rec. prorsus om. ΠΨDS; Fischerus retinet verba, quod iam Athe-
naeus V. 55 ea legerit. Sed huic testimonio non multum esse tribuen-
dum ex ipsa adnotatione Fischeri patet: *At Casaubonus, inquit, obser-
vat neque dubito quin vere, Athenaeum aut non habuisse in exemplo
Critonis suo verba εἰ μὴ ποῖ στρατ. aut ea in excerptis suis ut sit
praetermissa.* Et ut concedamus Athenaeum legisse verba, quid aliud
inde sequitur quam ut hominis cuiusdam docti adnotatio illa ὅτι μὴ εἰς
Ἰσθμόν satis sit antiqua?

Phaedr. 231 C. ἔτι δὲ εἰ διὰ τοῦτο ἄξιον τοὺς ἐρωῶντας περὶ πολλοῦ
ποιεῖσθαι, ὅτι τούτους μάλιστα φασὶ φιλεῖν ὧν ἂν ἐρωῶσι καὶ ἑτοιμοὶ εἶσι
καὶ ἐκ τῶν λόγων καὶ ἐκ τῶν ἔργων τοῖς ἄλλοις ἀπεχθανόμενοι τοῖς ἐρω-
μένοις χαρίζεσθαι, ῥᾶδιον γινῶναι εἰ ἀληθῆ λέγουσιν. Ad ἐρωῶσιν m. recen-
tissima adnot. κείμενον: καὶ ἑτοιμοὶ εἶσι (R^x). Verba om. ΔGT et pr. II.
Removebis interpolationem quam vel recentissimi editores Badham et Thomp-
son intactam reliquerunt; nam ἀπεχθ. χαρίζεσθαι pendet a φασίν.

Gorg. 466 A. iure expulerunt verba πρεσβύτης γενόμενος. nam. m.
recentissima (R^w) ea in mg. habet addito λείπουσι. — Gorg. 491 D. τί

δὲ αὐτῶν ὧ ἑταῖρε; τί οἶσι; ἄρχοντας ἢ ἀρχομένους; Omnes qui hunc locum difficillimum tractare velint, respiciant sola verba quae in contextu apparent τί δὲ αὐτῶν ὧ ἑταῖρε τί ἢ τί (finis versus) ἀρχομένους atque neglegant, quae manus recentissima et inelegantissima in margini adpinxit τῷ δὲ αὐτῶν ὧ ἑταῖρε . . . ἢ τοὺς ἀρχοντας ἢ ἀρ . . . (ut videtur χοιμένους).

ras.

ras.

Cratyl. 421 A. ἐρωτῶ δὴ τὰ μέγιστα καὶ τὰ κάλλιστα, τὴν τε ἀλήθειαν καὶ τὸ ψεῦδος καὶ τὸ ὄν καὶ αὐτὸ τοῦτο περὶ ὃ νῦν ὁ λόγος ἡμῖν ἐστίν, ὄνομα δὲ ὅτι τὸ ὄνομα ἔχει. Verba τὸ ὄν καὶ supplevit m. recentissima (errat Gaisford.). Quis est qui sibi persuadeat haec verba esse necessaria?

Politic. 291 B. τὸ γὰρ ἄτοπον ἐξ ἀγνοίας πᾶσι συμβαίνει· καὶ γὰρ δὴ καὶ δὴ καὶ νῦν αὐτὸς τοῦτο ἔπαθον. ἐξαίφνης ἡμφεγνύσασα χαπιδῶν τὸν περὶ τὰ τῶν πόλεων πράγματα χορὸν. Verba καὶ γὰρ δὴ καὶ νῦν quamquam manus satis antiqua (saec. X vel XI) in mg. adscripsit, tamen non magis ea admittemus quam verba αὐτῶ γε τοῦτο ὄνομα εἶναι quae in Cratyl. 383 B. eadem manus addidit. Asyndeton nihil habet insoliti: cf. Gorg. 513 C. πέπονθα δὲ τὸ τῶν πολλῶν πάθος· οὐ πάνυ σοι πείθομαι. Euthyphro 14 B. ἀλλὰ γὰρ οὐ πρόθυμός με εἶ διδάξαι· δῆλος εἶ.

Soph. 240 C. Θεαι. κινδυνεύει τοιαύτην τινὰ πεπλέχθαι συμπλοκὴν τὸ μὴ ὄν τῷ ὄντι καὶ μάλα ἄτοπον. Ξε. πῶς γὰρ οὐκ ἄτοπον; ὅρᾳς γοῦν ὅτι καὶ νῦν διὰ τῆς ἐπαλλάξεως ταύτης ὁ πολυκέφαλος σοφιστὴς ἡνάγκαζεν ἡμᾶς τὸ μὴ ὄν οὐχ ἐκόντας ὁμολογεῖν εἶναι πῶς. Θεαι. ὁρῶ καὶ μάλα. In mg. Cl. m. rec. ὅρας οὖν. Herm. in Praef. p. XXVI ὅρᾳς γοῦν quod in Oxon. marg. tantum ommissa lit. γ exstat, facile pro glossemate tollas, sequ. ὅτι in ὅτε mutato. Assentior Hermannio verba delenti, nolim assentiri ei ὅτι in ὅτε mutanti. Sed me offendit ὅρῳ quod haud scio an sit delendum.

§ 33.

Apol. 23 D. ἄτε οὖν οἶμαι φιλότιμοι ὄντες καὶ σφοδροὶ καὶ πολλοί, καὶ ξυντεταμένως καὶ πιθανῶς λέγοντες περὶ ἐμοῦ, ἐμπεπλήκασιν ὑμῶν τὰ ὥτα καὶ πάλαι καὶ σφοδρῶς διαβάλλοντες. In Cl. pro καὶ σφοδρῶς — κα(ὶ νῦν

σφοδρῶς (redintegratum). Scribendum καὶ πάλαι καὶ νῦν σφοδρῶς διαβάλλοντες. Pertinent enim νῦν et πάλαι ad διαβάλλοντες; de tempore praesenti in hac structura cf. Kr. 62, 4, 2 eaque quae in Sp. crit. p. 38 diximus.

26 A. ἀλλὰ γάρ ὧ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, τοῦτο μὲν δῆλον ἤδη ἐστίν, ὃ ἐγὼ ἔλεγον, ὅτι Μελῆτι τούτων οὔτε μέγα οὔτε σμικρὸν πώποτε ἐμέλτησεν. Desunt in Cl. ἤδη ἐστίν. Verba minime necessaria velim deleantur.

30 A. οὐδὲν ἄλλο πράττων ἐγὼ περιέρχομαι ἢ πείθων ὑμῶν καὶ νεωτέρους καὶ πρεσβυτέρους μήτε σωμάτων ἐπιμελεῖσθαι μήτε χρημάτων πρότερον μηδὲ οὕτω σφόδρα ὡς τῆς ψυχῆς, ὅπως ὡς ἀρίστη ἔσται, λέγων ὅτι οὐκ ἐκ χρημάτων ἀρετὴ γίγνεται, ἀλλ' ἐξ ἀρετῆς χρήματα καὶ τᾶλλα (Cl. τὰ ἄλλα) ἀγαθὰ τοῖς ἀνθρώποις ἅπαντα καὶ ἰδία καὶ δημοσία. Tur. ὅτι quod deest in Cl. incluserunt; immo expellendum videtur, nam eodem modo 27 A. ὥσπερ ἂν εἰ εἴποι· ἀδικεῖ Σωκράτης θεοὺς οὐ νομίζων, ὁλλὰ θεοὺς νομίζων. p. 29 C. D. post εἰπεῖν primo omittit Pl. ὅτι, deinde addit.

28 B. ἐκεῖνο μόνον (δεῖ) σκοπεῖν, ὅταν πράττη, πότερον δίκαια ἢ ἄδικα πράττει καὶ ἀνδρὺς ἀγαθοῦ ἔργα ἢ κακοῦ. Iam Gaisf. adnot. in Cl. exaratum esse πότερα quod interpretes spreverunt. Sed cf. Gorg. 509 D. πότερα δύναμιν ἢ βούλησιν; Apol. 22 E.

31 C. in Cl. ordo verborum est hic: ὡς ἀληθῆ λέγω.

40 B. νυνὶ δὲ οὐδαμοῦ περὶ ταύτην τὴν πράξιν οὐτ' ἐν ἔργῳ οὐδενὶ οὐτ' ἐν λόγῳ ἠναντίωταί μοι. Cl. νῦν quod cur reiciamus nulla est causa.

41 B. τοὺς ἐκεῖ ἐξετάζοντα καὶ ἐρευνῶντα ὥσπερ τοὺς ἐνταῦθα διάγειν, τίς αὐτῶν σοφός ἐστι καὶ τίς οἴεται μὲν, ἔστι δ' οὐ. Cl. τίς ἂν in cuius locum puto esse substituendum τίς δῆ. cf. supra p. 51. Eodem remedio adhibito pro πῶς ἂν Politic. 278 A. scribendum est πῶς δῆ. cf. Phaedo 89 A.

Stallbaumii adnotatio ad Crit. 52 C. οὕτω σφόδρα (leges ad Socratem loquuntur) ἡμᾶς ἡρώδῃ καὶ ὠμολόγεις καθ' ἡμᾶς πολιτεύεσθαι: *Stephanus invitis libris omnibus de coniectura dedit πολιτεύεσθαι probante Buttmanno, me improbante*, partim falsa est, nam Cl. et Tub. habere πολιτεύεσθαι ipse vidi. Futurum restituendum.

Crito 48 B. ἀλλ' ὦ θαυμάσιε οὕτός τε ὁ λόγος ὃν διεληλύθαμεν, ἔμοιγε δοκεῖ ὅμοιος εἶναι τῷ καὶ πρότερον. Bekk. adn. ἔτι add. (post δοκεῖ) ΠΨD. Adde Cl. et Tub. Legendum est sine dubio cum Buttmanno et Wexio ἀλλ' ὦ θαυμάσιε οὕτός τε ὁ λόγος ὃν διεληλύθαμεν, ἔμοιγε δοκεῖ ἔτι ὅμοιος εἶναι καὶ πρότερον. In Spec. crit. p. 40 vitium simile simili modo removimus.

Gorg. 526 C. ταῦτά ταῦτα καὶ ὁ Αἰαχός· ἐχάτερος δὲ τούτων ῥάβδον ἔχων δικάζει. Qui putant δὲ post αὐτὰ in Clarkiano deesse, maxime falluntur. Cl. exhibet verba hoc modo: ταῦτά δὲ ταῦτα καὶ ὁ Αἰαχός· ἐχάτερος τούτων ῥάβδον ἔχων δικάζει.

ibid. 508 D. ἔχεις εἰπεῖν om. ΓΔΦΕF et p. B. His libris addendus est Cl. quod omnes velim teneant qui hunc locum aggredientur.

Ordine verborum secundum Clarkianum mutato scribe 500 C. περί τούτου ἡμῖν εἶσιν. 459 E. ἥ τὸ παράπαν οὐχ οἶός τε ἔσει αὐτὸν διδάξαι. Et haud scio an exempla a Krügero § 68, 5, 1 indicata tueantur quod Cl. praebet 490 C. ἐν τῷ δέ.

ibid. 521 C. ὥς μοι δοκεῖς ὦ Σώκρατες, πιστεύειν μηδ' ἂν ἐν τούτων παθεῖν ὥς οἰκῶν ἐκποδῶν καὶ οὐκ ἂν εἰσαχθεὶς εἰς δικαστήριον ὑπὸ πάνυ ἴσως μοχθηροῦ ἀνθρώπου καὶ φαύλου. Cl. ὥς μοι δοκεῖ Σώκρατες κ. τ. λ. Leni igitur medela corrigendum censeo: ὥς μοι δοκεῖ Σωκράτης πιστεύειν κ. τ. λ. Sic etiam 515 A. Καλλίχλεις pro Καλλιχλῆς in Cl. scriptum.

Cratyl. 404 B. εἶεν· τί δὲ δῆ; Δήμητράν τε καὶ Ἥραν καὶ Ἀπόλλω καὶ Ἀθηνᾶν καὶ Ἥφαιστον καὶ Ἄρη καὶ τοὺς ἄλλους θεοὺς πῶς λέγομεν; Om. Cl. δῆ. Vellem etiam editores omisissent. cf. Hipp. mai. 288 C. εἶεν, φήσιν δῆ· τί δέ; λύρα καλὴ οὐ καλόν; Phileb. 27 E. εἶεν· τί δὲ ὁ σός, (sc. βίος) ὦ Φίληβε, ἡδὺς καὶ ἀμικτὸς ὢν;

ibid. 434 C. πότερον ἢ ὅμοια τυγχάνει ὄντα τὸ ῥῶ καὶ τὸ σῆγμα ἢ ἡ μή; Cl. interposuit ut Vat. Δ τε post ῥῶ. Recipiet editor futurus Cratyli.

Nota: Cratyl. 384 A. habet Cl. ἔπη δοκεῖ ἔχειν περὶ ὀνομάτων ὀρθότητος et p. 384 B. ἀκηχόειν (non ἀκηχόει).

Lys. 204 B. οἶδα γὰρ ὅτι οὐ μόνον ἐρᾶς, ἀλλὰ καὶ πόρρω ἤδη εἰ πορευόμενος τοῦ ἔρωτος. Haud scio an πορευόμενος sit expellendum. — ibid 204 E. ἱκανὸς γὰρ καὶ ἀπὸ μόνου τούτου γινώσκεισθαι. Hic μόνου delendum videtur propter καὶ antegressum.

1
The first of these is the fact that the
the second is the fact that the
the third is the fact that the
the fourth is the fact that the
the fifth is the fact that the
the sixth is the fact that the
the seventh is the fact that the
the eighth is the fact that the
the ninth is the fact that the
the tenth is the fact that the
the eleventh is the fact that the
the twelfth is the fact that the
the thirteenth is the fact that the
the fourteenth is the fact that the
the fifteenth is the fact that the
the sixteenth is the fact that the
the seventeenth is the fact that the
the eighteenth is the fact that the
the nineteenth is the fact that the
the twentieth is the fact that the
the twenty-first is the fact that the
the twenty-second is the fact that the
the twenty-third is the fact that the
the twenty-fourth is the fact that the
the twenty-fifth is the fact that the
the twenty-sixth is the fact that the
the twenty-seventh is the fact that the
the twenty-eighth is the fact that the
the twenty-ninth is the fact that the
the thirtieth is the fact that the
the thirty-first is the fact that the
the thirty-second is the fact that the
the thirty-third is the fact that the
the thirty-fourth is the fact that the
the thirty-fifth is the fact that the
the thirty-sixth is the fact that the
the thirty-seventh is the fact that the
the thirty-eighth is the fact that the
the thirty-ninth is the fact that the
the fortieth is the fact that the
the forty-first is the fact that the
the forty-second is the fact that the
the forty-third is the fact that the
the forty-fourth is the fact that the
the forty-fifth is the fact that the
the forty-sixth is the fact that the
the forty-seventh is the fact that the
the forty-eighth is the fact that the
the forty-ninth is the fact that the
the fiftieth is the fact that the
the fifty-first is the fact that the
the fifty-second is the fact that the
the fifty-third is the fact that the
the fifty-fourth is the fact that the
the fifty-fifth is the fact that the
the fifty-sixth is the fact that the
the fifty-seventh is the fact that the
the fifty-eighth is the fact that the
the fifty-ninth is the fact that the
the sixtieth is the fact that the
the sixty-first is the fact that the
the sixty-second is the fact that the
the sixty-third is the fact that the
the sixty-fourth is the fact that the
the sixty-fifth is the fact that the
the sixty-sixth is the fact that the
the sixty-seventh is the fact that the
the sixty-eighth is the fact that the
the sixty-ninth is the fact that the
the seventieth is the fact that the
the seventy-first is the fact that the
the seventy-second is the fact that the
the seventy-third is the fact that the
the seventy-fourth is the fact that the
the seventy-fifth is the fact that the
the seventy-sixth is the fact that the
the seventy-seventh is the fact that the
the seventy-eighth is the fact that the
the seventy-ninth is the fact that the
the eightieth is the fact that the
the eighty-first is the fact that the
the eighty-second is the fact that the
the eighty-third is the fact that the
the eighty-fourth is the fact that the
the eighty-fifth is the fact that the
the eighty-sixth is the fact that the
the eighty-seventh is the fact that the
the eighty-eighth is the fact that the
the eighty-ninth is the fact that the
the ninetieth is the fact that the
the ninety-first is the fact that the
the ninety-second is the fact that the
the ninety-third is the fact that the
the ninety-fourth is the fact that the
the ninety-fifth is the fact that the
the ninety-sixth is the fact that the
the ninety-seventh is the fact that the
the ninety-eighth is the fact that the
the ninety-ninth is the fact that the
the hundredth is the fact that the

Addenda.

- p. 1. Clark. his locis discrepat ab Hermanno: Prot. 340 C. τὸ αὐτὸν pro ταῦτον cf. p. 98. Hipparch. 230 E. ταῦτόν. Cratyl. 399 D. τοιοῦτον (v in ras.) Cratyl. ras.
423 D. τοῦτο pro τοιοῦτον. ib. 436 C. κατὰ ταῦτόν] Cl. κατ' αὐτό. Soph. 243 C. Cl. ταυτὸ τοῦτο. 258 C. κατὰ ταυτό. 259 D. τὸ θάτερον ταυτό. Theaet. 186 D. Cl. ταῦτόν pro τοῦτο. 204 C. Cl. τὸ αὐτό. ras. pro ταῦτόν. Phaedo 73 E. τοιοῦτο^v, sed v I m. est. cf. p. 147 not. 1. Parm. 147 D. ταυτὸ pro τὸ αὐτό (ὄνομα) ibid. ταυτὸ pro τὸ αὐτό (καί). 140 B. τὸ ταυτο πεπ; Symp. 185 E. τοιοῦτο οἷον. Sed 183 C. τοιοῦτον scr. I m. cf. p. 40, (152 C. 7). Cedat igitur p. 3 185 E. in locum exempli 183 C. Charm. 170 B. ταῦτόν οὖν] Cl. ταῦτ' οὖν οὖν. Inde vides solam rationem formarum ταῦτόν, ταῦτό paululum mutata esse. De his formis vide etiam Mätzner ad Lyc. p. 91, A. v. Velsen, Symbolae philol. Bonn. p. 418.
- p. 4. lege: qui σ ante vocalem non habent.
Adde 10) Parm. 139 E. οὔτω ἐν. 11) ibid. 140 D. οὔτω αὖ.
- p. 5. Adde 9) Parm. 144 D. Οὔτω Ἀρα. 10) ibid. 159 E. Οὔτω Οὐδέ. 11) ibid. 164 B. Οὔτω Εἰ.
- p. 7. Adde 17) Parm. 161 E. οὐχ οὔτω; Οὔτω μὲν οὖν.
Phaed. 81 A. Eph. 12 D. Cratyl. 433 C. Parm. 162 C. Phileb. 48 A. Cl. consentit cum Hr. — De re cf. etiam Frohwein de adverbio in Curtii studiis; Kroschel ad Prot. p. 151 Not. critic.
- p. 8. De nomine *anaphorae* cf. etiam Cron (Beiträge zur Erkl. des plat. Gorg. p. 164 N. 1.)
- p. 10. Duo insignia palindromiae exempla extant Arist. Ran. 494 (cf. Meier opusc. I. 52) et 1183.

p. 12. Difficillimum σχῆμα ἐκ παραλλήλου. Meineke Com. fragm. I. p. 17 ὡς εὖ καὶ ταχέως ἀπετίσαστο καὶ παραχρῆμα. Heindorf. ad Phaed. 62 ὡσαύτως καὶ κατὰ ταῦτά ἐκ ὡσαύτως κατὰ ταῦτά exemplis comprobat. Deinde adversari videntur οὕτως τε καὶ ταύτῃ, πάντως καὶ πάντῃ (Stallb. ad Legg. III. 681 D.) ὅπως καὶ ὅπη. (Legg. 966). Ac tamen mihi persuasi discrimen interesse; de hac re alias dicam.

p. 92. Adde Gorg. 469 D. θαυμάσιον.

Vitia typothetae hic illic (veluti Schollae p. 109 pro Scholia; p. 64 sub fin. p. ante ἢ intercidit) occurrentia non indicare volo; sed hac occasione duo alia vitia corrigenda esse puto: Eussner (Spec. crit. p. 27) non recte sententiam meam expressit: ego volui: Cens. 4, 12 ἐκ quibus mutua caede inter se pauci superasse traduntur. Miro errore Philol. Vol. 28 (1869) οὐκ Charm. 158 C. mihi obtruserunt; ego scripsi: εἶπε γὰρ ὅτι ἄλογον εἶη ἐν τῷ παρόντι εἶθ' ὁμολογεῖν εἴτε ἐξάρνησθαι εἶναι τὰ ἐρωτώμενα.





